गूजरात
पुरातत्त्वमंदिर
ग्रन्थावली

卐

ग्रन्थाङ्क १५

प्राकृत व्याकरण

लेखक

पंडित बेचरदास जीवराज दोशी

गूजरात पुरातत्त्व मंदिर

अमदावाद

प्रथमावृत्ति

प्रत ११००] संवत् १९८१–सने १९२५ [मूल्य रू. ४–०–०

प्रकाशक,

कोठारी विठ्ठलदास मगनलाल

गूजरात विद्यापीठ, अमदावाद.

卐

: मुद्रणस्थानः आदित्यमुद्रणालय :

: : रायखडरोड–अहमदाबाद. : :

मुद्रकः गजानन विश्वनाथ पाठक.

विज्ञापन

गूजरातपुरातत्त्वमंदिरनी प्रबंध समितिना संवत १९७९ ना भादरवा वद १३ नी बेठकना ठराव १ (परिशिष्ट १) मुजब आ पुस्तक प्रसिद्ध करवामां आवे छे.

गूजरात विद्यापीठ कार्यालय,
अमदावाद.
आसो वद १२; सं० १९८१.
} प्रकाशक.

प्रवेश

प्राकृतव्याकरणना शिक्षक अने शिष्य माटे आ पुस्तकना परिचय पूरती थोडी माहिती आ प्रमाणे छे:

अहीं नीचेना चार मुद्दाओ विषे क्रमवार लखवानुं छे–

१ रचनाशैली

२ प्राकृतभाषा

३ अर्धमागधी भाषा

४ प्राकृतभाषानां व्याकरणो

१ रचनाशैली

आचार्य हेमचंद्रना प्राकृतव्याकरणने सामे राखीने आ पुस्तक लखवामां आव्युं छे पण क्रमने फेरववामां आव्यो छे. हेमचंद्रना प्राकृतव्याकरणमां सौथी पहेलां प्राकृतभाषानुं व्याकरण आपेलुं छे अने पछी क्रमे शौरसेनी, मागधी, पैशाची–चूलिका पैशाची अने छेल्ले अपभ्रंशनुं व्याकरण आपवामां आवेलुं छे त्यारे प्रस्तुत पुस्तकमां ए बधां व्याकरणोने साथे साथे समाववामां आव्यां छे एटले आ पुस्तकमां प्राकृतनुं व्याकरण आपतां जे जे नियममां शौरसेनी, मागधी, पैशाची–चूलिका पैशाची अने अपभ्रंशनी विशेषता होय ते पण साथे साथे–प्राकृतभाषाना नियमनी साथे–ज आपवामां आवी छे. जेमके;

प्राकृतमां साधारण रीते क, ग, च, ज, त, द, प, ब, य अने व नो लोप थाय छे (जूओ पृ० १०) आ नियम आपवानी साथे ज तुलना थइ शके ए दृष्टिए एम पण जणाव्युं छे के, शौरसेनीमां 'त' नो 'द' थाय छे, मागधीमां 'ज' नो 'य' थाय छे, पैशाचीमां 'द' नो 'त' थाय छे अने अपभ्रंशमां 'क' नो 'ग' थाय छे (जूओ पृ० १२ अने १३)

आ रीते वर्णविकारने लगता बधा नियमोने आपवामां आव्या छे. नियमोमां सौथी पहेलां सर्व साधारण नियमोने आपवामां आव्या छे अने पछी विशेष (आपवादिक) नियमोने मूकवामां आव्या छे. नाम अने आख्यातना प्रकरणमां प्राकृत, शौरसेनी वगेरेनां रूपोनी साधना बताव्या पछी क्रमवार प्राकृत, शौरसेनी वगेरेनां रूपोने मूकवामां आव्यां छे अने केटलेक ठेकाणे ए बधां रूपोने साथे साथे एक ज ओळमां पण मूकेलां छे (जूओ पृ० १२५–१२६–१२८–१२९–१३०–१३२–१३३ नामप्रकरण अने पृ० १४१ तथा पृ० २९१ आख्यात प्रकरण)

खास विशेषता (विशेषताओने टिप्पणमां मूकेली छे)

(१) पालिनी साथे सरखामणी

प्राकृतभाषाना वर्णविकारना नियमोने पालिभाषाना वर्णविकारना नियमोनी साथे सरखाववामां आव्या छे अने केटलेक स्थळे तो पालि शब्दोने पण मूकवामां आव्या छे (पालिशब्दो माटे जूओ पृ० ८–१५–१८ वगेरे)

नामनां, धातुनां, कृदंतनां अने तद्धितनां रूपोने पालिरूपोनी साथे मूकवामां आव्यां छे अने केटलीक जग्याए पालिना प्रत्ययो आपीने पण सरखामणी बतावी छे (प्रत्ययो माटे जूओ पृ० २४८ अने ३२४) संधिप्रकरणमां अने बीजे पण संभवित स्थळे सरखामणी माटे पालिना नियमोने आपवामां आव्या छे. एकंदर रीते पालिनी अने प्राकृतनी सरखामणी सविस्तर दर्शाववामां आवी छे अने ते एटला ज माटे के, प्राकृतनो अभ्यासी साथे साथे पालिने पण सर्वांशे शीखी शके.

(२) वैदिक संस्कृत अने प्राकृतनो संबंध

जूनामां जूना वररुचिथी छेक छेल्ला मार्कंडेय सुधीना बधा प्राकृतव्याकरणकारोए प्राकृतरूपोनी साधना माटे लौकिक (वैदिकेतर) संस्कृतनो ज उपयोग करेलो छे, तदनुसार आ पुस्तकमां पण ए ज शैलीने मान्य राखवामां आवी छे. परंतु अत्यारनां विपुल साधनोथी एम जणाय छे के, प्राकृतभाषानो संबंध वैदिक संस्कृतनी साथे पण छे (जूओ आर्यविद्याव्याख्यानमाळा पृ० १९४-२०९) तेथी प्राकृत-रूपोनी साधना माटे वैदिक शब्दोने पण मूळभूत राखवा ए, सर-खामणीनी दृष्टिए विशेष अगत्यनुं छे. आ वातने सूचववा वैदिक संस्कृतने मूळभूत राखीने पण सरखामणी करवामां आवी छे. (जूओ पृ० ४९-९४-३०९)

प्राकृतना एवा तो घणा य नियमो छे जे वैदिक संस्कृतनां रूपो साथे मळता आवे छे,

[जेमके; अंत्यव्यंजनलोप (जूओ पृ० १० नि० १)

वैदिकरूपो

पश्चा (पश्चात्)

उच्चा (उच्चात्)

नीचा (नीचात्)

युष्मा (युष्मान्)

देवकर्मेभिः (देवकर्मभिः)

आ बधां वैदिक रूपोमां अंत्यव्यंजननो लोप थएलो छे.

'र' 'य' नो लोप

(जूओ पृ० १६ नि० ५ तथा पृ० १५ नि० ४)

अपगल्भ (अप्रगल्भ)

तृच् (त्र्यृच्)

पेला रूपमां 'र' नो अने बीजामां 'य' नो लोप थएलो छे.

संयुक्तनी पूर्वे ह्रस्व (जूओ पृ० ४ नि० १)

रोदसिप्रा (रोदसीप्रा)

अमत्र (अमात्र)

'ऋ' नो 'उ' (जूओ पृ० ७ नि० ८)

वुन्द (वृन्द)

'द' नो 'ड' (जूओ पृ० ६८-६९ द-विकार)

दुदभ, दूडभ

पूरोदाश, पूरोडाश वगेरे.

उपर्युक्त उदाहरणोनां वैदिक स्थळो माटे अने विशेष उदाहरणो माटे जूओ आर्यविद्याव्याख्यानमाळा पृ० २०३ थी २०८].

पण पुस्तक वधी जाय अने प्रवेश करनारने कठण लागे एथी ए बधा नियमोने अहीं नथी आपवामां आव्या.

(३) आदेशो करवा करतां मूळ शब्द उपरथी ज विकृत शब्दने बताववो

जूना वैयाकरणोए संस्कृत शब्दोना आदेशो करीने प्राकृत शब्दो बनाववानी रीत स्वीकारी छे पण भाषानुं ऐतिहासिक अने शास्त्रीय दृष्टिए निरूपण करवुं होय तो जे जे शब्दोनी सरखामणी करी शकाती होय त्यां आदेशो करवा करतां ए मूळ शब्दोना ज उच्चारणजन्य वर्णविकारोने बताववा जोइए. जेमके;

'ओळ' सूचक प्राकृत 'ओलि' शब्दनी साधना माटे नकामुं, आळसु, निरर्थक, प्रामाणिक, वींछी, मधमाखी, सखी, श्रेणि, लींटो, पुल, हक्को अने कुल एटला अर्थमां (अर्थो माटे जूओ आप्टेनो कोश) वपराता 'आलि' शब्द उपरथी 'पंक्ति' अर्थमां 'ओलि' बनाववानी मलामण करवी ए करतां 'पंक्ति' अर्थवाळा

ज 'आवलि' शब्दनां 'आउलि' 'ओलि' रूपो बतावीने 'ओलि' शब्द बनाववानी रीत ऐतिहासिक अने भाषाशास्त्रनी दृष्टिए वधारे सुसंगत लागे छे.

'सूक्ष्म' ना 'ऊ' नो 'अ' करीने 'सण्ह' रूप बनाववा करतां 'श्लक्ष्ण' नुं सहज भावे थतुं 'सण्ह' रूप ज अधिक संगत लागे छे.

आम करवाथी उच्चारणोथी थता क्रमिक वर्णविकारो कळी शकाय छे अने व्याकरणमां आवतो गौरवदोष पण अटकी शके छे.

आ हकीकत अहीं मात्र एक उदाहरण द्वारा ज दर्शाववामां आवी छे (जूओ पृ० ९४)

(४) आगमोनां नहि सधाएलां रूपोनी साधना

जैन आगमोनां केटलांक रूपो जे अत्यार सुधी अणसाध्यां हतां तेने पालिभाषानां रूपो द्वारा साधवानो प्रयत्न करवामां आव्यो छे (जूओ पृ० १३६ अने २६४)

२ प्राकृतभाषा

शौरसेनी अने मागधीनुं क्षेत्र एना नाम उपरथी ज जाणितुं छे. पैशाचीनुं क्षेत्र—

" पाण्ड्य–केकय–बाल्हीक–सिंह–नेपाल–कुन्तलाः ।
सुधेष्ण–भोज–गान्धार–हैव–कन्नोजनास्तथा ॥
एते पिशाचदेशाः स्युस्तद्देश्यस्तद्गुणो भवेत् " ।

(षड्भाषाचंद्रिका पृ० ४ श्लो० २९–३०)

आ श्लोकमां जणावेलुं छे. साधारण प्राकृत अने अपभ्रंशनुं क्षेत्र व्यापक छे एटले ए माटे कोई देशने निर्देशी शकाय नहि.

वैयाकरणोए शब्दशास्त्रनी दृष्टिए प्राकृतना त्रण प्रकार जणावेला छे: १ संस्कृतजन्यप्राकृत, २ संस्कृतसमप्राकृत अने ३ देश्यप्राकृत.

[१ जेनी व्युत्पत्तिनो वधारे संबंध बन्ने प्रकारना संस्कृत साथे छे ते संस्कृतजन्यप्राकृत.

२ संस्कृतनी जेवुं प्राकृत ते समसंस्कृतप्राकृत.

नीचेना एक ज श्लोक द्वारा संस्कृतसमप्राकृतनो परिचय थई जाय छे.

" चारुसमीरणरमणे हरिणकलङ्ककिरणावलीसविलासा ।
आबद्धराममोहा वेलमूले विभावरी परिहीणा " ॥ १ ॥
(*भट्टिकाव्य १३ मो सर्ग)

३ देश्यप्राकृतनो नमूनो आ प्रमाणे छे:

" रे खेआलुअ खोसल इमाण खोट्टीण मज्झमावडिओ ।
छुट्टिस्ससि कह व तुमं अकुट्टिओ टक्कराहि फुडं " ॥
(देशीनाममाला पृ० ९८ श्लो० ६५]

प्रस्तुत व्याकरण पेला प्रकारने लगतुं छे. बीजो प्रकार तो संस्कृत व्याकरणथी ज सिद्ध छे अने त्रीजा प्रकारनुं प्राकृत हजु सुधी शास्त्रीय गवेषणानो विषय न बनेलुं होवाथी आमां तेनुं निरूपण करवुं योग्य धार्युं नथी. एना बोध माटे देशीनाममाला वगेरे देशी भाषाना कोशोथी ज चलावी लेवुं पडे एम छे.

३ अर्धमागधी भाषा

प्राकृत, शौरसेनी वगेरे भाषाओनुं व्याकरण लखतां आमां क्यांय अर्धमागधी विषे लखवामां नथी आव्युं, एथी कोइ एम तो न ज समजी ल्ये के, अर्धमागधी कोई भाषा ज नथी.

---

* भट्टिकाव्यना आ सर्गमां समसंस्कृतप्राकृतनां आवां अनेक काव्यो छे. आ सर्गनुं नाम ज ' भाषासंनिवेश ' छे.

जैनसूत्रोमां केटलेक ठेकाणे अर्धमागधीने भाषा तरीके जणावी छे अने साथे एम पण कहेवामां आव्युं छे के, ‘ भगवान् महावीर अर्धमागधी भाषामां उपदेश करता हता.’

अर्धमागधीने लगता जैनसूत्रोना उल्लेखो आ प्रमाणे छे:

“ भगवं च णं अद्धमागहीए भासाए धम्ममाइक्खइ ” (समवाय—अंगसूत्र पृ० ६० समिति)	“ भगवान् अर्धमागधीभाषा-द्वारा धर्मने कहे छे.”
प्र०—“ देवा णं भंते कयराए भासाए भासंति ? कयरा वा भासा भासिज्जमाणी विसिस्सति ?	“ हे भगवन् ! देवो कइ भाषामां बोले छे ? अथवा बोलाती भाषामां कइ भाषा विशिष्ट छे ?
उ०—गोयमा ! देवा णं अद्ध-मागहाए भासाए भासंति, सा वि य णं अद्धमागही भासा भासिज्जमाणी विसिस्सइ ” (भगवती—अंगसूत्र श० ५ उ० ४ पृ० १८१ प्रश्न—२० राय० अने समिति पृ० २३१ सू० १९१)	हे गौतम ! देवो अर्ध-मागधीभाषामां बोले छे अने बोलाती भाषामां पण ते ज भाषा—अर्ध-मागधीभाषा—विशिष्ट छे.”

" तए णं समणे भमवं महावीरे कूणिअस्स भंभसारपुत्तस्स अद्धमागहाए भासाए भासति " (औपपातिक-उपांग-सूत्र पृ० ७७ समिति)	" त्यार पछी भगवान महावीर भंभसारपुत्र कोणिकने अर्ध-मागधीभाषामां धर्म कहे छे "
प्र०—" से किं तं भासारिया ?	" भाषानी दृष्टिए आर्यो कोने कहेवा ?
उ०—भासारिया जे णं अद्धमागहाए भासाए भासेंति " (प्रज्ञापना—उपांगसूत्र पृ० ९६ समिति)	जेओ अर्धमागधीभाषामां बोले छे तेओने भाषानी दृष्टिए आर्यो समजवा "

आ उपरथी 'अर्धमागधी' ने भाषा तरीके अने 'महावीर अर्धमागधीभाषामां उपदेश करता हता' ए बन्ने वातो स्वीकारी शकाय एवी छे पण 'अर्धमागधी' ना भाषा तरीकेना उल्लेख मात्रथी ज कांइ एनुं व्याकरण लखी शकाय नहि.

व्याकरण लखवा माटे तो एना विपुल साहित्यने सामे राखवुं जोइए, जेथी बीजी भाषाओ करतां अर्धमागधीनी जे खास खास विशेषताओ होय ते बधी साधी शकाय. कांइ बे चार रूपोनी विशेषताने लीधे कोइ एक भाषाने बीजी भाषाथी जुदी पाडी शकाय नहि तेम ज बे चार रूपोने साधवा माटे जुदुं व्याकरण पण लखी शकाय नहि, जो फक्त बे चार रूपोनी ज विशेषताने लीधे एक

भाषाने बीजी भाषाथी जुदी गणावी शकाती होय अने एनुं व्याकरण पण लखी शकातुं होय तो भाषाओनो अने व्याकरणोनो अंत ज केम आवत ?

आ संबंधमां आचार्य हेमचंद्रनुं ज उदाहरण बस छेः श्री हेमचंद्रे प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशनां व्याकरणो लख्यां छे तेम साथे साथे आर्षप्राकृतने पण लीधुं छे. साधारण प्राकृत करतां आर्षप्राकृतमां कांइक विशेषता जरुर छे पण ते एटली नजीवी छे के, तेनुं जुदुं व्याकरण करवुं तेमने योग्य नथी जणायुं. आ ज कारणथी साधारण प्राकृतना पेटामां आर्षप्राकृतने पण एमणे भेळवी दीधुं छे.

हेमचंद्र जेवा जैन वैयाकरण शौरसेनी, मागधी अने पैशाची जेवी प्रायः जैनेतर ग्रंथोमां वपराएली के नाटकीय भाषाओनुं व्याकरण लखवा प्रेराय अने जैनआगमोनी भाषानुं व्याकरण न लखे ए कांइ अर्थविनानी वात नथी.

जैनपरंपरामां अर्धमागधीना साहित्य तरीके प्रसिद्धि पामेलुं समस्त आगमसाहित्य एमनी सामे ज हतुं, ए विषेनो भाषानो अने भावनो एमनो अभ्यास पण गंभीर हतो छतां य एमणे ए साहित्यने लगतुं एक जुदुं व्याकरण केम न लख्युं ? ए प्रश्न एमने माटे थवो सहज छे.

ए प्रश्ननो उत्तर आचार्य हेमचंद्रे पोतानी कृतिद्वारा ज आपी दीधेलो छे. आपणे जेम आगळ जोइ गया के, आर्षप्राकृतमां जुदुं व्याकरण करवा जेवी खास विशेषता न जणायाथी जेम एने साधारण प्राकृतना पेटामां समावी दीधुं छे तेम आगमसाहित्यनी भाषामां पण ए बन्ने प्राकृतो करतां एवी विशिष्ट विशेषता न जणायाथी

एमणे ए भाषाने ए बन्ने प्राकृतोमां भेळवी दीधी छे अने ए ज कारणथी एनुं जुदुं व्याकरण करवा तेओ प्रेराया पण नथी.

एमना समयनुं वातावरण जोतां तो जरुर ए पाणिनिना वैदिक व्याकरणनी पेठे जैनआगमोनी भाषानुं पण व्याकरण लखवाने प्रेराया होत.

जैनपरंपरामां आचार्य हेमचंद्र ज एक एवा प्रतिष्ठापक पुरुष छे जेमणे जैनोनी साहित्यने लगती प्रतिष्ठा साचववानो भगीरथ प्रयत्न सेव्यो छे. नवुं व्याकरण, नवुं छंदःशास्त्र, नवुं अलंकारशास्त्र, नवुं धातुपारायण, नवा कोशो, नवो निघंटु, नवुं पुराण अने नवुं योगशास्त्र वगेरे ए बधुं जैनोनी विशेषताने खातर नवुं नवुं लख्या छतां आगमोनी भाषाना ज प्रसंगमां एमणे वृद्धप्रवादनी सामे पण जे मौन बताव्युं छे ते ज आपणा ए प्रश्नना पूर्वोक्त उत्तर माटे पूरतुं छे.

वळी, आचार्य हेमचंद्र पोते एम पण मानता लागे छे के, आगमोनी भाषा अर्धमागधी तो जरुर कही शकाय पण जो एमां 'अर्धमागधी' नामने योग्य केटलीक विशेषताओ मागधी भाषानी पण भळेली होय. आ विशेषताओ तपासतां एमने तो फक्त मागधीनी एक ज विशेषता मुख्यपणे जणाणी छे. ते विशेषता-प्रथमाना एकवचनमां मागधीना 'ए' प्रत्ययनो प्रयोग. जेमके; जीवे, अजीवे, लोए, अलोए, आसवे, संवरे, बंधे, मोक्खे वगेरे. पण आ एक ज विशेषताने लीधे तेओ आगमोनी भाषाने अर्धमागधी कहेवी योग्य धारता नथी अने प्राकृत के आर्षप्राकृतथी जुदी पण गणी शकता नथी. माटे ज एमणे आगमोनी भाषाने माटे पोताना व्याकरणमां कोइ खास स्थान आपेलुं नथी. साथे साथे एटलुं पण जणावी देवुं जोइए के, हेमचंद्रना

ध्यानमां आवेली ए एक विशेषता पण कांइ आगमोनी भाषामां व्यापक रीते आवेली नथी, एमां तो 'ए'ना प्रयोगनी पेठे प्राकृतना 'ओ' प्रत्ययवाळां पण घणां रूपो–ते पण आचारांग जेवा प्राचीन सूत्रमां य–मळी आवे छे. जेमकेः निक्खंतो, उद्देसो, अप्पमाओ, निरामगंधो, उवरओ, उवेहमाणो, आलीणगुत्तो, सहिओ, नाणागमो, संथवो, दोसो, हव्ववाहो, दुरणुचरो, मग्गो वगेरे (आचारांग सूत्र पृ० ४१–१२४–१२७–१३०–१५५–१६८–१८३–१८४–१८५–१९०–१९२ समितिनुं). एमणे ज आ संबंधमां एम जणाव्युं छे के, "प्रायोऽस्यैव विधानात् न वक्ष्यमाणलक्षणस्य" (प्रा० व्या० पृ० १५९ सू० २८७) अर्थात् "आर्ष प्रवचनमां प्रायः मागधीना 'ए' प्रत्ययनुं ज विधान छे, पण मागधीनां बीजां बीजां लक्षणोनुं नथी." आ उल्लेखमां वपराएलो 'प्रायः' शब्द आगमोमां 'ए' प्रत्ययनी वपराशनो पण संकोच बतावे छे अने एथी ज एम जणाय छे के उपर्युक्त 'ओ' प्रत्ययनी वपराशनुं आगमिक क्षेत्र पण कांइ हेमचंद्रना ध्यान बहार छे एम नथी.

सार आ छे के, आचार्य हेमचंद्रे पोताने उद्भवेला जैन आगमोनी भाषाने लगता प्रश्नो खुलासो आम बे रीते करी बताव्यो छेः

एक तो जैन आगमोनी कहेवाती अर्धमागधीने पोतानी कृतिमां खास जुदुं स्थान नहि आपीने. बीजुं, एमां जोइए तेटला प्रमाणमां मागधीनी विशेषताओ न होवानुं जणावीने.

'आ आगमोनी भाषा अर्धमागधी नथी पण प्राकृत के आर्षप्राकृत छे' एम स्पष्ट शब्दोमां कहेवा जेवुं जैन समाजनुं वातावरण अत्यारे पण नथी तो संप्रदाय भक्तिना बारमा सैकामां तो शी रीते होय? छतां य एक जवाबदार अने प्रामाणिक वैयाकरण तरीके आचार्य

हेमचंद्रे उपर्युक्त सादी हकीकतने पण आगळ जणावेली भंगिए आबाद रीते जणावेली छे अने साथे वृद्धप्रवादना अनुसंधाननी युक्ति पण बतावेली छे. आ संबंधमां एमनो आखो उल्लेख आ प्रमाणे छे: "यदपि 'पोराणमद्धमागहभासानिययं हवइ सुत्तं'[1] इत्यादिना आर्षस्य अर्धमागधभाषानियतत्वमाम्नायि वृद्धैस्तदपि प्रायोऽस्यैव विधानात् न वक्ष्यमाणलक्षणस्य"

(प्राकृत व्या० पृ० १५९ सू० २८७)

१. आ उल्लेख निशीथचूर्णिमां छे. जुओ लिखित प्रति पा० ३५२ पूना भां० प्रा० वि०मं० सं०. ए उल्लेखमांना 'अद्धमागह' शब्दनी व्याख्या करतां श्रीजिनदास महत्तरे जणाव्युं छे के; "मगहद्धविसयभासानिबद्धं अद्धमागहं" अथवा "अट्ठारसदेसीभासाणियतं अद्धमागधं" अर्थात् एमणे 'अर्धमागध' शब्दनी बे व्याख्या करी छे: पहेली—मगध देशनी अडधी भाषामां नियत ते अर्धमागध. बीजी—अढार जातनी देशी भाषामां नियत ते अर्धमागध.

वर्तमान आगमोनी भाषामां पहेली व्याख्या तो घटती नथी एम हेमचंद्र पोते कहे छे.

बीजी व्याख्या पण जो आगमोनी भाषामां घटी शके तेवी होत तो जरूर तेने प्रधानपद आपी आचार्य हेमचंद्र ए विषे कांइक जुदुं लखत अने ए रीते वृद्धप्रवादनुं ज समर्थन करत. पण ए प्रखर वैयाकरण ए व्याख्या तरफ उदासीन रह्या छे, एथी जणाय छे के, ए व्याख्या पण आगमोनी भाषामां घटती नहि होय अथवा ए व्याख्यामां कहेला अढार देश क्या समजवा? ए प्रश्न ज गुंचवाळो छे.

राजकुमारोना विद्याध्ययनना प्रसंगमां 'अट्ठारसदेसीभासाविसारए' शब्द जैन सूत्रग्रंथोमां मळे छे. त्यां तेनो अर्थ 'अढार (जातनी) देशी भाषामां विशारद' थाय छे. ए शब्दना संबंधमां ए सिवाय बीजी

कशी वीगत टीकाकारोए आपी नथी तेम अढार जातनी देशी भाषाने अर्धमागधी तरीके ओळखावी पण नथी.

'अट्ठारसदेसीभासाविसारए' नो उल्लेख ज्ञातासूत्रमां अने औपपातिक सूत्रमां मळे छे:

"तते णं से मेहे कुमारे बावत्तरिकलापंडिए*अट्ठारसविहिप्पगारदेसीभासाविसारए"

ज्ञातासूत्र पृ० ३८ समिति
ठीका पृ० ४२ ,,

"त्यार पछी ते मेघ कुमार बोंतेर कळामां प्रवीण थयो अने अढार प्रकारनी देशी भाषामां निपुण थयो"

[टीकाकारना मत प्रमाणे 'अढार जातनी भाषामां नहिं पण अढार जातनी लिपिमां' प्रवीण थयो. आ अढार जातनी लिपिनो उल्लेख प्रज्ञापना सूत्रमां अने नंदीसूत्रमां मळे छे]

"तए णं से दढपइण्णे दारए बावत्तरिकलापंडिए* अट्ठारसदेसीभासाविसारए"

औपपातिक सूत्र पृ० ९८ समिति

"त्यार पछी ते दढप्रतिज्ञ नामनो कुमार बोंतेर कळामां प्रवीण थयो अने अढार प्रकारनी देशी भाषामां निपुण थयो"

सूत्रना ए उल्लेखो जोतां अढार देशने लगती आपणी ए गुंच उकली शकती नथी पण एटलुं कल्पी शकाय छे के, कदाच आ उल्लेखोने जोइने ज श्रीजिनदास महत्तरे पोतानी चूर्णिमां अढार जातनी देशी भाषाने 'अर्धमागधी' नुं नाम आप्युं होय.

श्रीहरिभद्रना विद्यार्थी अने समसमयी तथा श्रीशीलांक अपर नाम तत्त्वादित्यना शिष्य श्रीदाक्षिण्यचिह्नसूरिए बनावेली 'प्राकृत कुवलयमाला' ने जोतां अढार देशने लगती आपणी ए गुंच कदाच उकली शके,

पण याद राखवुं जोइए के; प्रस्तुत अर्धमागधीनी चर्चा साथे कुवलय-मालामां आवता अढार देशने लगता ए उल्लेखनो कशो ज संबंध नथी.

कुवलयमालामां ए देशोनी गणना आ प्रमाणे करेली छे:

" लाडा कन्नाडा वि य
मालविया कन्नुज-गोल्लया ।
करय मरहट्ठ य सोरट्ठा ढक्का
किरि अंग सेंधवया ॥ "

कु० लि० प्रति पृ० ७५

" लाटदेश, कर्णाटकदेश, मालवदेश, कनोजदेश, गोल्लदेश, करय (कारवाड ?) देश, महाराष्ट्रदेश, सोरठदेश, ढक्कदेश, किरदेश, अंगदेश अने सिंधदेश "

पेली बाजु पं० ५ पूना भां० प्रा० वि० मं० सं०

आ उल्लेखमां मात्र बार देशोने गणाववामां आव्या छे परंतु आ पछीना एक बीजा उल्लेखमां (पृ० ७६) एथी वधारे देशोने मूकेला छे. आ नीचेना उल्लेखमां देशोनां नामो साथे तेने देशना मनुष्योनो स्वभाव अने भाषाना एक बे शब्दोने पण मूकवामां आव्या छे अने छेवटे उपसंहारमां जणावेलुं छे के,

" इय अट्ठारसदेसी-
भासाउ पुलइऊण सिरिदत्ते ।
अन्ने इ य पुलएती जवस-पारस-
बब्बरातीए ॥ "

" ए प्रमाणे श्रीदत्त नामनो कोइ गृहस्थ अढार देशनी भाषाओने जोइने (सांभळीने) बीजाओनी पण—एटले अनार्यो पैकी जवस, पारस अने बर्बर लोकोनी पण—भाषाने जुए छे (सांभळे छे) "

ग्रंथकारे उपसंहारमां आम अढार देशी भाषानो उल्लेख कर्यो छे अने देशोनी गणनाना प्रसंगमां मात्र सोळ देशो ज जणावेला छे तेनुं कारण समजातुं नथी.

जे उल्लेखमां ए देशोने जणावेला छे ते उल्लेख आ प्रमाणे छे:

"तत्थ य पविसमाणेणं दिट्ठा अणेयदेसभासालक्खिए देसवणिए। तं जहा--
कसिणा निट्ठुरवयणे बहुकसमर (?) भुंजए अलज्जे य।
'अरडे' त्ति उल्लवंते अह पेच्छइ गोल्लए तत्थ॥
णयनीइसंधिविग्गहपडुए बहुजंपए य पयईए।
'तेरे मेरे आउ' त्ति जंपिरे मज्झदेसे य॥

त्यां प्रवेश करता श्रीदत्ते अनेक देशनी भाषाना जाणकार ते ते देशना वणिकोने जोया. ते जेमके; प्रथम गोल्ल देशना लोकोने जोया, ए लोको निष्ठुर भाषी, काळा, समरभोगी (?) अने निर्लज्ज होय छे तथा 'अरडे' एवुं बोलनारा होय छे. पछी मध्यदेशना लोकोने जोया, ए लोको नय, नीति, संधि अने विग्रहमां चतुर, बहुबोला अने 'तेरे मेरे आउ' एवु बोलनारा होय छे.

नीहरियपोट्ट--दुवन्न--मडहए सुरयकेलितल्लिच्छे।
'एसेले' जंपुल्ले अह पेच्छइ मागहे कुमरो॥
कविले पिंगलनयणे लोयण--कहदिन्नमेत्तवावारे (?)।
'किं ते किं मो' पि य जंपिरे य अंतवेए य॥

पछी मगधना लोकोने जोया, ए लोको दुर्वर्ण, वधेला पेटवाळा, ठिंगणा, सुरतप्रिय अने 'एसेले' एवुं बोलनारा होय छे.

पछी अंतर्वेदिना एटले गंगा जमनानी वच्चेना प्रदेशमां रहेनारा लोकोने जोया, ए लोको वर्णे कपिल, मांजरी आंखवाळा अने 'किं ते किं मो' एवुं बोलनारा होय छे.

उत्तुंगथूलघोणे कणयवन्ने य भारवाहे य।

पछी कीरदेशना लोकोने जोया, ए लोको वर्णे कनकवर्णा, उंची

'सरि पारि' जंपिरे कीरे
कुमारो पलोएइ ॥

अने जाडी नासिकावाळा, भार वहनारा अने 'सरि पारि' एवुं बोलनारा होय छे.

दक्खिन्नदाणपोरुस—विन्नाण-
दयाविवज्जियसरीरे ।
'एहं तेहं' चवंते ढक्के
उण पेच्छइ कुमरो ॥

पछी ढक्क देशना लोकोने जोया, ए लोको दाक्षिण्य, दान, पौरुष, विज्ञान अने दया विनाना होय छे अने 'एहं तेहं' एम बोलनारा होय छे.

सललियमिउमद्दवए गंधव्व-
पिए सएसगयचित्ते ।
'वंसे दइणो' भणिरे सुहसे
अह सेंधवे दिट्ठे ॥

पछी सिंधना लोकोने जोया, ए लोको उलित, मृदु, गांधर्वप्रिय, स्वदेशपरायण, हसमुखा अने 'वंसे दइणो' एम बोलनारा होय छे.

कवेंजडे (?) य जड्डे बहु-
भोई कढिणपीणरूणंगे ।
'अप्पां तुप्पां' भणिरे अह
पेच्छइ कारुए तत्तो ॥

पछी कारुदेशना लोकोने जोया, ए लोको कपिंजल (?) जड्डु, बहु-भोजी, कठण अने पुष्ट अंगवाळा तथा 'अप्पां तुप्पां' एम बोल-नारा होय छे.

घयलोणियपुट्ठंगे धम्मपरे
संधिविग्गहे निउणे ।
'न उ रे भल्लउं' भणिरे
अह पेच्छइ गुज्जरे अवरे ॥

पछी गूर्जरलोकोने जोया, ए लोको घी अने माखणथी पुष्ट शरीरवाळा, धर्मपरायण, संधि-विग्रहमां निपुण अने 'न उरे भल्लउं' एम बोलनारा होय छे.

ण्हाओलित्तविलित्ते कयसीमंते
सोहियंगत्ते ।

पछी लाटना लोकोने जोया, ए लोको (माथामां) सेंथो

'अम्हं काउं तुम्हं' भणिरे
अह पेच्छइ लाडे ।

तणुसाममडहदेहे कोवणए
माणजीवणे रोद्दे ।
'भाइ य भइणी तुब्भे'
भणिरे अह मालवे दिट्ठे ॥

उक्कडदप्पे पियमोहणे य
रोद्दे पयंगवित्ती य ।
'अडिपांडि रमरे' भणिरे
पेच्छइ कन्नाडए अण्णे ॥

कुप्पासपाउयंगे मासणइ (?)
पाणमयणतल्लिच्छे ।
'असि किसि मणि' भण-
माणे अह पेच्छइ ताइए अवरे ॥
सव्वकलापब्भट्ठे माणी पिय-
कोवणे कढिणदेहे ।
'जल तल ले' भणमाणे
कोसलए पुलइए अवरे ॥
दढमडहसामलंगे सहिए
अह माणकलहसीले य ।
'दिन्नल्ले गहियल्ले' उल्ल-
विरे तत्थ मरहट्ठे ॥

पाडनारा, लेपन करनारा, सुशो-
भित शरीरवाळा अने 'अम्हं काउं
तुम्हं' एम बोलनारा होय छे.

पछी माळवाना लोकोने जोया,
ए लोको, काळा अने नाना शरीर-
वाळा, क्रोधी, अभिमानी, रौद्र
अने 'भाइ य भइणी तुब्भे'
एम बोलनारा होय छे.

पछी कर्णाटकना लोकोने
जोया, ए लोको दर्पवाळा, मोह-
वाळा, रौद्र, चंचळ अने 'आडि-
पांडि रमरे' एम बोलनारा
होय छे.

पछी ताइ लोकोने जोया, ए
लोको कंचुक पहेरनारा अने 'असि
किसि मणि' एम बोलनारा
होय छे.

पछी कोशलदेशना लोकोने
जोया, ए लोको सर्वकलाहीन,
मानी, कोपी अने 'जल तल ले'
एम बोलनारा होय छे.

पछी महाराष्ट्रना लोकोने
जोया, ए लोको शरीरे दृढ,
नाना अने काळा होय छे तथा
स्वहितमां मान–कलहशील अने

हवे ' वर्तमान जैन आगमोने महावीर भाषित समजीने कोई ए आगमोनी ज भाषाने अर्धमागधी कहे अने ए उपरथी ज एनां व्याकरण अने कोष बनावे तो न बनी शके ? ' ए प्रश्ननुं समाधान आचार्य हेमचंद्रे पोतानी कृतिद्वारा अने उपर्युक्त उल्लेखद्वारा पण करी नांख्युं छे एथी आ आगमोनी भाषाने अर्धमागधी समजवी के एम समजी ए विषेनां पुस्तको लखवां ए भाषाना इतिहासमां गोटाळो करवा सिवाय बीजुं शुं होई शके ?

आचार्य हेमचंद्रना पूर्ववर्ती अने अंगसूत्रोना टीकाकार आचार्य अभयदेवे पण अर्धमागधी नाम धरावती भाषाने प्राकृत लक्षणनी बहुलतावाळी जणावी छे. तेमणे लख्युं छे के:

' दिन्नल्ले गहियल्ले ' एम बोलनारा होय छे.

पियमहिलासंगामे सुंदरगोत्ते य
भायणे रोद्दे ।
' अट्टि माटि ' भणंति अवरे
अंध्रे कुमारो पलोएइ ॥

पछी आंध्रना लोकोने जोया, ए लोकोने स्त्री अने संग्राम बन्ने प्रिय होय छे, एमनां गोत्रो सुंदर होय छे, अने ए लोको रौद्र तथा भयंकर अने ' अट्टि माटि ' एम बोलनारा होय छे.

उपरना उल्लेखमां गोल्ल (गौड ?), मध्यदेश, मगध, अन्तर्वेदि, कीर, ढक्क, सिंध, कारु (कारवाड), गूर्जर, लाट, मालव, कर्णाटक, ताइअ (?) कोशल, महाराष्ट्र अने आंध्र एम सोळ देशोने जणावेला छे.

कुवलयमालानो आ उल्लेख अहीं एटला माटे आप्यो छे के, एमां ए देशोनी गणना ए रीते करेली छे. (आचार्य जिनविजयजीनी एक नोंधद्वारा आ उल्लेखने हुं ' कुवलयमाला 'मांथी मेळवी शक्यो छुं)

" ' र–सो–र्लशौ मागध्याम् ' इत्यादि यत् मागधभाषालक्षणं तेन अपरिपूर्णा प्राकृतभाषालक्षणबहुला अर्धमागधी "

(औपपातिक टीका पृ० ७८ समिति)

अभयदेवे आगमोनी भाषा उपरथी नक्की करेलुं अर्धमागधीनुं स्वरूप जोतां तो ' अर्धमागधी ' नाम ' देवादार 'नां ' रणछोड ' (ऋणने छोडनार) नाम जेवुं लागे छे. तेओ साफ साफ कहे छे के, आगमोनी भाषा प्राकृतलक्षणनी बहुलतावाळी छे अने एक लक्षण सिवाय मागधीनां बीजां खास लक्षणोने एमां कांइ स्थान नथी, एथी ज वांचनार समजी शकशे के, वर्तमान आगमोनी भाषाने अर्धमागधी कहेवी के प्राकृत कहेवी ?

' आगमो प्राकृत छे ' ए मत तो आज घणा समयथी चाल्यो आवे छे अने हेमचंद्र अने अभयदेव करतां य प्राचीन अने प्रामाणिक आचार्योए ए मतने स्वीकारेलो छे.

ए संबंधमां आचार्य हरिभद्र जणावे छे के,

[1]" प्राकृतनिबन्धोऽपि बालादिसाधारणः " इति

---

१ दशवैकालिकनी टीकामां जे प्रसंगे आचाय हरिभद्रे आ उल्लेख कर्यो छे ते प्रसंग आ छेः

" दर्शनाचारना आठ प्रकार छे, तेमां पेहेलो प्रकार निःशंकित रहेवुं ते, ' निःशंकित 'नुं विवरण करतां कह्युं छे के, शंकाना बे प्रकार छे–सर्वशंका अने देशशंका. सर्वशंका एटले सर्व प्रकारे शंका अने देशशंका एटले अंशथी शंका. तेमां ' सर्वशंका 'नुं स्वरूप बतावतां जणाव्युं छे के,

" सर्वशङ्का तु प्राकृतनिबद्धत्वात् सर्वमेवेदं परिकल्पितं भविष्यतीति ।"

अर्थात् 'प्राकृत भाषामां रचेलुं होवाथी आ बधुं य बनावटी केम न होय ?' आवी जे जिनागम प्रत्ये शंका करवी ते सर्वशंका, आनुं समाधान करतां हरिभद्रे उपर्युक्त उल्लेखने टांकी बताव्यो छे.

आटलुं लख्या पछी ए आचार्यवर "उक्तं च" कहीने पोताना उल्लेखना पोषणमां एक जूना संवादने टांकी बतावे छे–

"बालस्त्रीमूढमूर्खाणां नृणां चारित्रकाङ्क्षिणाम्।
अनुग्रहार्थं तत्त्वज्ञैः सिद्धान्तः प्राकृतः कृतः ॥"

(दशवैकालिक टीका पृ० ११३ बाबु०)

आ उपरथी आपणे जोइ शकीए छीए के आपणो आ मत हरिभद्र करतां य जूनो ठरे छे.

जे प्रसंगमां हरिभद्रे उपर्युक्त उल्लेखने मूकेलो छे ते ज प्रसंगमां वादिदेवसूरिना गुरु आचार्य मुनिचंद्र पण ए ज उल्लेखने (हरिभद्रना धर्मबिंदुनी टीकामां) मूके छे. धर्मबिंदु पृ० ७७, द्वितीय अध्याय आत्मानंद सभानी आवृत्ति.

आचार्य मलयगिरि पण प्रज्ञापनानी पोतानी टीकामां एवा ज प्रसंगमां ए ज वातने जणावे छे–प्रज्ञापनासूत्र टीका समितिनुं पृ०६०.

हेमचंद्रनी पछी थयेला आचार्यो द्वारा पण ए ज मतने टेको आपवामां आव्यो छे—

आचार्य प्रभाचंद्रे बनावेला अने श्रीप्रद्युम्नसूरिए शोधेला प्रभावकचरित्रमां (पृ० ९८–९९) जणाव्युं छे के,

"अन्यदा लोकवाक्येन जातिप्रत्ययतस्तथा ।
आ बाल्यात् संस्कृताभ्यासी कर्मदोषात् प्रबो(बा)धितः॥१०९

---

१ उपरना बधा उल्लेखोमां वपराएलो 'प्राकृत' शब्द प्राकृतभाषानो सूचक छे, अनुयोगद्वारसूत्रमां 'प्राकृत' शब्द प्राकृतभाषाना अर्थमां वपराएलो छे. (पृ० १३१ स०) वैयाकरण वररुचिना समयथी तो ए शब्द ए अर्थमां वपरातो आव्यो छे, अने ए पछीना आचार्योए पण ए शब्दने ए ज अर्थमां वापरेलो छे. माटे कोइए अहीं ए शब्दने भरडवो नहि.

सिद्धान्तं संस्कृतं कर्तुमिच्छन् संघं व्यजिज्ञपत् ।
प्राकृते केवलज्ञानिभाषितेऽपि निरादरः ॥ ११०

+ + +

यदि (इदं) विश्रुतमस्माभिः पूर्वेषां संप्रदायतः ।
चतुर्दशापि पूर्वाणि संस्कृतानि पुराऽभवन् ॥ ११४
प्रज्ञातिशयसाध्यानि तान्युच्छिन्नानि कालतः ।
अधुनैकादशाङ्गयस्ति सुधर्मस्वामिभाषिता ॥ ११५
बालस्त्रीमूढमूर्खादिजनानुग्रहणाय सः ।
प्राकृतां तामिहाऽकार्षीदनास्थाऽत्र कथं हि वः " ॥ ११६

अर्थात् " सिद्धसेन दिवाकर नामना सुप्रसिद्ध जैनाचार्ये **प्राकृत** जैन आगमोने **संस्कृत**मां करवानी इच्छा करी " आटलुं जणावी ग्रंथकार पोताना तरफथी वधु जणावतां कहे छे के, " बाल, स्त्री, अने मूर्ख वगेरेनी सगवडताने माटे पूर्व पुरुषोए–सुधर्मस्वामिए–ए आगमोने प्राकृतमां रच्यां छे, तो एमां आपणे शामाटे अनास्था करवी ?"

" यत उक्तमागमे " अर्थात् ' आगममां कह्युं छे के ' एम लखीने श्रीविजयानंदसूरि पोताना तत्त्वनिर्णयप्रासादमां जणावे छे के,

मुत्तूण दिट्ठिवायं कालिय–उक्कालियंगसिद्धंतं ।
थीबालवायणत्थं पाययमुइयं जिणवरेहिं ॥

अने साथे हरिभद्रे उद्धरेलो श्लोक पण टांके छे. (खरी रीते तो आ प्राकृत गाथाने हरिभद्रनी पहेलां ज मूकवी जोइए पण मने एनुं मूळ स्थान न जडवाथी एना उध्धृत करनारना काळक्रममां एने मूकवामां आवी छे.)

अनुयोगद्वार सूत्रमां जणाव्युं छे के,

" सक्कया पायया चेव भणिइओ होंति दोण्णि वा "

(पृ. १३१ समिति)

अर्थात् ' संस्कृत अने प्राकृत बे भाषाओ छे. '

आ उल्लेख गीतनी भाषाना प्रसंगमां छे. आ उपरथी एटलुं तो जरुर तारवी शकाय के, अनुयोगद्वारना समयमां अर्धमागधीने प्राकृतथी जुदी ज गणवामां आवती होत तो सूत्रकार प्राकृतनी साथे ज पोतानी प्रिय अने देवभाषा तरीके प्रसिद्धि पामेली अर्धमागधीने पण सूचववी भूले खरा ?

आ प्रमाणे एक नहि पण अनेक जैनाचार्योए वर्तमान आगमोनी भाषाने स्पष्ट शब्दमां प्राकृत कहेली छे माटे अमे पण अहीं ए ज मतने स्वीकारेलो छे, अने तेथी ज प्रस्तुत व्याकरणमां पण जैन आगमोनां केटलांक विशिष्ट रूपोने प्राकृतना व्याकरण साथे ज नोंधेलां छे.

आ तो जैनाचार्योनी ज दृष्टिए आगमोमां आवेली भाषाना संबंधमां चर्चा थइ, तदुपरांत बीजी त्रण दृष्टिए पण अर्धमागधी भाषानी चर्चा थइ शके छे. तेमां–

पहेली दृष्टि भरतना नाट्यशास्त्रनी,
बीजी दृष्टि प्राकृत भाषानां व्याकरणोनी
अने त्रीजी दृष्टि अशोकनी धर्मलिपिओनी.

भरतना नाट्यशास्त्रमां कह्युं छे के,

" चेटानां राजपुत्राणां श्रेष्ठिनां चार्धमागधी "

भरतना० अध्याय १७ श्लो० ५०

नाटकोमां पात्र तरीके आवता चेटो, राजपुत्रो अने शेठियाओ अर्धमागधी भाषा बोले छे. भरतना आ उल्लेखथी आपणे नाटकोनां ते ते पात्रोनी भाषाद्वारा अर्धमागधीना स्वरूपने कळी शकीशुं.

नाटकोनी भाषाना नमूना—

(भासनुं प्रतिज्ञायौगंधरायण)

भटः—को काळो अहं भट्टिदारिआए वासवदत्ताए उदए कीळिदु-
कामाए भद्दवदीपरिचारअं गत्तसेवअं ण पेक्खामि । भाव पुप्फ-
दंतअ गत्तसेवअं ण पेक्खामि । किं भणासि एसो गत्तसेवओ
कण्डिळसुंडिगिणीए गेहं पविसिअ सुरं पिबदि त्ति । पृ० १०२

भटः—सव्वं दाव चिट्ठदु राअउळे भद्दपीठिअं ण णिक्कमिअ कुदो
अअं आहिण्डदि त्ति । पृ० १०६

भटः—कि णु खु एवं + होदु, इमं वुत्तंत्तं अमच्चस्स णिवेदेमि ।
पृ० १०६

(भासनुं चारुदत्त)

चेटः—अम्मो अय्यमेत्तेओ ।

चेटः—अम्मो भट्टिदारओ । पृ० ६७

चेटः—सुहौदेसु पादेसु भूमीए पळोट्टिदव्वं । पृ० ६८

(भासनुं स्वप्नवासवदत्त)

भटौ—उस्सरह उस्सरह अय्या उस्सरह । पृ० ८

चेटी—एदु एदु भट्टिदारआ इदं अस्समपदं पविसदु । पृ० १९

चेटी—अत्थि राओ पज्जोदो णाम उज्जइणीए सो दारअस्स कारणादो
दूदसंपादं करेदि पृ० १७

(शूद्रकनुं मृच्छकटिक)

चेटः—अज्जुए चिश्ट, चिश्ट ।

उत्ताशिता गच्छशि अंतिका मे
शंपुण्णपुच्छा विअ गिम्हमोरी ।
ओवग्गदी शामिअ भश्टके मे ।
वणे गडे कुक्कुरशावके व्व ॥ पृ० २७

चेटः—लामेहि अ लाअवल्लहं तो खाहिशि मच्छमंशकं ।

एदेहिं मच्छमंशकेहिं शुणआ मडअं ण शेवंदि ॥ पृ० ३१

आ बधी भाषा चेटोनी छे.

राजपुत्रनी भाषा आ प्रमाणे छेः

(काळीदासनुं शाकुंतल)

बालः—जिंभ जिंभ दंदाणि ते गणइस्सं पृ० २९९

बालः—बुलिअं भीद म्हि पृ० २९६

बालः—इमिणा एव्व दाव कीळिस्सं पृ० २९८

हवे शेठियाओनी भाषानो नमुनो—

(शूद्रकनुं मृच्छकटिक)

चन्दनदासः—जेदु अज्जो

चन्दनदासः—किं ण जाणादि अज्जो जह अणुचिदो उवआरो परिहवादो वि महंतं दुःखं उप्पादेदि । ता इह य्येव उचिदाए भूमीए उवविसामि ।

चन्दनदास—अह इं अज्जस्स प्पसाएण अखण्डिदा वणिज्जा । पृ० १४

चन्दनदासः—आणवेदु अज्जो किं केत्तिअं इमादो जणादो इच्छीअदि त्ति ।

चन्दनदासः—अज्ज अलिअं एदं केणवि अणज्जेण अज्जस्स णिवेदिदं । पृ० १९

चन्दनदासः—फलेण संवादिदं सोहदि दे विकत्थिदं । पृ० १७

नाट्यशास्त्रकार भरतना उल्लेख प्रमाणे चेट, राजपुत्र अने शेठनी भाषाने अर्धमागधी कहेवामां आवे छे. एना नमुना उपर आपवामां आव्या छे. उपरना नमुनानी भाषा साथे आपणे आगमोनी भाषाने सरखावीए तो केवळ सांभळवा मात्रथी ज शुं नथी जणातुं के,

ए नाटकोनां पात्रोनी भाषामां अने आगमोनी भाषामां केटलो बधो तफावत छे ?

हवे आपणे जोईए के, प्राकृत व्याकरणोनी दृष्टिए आगमोनी भाषाने अर्धमागधीनुं नाम आपी शकाय के केम ?

प्राकृत व्याकरणो तो घणां छे, ए बधांनां नामो पण हवे पछी आपवानां छे. बधां प्राकृत व्याकरणोमां वररुचिनो प्राकृतप्रकाश वधारे प्राचीन छे. एमां 'मागधी' नी प्रकृति तरीके शौरसेनीने कही छे अने शौरसेनी करतां जे विशेषता छे ते आ प्रमाणे बतावी छे:—

१ मागधीमां 'ष' अने 'स' ने बदले 'श' बोलवो.
२ ,, 'ज' ने बदले प्रायः 'य' बोलवो.
३ ,, चवर्गना कोइ अक्षरनो लोप न करतां जेम होय तेम ज बोलवुं.
४ ,, 'र्य' अने 'द्य' नो 'य्य' बोलवो.
५ ,, 'क्ष' ने बदले 'स्क' बोलवो.
६ ,, अकारांत शब्दना प्रथमाना एक वचनमां 'इ' अने 'ए' प्रत्यय वापरवो.
७ ,, मागधीमां अकारान्त भूतकृदंतना प्रथमाना एक वचनमां उपरना बे प्रत्ययो उपरांत 'उ' प्रत्यय पण वापरवो.
८ ,, षष्ठीना एकवचनमां 'ह' प्रत्यय वापरवो.
९ ,, संबोधनना एकवचनमां अन्त्य 'अ' नो 'आ' करवो.
१० ,, 'स्था' ने बदले प्राकृतमां वपराता 'चिट्ठ' ना स्थानमां 'चिष्ठ' धातु वापरवो.

११ „ ' कृत ' ने बदले ' कड ' ' मृत ' ने बदले 'मड' अने ' गत ' ने बदले ' गड ' रूपो वापरवां.

१२ „ संबंधक भूतकृदंतने सूचववा ' त्वा ' प्रत्ययने बदले ' दाणि ' प्रत्यय वापरवो.

१३ „ ' हृदय ' ने बदले ' हडक्क, ' ' अहं ' ने बदले ' हके ' ' हगे ' ' अहके ' अने ' शृगाल ' ने बदले 'शिआल' तथा 'शिआलक' शब्दो वापरवां.

वररुचिए बतावेलुं मागधीनुं स्वरूप उपर प्रमाणे छे, आ सिवाय शौरसेनीना जे नियमो वररुचिए आपेला छे तेमांना निरपवाद नियमो मागधीमां पण उमेरी लेवाना छे[1]. आगमोनी[2] भाषाने जोतां तेमां फक्त वररुचिए बतावेली ६ ट्ठी विशेषतानो ५ अमुक अंश (' ए ' नी वपराश) जोवामां आवे छे, तो मागधीना एक ज अंशनी वपराशने लीधे आगमोनी भाषा अर्धमागधी कहेवाय के नहि ? ए साक्षरो ज विचारी ले.

'वर्तमान आगमोनी भाषामां मागधीभाषानुं स्वरूप केटले अंशे देखाय छे?' ए प्रश्ननी परीक्षा करतां आपणे भास वगेरेनां नाटको जोयां, प्राचीन वैयाकरण वररुचिने तपास्यो. हवे अशोकनी धर्म-लिपिओनी भाषाने पण आपणे जोइ जइए. ए लिपिओनी भाषाने 'कई भाषा कहेवी ?' ए प्रश्न हजी विवादग्रस्त छे तो पण एने 'प्राचीनमागधी' कहेवामां कांइ दोष जणातो नथी—बौद्धोनां त्रिपि-

---

१ मागधीने लगतुं स्वरूप अने उदाहरणो माटे जुओ प्राकृत-प्रकाश पृ० १२८ थी १३२ तथा १३२ थी १३७ अथवा ११ मो परिच्छेद अने बारमो परिच्छेद.

२ आगमोनी भाषानां उदाहरणो माटे जूओ "जैन आगम साहित्यनी मूळ भाषा कइ ' ए लेख (जैन साहित्यसंशोधक पु० १ अं० १ पृ० ३१ थी ३७)

टकनी भाषा ए लिपिओनी साथे सरखामणीमां आवी शके एवी छे. त्रिपिटकमां पण 'मागधी' भाषानो उपयोग थयानुं नीचेनी गाथा जणावे छे[1].

अशोकनी धर्मलिपिओमां वपराएली भाषानुं बंधारण तपासतां आ नीचे जणावेला मुख्य नियमो उपजी शके छे:

१ अद्विर्भाव (वर्णनुं नहि बेवडावुं)

'संयुक्त अक्षर अनादिमां होय अने संयुक्त अक्षरमांनो एक अक्षर लोपाय त्यारे जे शेष अक्षर होय छे ते बेवडाय छे अथवा संयुक्त अक्षरनी पहेलांनो ह्रस्व स्वर दीर्घ थाय छे'

प्राकृत भाषाओनो आ एक साधारण नियम छे. अशोकनी धर्मलिपिओनी भाषामां ए नियम क्वचित् ज सचवाएलो जोवाय छे पण जैन आगमोनी भाषामां प्राकृतना नियम प्रमाणे ए नियम बराबर सचवाएलो छे.

लिपिओनी भाषामां वपराएलां एवां द्विर्भाव विनानां अने दीर्घस्वर विनानां रूपो[2] आ प्रमाणे छे:

लिपिओनी भाषा	आगमभाषा	संस्कृतरूप
अप	अप्प	अल्प
कप	कप्प	कल्प

१ "सा मागधी मूलभासा नरा यायाऽऽदिकप्पिका ।
ब्रह्मुना चस्सुतालापा संबुद्धा चापि भासरे" ॥

२ आमां अशोकनी धम्मलिपिमांथी जे रूपो आप्यां छे ते उदाहरण रूपे छे, एने मळतां बीजां अनेक रूपो छे. पण बधा अहीं विस्तार भयथी आप्या नथी. बीजी ए एक वात लक्ष्यमां राखवानी जरुर छे के, अशोकना प्रान्तीय पाठ भेद पण केटलेक ठेकाणे छे; जो के में बने त्यां सुधी सर्व साधारण रूपो लेवानो प्रयत्न कर्यो छे.

युत	जुत्त	युक्त
निखम	निक्खम	निष्क्रम
कलाण	कल्लाण	कल्याण

२ 'र' नो वैकल्पिक 'ल'

अशोकनी लिपिओमां 'र' ना स्थाने सर्वत्र 'ल' नो प्रयोग वैकल्पिक रीते थएलो देखाय छे त्यारे जैन आगमोमां प्राकृत भाषाना धोरणनी पेठे 'र' नो ज प्रयोग कायम रहेलो छे:

लि०	आ०	सं०
आदिकले आदिकरे	आइकरे आइगरे	आदिकर:
परिसा पलिसा	परिसा	पर्षत्
चरणं चलनं	चरणं	चरणम्
हिलंन हिरंण	हिरण्ण	हिरण्य
मरणं मलने	मरणं	मरणम्

३ अनादि—असंयुक्त व्यंजननो लोप

अशोकनी धर्मलिपिओमां अनादि–असंयुक्त क, ग, च, ज, त, द, प, ब, म अने व लोपाता नथी त्यारे आगमोनी भाषामां प्राकृत भाषानी पेठे ए बधा अक्षरो लोपाएला छे:

लि०	आ०	सं०
सुकतं	सुकयं	सुकृतम्
मिगे	मिए	मृग:

उचावुचछंदो	उच्चावयच्छंदो	उच्चावचच्छन्दः
समाजसि	समायम्मि	समाजे
एते	एए	एते
विवादे	विवाओ	विवादः
पापुनाति	पाउणइ	प्राप्नोति
		वगेरे

४ श, स, ष नो उपयोग

अशोकनी धर्मलिपिओमां श, ष, अने स नो उपयोग थएलो छे त्यारे आगमनी भाषामां प्राकृत भाषानी पेठे मात्र एक 'स' नो ज उपयोग थएलो छे:

लि०	आ०	सं०
पशु पसु	पसु	पशु
शत सत	सय	शत
दोस दोष	दोस	दोष
ओषढिनि ओसघानि	ओसहाणि	औषधानि
सार शाल	सार	सार
पंचसु पंचषु	पंचसु	पञ्चसु

५ विजातीय संयुक्त व्यंजननी वपराश

अशोकनी धर्मलिपिओमां विजातीय संयुक्त व्यजनोनी वैकल्पिक वपराश घणी छे त्यारे जैन आगमोनी भाषामां प्राकृत भाषाना बंधारण प्रमाणे ए वपराश ज नथी.

लि०	आ०	सं०
प्राण पान	पाण	प्राण
दिव्यानि दिवियानि	दिव्वाइं	दिव्यानि
सेठे सेस्टे	सेट्ठे	श्रेष्ठः
अस्ति अत्थि	अत्थि	अस्ति
सहसानि सहस्रानि	सहस्साइं	सहस्राणि
पुत्र पुत	पुत्त	पुत्र
मित मित्र	मित्त	मित्र
नास्ति नथि	नत्थि	नास्ति
समण श्रमण	समण	श्रमण वगेरे

६ 'ख' 'थ' 'ध' 'भ' नो ह

अशोकनी धर्मलिपिओमां 'ख' 'थ' 'ध' अने 'भ' कायम

रहे छे त्यारे जैन आगमोनी भाषामां प्राकृत भाषा प्रमाणे ए चारेने स्थाने 'ह' थएलो छे:

लि०	आ०	सं०
लिखित	लिहिअ	लिखित
सुख	सुह	सुख
यथा	जहा	यथा
तथा	तहा	तथा
बहुविध	बहुविह	बहुविध
वध	वह	वध
साधु	साहु	साधु
आलभितु	आलहिउ	आलभताम्
		वगेरे

७ 'न' नो 'ण'

अशोकनी धर्मलिपिओमां 'न' नो 'ण' नथी थएलो त्यारे जैन आगमोनी भाषामां प्राकृतना नियम प्रमाणे 'न' नो 'ण' थएलो छे:

लि०	आ०	सं०
देवानं	देवाणं	देवानाम्
पियेन	पियेण	प्रियेण
अनुदिवसं	अणुदिवसं	अनुदिवसं
बहूनि	बहूणि	बहूनि
दानं	दाणं	दानम्
महानसासि	महाणसांसि	महानसे

८ 'ण' नो न

अशोकनी धर्मलिपिओमां 'ण' ने स्थाने 'न' पण वपराएलो छे त्यारे आगमोनी भाषामां तेम नथी जणातुं:

लि०	आ०	सं०
गननासि गणनसि }	गणने	गणने

९ 'त' नो ट

अशोकनी धर्मलिपिओमां एकला 'त' नो के संयुक्त 'त' नो 'ट' थएलो छे त्यारे जैन आगमोनी भाषामां ए स्थळे प्राकृतनी प्रक्रिया प्रमाणे एकला 'त' नो 'ड' थएलो छे अने संयुक्त 'त' नो 'त्त' थएलो छे:

लि०	आ०	सं०
पटिवेदना	पडिविंअणा	प्रतिवेदना
पटिपाति	पडिवात्ति	प्रतिपत्ति
कट	कड, कय	कृत
मट	मड, मय	मृत
कटव कटविय }	कायव्व	कर्तव्य
किति किटी }	कित्ति	कीर्त्ति वगेरे

१० 'प' नो व

अशोकनी धर्मलिपिओमां 'प' नो 'व' नथी थएलो पण जैन आगमोनी भाषामां प्राकृतनी पेठे 'प' नो 'व' थएलो छे:

लि०	आ०	सं०
लिपि	लिवि	लिपि
कूपा	कूवा	कूपाः
पापं	पावं	पापम्

प्रेरक प्रक्रिया ना प्रत्ययो	आप आपे	आव आवे	
	सामीपं	सामीवं	समीपम्
			वगेरे

११ 'द्य' नो य

अशोकनी धर्मलिपिओमां 'द्य' नो 'य' थएलो छे त्यारे जैन आगमोनी भाषामां प्राकृतनी पद्धति प्रमाणे 'द्य' नो 'ज्ज' करवामां आवेलो छे:

लि०	आ०	सं०
उयान	उज्जाण	उद्यान
उयाम	उज्जम	उद्यम

१२ 'ञ' नो उपयोग

अशोकनी धर्मलिपिओमां 'न्य,' 'ण्य' अने 'ज्ञ' ने स्थाने 'ञ' नो पण उपयोग थएलो छे त्यारे जैन आगमोनी भाषामां ए त्रणेने स्थाने प्राकृतनी प्रमाणे 'न्न,' 'ण' के 'ण्ण' नो ज व्यवहार थएलो छे:

लि०	आ०	सं०
हञंति	हणंति, हन्नंति	घ्नन्ति
मञति मनति	मन्नइ	मन्यते
अञ अन	अण्ण, अन्न	अन्य
हिरञ	हिरण्ण	हिरण्य
पुञ पुन	पुन्न, पुण्ण	पुण्य

ञाति नाति	नाइ	ज्ञाति
रञो	रण्णो	राज्ञः
		वगेरे

१३ ति अने तु

अशोकनी धर्मलिपिओनां क्रियापदोमां 'ति' अने 'तु' प्रत्ययो वपराएला छे त्यारे आगमोनी भाषामां प्राकृतनी शैली प्रमाणे 'इ' अने 'उ' प्रत्ययो वपराएला छे:

लि०	आ०	सं०
भोतु होतु	होउ	भवतु
होति भाति	होइ	भवति
कलेति	करेइ	करोति
		वगेरे

१४ त्य नो च

अशोकनी धर्मलिपिओमां 'त्य' नो 'च' वैकल्पिक रीते वपराएलो छे त्यारे आगमोनी भाषामां प्राकृतना धोरण प्रमाणे 'त्य' नो 'च' ज करवामां आवेलो छे:

लि०	आ०	सं०
सातिय- सतिय-	सच्च	सत्य
आचायिक अतियायिक	अच्चइअ	आत्यायिक
निच	निच्च	नित्य

चज तिज	चय	त्यज
		वगेरे

१५ नामने लगता प्रत्ययो

	लि०	आ०
प्रथमाना एकवचननो प्रत्यय—	ए	ए
	ओ	ओ
चतुर्थीना एकवचननो प्रत्यय—	य	
	ये	ए
स्त्रीलिंगी नामने लगता तृतीयाथी सप्तमी सुधीना प्रत्ययो—	य	
	या	
	ये	ए

१६ 'राजन्' नां रूपो

अशोकनी धर्मलिपिओमां 'राजन्' शब्दनां जे जातनां रूपो मळे छे तेमांनुं एक रूप पण आगमोनी भाषमां मळतुं नथी. जे मळे छे ते बधां प्राकृतनां धोरणे सधाएलां छे:

लि०	आ०	सं०
लाजा	राया	राजा
लाजानो राजानो	रायाणो	राजानः

लाजिना राञा	रण्णा	राज्ञा
लाजिने लाजाने	रण्णो	राज्ञे
रञो राञो	रण्णो	राज्ञः

आ उपरांत--

ए धर्मलिपिओमां अनादि 'ट' नो 'ट' ज रहेलो छे (घटिते) त्यारे जैन आगमोनी भाषामां प्राकृत प्रमाणे 'ट' ने बदले 'ड' थएलो छे (घडिए)

ए धर्मलिपिओमां 'अहं' ने बदले 'हकं' रूप पण वपराएलुं छे त्यारे आगमोनी भाषामां क्यांय ए रूपनो उपयोग ज नथी थएलो.

आ रीते अशोकनी धर्मलिपिओनी प्राचीन मागधीनुं स्वरूप पण वर्तमान आगमोनी भाषामां एने अर्धमागधी कहेवराववा पूरतुं य घटी शकतुं नथी, ए हकीकत उपर जणावेलां उदाहरणोंथी ज जाणी शकाय एम छे.

ए आगमोनी छेल्ली संकलना थया पहेलां, एमां जेवी भाषा अत्यारे छे तेवी नहि होय ए हकीकत तो आगमोमां रहेलां केटलांक जूनां रूपो उपरथी ज जाणी शकाय एवी छे.

आगमोनी रचनासमयनी भाषाना अने देवर्धिगणिनी संकलनासमयनी भाषाना अंतरने समजवा माटे गूजराती भाषानुं नीचेनुं उदाहरण बस छे:

सं. १७३९ नी भाषा

" समवसरणनुं हुउं रे मंडाण,
माणिक हेम रजत सुप्रमाण ।
सिंहासनीं बईठा जिनवीर,
दिइं देशना अरथ गंभीर ॥

विद्युनमाली सुर तिहां आवइ,
जिन वांदी आनंद बहु पावइ ।
चरम केवली कुण प्रभु थास्यइ,
श्रेणिक पूछइं मन उल्लासइ ॥

प्रभु कहइ सुणि श्रेणिक नृपचंद,
ब्रह्मलोक सामानिक इंद ।
चउदेवीयुत विद्युनमाली,
सातमेइं दिनि एचवी शुभशाली ॥

ऋषभदत्तसुत तुज पुर ठामइं,
चरम केवली जंबू नामइं ।
होस्यइ ते सुणि देव अनाढी,
हरषइ परखइं निज कुल आढी[1] ॥"

(यशोविजयजीए रचेली अने तेमनी हस्तलिखित प्रतिमांथी उतारेली)

सं. १९४४ नी भाषा

समवसरणनो हुओ रे मंडाण,
माणिक हेम रजत सुप्रमाण ।
सिंहासन बेठा जिन वीर,
दीए देशना अर्थ गंभीर ॥

विद्युन्माली सुर तीहां आवे,
जिन वंदी आनंद बहु पावे ।
चरमकेवली कुण प्रुभ थाशे,
श्रेणिक पूछे मन उल्लासे ॥

प्रुभ कहे सुण श्रेणिक नृपचंद,
ब्रह्मलोक सामानिक इंद ।
चउदेवीयुत विद्युन्माली,
सातमे दिने एचवी शुभशाली ॥

ऋषभदत्तसुत तुज पुर ठामे,
चरम केवली जंबू नामे ।
होस्ये ते सुणी देव अनादी,
हरखे परखी निजकुल आढी ॥"

(यशोविजयजीए रचेली अने जंबुस्वामिना रासनी चोपडी-मांथी उतारेली)

---

१ जूओ छट्ठी गूजराती साहित्यपरिषदनो रिपोर्ट पृ० ५२ मुनि कल्याणविजयजीनो निबंध.

उपर आपेली कविता एक ज कर्तानी छे, छतां एमां काळभेदने लीधे केवो फेरफार थएलो छे, ए, जाडा अक्षरोमां मूकेलां रूपो उपरथी जणाइ आवे छे.

जो के २० मा सैकानी असरथी रूपांतर पामेली ए कवितामां १८ मा सैकानी कविनी भाषानां केटलां य रूपो जळवाइ रह्यां छे तो पण रूपांतर पामेली ए कवितानी भाषाने कांइ १८ मा सैकानी नहि कहेवाय तेम १८ मा सैकानी भाषाथी मिश्रित पण नहि कहेवाय ते ज रीते श्री वीरना १००० मा सैकामां रूपांतरने पामेला ए आगमोमां भगवान महावीरना समये रचाएला आगमोनी भाषानां केटलां य रूपो जळवाइ रह्यां होय तो पण ए वीरना १००० मा सैकामां रूपांतरने पामेला आगमोनी भाषाने कांइ वीरना समयनी भाषा नहि कहेवाय तेम वीरना समयनी भाषाथी मिश्रित पण नहि कहेवाय. तात्पर्य ए छे के, भास वगेरे प्राचीन कविओनी, वररुचिनी अने छेवट अशोकनी धर्मलिपिओनी मागधी भाषानुं थोडुं घणुं पण स्वरूप वर्तमान आगमोमां रहेलुं होय तेम जणातुं नथी तो पछी आगमोनी भाषाने 'अर्धमागधी' नाम कइ रीते अपाय?

अत्यार सुधी तो आपणे 'अर्धमागधी' ना संबंधमां पुरातन ग्रंथ, लेख अने व्याकरणने आधारे विचार कर्यो, पण हवे ए संबंधमां आधुनिक ग्रंथकारोनो अभिप्राय पण जोइ लइए:

फक्त मार्कंडेय अने क्रमदीश्वर सिवाय बीजा कोइ अर्वाचीन वैयाकरणे अर्धमागधीना स्वरूपने लगतो कांइ उल्लेख कर्यो जणातो नथी.

मार्कंडेय कहे छे के:—

"शौरसेन्या अदूरत्वाद् इयमेवार्धमागधी ॥

प्राकृतसर्वस्व पृ० १०३

आम लखीने ए ज ग्रंथकार अर्धमागधीना उदाहरण तरीके आ वाक्य आपे छे—

" अय्ज वि णो शामिणीए हिलिम्बादेवीए पुश्तघड्डुकअशोए ण उवशमदि " (वेणीसंहार तृतीय अंक)

अने साथे—

" राक्षसी–श्रेष्ठि–चेटाऽनुकम्प्यादेरर्धमागधी "

ए भरतनुं वाक्य पण टांकी बतावे छे.

क्रमदीश्वर पोताना संक्षिप्तसारप्राकृतपादमां जणावे छे के.

" महाराष्ट्रीमिश्राऽर्धमागधी " ५–९८

आ उल्लेखनी व्याख्या करतां आचार्य विधुशेखर भट्टाचार्य आ प्रमाणे जणावे छे—

" अर्धमागधी शब्द टि द्वाराई जानिते पारा याईते छे ये, ए भाषार शब्दप्रभृतिर अर्ध अंश ठीक मागधी अर्थात् प्राकृतमागधी। तबे ताहार अपर अपर अर्ध अंश कि ? क्रमदीश्वर बलियाछेन ताहा महाराष्ट्री–प्राकृतमागधी महाराष्ट्री सहित मिश्रित हईया अर्धमागधी नाम धारण करे।

ताहार उदाहरण—

' लभशवशनमिलशुलशिलविअलिदमंदालला जिदंहिजुगे ।
वीलजिने पक्खालदु मम शयलमवज्जजंवालं ॥ "

पालिप्रकाशनी प्रस्तावना पृ० १६–१७

उपर्युक्त बंने वैयाकरणोए जणावेलुं अर्धमागधीनुं स्वरूप आगमोनी भाषामां घटी शके खरुं ? आ प्रश्नो उत्तर आ० विधुशेखरजीए जणावेली उपर्युक्त गाथा ज आपी रही छे.

आ उपरथी वाचको जाणी शक्या हशे के, वैयाकरणोए अर्धमागधीनुं जे लक्षण नक्की कर्युं छे ते आगमोनी भाषामां घटे छे के नहि ?

मार्कंडेय वगेरेए नक्की करेलुं अर्धमागधीनुं स्वरूप आ पुस्तकमां शौरसेनीमां अने मागधीमां आवी जाय छे, एथी पण अहीं अर्धमागधीने माटे जुदुं प्रकरण राखवामां नथी आव्युं.

प्राकृतनां केटलांक व्याकरणोनां अने तेनी वृत्तिओनां नामो

	नाम	कर्ता	संवाद
१	प्राकृतप्रकाश	वररुचि	प्रसिद्ध छे
२	प्राकृतलक्षण	चंड	,,
३	प्राकृतव्याकरण	हेमचंद्र	,,
४	प्राकृतसंजीवनी	वसंतराज	आनो उल्लेख मार्कंडेयना 'प्राकृत सर्वस्व'मां छे पृ० १ श्लो० ३.
५	प्राकृतकामधेनु	लंकेश्वर	
६	प्राकृतव्याकरण	समंतभद्र	
७	,, वृत्ति	त्रिविक्रमदेव	
८	प्राकृत प्रक्रियावृत्ति (ढुंढिका)	उदयसौभाग्य	प्रसिद्ध छे
९	प्राकृतप्रबोध	नरचंद्र	
१०	प्राकृतकल्पतरु	रामतर्कवागीश	

११	प्राकृतचंद्रिका	कृष्णपंडित (शेषकृष्ण)	
१२	,,	वामनाचार्य	
१३	प्राकृतमनोरमा	भामह	आनो उल्लेख मार्कंडेयना 'प्राकृत सर्वस्व'मां छे पृ० १ श्लो० ३.
१४	प्राकृरूतपावतार	सिंहराज	प्रसिद्ध छे
१५	प्राकृतदीपिका	चंडीवरशर्मा	
१६	प्राकृतमंजरी	कात्यायन	प्रसिद्ध छे
१७	प्राकृतसर्वस्व	मार्कंडेय	,,
१८	प्राकृतानंद	रघुनाथशर्मा	
१९	प्राकृतप्रदीपिका	नरसिंह	
२०	प्राकृतमणिदीपिका	चिन्नबोम्मभूपाल	'षड्भाषाचंद्रिका'नी प्रस्तावना पृ० १७ टि० पृ० १८ टि०
२१	प्राकृतमणिदीप	अप्पयज्वन्	,,
२२	षड्भाषामंजरी		
२३	षड्भाषावार्तिक		
२४	षड्भाषाचंद्रिका	लक्ष्मीधर	प्रसिद्ध छे
२५	षड्भाषाचंद्रिका	भामकवि	
२६	षड्भाषासुबंतादर्श		
२७	षड्भाषारूपमालिका	दुर्गणाचार्य	षड्भाषाचंद्रिका पृ० २२–२–२–९ सूत्रनी वृत्ति.

२८	संक्षिप्तसारप्राकृतपाद	क्रमदीश्वर	आ० विधुशेखरजीनी पालिप्रकाशनी प्रस्तावना पृ० १६ टि०
२९	प्राकृतव्याकरण	शुभचंद्र	जोएलुं छे

आ उपरांत शाकल्य, भरत, कोहल (मार्कंडेयनुं प्राकृत सर्वस्व पृ० १ श्लो० ३) भोज अने पुष्पवननाथ (षड्भाषाचंद्रिकानी प्रस्तावना पृ० १७ टि०) आ पंडितोए पण प्राकृत व्याकरणो लखेलां छे.

जे व्याकरणोनां नाम अहीं आप्यां छे एमांना फक्त ६ के ७ जोवामां आव्यां छे. नामो तो बधां 'बंगीय विश्वकोश' अने 'केटलोगस् केटलोगोरम'मांथी लईने मूकेलां छे.

आ पुस्तकमां पालिप्रकाशनो उपयोग बहु करवामां आव्यो छे तेथी एना कर्ता आचार्य विधुशेखरजी तरफ मारी पूरी कृतज्ञता छे, ए सिवाय जे सज्जनोए मने बहु मूल्य सूचनो कर्यां छे तेओ बधा तरफ पण हुं पूर्ण कृतज्ञ छुं.

आ पुस्तकमां खास करीने प्राकृतभाषा संबंधे ज सविशेष लखवामां आव्युं छे अने बीजी बीजी भाषाओने लगता मात्र विशेष नियमो ज दर्शाव्यां छे, उदाहरणो दर्शाव्यां छे खरां पण ते प्राकृत जेटलां नहि. अपभ्रंशने समजवा माटे सविशेष शब्दो अने उदाहरणो जरुर मूकवां जोइए पण स्थानाभावने लीधे अहीं तेम नथी बनी शक्युं.

प्राकृत भाषाना प्रथम अभ्यासीए प्रथम प्राकृत भाषाना ज नियमो तरफ विशेष लक्ष्य राखवुं अने पछी बीजा वाचन वखते बीजी बीजी भाषाओने साथे लेवी.

आभार

बनारसमां अभ्यास करती वखते प्राकृतना प्राथमिक अभ्यास माटे 'प्राकृतमार्गोपदेशिका' नामे एक पुस्तक में आजथी १९ वर्ष पूर्वे लख्युं हतुं. ते पुस्तक करतां वधारे विगतवाळुं अने विस्तृत व्याकरण लखवा माटे मुंबइनी जैनश्वेतांबर कॉन्फरन्स ऑफीसे मने प्रेरणा करी, तेथी सं० १९७७–७८ मां में कॉन्फरन्स ऑफीस माटे आचार्य हेमचंद्रना ज क्रम प्रमाणे मूळ आ व्याकरण तैयार कर्युं हतुं. पाछळथी ए पुस्तक रा० रा० केशवलाल प्रेमचंद मोदी तरफथी पुरातत्त्वमंदिरने छापवा माटे आपवामां आव्युं. मंदिरे एने छपाववानो निर्णय कर्यो अने 'आखुं पुस्तक हुं फरी एकवार जोइ जाउं अने साथे साथे तुलनात्मक पद्धतिनो पण एमां उपयोग करुं' एवी सूचना मने मंदिरना मंत्री भाइ श्रीरसिकलाल परीख तरफथी करवामां आवी, जे मने एक रीते विशेष उपयोगी लागी अने तेना परिणामे पूर्वे लखेलुं आखुं पुस्तक फरी तपासी तेमां आवश्यक सुधारा वधारा करी हालना रूपमां ए प्रकट करवामां आवे छे. ए माटे ए बधा प्रेरकोने साभार धन्यवाद घटे छे.

बेचरदास जीवराज दोशी

विषयानुक्रम

+ 'टि०' एटले टिप्पण

१०	ऌ	=	इलि	७
११	ऐ	=	ए	७
	ऐ	=	ए (पालि) टि० २	७
१२	औ	=	ओ	७
	औ	=	ओ (पालि) टि० ३	७
	अ	=	इ (अपभ्रंश)	८
	अ	=	ई ,,	८
	अ	=	उ ,,	८
	उ	=	अ ,,	८
	उ	=	आ ,,	८
	ऋ	=	अ ,,	८
	ऋ	=	आ ,,	८
	ऋ	=	इ ,,	८
	ऋ	=	उ ,,	८
	ऋ	=	ऋ ,,	८
	ऌ	=	इ ,,	९
	ऌ	=	इलि ,,	९
	ए	=	इ ,,	९
	ए	=	ई ,,	९
	औ	=	अउ ,,	९
	औ	=	ओ ,,	९

प्रकरण ३ जुं पृ० १०–२८
सामान्य व्यंजनविकार

नियमांक	उद्देश्य	विधेय	पृष्ठ
१	अंत्यव्यंजन	= लोप	१०
	अंत्यव्यंजन	= लोप (पालि) टि० १	१०
२	असंयुक्त 'कादि'	= लोप	१०
	(१) त	= द (शौरसनी, अपभ्रंश)	१२
	त	= द (पालि) टि० १	१२
	(२) ज	= य (मागधी)	१२
	ज	= य (पालि) टि० ३	१२
	(३) त	= त (पैशाची)	१२
	द	= त (,,)	१२
	द	= त (पालि) टि० ४	१२
	(४) ग	= क (चूलिकापैशाची)	१३
	ग	= क (पालि) टि० १	१३
	ज	= च (चूलिकापैशाची)	१३
	ज	= च (पालि) टि० २	१३
	(५) क	= ग (अपभ्रंश)	१३
	क	= ग (पालि) टि० ३	१३
३	संयुक्त 'कादि'	= लोप	१४
	क्त	= त्त* (पालि) टि० १	१४
	क्थ	= त्थ (,,) ,,	१४

---

* 'क्त' वगेरे संयुक्त अक्षरोने स्थाने 'त्त' वगेरेने स्थापित करवा माटे प्राकृतव्याकरणमां आद्याक्षरना लोपनी अने द्विर्भावनी प्रक्रिया दर्शावेली छे अने ए ज कामने सारु पालिप्रकाशमां 'क्त' वगेरेना 'त्त' वगेरे आदेशो करेला छे.

	ट्फ	= प्फ (,,) टि० ४	१४
	ड्ग	= ग्ग (,,) टि० ५	१४
	प्त	= त्त (,,) टि० ६	१४
	श्छ	= च्छ (पालि) टि० १	१५
	श्म	= म (,,) टि० २	१५
	ष्ट	= ट्ठ (,,) टि० ३	१५
	ष्ठ	= ट्ठ (,,) ,, ,,	१५
	ष्क	= क्क (,,) ,, ,,	१५
	ष्प	= प्प (,,) ,, ,,	१५
	स्व	= स्स (,,) टि० ९	१५
	स्क	= क्ख (,,) ,, ,,	१५
	स्प	= प्प (,,) ,, ,,	१५
	स्थ	= थ (,,) ,, ,,	१५
	स्थ	= त्थ (,,) ,, ,,	१५
४	संयुक्त 'मादि'	= लोप	१५
	स्म	= स्स*(पालि) टि० ७.	१५
	ग्न	= ग्ग (,,) टि० २	१६
	ड्य	= ड्ड (,,) टि० ३	१६
५	संयुक्त 'लादि'	= लोप	१६
	क्ल	= क्क (पालि) टि० ४	१६
	ध्व	= ध (,,) टि० ५	१६
	ब्द	= द्द (,,) टि० ६	१६
	र्क	= क्क (,,) टि० १	१७
	क्र	= क्क (,,) टि० २	१७

---

* जूओ आगला पृष्ठनुं टिप्पण.

	ण	= न (पालि) टि० १	२३
१३	न	= ण	२३
	न	= ण (पालि) टि० २	२३
१४	न	= ण	२३
१५	प	= व	२३
	प	= व (पालि) टि० २	२३
१६	प	= व	२४
	(१) प	= ब (अपभ्रंश)	२४
१७	फ	= भ	२४
	फ	= ह	२४
	(१) फ	= भ (अपभ्रंश)	२४
	(१) ब	= प (चूलिकापैशाची)	२५
	ब	= प (पालि) टि० १	२५
१८	ब	= व	२५
	ब	= व (पालि) टि० २	२५
	(१) म	= वँ (अपभ्रंश)	२५
१९	य	= ज	२६
	य	= ज (पालि) टि० १	२६
	(१) य	= य (मागधी)	२६
	(१) र	= ल (मागधी, पैशाची)	२६
	(१) ल	= ळ (पैशाची)	२६
२०	श	= स	२७
	ष	= स	२७
	श	= स (पालि) टि० १	२७
	ष	= स (,,) ,, ,,	२७

प्रकरण ४ थुं पृ० २९–४३

संयुक्त व्यजनोना सामान्य फेरफारो

		श्व	= छ, च्छ	३२
		द्व	= ज, ज्ज	३२
		ध्व	= झ, ज्झ	३२
२६		थ्य	= च्छ	३२
		थ्य	= च्छ (पालि) टि० ३	३२
		श्च	= च्छ	३२
		श्च	= च्छ (पालि) टि० ३	३२
		त्स	= च्छ	३२
		त्स	= च्छ (पालि) टि० ३	३२
		प्स	= च्छ	३२
		प्स	= च्छ (पालि) टि० ३	३२
	(१)	च्छ	= श्च (मागधी)	३३
२७		द्य	= ज, ज्ज	३३
		य्य	= ज, ज्ज	३३
		र्य	= ज, ज्ज	३३
		द्य	= ज, ज्ज (पालि) टि० १	३३
		द्य	= य्य (,,) ,, ,,	३३
		र्य	= यिर, य्य, रिय (,,) टि० २	३३
	(१)	र्य	= य्य (शौरसेनी)	३४
		र्य	= य्य (पालि (टि० १	३४
	(१)	द्य	= य्य (मागधी)	३४
		द्य	= य्य (पालि) टि० २	३४
२८		ध्य	= झ, ज्झ	३४
		ध्य	= झ, ज्झ (पालि) टि० ३	३४
		ह्य	= झ, ज्झ	३४
		ह्य	= य्ह (पालि) टि० ९	३४

२९		र्त	= ट्ट	३५
		त	= ट (पालि) टि० २	३५
	(१)	न्त	= न्द (शौरसेनी)	३५
३०		म्न	= ण, ण्ण	३६
		म्न	= न्न (पालि) टि० १	३६
		ज्ञ	= ण, ण्ण	३६
		ज्ञ	= ण (पालि) टि० १	३६
	(१)	ज्ञ	= ञ्ञ (मागधी)	३६
		ज्ञ	= ञ्ञ (पालि) टि० ४	३६
	(१)	ञ्ज	= ञ्ञ (मागधी)	३६
	(१)	ण्य	= ञ्ञ ,,	३६
		ण्य	= ञ्ञ (पालि) टि० ४	३६
	(१)	न्य	= ञ्ञ (मागधी)	३६
		न्य	= ञ्ञ (पालि) टि० ४	३६
३१		स्त	= थ, त्थ	३७
		स्त	= थ त्थ (पालि) टि० १	३७
	(१)	र्थ	= स्त (मागधी)	३७
		स्थ	= स्त (,,)	३७
३२		ष्ट	= ठ, ट्ठ	३७
		ष्ट	= ट्ठ (पालि) टि० ३	३७
		ष्ट	= ट्ट (पालि) टि० ४	३७
	(१)	ट्ट	= स्ट (मागधी)	३८
		ष्ठ	= स्ट (,,)	३८
	(१)	ष्ट	= सट (पैशाची)	३८
३३		ड्म	= प, प्प	३८

	क्म	= प, प्प	३८
	ङ्म	= ङुम (पालि) टि० १–२	३८
	क्म	= कुम (,,) ,, ,,	३८
	क्म	= च्म (पालि) टि० ३	३८
३४	ष्प	= फ, प्फ	३९
	स्प	= फ, प्फ	३९
	ष्प	= प्फ (पालि) टि० १	३९
	स्प	= फ, प्फ (,,) ,, ,,	३९
	ष्प	= प्प टि० २	३९
	स्प	= प्प टि० २	३९
	ष्प	= प्प (पालि) टि० २	३९
	स्प	= प्प (,,) ,, ,,	
३५	ह्व	= भ, ब्भ	३९
	ह्व	= भ (पालि) टि० ३	३९
३६	न्म	= म्म	३९
	न्म	= म्म (पालि) टि० ४	३९
३७	ग्म	= म्म	३९
	ग्म	= गुम (पालि) टि० ५	३९
३८	श्म	= म्ह	४०
	ष्म	= म्ह	४०
	स्म	= म्ह	४०
	ह्म	= म्ह	४०
	क्ष्म	= म्ह	४०
	श्म	= म्ह (पालि) टि० १	४०
	ष्म	= म्ह (,,) ,, ,,	४०
	स्म	= म्ह (,,) ,, ,,	४०

	(१) म्ह	= म्भ (अपभ्रंश)	४०
३९	श्न	= ण्ह	४०
	ष्ण	= ण्ह	४०
	स्न	= ण्ह	४०
	ह्न	= ण्ह	४०
	ह्ण	= ण्ह	४०
	क्ष्ण	= ण्ह	४०
	क्ष्म	= ण्ह	४०
	श्न	= ण्ह, ञ्ह (पालि) टि० २	४०
	ष्ण	= ण्ह (,,) ,, ,,	४०
	स्न	= ण्ह (पालि) टि० २	४०
	ह्न	= ण्ह (,,) टि० २	४०
	ह्ण	= ण्ह (,,) ,, ,,	४०
	क्ष्ण	= ण्ह (,,) ,, ,,	४०
	(२) स्न	= सिन (पैशाची)	४१
	स्न	= सिन (पालि) टि० १	४१
४०	ह्ल	= ल्ह	४१
	ह्ल	= ळ्ह (पालि) टि० २	४१
४१	ज्ञ	= ज	४१
	ज्ञ	= ज (पालि) टि० ३	४१
४२	र्ह	= रिह	४१
	र्ह	= रह, रिह (पालि) टि० ४	४१
४३	र्श	= रिस	४२
	र्ष	= रिस	
	र्श	= रिस (पालि) टि० १	४२
	र्ष	= रिस (,,) ,, ,,	४२

प्रकरण ५ मुं ४४–६२

स्वरना विशेष विकारो

४९ 'आ' विकार ४७–४९

(क) आ = अ
(ख) आ = इ
(ग) आ = ई
(घ) आ = उ
(छ) आ = ऊ
(ज) आ = ए
(झ) आ = ओ
आ = अ (पालि) टि० २ ४७
आ = ए (,,) टि० २ ४९

५० 'इ' विकार ४९–५१

(क) इ = अ
(ख) इ = ई
(ग) इ = उ
(घ) इ = ए
(ङ) इ = ओ
(च) नि = ओ
इ = अ (पालि) टि० ६ ४९
इ = उ (,,) टि० २ ५०
इ = ए (,,) टि० १ ५१
इ = ओ (,,) टि० २ ५१

५१ 'ई' विकार ५१–५३

(क) ई = अ
(ख) ई = आ
(ग) ई = इ

(घ) ई = उ

(ङ) ई = ऊ

(च) ई = ए

ई = अ (पालि) टि० ४ ९१

९२ 'उ' विकार ९२—९४

(क) उ = अ

(ख) उ = आ

(ग) उ = इ

(घ) उ = ई

(ङ) उ = ऊ

(च) उ = ओ

उ = अ (पालि) टि० १ ९२

उ = इ (पालि) टि० २ ९३

उ = ओ (पालि) टि० १ ९४

९३ 'ऊ' विकार ९४—९६

(क) ऊ = अ

(ख) ऊ = इ

(ग) ऊ = ई

(घ) ऊ = उ

(ङ) ऊ = ए

(च) ऊ = ओ

ऊ = अ (पालि) टि० २ ९४

ऊ = अ (संस्कृत) टि० २ ९४

ऊ = ओ (पालि) टि० २ ९६

५४	'ऋ' विकार		५५–५९
	(क) ऋ	= आ	
	(ख) ऋ	= इ	
	(ग) ऋ	= उ	
	(घ) ऋ	= ऊ	
	(ङ) ऋ	= ए	
	(च) ऋ	= ओ	
	(छ) ऋ	= अरि	
	(ज) ऋ	= ढि	
	(झ) ऋ	= रि	
	(१) ऋ	= इ (पैशाची)	५९
	ऋ	= इ (पालि) टि० ३	५५
	ऋ	= उ (पालि) टि० १	५७
	ऋ	= ए (पालि) टि० २	५७
५५	'ए' विकार		५९
	(क) ए	= इ	
	(ख) ए	= ऊ	५९
	ए	= ओ (पालि) टि० २	५९
५६	'ऐ' विकार		५९–६०
	(क) ऐ	= अअ	
	(ख) ऐ	= इ	
	(ग) ऐ	= ई	
	(घ) ऐ	= अइ	
	ऐ	= इ (पालि) टि० १	६०
	ऐ	= ई („) „ २	६०

प्रकरण ६ ठुं पृ० ६३–७४

असंयुक्त व्यंजनोना विशेष फेरफारो

प्रकरण ७ मुं

संयुक्त व्यंजनोना विशेष फेरफार

नियमांक	उद्देश्य	विधेय	पृष्ठ
		क्क	
८६	(क) क्त	= क्क	७५
	(ख) ग्ण	= क्क	
	(घ) ष्ट	= क्क	
	क्त	= क्क (पालि) टि० १	७५
	ग्ण	= ग्ग (पालि) टि० २	७५
८७		क्ख, ख	७५–७६
	(क) क्ष्ण	= क्ख	
	(ख) स्त	= ख	
	(ग) स्थ	= ख	
	(घ) स्फ	= ख	
८८		ग्ग, ङ्ग	७६
	(क) क्त	= ग्ग	
	(ख) ल्क	= ङ्ग	
	ल्क	= ङ्क (पालि) टि० २	७६
८९		च्च	७६
	(क) त्य	= च्च	
	(ख) थ्य	= च्च	
		च्छ, छ	
९०	(क) स्थ	= छ	
	(ख) स्प	= छ	
	(ग) स्प	= च्छ	

९१			ज्ज, ञ्ञ	
	न्य	=	ज्ज	
	न्य	=	ञ्ज (पालि) टि० २	७६
९२			ज्झा	७७
	न्ध	=	ज्झा	
९३			ञ्चु	७७
	श्चि	=	ञ्चु	
९४			ट्ट	७८
	(क) त्त	=	ट्ट	
	(ख) र्थ	=	ट्ट	
	(ग) स्त	=	ट्ट	
	त	=	ट (पालि) टि० २	७७
९५			ट्ठ, ठ	७७–७८
	(क) र्थ	=	ट्ठ	
	(ख) स्त	=	ठ	
	(ग) स्थ	=	ठ	
	स्थ	=	ट्ठ	
	र्थ	=	ट्ठ (पालि) टि० २	७७
	स्थ	=	ठ (पालि) टि० ४	७८
	स्थ	=	ट्ठ (,,) टि० ४	७८
९६			ड्ड	
	(क) र्त	=	ड्ड	
	(ख) र्द	=	ड्ड	
९७			ड्ढ, ढ	
	(क) र्ध	=	ड्ढ	७९

द्ध = ड्ढ
ग्ध = ड्ढ
ब्ध = ड्ढ
(ख) र्ध = ढ
द्ध – ड्ढ (पालि) टि० १ ७९
र्ध = ड्ढ ,, ,, ,,
ग्ध = ड्ढ ,, ,, ,,

९८ ण्ट, ण्ड, ण्ण ७९-८०

न्त = ण्ट
न्द = ण्ड
(क) ज्ञ = ण्ण
(ख) न्न = ण्ण
(ग) ह्न = ण्ण
न्त = ण्ट (पालि) टि० २ ७९

९९ त्थ ८०

(क) त्स = त्थ
(ख) त्म = त्थ

१०० ट्ठ ८०

ष्ट = ट्ठ

१०१ न्त, न्ध ८०

न्य = न्त
ह्न = न्ध

१०२ प्प, प्फ, फ ८०-८१

त्म = प्प
ष्म = प्फ

	ष्म	= फ	
	स्म	= प्प	
	त्म	= तुम (पालि) टि० ४	८०
१०३	ब्भ, म्ब, म्भ		८१
	ध्वं	= ब्भ	
	म्र	= म्ब	
(क)	श्म	= म्भ	
(ख)	ह्म	= म्भ	
	म्र	= म्ब (पालि) टि० २	८१
१०४		र	८१
(क)	र्य	= र	
(ख)	र्ह	= र	
(ग)	त्र	= र	
१०५		ल, ल्ल	८२
	ण्ड	= ल	
	र्य	= ल्ल	
	र्य	= ल्ल (पालि) टि० १	८२
१०६		स्स	८२
	स्प	= स्स	
१०७		ह	८२–८३
(क)	क्ष	= ह	
(ख)	ख	= ह	
(ग)	र्थ	= ह	
(घ)	र्घ	= ह	
(ङ)	र्ष	= ह	

कारक-विभक्त्यर्थ प्रकरण ११ मुं पृ० २३९-२४१

शुद्धिपत्र

अशुद्ध—	शुद्ध—	पृष्ठ—	पंक्ति—
व्यञ्जनम्	व्यजनम्	१०	१९
त्प	स	१४	२१
न—धृष्टद्युम्नः धट्ठज्जुणो	आ उदाहरण अने ए उपरनुं टिप्पण पृ० ३६मां पं. ४ म्न—ना उदाहरणमां मूको	१६	१
	'र' लोप	१७	९ मी पंक्ति पछी मथाळुं वधारवुं.
अपभ्रंशमां	(१) अपभ्रंशमां	१७	७
	श्य, श्च, त्स प्स—च्छ	३२	१० मी पंक्ति पछी मथाळुं वधारवुं.
स्म	ए 'म्ह'	४०	१०
टिप्पण	टिप्पण ३	४७	२८
पृ० ४४	पृ० ४५	४७	२८
६	३	५१	१२
	उ = आ विद्युतः विद्दाओ	५२	२१ मी पंक्ति पछी वधारवुं.
दश	दस	७२	१
न्त न्थ	१०१ न्त न्थ	८०	११ आ पछी बधा अंको सुधारीने वांचवा.

अर्थातू	अर्थात्	९२	१५
ण	१ ण	९८	९
उत्तिष्ठविश	उत्तिष्ठोपविश	१०६	१६
आ निज्ञानी	* आ निशानी	१२०	२६
		१२८	२२ मी पंक्ति पछी × × × × × न जोइए.
शे०	शौ०	१४१	२
३ गामनी	गामनी	१६९	२२
यइ	थइ	२२४	१३
तव्य	तत्व	३२०	१२

पम्हह	पम्हुह	३३७	अंक ७४
अग्घ	अग्ग	३३९	,, १००
विसुर	विसूर	३४३	,, १३२
उसिक्क	उस्सिक्क	३४४	,, १४४
हक्खव	हक्खुव	३४४	,, ,,
लोट्ट	आयम्ब	४४४	,, १४७

आ पुस्तकमां वपराएला ग्रंथो अने तेना संकेतोनो खुलासो

(१)

ग्रंथ	संकेत
अजितशांतिस्तव	
अमरकोश	अमरको०
आचारांगसूत्र	आ०
उत्तराध्ययनसूत्र	
उपासकदशांगसूत्रटीका	
काशिका	का०
चतुर्विंशतिस्तव	
जीवविचार	
पाणिनीय अष्टाध्यायी	पाणि० / पाणिनि०
पाणिनीय वैदिक प्रक्रिया	वैदिकप्र०
पालिकोश	
पालिप्रकाश	पालीप्र० / पालिप्र० / पा०प्र०
पालिव्याकरण (कात्यायन)	
प्राकृतकथासंग्रह	
प्राकृतरूपावतार	
भगवतीसूत्र	भगव० / भग०
मुनिवंदनसूत्र	
ललितविस्तर (बौद्धग्रंथ)	ललितवि०
विसुद्धिमग्ग	
श्रमणसूत्र	

षड्भाषाचंद्रिका	
सूत्रकृतांगसूत्र	सू० सूत्र० सूत्रकृ०
सूर्यप्रज्ञप्तिटीका	
हेमचंद्र प्राकृत व्याकरण	हे० हे० प्रा० व्या०
हेमचंद्र संस्कृत व्याकरण	हे० सं०

(२)

अ०	अध्ययन, अध्याय
उ०	उद्देश
गा०	गाथा
द्वि०	द्वितीय
नि०	नियम
पालि० सं०	पालिप्रकाश संधिकल्प
पृ०	पृष्ठ
प्र०	प्रथम
रा० जि राय०	रायचंद्र जिनागमसंग्रह
श्रु०	श्रुतस्कंध
सू०	सूत्र

प्राकृत-व्याकरण.

प्रकरण १

वर्णपरिचय

प्राकृत भाषाओमां नीचे प्रमाणे स्वरो अने व्यंजनो वपराय छे.

[१]स्वर—

अ, इ, उ. (ह्रस्व)

आ, ई, ऊ, [२]ए, ओ, (दीर्घ)

---

१ प्राकृतमां 'ऋ' नो विकार अ, इ, के उ थाय छे अने 'लृ' नो विकार ' इलि ' थाय छे माटे ए बे स्वतंत्र स्वर नथी. 'ऐ' नो विकार ' ए ' के ' अइ ' थाय छे अने ' औ ' नो विकार 'ओ' के 'अउ' थाय छे तेथी ए बे पण स्वतंत्र स्वर नथी.

२ ' एक्को ' ' सेव्वा ' ' सोत्तं ' ' सो च्चिअ' वगेरे शब्दोमां आवेला ' ए ' अने ' ओ ' एकमात्रिक छे एम आचार्य शुभचंद्र जणावे छे: (–शुभचंद्रनुं प्राकृत व्याकरण अ० १–२–४०–लिखित पृ० ४) आ उपरथी ' ए ' अने ' ओ 'नी एकमात्रिकता पण व्याजबी जणाय छे. उच्चारणनी दृष्टिए तो द्विर्भावने पामेला व्यंजननी पूर्वनो द्विमात्रिक स्वर एकमात्रिक ज होवो जोइए: अन्यथा एवे ठेकाणे आवेला द्विमात्रिकनो उच्चार ज द्विमात्रिकनी रीते थइ शकतो नथी. आचार्य हेमचंद्र जणावे छे के, कोइ वैयाकरणो प्राकृतमां पण ' ऐ ' अने ' औ 'ना उपयोगने इष्ट गणे छे (८–१–१) आचार्य हेमचंद्र पण ' अयि 'ना प्राकृतरूप ' ऐ ' ने सम्मत गणे छे (८–१–१६९) तो पण तेमने ए सिवाय क्यांय ' ऐ ' अने ' औ ' नो व्यवहार इष्ट नथी.

[1]व्यंजन—

क, ख, ग, घ, ङ[3] (कवर्ग)

च, छ, ज, झ, ञ[3] (चवर्ग)

---

१ आचार्य हेमचंद्रना जणाव्या प्रमाणे प्राकृतमां स्वररहित व्यंजननो एटले खोडा व्यंजननो के बे तद्दन विजातीयसंयुक्त व्यंजननो—क्त, क्न, त्म वगेरेनो—प्रयोग थतो नथी तो पण 'म्ह' 'ण्ह' अने 'ल्ह 'नो प्रयोग होवानुं तो हेमचंद्रे पण स्वीकार्युं छेः (जूओ ८—२—७४—७५—७६) 'अकस्मात्' शब्दने मगधदेशीय होवानुं आचार्य शीलांके जणावेलुं छे. (जूओ—" इत्थ वि जाणह अकस्मात् " मू० आ० पृ० २६६ तथा एनी टीका पृ० २६७ स०) एथी प्राकृतमां ए ए स्थळे खोडो व्यंजन पण आवे छे. 'म्ह, ण्ह अने ल्ह' उपरांत मागधीमां 'स्त' 'स्म' वगेरे संयुक्त व्यंजनो पण वपराय छे. ए विषे संयुक्त व्यंजनना विकारोने जणावतां आगळ जणावीशुं. ए सिवाय जे जे शौरसेनी वगेरे भाषाओमां व्यंजननी वपराशमां प्राकृत करतां विशेष फेरफार छे ते विषे पण आ पुस्तकमां ते ते ठेकाणे जणावीशुं. 'ड 'नो 'ळ ' थतो होवाथी एने मूर्धन्य पण कहेवामां आवे छे. पालीमां ए 'ळ ' ने ज जुदो गणीने ३३ व्यंजनोने गणाववामां आव्या छे. (जूओ कच्चा० पा० व्या० सू० ६)

२ 'प्राङ्' 'प्रत्यङ्' 'क्रुङ्' 'उदङ्'—वगेरेनी पेठे प्राकृतमां कोइ पण शब्दमां स्वतंत्र रीते 'ङ' वर्णनो उच्चार थतो नथी, किंतु संखो, सङ्खो. पंको, पङ्को. अंगणं, अङ्गणं. लंघणं, लङ्घणं.— वगेरे शब्दोमां स्ववर्ग्यसंयुक्त 'ङ 'नो प्रयोग शिष्टसंमत छे. संस्कृतनी पेठे प्राकृतमां 'ङ 'नो प्रयोग अमुक शब्दोमां ज थतो होवाथी ए बन्ने भाषामां स्वतंत्र 'ङ'नो वपराश विरल कहेवाय.

३ 'ञु' धातुनां ('ञुञुवे' वगेरे) परोक्ष रूपो सिवाय संस्कृतमां क्यांय पण स्वतंत्र 'ञ ' नो प्रयोग मळतो नथी तेम प्राकृतमां

ट, ठ, ड, ढ, ण (टवर्ग)

त, थ, द, ध, न (तवर्ग)

प, फ, ब, भ, म (पवर्ग)

य, र, ल, व (अंतःस्थ)

स, ह (ऊष्माक्षर)

ं - अनुस्वार[1]

पण क्यांय स्वतंत्र 'ञ' प्रयोजातो नथी. कञ्चुकः, लाञ्छनम्, जञ्जपूकः-वगेरे प्रयोगोनी पेठे प्राकृतमां कञ्चुओ, लञ्छणं, जञ्जवूओ वगेरे प्रयोगो सुव्यवहृत छे. मात्र पालीमां ञाति (ज्ञाति), ञात (ज्ञात), ञाण (ज्ञान) वगेरे प्रयोगो संस्कृतना 'जुहुवे' जेवा पण मळी आवे छे. संस्कृतमां अने प्राकृतमां एकला 'ञ' करतां स्ववर्ग्यसंयुक्त 'ञ' नो प्रयोग विशेष प्रचलित छेः अहिमञ्ञु (अभिमन्यु) पुञ्ञ (पुण्य), अवञ्ञा (अवज्ञा), अञ्ञली (अञ्जलि)-मागधी अने ञ्ञान (ज्ञान) विञ्ञान (विज्ञान)-पैशाची. 'ञ्ञ'ना प्रयोगमां पाली, मागधी अने पैशाची विशेष समानता धरावे छे.-(८-४-२९३ तथा ३०३) तथा (पालिप्र० पृ० २३-२४)

१ पालीमां 'अनुस्वार'ने व्यंजनमां गणावीने 'निगृहीत'नी संज्ञा आपेली छे अने ललितविस्तरमहापुराणमां तो एने (अनुस्वारने) अने विसर्गने स्वरोनी साथे ज गणावेलो छे. आ ग्रंथमां वर्णवेली बाराक्षरी आपणी गुजराती बाराखडी जेवी छे.(जूओ ललितवि० पृ० १२७)

प्रकरण २

सामान्य स्वरविकार.

दीर्घस्वर=ह्रस्वस्वर[1]

१. संस्कृतना संयुक्त व्यंजननी पूर्वे आवेला दीर्घस्वरो प्राकृतमां प्रायः ह्रस्व थई जाय छे अर्थात् संयुक्त व्यंजननी पूर्वे आवेला 'आ'नो अ, 'ई' नो इ, 'ऊ'नो उ, 'ए' नो इ अने 'ओ' नो उ थई जाय छे. जेमके:—

आ=अ–आम्रम् अम्बं । आस्यम् अस्सं । ताम्रम् तम्बं । विरहाग्निः विरहग्गी ।

ई=इ – तीर्थम् तित्थं । मुनीन्द्रः मुणिंदो ।

ऊ=उ–गुरूल्लापाः गुरुल्लावा । चूर्णः चुण्णो ।

ए=इ – नरेन्द्रः नरिंदो । म्लेच्छः मिलिच्छो ।

ओ=उ–अधरोष्ठः अहरुट्ठं । नीलोत्पलम् नीलुप्पलं ।

ह्रस्वस्वर=दीर्घस्वर.

२. संस्कृतना श्य, श्र, र्श, श्व, श्श; ष्य, ष्र, र्ष, ष्व, ष्ष; स्य, स्र, र्स, स्व, अने स्सनी पूर्वे रहेलो ह्रस्वस्वर प्राकृतमां प्रायः दीर्घभाव पामे छे. उदाहरणो नीचे प्रमाणे छे:—

श्य—आवश्यकम् आवासयं। कश्यपः कासवो। पश्यति पासइ।

श्र—मिश्रम् मीसं। विश्रामः वीसामो। विश्राम्यति वीसमइ।

[2]र्श—संस्पर्शः संफासो ।

---

१ जूओ पालीप्रकाश पृ० ८, नियम–११ (दीर्घस्वर=ह्रस्वस्वर) तथा पृ० ५५ (ए=इ) अने (ओ=उ) अने पृ० ५ (औ=उ)

२ जूओ पालीप्र० पृ० ११–(परामर्शः=परामासो) टिप्पण.

श्व—अश्वः आसो । विश्वसिति वीससइ। विश्वासः वीसासो।

श्श—दुश्शासनः दूसासणो । मनश्शिला मणासिला ।

ष्य—पुष्यः पूसो । मनुष्यः मणूसो । शिष्यः सीसो ।

र्ष— कर्षकः कासओ । वर्षः वासो । वर्षाः वासा ।

ष्व—विष्वक् वीसुं । विष्वाणः—वीसाणो ।

ष्ष —निष्षिक्तः नीसित्तो ।

स्य—कस्यचित् कासइ । सस्यम् सासं ।

स्र—उस्रः ऊसो । विस्रम्भः वीसंभो ।

स्व—निस्वः नीसो । विकस्वरः विकासरो ।

स्स—निस्सहः नीसहो ।

आ=अ.

३. संस्कृतना भाववाचक अकारान्त पुंलिंगी शब्दना आदिना ' आ 'नो प्राकृतमां विकल्पे 'अ' थाय छे. जेमके:—

प्रकारः पयारो, पयरो । प्रचारः पयारो, पयरो । प्रहारः पहारो, पहरो । प्रवाहः पवाहो, पवहो । प्रस्तावः पत्थावो, पत्थवो ।

इ=ए.

४. संस्कृतना संयुक्त व्यंजननी पूर्वे आवेला 'इ' नो विकल्पे 'ए' थाय छे. जेमके:–

[1]डिण्डिमः—डेण्डिमो, डिण्डिमो । धम्मिल्लम् धम्मेल्लं, धम्मिल्लं । पिष्टम् पेट्ठं, पिट्ठं । पिण्डम् पेंडं, पिंडं । बिल्वम् बेल्लं, बिल्लं । विष्णुः वेण्हू, विण्हू । सिन्दूरम् सेंदूरं, सिंदूरं ।

१ जुओ पालीप्र० पृ० ५३–(इ=ए)

उ=ऊ.

५. संस्कृत शब्दोमां रहेला [1]त्स अने च्छ नी पूर्वना 'उ'नो 'ऊ' थाय छे:—

त्स—उत्सरति ऊसरइ । उत्सवः ऊसवो ।

उत्सिक्तः ऊसित्तो । उत्सुकः ऊसुओ ।

च्छ—उच्छ्वासति ऊससइ । उच्छ्वासः ऊसासो ।

उच्छुकः ऊसुओ ।

उ=ओ.

६. संस्कृतना संयुक्त व्यंजननी पूर्वे रहेला 'उ' नो प्राकृतमां 'ओ' थाय छे. जेमकेः—

[2]कुट्टिमम् कोट्टिमं । कुण्ठः कोंढो । कुन्तः कोंतो ।

तुण्डम् तोंडं । पुद्गलम् पोग्गलं । पुष्करम् पोक्खरं ।

पुस्तकः पोत्थओ । मुण्डम् मोंडं । मुद्गरः मोग्गरो । मुस्ता मोत्था ।

लुब्धकः लोद्धओ । व्युत्क्रान्तम् वोक्कंतं ।

[3]ऋ=अ

७. संस्कृत शब्दना आदिभागमां आवेला 'ऋ' नो प्राकृतमां 'अ' थाय छे.

कृतम् कयं । घृतम् घयं । घृष्टः घट्ठो ।

तृणम् तणं । मृगः मओ । मृष्टम् मट्ठं । वृषभः वसहो ।

---

१ आ नियम आ बे शब्दोमां लागतो नथीः—उत्सन्नः उच्छन्नो । उत्साहः उच्छाहो ।

२ जूओ पालीप्र० पृ० ५४—(उ=ओ)

३ जूओ पालीप्र० पृ० १—(ऋ=अ)

ऋ=उ

८. सामासिक अने गौण संस्कृत शब्दना अंत्य 'ऋ' नो प्राकृतमां 'उ' थाय छे.

पितृगृहम् पिउघरं । पितृपतिः पिउवई ।

पितृवनम् पिउवणं। पितृष्वसा पिउसिआ। मातृगृहम् माउघरं।

मातृष्वसा माउसिआ । मातृमण्डलम् माउमंडलं ।

[1]ऋ=रि

९. संस्कृतना केवल—व्यंजन वगरना—'ऋ' नो प्राकृतमां 'रि' थाय छे.

ऋक्षः रिच्छो । ऋद्धिः रिद्धी। ऋषभः रिसहो।

ऌ=इलि.

१०. संस्कृतना 'ऌ' नो प्राकृतमां 'इलि' थाय छे:—

क्लृप्तः किलिन्नो । क्लृप्तः किलित्तो ।

[2]ऐ=ए

११. संस्कृतना 'ऐ' नो प्राकृतमां 'ए' थाय छे:—

ऐरावणः एरावणो । कैटभः केढवो । कैलासः केलासो।

त्रैलोक्यम् तेलुक्कं । वैद्यः वेज्जो । वैधव्यम् वेहव्वं ।

शैलाः सेला ।

[3]औ=ओ.

१२. संस्कृतना 'औ' नो प्राकृतमां 'ओ' थइ जाय छे:—

---

१ जूओ पालीप्र० पृ० ३–(ऋ=रि) टिप्पण.

२ जूओ पालीप्र० पृ० ३– (ऐ=ए)

३ जूओ पालीप्र० पृ० ५–(औ=ओ)

क्रौञ्चः कोंचो । कौमुदी कोमुई । कौशाम्बी कोसम्बी ।
कौशिकः कोसिओ । कौस्तुभः कोत्थुहो । यौवनम् जोव्वणं ।

उपर जणावेला बधा स्वरविकारो शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने चूलिकापैशाचीमां पण एक सरखी रीते लागु थाय छे, अपभ्रंशमां ए नियमोनुं प्रवर्तन नियत रीते एटले जे रीते जणाव्युं छे ते रीते थतुं नथी. तेमां क्यांय क्यांय 'अ'नो इ, ई, उ; 'उ'नो अ, आ; 'ऋ'नो अ, आ, इ, उ, ऋ; 'ऌ'नो इ, इलि; 'ए'नो इ, ई; अने 'औ'नो अउ अने ओ थाय छेः [स्वरविकारनी दृष्टिए आ प्रवर्तन सरखुं छे, पण अनियतताने लीधे एने प्राकृतथी जूदुं पाडी शकाय छे.]

अ–इ, ई, उ—

सं० प्रा० अ०
वचनम् वअणं (वइणं) वेणं ।
(वईणं) वीणं ।
शयनम् सअणं (सइनं) सेनं[1] ।
नयनम् नअणं नइणं (नइनं) नेनं ।
नवनीतम् नअणीअं (नउणीअं) लोणीअं ।

[वस्तुतः आ रूपो 'य' अने 'व' ना संप्रसारणथी बनेलां छे]

उ–अ, आ—

बाहुः—बाहा (स्त्री०) बाहा, बाह, बाहु ।

ऋ–अ, आ, इ, उ, ऋ—

कृत्यम् किच्चं कच्चु, काच्चु ।

---

१ जूओ विसुद्धिमग्ग पा० पृ० २४.

तृणम् तणं तिणु, तणु, तृणु।

सुकृतम् सुकयं सुकिउ, सुकिदु, सुकृदु।

ऌ—इ, इलि—

क्लृन्नः किलिन्नो किन्नो, किलिन्नओ।

ए—इ, ई—

रेखा लेहा लिह, लीह, लेह।

औ—अउ, ओ—

गौरी गोरी गउरी, गोरी।

व्यंजनविकारोना प्रसंगमां तो ज्यां ज्यां प्राकृत करतां शौरसेनी, मागधी, पैशाची, चूलिकापैशाची अने अपभ्रंशमां विशेषता छे तेने ते ते स्थळे जणाववाना छीए.
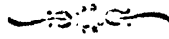
प्रकरण ३.

सामान्य व्यंजनविकार.

[1] अंत्यव्यंजनलोप

१. संस्कृत शब्दना छेवटना व्यंजननो प्राकृतमां लोप थाय छे.

अन्तर्–उपरि अन्त–उपरि अंतोवरि ।

अन्तर्–गतम् अन्त–गयं अंतग्गयं ।

जन्मन् जम्म–जम्मो । तमस् तम–तमो ।

तावत् ताव । पुनर् पुण । न पुनर् न उण ।

यशस् जस–जसो । यावत् जाव ।

असंयुक्त 'कादि' लोप.

२. [2] स्वरथी पर आवेला अने एक ज पदमां रहेला असंयुक्त क, ग, च, ज, त, द, प, ब, य अने व–एटला व्यंजनोनो प्राकृतमां प्रायः लोप थई जाय छे. उदाहरणो क्रमशः नीचे प्रमाणे छेः–

---

१ जुओ पालीप्र० पृ० [illegible] (नियम [illegible]. विद्युत्–विज्जु । तावत्–ताव । इत्यादि)

२ आ नियम क्यांय क्यांय लागतो पण नथी. जेमकेः सुकुसुमम् । प्रयाग-जलम् पयागजलं । मुगलः मुगओ । अगरुः अगरू । सचापम् सचावं । व्यञ्जनम् विजणं । सुतारम् सुतारं । विदुरः विदुरो । सपापम् सपावं । समवायः समवाओ । देवः देवो । दानवः दाणवो ।

आ शब्दोमां प्रस्तुत नियमने लगाडवाथी अर्थभ्रम थवानो संभव छे. आ रीते अहींना प्रत्येक नियमनो उपयोग करतां क्यांय पण अर्थभ्रम न थाय तेवो ख्याल राखवानो छे.

क—तीर्थंकरः तित्थयरो। लोकः लोओ।

ग—नगः नओ। नगरम् नयरं। मृगाङ्कः मयंको।

च—कचग्रहः कयग्गहो। शची सई।

ज—गजः गओ। प्रजापतिः पयावई। रजतम् रययं।

त—धात्री धात्ती—धाई। यतिः जई। रसातलम् रसायलं।
  रात्रिः रात्ति—राई। वितानम् विआणं।

द—गदा गया। मदनः मयणो।

प—रिपुः रिऊ। सुपुरुषः सुउरिसो।

ब—विबुधः विउहो।

य—वियोगः विओओ।

व—वडवानलः वलयाणलो। लावण्यम् लायण्णं।

(आ बीजो नियम अने एवा बीजा असंयुक्त व्यंजनना विकारने लगता सामान्य के विशेष नियमो पैशाची भाषामां लागता नथी. जेमके;

सं०	प्रा०	पै०
मकरकेतुः—	मयरकेऊ—	मकरकेतू।
सगरपुत्रवचनम्—	सयरपुत्तवयणं—	सगरपुत्तवचनं।
विजयसेनेन लपितम्-	विजयसेणेण लवियं—	विजयसेनेन लपितं।
पापम्—	पावं—	पापं—
आयुधम्—	आउहं—	आयुधं।)

पूर्वोक्त नियम द्वारा प्राकृतमां 'क' 'ज' 'त' अने 'द' नो लोप जणावेलो छे तो पण प्राकृतना पेटाभेदरूप शौरसेनी, मागधी, पैशाची, चूलिकापैशाची अने अपभ्रंशमां ते वर्णो लोपाता नथी, किंतु बीजा बीजा वर्णोना रूपमां फेरवाइ जाय छे:

[1]त—द.

(१) [2]शौरसेनीमां अने क्यांय अपभ्रंशमां 'त' नो 'द' थाय छे:

सं०	प्रा०	शौ०, अप०	सं०	प्रा०	शौ०, अप०
कथितम्	कहिअं	कधिदं ।	प्रतिज्ञा	पइण्णा	पदिण्णा ।
ततः	तओ	तदो ।	मारुतिः	मारुई	मारुदी ।
पूरितः	पूरिओ	पूरिदो ।	मन्त्रितः	मंतिओ	मंतिदो ।

[3]ज—य.

(२) मागधीमां आदिस्थित के अनादिस्थित 'ज' नो 'य' थाय छे:

सं०	प्रा०	मा०	सं०	प्रा०	मा०
जनपदः	जणवओ	यणवदे ।	दुर्जनः	दुज्जणो	दुय्यणे ।
जानाति	जाणइ	याणदि ।	वर्जितः	वज्जिओ	वय्यिदे ।
गर्जितः	गज्जिओ	गय्यिदे ।			

त, [4]द—त.

(३) पैशाचीमां अने चूलिकापैशाचीमां 'त' कायम रहे छे अने 'द' नो पण 'त' थाय छे:

---

१ जूओ पा० प्र० पृ० ५९ (त=द)

२ शौरसेनीने लगता दरेक नियमो मागधी, पैशाची, चूलिकापैशाची अने अपभ्रंशमां पण लागु थई शके छे.

३ जूओ पा० प्र० पृ० ५७ (ज=य)

४ जूओ पा० प्र० पृ० ६० (द=त)

सं०	प्रा०	पै०,—चू० पै०	सं०	प्रा०	पै०,—चू० पै०
भगवती	भगवई	भगवती ।	प्रदेशः	पदेसो	पतेसो ।
पार्वती	पव्वई	पव्वती ।	मदनः	मदणो	मतनो ।
शतम्	सयं	सतं ।	वदनकम्	वदणयं	वतनकं ।
दामोदरः	दामोदरो	तामोतरो ।	सदनम्	सदणं	सतनं ।

[1]ग—क, ज—च.[2]

(४) चूलिकापैशाचीमां 'ग' नो 'क' थाय छे अने 'ज' नो 'च' थाय छे:

सं०	प्रा०	चू० पै०	सं०	प्रा०	चू० पै०
गिरितटम्	गिरितडं	किरितडं ।	जर्जरम्	जज्जरं	चच्चरं ।
नगरम्	नयरं	नकरं ।	जीमूतः	जीमूओ	चीमूतो ।
मार्गणः	मग्गणो	मक्कनो ।	नियोजितम्	नियोजिअं	
राजा	राया	राचा ।			नियोचितं ।

क[3]—ग.

(५) अपभ्रंशमां क्यांय 'क' नो 'ग' थाय छे.

सं०	प्रा०	अ०
विक्षोभकरः	विच्छोहयरो	विच्छोहगरो ।

१ जूओ पा० प्र० पृ० ५६ (म=क)

२ जूओ पा० प्र० पृ० ५७ (ज=च)

३ जूओ पा० प्र० पृ० ५५ (क=ग)

संयुक्त 'कादि' लोप.

३ संयुक्त व्यंजनमां पूर्ववर्ती क, ग, ट, ड, त, द, प, श, ष अने स–एटला व्यंजनोनो प्राकृतमां प्रायः लोप थई जाय छे अने लोप थया पछी बाकी रहेला अनादिना व्यंजननो द्विर्भाव थाय छे. जेमके;

क–मुक्तम् मुत–मुत्तं । ड– खड्गः खगो–खग्गो ।
मुक्तः मुत–मुत्तो । षड्जः सजो–सज्जो ।
शक्तः सत–सत्तो । त– उत्पलम् उपलं–उप्पलं ।
[1]सिक्थम् सिथं[2]–सित्थं । उत्पादः उपाओ–उप्पाओ ।
ग–दुग्धम् दुधं[3]–दुद्धं । द– मद्गुः मगु–मग्गु ।
मुग्धम् मुध–मुद्धं । [4]मुद्गरः–मुगरो–मुग्गरो ।
ट–कैटफलम् कफफल–कप्फलं । प–[6]गुप्तः गुत–गुत्तो ।
षट्पदः छपओ–छप्पओ । सुप्तः–सुत–सुत्तो ।

---

१ जूओ पालीप्र० पृ० ४१ (क्त=त्त) (क्थ=त्थ)

२ ख्ख, छछ, ठठ, थथ अने फफ ना स्थानमां अनुक्रमे क्ख, च्छ, ट्ठ, त्थ तथा प्फ थाय छे.

३ घघ, झझ, ढढ, धध अने भभ ना स्थानमां अनुक्रमे ग्घ, ज्झ, ड्ढ, द्ध अने ब्भ थाय छे.

४ जूओ पालीप्र० पृ० २४ (नियम–३०)

५ जू० पा० प्र० पृ० २५ (नियम–३१)

६ जू० पा० प्र० पृ० ४१ – (प्त=त्त

श—आश्लिष्टः आलिद्धो । निष्ठुरः निठुर—निट्ठुरो ।
[1]निश्चलः निचल—निच्चलो । निष्पुंसनम् निपुंसन—निप्पुंसणं ।
श्च्योतति चुअइ । [4]शुष्कम् सुक—सुक्कं ।
[2]श्मश्रु मस्सू । षष्ठः छठ—छट्ठो ।
श्मशानम् मसाणं । स—[5]निस्पृहः निपह—निप्पहो ।
हरिश्चन्द्रः हरिअन्दो । [6]स्कन्दः कंदो ।
श्लक्ष्णम् लण्हं । स्खलितः खलिओ ।
ष—गोष्ठी गोठी—गोट्ठी । स्तवः तवो ।
तुष्टः तुठ—तुट्ठो । स्नेहः नेहो ।

संयुक्त 'मादि' लोप.

४. संयुक्त व्यंजनमां परवर्ती म, न अने य नो प्राकृतमां प्रायः लोप थई जाय छे. अने लोप थया पछी बाकी रहेला अनादिना व्यंजननो द्विर्भाव थाय छे. जेमके:—

म—युग्मम् युग—युग्गं । स्मरः सरो ।
रश्मिः रसि—रस्सी[7] । स्मेरम् सेरं ।

---

१ जु० पा० प्र० पृ० ३८—(श्च=च्छ)—निच्छलो ।

२ श्मश्रु मस्सु पा० प्र० पृ० ५१ टिप्पण.

३ जु० पा० प्र० पृ० २६—नि० ३२—(ष्ठ=ट्ठ ष्ट=ट्ठ)
पृ० ३७ (ष्क=क्क—नि० ४५) पृ० ३९ (ष्प=प्प नि० ४८)

४ शुष्कम् सुक्खं (पा० प्र० पृ० ३७)

५ जु० पा० प्र० पृ० ३६ (स्ख=ख) पृ० ३७ (स्क=क्क)
पृ० ३९ (स्प=प्प—नि० ४८) पृ० २८ (स्थ=थ स्थ=त्थ)

६ स्कन्दः खंदो, खंधो—पालीप्र० पृ० ३६ *टिप्पण.

७ जु० पा० प्र० पृ० ५०—(स्म=स्स)

न—धृष्टद्युम्नः धट्ठज्जुणो[1] । [2]य—कुड्यम् कुड—कुड्डं ।
नग्नः नग—नग्गो । व्याधः वाहो ।
लग्नः लग—लग्गो । श्यामा सामा ।

संयुक्त 'लादि' लोप.

६. संयुक्त व्यंजनना पूर्ववर्ती वा परवर्ती ल, व, ब, विसर्ग अने र नो प्राय: लोप थई जाय छे अने लोप थया पछी बाकी रहेला अनादिना व्यंजननो द्विर्भाव थाय छे. उदाहरण:—

[3]ल—उल्का उका—उक्का । [6]ब—अब्दः अद—अद्दो ।
वल्कलम् वकल—वक्कलं । लुब्धकः लुधअ—लुद्धओ ।
[4]व—विक्लवः विकव—विक्कवो । शब्दः सद— सद्दो ।
श्लक्ष्णम् सण्हं । स्तब्धः—थध—थद्धो ।
[5]व—ध्वस्तः धस्थ—धत्थो । विसर्ग—दुःखितः दुखिअ—दुक्खिओ ।
पक्वम् पिक—पिक्कं । दुःसहः दुसह—दुस्सहो ।
क्ष्वेटकः खेडओ । निःसहम् निसह—निस्सहं ।
क्ष्वोटकः खोडओ । निःसरति निसरइ—निस्सरइ ।
ध्वजः धओ ।

---

1 आ शब्दमां 'ण' नो द्विर्भाव थतो नथी.

2 जू० पा० प्र० पृ० ४८ (नि० ६६)

3 जू० पा० प्र० पृ० २१ (नि० २५)

4 जू० पा० प्र० पृ० ३०–३१ (नि० ३६–३७)

5 जू० पा० प्र० पृ० ३२–३३ (नि० ३८–३९)

6 जू० पा० प्र० पृ० ३५ (नि० ४२)

'र—अर्कः अक—अक्को । 'र—क्रिया किया ।
वर्गः वग—वग्गो । ग्रहः गहो ।
दीर्घः दिघ—दिग्घो । चक्रम् चक—चक्कं ।
वार्ता वता—वत्ता । रात्रिः राति—रत्ती ।
सामर्थ्यम् सामथ्थ—सामत्थं । धात्री धति—धत्ती ।

अपभ्रंशमां प्रायः परवर्ती 'र' नो लोप विकल्पे थाय छे:

प्रियः पिओ प्रिउ, पिउ ।

[सूचना—ज्यां पूर्ववर्ती अने परवर्ती एम बे जातना व्यंजननो लोप प्राप्त होय त्यां प्रयोगो प्रमाणे लोपनुं विधान करवुं जोईए. जेमके;

पूर्ववर्तीनो लोप— परवर्तीनो लोप—

द—उद्विग्नः उविग—उव्विग्गो । य—काव्यम् कव—कव्वं ।
द्विगुणः बिउणो । माल्यम् मल—मल्लं ।
द्वितीयः बीओ । व—द्विजातिः दुआई ।
ल—कल्मषम् कमस—कम्मसं । द्विपः दिओ ।
शुल्वम् सुव—सुव्वं ।
र—सर्वम् सव—सव्वं ।

पूर्ववर्ती अने परवर्तीनो वारा फरती लोप—

न—उद्विग्नः—उव्विग—उव्विग्गो । द—द्वारम् बारं ।
ग—उद्विग्नः उव्विण—उव्विण्णो । व—द्वारम् दारं ।

आ बधा उदाहरणोमां त्रीजो, चोथो अने पांचमो; ए त्रणमांथी कोइ एक नियम द्वारा लोपनो संभव छे.]

१ जु० पा० प्र० पृ० १० (नि० १२)
२ जु० पा० प्र० पृ० १२—१३ (नि० १५—१६)

'द्र' लोप

६. 'द्र'वाळा संस्कृत शब्दना 'द्र' ना 'र' नो लोप प्राकृतमां विकल्पे थाय छे:

चन्द्रः चन्द्रो, चंदो । द्रवः[2] द्रवो, दवो । द्रहः द्रहो, दहो । द्रुमः द्रुमो, दुमो । भद्रम् भद्रं, भद्दं । रुद्रः रुद्रो, रुद्दो । समुद्रः समुद्रो, समुद्दो ।

'अंत्यव्यंजन' नो 'अ'

७. केटलाक संस्कृत शब्दोना छेवटना व्यंजननो 'अ' थाय छे:—

शरत् सरओ । भिषक्[3] भिसओ । इत्यादि.

'कादि' नो 'य'

८. अवर्णथी पर आवेला, एक ज पदमां रहेला, असंयुक्त अने अवर्णान्त क, ग, च, ज, त, द, ब, य अने व—एटला व्यंजनोनो प्राकृतमां सामान्य रीते 'य' थाय छे. उदाहरणो आ प्रमाणे छे:

क[4]—तीर्थकरः तित्थयरो । शकटम् सयढं ।

ग—नगरम् नयरं । मृगाङ्कः मयंको ।

च—कचग्रहः कयग्गहो । काचमणिः कायमणी ।

ज[5]—प्रजापतिः पयावई । रजतम् रययं ।

---

१ आ नियम एक 'वन्द्र' शब्दने लागतो नथीः वन्द्रम् वन्द्रं ।

२ जू० पा० प्र० पृ० १२ (नि० १५)

३ भिषक्=भिसक्को (पालीकोश)

४ जूओ पा० प्र० पृ० ५६—(क=य)

५ जू० पा० प्र० पृ० ५७—(ज=य)

त—पातालम् पायालं । रसातलम् रसायलं ।

द—गदा गया । मदनः मयणो ।

य[1]—नयनम् नयणं । दयालुः दयालू ।

व[2]—लावण्यम् लायण्णं ।

खादिनो 'ह्'

९. स्वरथी पर आवेला, एक ज पदमां रहेला अने असंयुक्त ख, घ, थ, ध, अने भ—एटला व्यंजनोनो प्राकृतमां 'ह्' थाय छे. जेमकेः

ख—मुखम् मुहं । मेखला मेहला । लिखति लिहइ । शाखा साहा

घ[3]—जघनम् जहणं । माघः माहो । मेघः मेहो । श्लाघते लाहइ ।

थ—कथयति कहइ । आवसथः आवसहो । नाथः नाहो । मिथुनम् मिहुणं ।

ध[4]—इन्द्रधनुः इन्दहणू । बधिरः बहिरोः । बाधते बाहइ । व्याधः वाहो । साधुः साहू ।

भ[5]—स्तनभरः थणहरो । नभस् नहं । सभा सहा । स्वभावः सहावो । शोभते सोहइ ।

---

१ आ विधान ('य' नो पण 'य' करवानुं विधान) त्रीजा नियमनो बाध करे छे.

२ क्यांय कोई एकाद शब्दमां इकारथी पर आवेला 'व' नो पण 'य' थई जाय छेः—पिबति पियइ ।

३ जू० पा० प्र० सू० ५६ (घ=ह)

४ ,, ,, ,, ,, ६० (ध=ह)

५ ,, ,, ,, ,, ६२ (भ=ह)

[प्राकृतमां ख, घ, थ, ध अने भ नो 'ह' थवानुं जणाव्युं छे तो पण शौरसेनी, चूलिकापैशाची अने अपभ्रंशमां तेम थतुं नथी.]

थ–ध

(१) शौरसेनीमां विकल्पे अने अपभ्रंशमां क्यांय क्यांय शब्द मध्यस्थित 'थ' नो 'ध' थाय छे.

सं०	प्रा०	शौ०—अ०	
कथम्	कहं	कधं,	कहं ।
कथयति	कहेइ	कधेदि,	कधेइ, कहेइ
कथितम्	कहिअं	कधिदं,	कहिअं ।
नाथः	नाहो	नाधो	नाहो ।
राजपथः	रायपहो	राजपधो	राजपहो ।

घ–ख, ध–थ, भ–फ[1]

(२) चूलिकापैशाचीमां 'घ' नो 'ख', 'ध' नो 'थ' अने 'भ' नो 'फ' थाय छे:

	सं०	प्रा०	चू० पै०
घ—	घर्मः	घम्मो	खम्मो ।
	मेघः	मेहो	मेखो ।
	व्याघ्रः	वग्घो	वक्खो ।
ध—	मधुरम्	महुरं	मथुरं ।
	बान्धवः	बन्धवो	पंथवो ।
	धूली	धूली	थूली ।

---

१ केटलाक वैयाकरणोने मते शब्दनी आदिमां आ नियम लागतो नथी.

	सं०	प्रा०	चू०पै०
भ—	रभसः	रहसो	रफसो ।
	रम्भा	रंभा	रंफा ।
	भगवती	भगवई	फकवती

झ—छ

(३) केटलाकने मते चूलिकापैशाचीमां 'झ' नो 'छ' थाय छेः

झर्झरः	झज्झरो	छच्छरो ।
निर्झरः	निज्झरो	निच्छरो ।

ट—ड

१०. स्वरथी पर आवेला, एक ज पदमां रहेला अने असंयुक्त 'ट' नो प्राकृतमां ड थाय छेः

ट—घटः घडो । घटते घडइ । नटः नडो । भटः भडो ।

टु—तु

(१) पैशाचीमां 'टु' नो 'तु' पण थाय छेः

सं०	प्रा०	पैशाची.	
कुटुम्बकम्	कुडुंबकं	कुतुंबकं, कुटुबंकं ।	
कटुकम्	कडुअं	कतुअं, कटुअं ।	
पटु	पडु	पटु	पतु ।

ठ—ढ

११. स्वरथी पर आवेला, एकपदस्थित अने असंयुक्त 'ठ' नो प्राकृतमां 'ढ' थाय छेः

---

१ पालीमां तो क्यांय संयुक्त 'ट' नो पण 'ड' थाय छेः— लेष्टुः लेड्डु । निघण्टुः निघण्डु । पा० प्र० पृ० ५८ (ट=ड)

ठ—कमठः कमढो । कुठारः कुढारो । पठति पढइ । मठः मढो । शठः सढो ।

ड—ल.

१२. स्वरथी पर आवेला, एकपदस्थित अने असंयुक्त 'ड नो 'ल' थाय छे:

ड—क्रीडति कीलइ । गरुडः गरुलो । तडागम् तलायं । वडवामुखम् वलयामुहं ।

ड—ट

(१) चूलिकापैशाचीमां 'ड' नो 'ट' थाय छे एम केटलाक वैयाकरणो माने छे:

सं०	प्रा०	चू० पै०
डमरुकः	डमरुओ	टमरुको ।
तडागम्	तलायं	तटाकं ।
प्रतिमा	पडिमा	पटिमा ।
मण्डलम्	मंडलं	मंटलं ।

ढ—ठ

(२) केटलाकने मते चूलिकापैशाचीमां 'ढ' नो 'ठ' थाय छे:

सं०	प्रा०	चू० पै०	सं०	प्रा०	चू० पै०
गाढम्	गाढं	काठं ।	ढक्का	ढक्का	ठक्का ।
दंष्ट्रा	दाढा	दाठा	षण्ढः	संढो	संठो ।

---

१. पालीभाषामां प्रायः सर्वत्र ड नो ळ थाय छे:-(जु० पा० प्र० पृ० ४३ (ड=ळ)

[1]ण—न

(३) पैशाचीमां 'ण' नो 'न' थाय छे:

सं०	प्रा०	पै०
गणः	गणो	गनो ।
गुणः	गुणो	गुनो ।

[2]न—ण

१३. स्वरपरवर्ती, एकपदस्थित अने असंयुक्त 'न' नो 'ण' थाय छे:

कनकम् कणयं । नयनम् नयणं । मदनः मयणो । मानते माणइ । वचनम् वयणं । वदनम् वयणं ।

न—ण

१४. संस्कृतमां शब्दनी आदिमां रहेला असंयुक्त 'न' नो विकल्पे 'ण' थाय छे:

नदी णई, नई । नरः णरो, नरो । नयति णेइ, नेइ ।

[3]प—व

१५. स्वरपरवर्ती, असंयुक्त अने एकपदस्थित 'प' नो प्राकृतमां 'व' थाय छे:

उपमा उवमा । उपसर्गः उवसग्गो । गोपतिः गोवई । प्रदीपः पईवो । महिपालः महिवालो ।

---

१. जूओ० पा० प्र० पृ० ५८ (ण=न)

२. जू० पा० प्र० पृ० ६१ (न=ण)

३. ,, ,, ,, ,, ६१ (प=व)

प—व[1]

१६. अवर्णथी पर आवेला, असंयुक्त अने एकपदस्थित 'प' नो प्राकृतमां 'व' ज थाय छेः

कलापः कलावो। कपालम् कवालं। कपिलम् काविलं। काश्यपः कासवो। कुणपम् कुणवं। तपति तवइ। पापम् पावं। शपथः सवहो। शापः सावो।

प—ब

(१) अपभ्रंशमां तो 'प' ने स्थाने 'ब' पण बोलाय छेः

सं०	प्रा०	अ०
शपथः	सवहो	सबधु, सवधु।

फ—भ, ह.

१७. स्वरथी पर आवेला, असंयुक्त अने एकपदस्थित 'फ' नो प्रयोगानुसार 'भ' अने 'ह' थाय छेः

फ—भ—रेफः रेभो। शिफा सिभा।

फ—ह—मुक्ताफलम् मुत्ताहलं।

फ—भ, ह—गुफति गुभइ, गुहइ। शफरी सभरी, सहरी। सफलम् सभलं, सहलं। शेफालिका सेभालिआ सेहालिआ।

फ—भ

(१) अपभ्रंशमां पण 'फ' नो 'भ' थाय छेः

सं०	प्रा०	अ०
सफलम्	सभलं सहलं	सभलु

१. आ नियम पन्नरमा नियमनो अपवाद छे.

ब—प

(१) केटलाक वैयाकरणोने मते चूलिकापैशाचीमां 'ब' ने स्थाने 'प' थाय छे:

सं०	प्रा०	चू०पै०
बालकः	बालओ	पालओ।
बान्धवः	बन्धवो	पन्धवो।

[1]ब—व

१८. स्वरपरवर्ती, एक पदस्थित अने असंयुक्त 'ब' नो 'व' थाय छे:

अलाबूः अलावू। शबलम् सवलं।

म—वँ

(१) अपभ्रंशमां 'म' ने बदले 'वँ' पण बोलाय छे:

सं०	प्रा०	अ०	
कमलम्	कमलं	कवँलु,	कमलु।
तथा	तह तहा,	तिवँ,	तिम।
भ्रमरः	भमरो, भसलो,	भवँरु,	भमरु।
यथा	जह जहा,	जिवँ,	जिम।

---

१ जू० पा० प्र० पृ० ६२ (ब=प)
२ ,, ,, ,, ,, ,, (ब=व)
३ ,, ,, ,, ,, ,, अलाबुः अलापु।

य=ज[1]

१९. संस्कृत शब्दनी आदिमां आवेला 'य' नो प्राकृतमां 'ज' थाय छे:[2]

यमः जमो । यशः जसो । याति जाइ ।

य—य

(१) मागधीमां 'य' नो 'ज' न थतां 'य' ज रहे छे:

सं०	प्रा०	मा०
याति	जाइ	यादि ।
यथास्वरूपम्	जहासरूवं	यधाशलूवं ।
यानपात्रम्	जाणवत्तं	याणवत्तं ।

र—ल

(१) मागधीमां 'र' नो 'ल' थाय छे; अने पैशाचीमां तो ए विकल्पे थाय छे:

सं०	प्रा०	मा०	पै०
करः	करो	कलो	करो कलो ।
नरः	नरो	नलो	नरो नलो ।
विचारः	विआरो	विआलो	विचालो विचारो ।

ल—ळ[3]

(१) पैशाचीमां 'ल' नो 'ळ' थाय छे:

कमलम्	कमलं	कमळं ।
कुलम्	कुलं	कुळं ।

---

१ गवयः गवजो गवयो पालि० प्र० पृ० ६२.

२ आ नियम केटलेक ठेकाणे तो लागतो पण नथीः यथाख्यातम् अहक्खायं । यथाजातम् अहाजायं । पृ० १०मां जणावेलो बीजो नियम क्यांय शब्दनी आदिमां पण लागे छे एथी अहीं 'यथाख्यात' अने 'यथाजात' नो आदिनो 'य' लोपाएलो छे.

३ जूओ पा० प्र० पृ० ४३ (ड=ळ)

जलम्	जलं	जळं ।
शीलम्	सीलं	सीळं ।
सलिलम्	सलिलं	सळिळं ।

[1]श–स ष–स

२०. संस्कृतमां वपराता 'श' अने 'ष' नो प्राकृतमां 'स' थाय छे:

श—कुशः कुसो । दश दस । नृशंसः निसंसो ।

विशति विसइ । वंशः वंसो । शब्दः सद्दो ।

श्यामा सामा । शुद्धम् सुद्धं । शोभते सोहइ ।

ष—कषायः कसायो । घोषति घोसइ । निकषः निहसो ।

षण्डः संडो ।

श, ष—विशेषः विसेसो । शेषः सेसो ।

स–श

(१) मागधीमां तो 'स' नो 'श' थाय छे अने पैशाचीमां तो प्राकृतनी प्रमाणे छे:

सं०	प्रा०	मा०
पुरुषः	पुरिसो	पुलिशे ।
सारसः	सारसो	शालशे ।
श्रुतम्	सुअं	शुदं ।
शोभनम्	सोहणं	शोभणं ।
हंसः	हंसो	हंशे ।

१ जु० पा० प्र० पृ० ६ (श=स, ष=स)

'ह—घ

२१. संस्कृतमां अनुस्वारथी पर आवेला 'ह' नो प्राकृतमां विकल्पे 'घ' थाय छे:

संहारः—संघारो, संहारो। सिंहः—सिंघो, सीहो।

---

१ एवो पण एकाद प्रयोग मळे छे, ज्यां स्वरथी पर आवेला 'ह' नो पण 'घ' थाय छे: दाहः—दाघो, दाहो।

प्रकरण ४

संयुक्त व्यंजनोना सामान्य फेरफारो

२२. संस्कृतना 'क्ष' नो विशेषे करीने प्राकृतमां 'ख' थाय छे अने क्यांय क्यांय तो प्रयोगानुसारे 'क्ष'नो 'छ' अने 'झ' पण थाय छे तथा पदमध्यस्थित 'क्ष' नो 'क्ख' 'च्छ' अने 'ज्झ' थाय छे:

[1]क्ष=ख क्ष=छ[2] क्ष=झ

क्षयः खओ। क्षीणम् खीणं। क्षीरम् खीरं। क्ष्वेटकः खेडओ। क्ष्वोटकः खोडओ।

क्षणः[3] छणो, [खणो]। क्षतम् छयं। [4]क्षमा छमा [खमा]। क्षारः छारो। क्षीणम् छीणं। क्षीरम् छीरं। क्षुण्णः छुण्णो। क्षुतम् छीअं। क्षुध् छुहा। क्षुरः छुरो। क्षेत्रम् छेत्तं।

क्षीयते झिज्जइ। क्षीणम् झीणं।

---

१ जु० पा० प्र० पृ० १७ (क्ष=ख, क्ष=छ) क्ष=झ–टिप्पण पृ० १६.

२ पालीभाषामां 'क्ष' नो 'च' पण थाय छे:–(जु० पा० प्र० पृ० १७ क्ष=च)

३ 'क्षण' शब्दनो 'उत्सव' अर्थ होय त्यारे तेनुं रूप 'छण' थाय छे अने समय अर्थ होय तो 'खण' रूप थाय छे. जु० पा० प्र० पृ. १७–(क्ष=छ, क्षणः खणो छणो)

४ 'क्षमा' शब्दनो 'पृथिवी' अर्थ होय त्यारे तेनुं 'छमा' रूप थाय छे अने खमवुं–क्षमाकरवी–अर्थमां तो 'खमा' रूप ज वपराय छे.

[1] क्ष=क्ख, क्ष=च्छ, क्ष=ज्झ

इक्षुः इक्खू। ऋक्षः रिक्खो[2]। ऋक्षम् रिक्खं। मक्षिका मक्खिआ। लक्षणम् लक्खणं। प्रक्षीणम् पक्खीणं। प्रक्षेपः पक्खेवो। सादृश्यम् सारिक्खं।

अक्षि अच्छि। इक्षुः उच्छू। उक्षा उच्छा। ऋक्षः रिच्छो। ऋक्षम् रिच्छं। कक्षः कच्छो। कक्षा कच्छा। कुक्षिः कुच्छी। कौक्षेयकम् कुच्छेअयं। दक्षः दच्छो। प्रक्षीणम् पच्छीणं। मक्षिका मच्छिआ। लक्ष्मीः लच्छी। वक्षः वच्छं। वृक्षः वच्छो। सदृक्षः सारिच्छो। सादृक्ष्यम् सारिच्छं।

प्रक्षीणम् पज्झीणं।

क्ष=ᳵक

(१) मागधीमां तो 'क्ष' नो ᳵक थाय छे:

यक्षः	जक्खो	यᳵके।
राक्षसः	रक्खसो	लᳵकशे।

२३. संस्कृतना वस्तुवाचक शब्दना 'ष्क' अने 'स्क' नो प्राकृतमां 'ख' थाय छे तथा पदमध्यस्थित ष्क अने 'स्क' नो 'क्ख' थाय छे:

[3] ष्क=ख, क्ख स्क=ख, क्ख

निष्कम् निक्खं। पुष्करम् पोक्खरं। पुष्करिणी पोक्खरिणी। अवस्कन्दः अवक्खंदो। स्कन्दः खंदो। स्कन्धो खंधो। स्कन्धावारः खंधावारो।

---

१ जू० पा० प्र० पृ० १७–(क्ष=क्ख, क्ष=च्छ, क्ष=ज्झ–टिप्पण)

२ ऋक्षः अच्छो, इक्को। ध्वाङ्क्षः धंको। लाक्षा लाखा। पा० प्र० पृ० १८

३ जू० पा० प्र० पृ० ३६–३७ (ष्क–क्ख, स्क=ख, स्क=क्ख)

संयुक्त ष, स=स[1]

(१) मागधीमां संयुक्त 'ष' के 'स' ने स्थाने 'स' थाय छे:[2]

उष्मा	उम्हा	उस्मा ।
कष्टम्	कट्ठं	कस्टं ।
धनुष्खण्डम्	धणुक्खंडं	धनुस्खंडं ।
निष्फलम्	निप्फलं	निस्फलं ।
विष्णुः	विण्हू	विस्नू ।
शष्पम्	सप्फं	सस्पं ।
शुष्कम्	सुक्कं	सुस्कं ।
प्रस्खलति	पक्खलइ	पस्खलदि ।
बृहस्पतिः	बुहप्फई	बुहस्पदी ।
मस्करी	मक्खरी	मस्कली ।
विस्मयः	विम्हयो	विस्मये ।
हस्ती	हत्थी	हस्ती ।

२४. संस्कृत शब्दना 'त्य' नो प्राकृतमां 'च' थाय छे अने पदमध्य-स्थित 'त्य' नो च्च थाय छे:[3]

त्य=च[4]

त्यागः चाओ । त्यागी चाई । त्यजति चयइ ।

त्य=च्च

प्रत्ययः पच्चओ। प्रत्यूषः पच्चूसो। सत्यम् सच्चं।

---

१ जूओ० पा० प्र० पृ० ५१ नि० ६८.

२ एक 'ग्रीष्म' शब्दने आ नियम नथी लागतो.

३ आ नियम 'चैत्य' शब्दने लागतो नथी: चैत्यम् चइत्तं, चेइअं-(ऐ=अइ अने अन्तःस्वरवृद्धि.)

४ जु० पा० प्र० पृ० २०-(त्य=च, त्य=च्च)

२९. प्रयोगानुसारे क्यांय 'त्व' नो 'च,' 'थ्व' नो 'छ,' 'द्व' नो 'ज' अने 'ध्व' नो 'झ' थाय छे तथा पदमध्यस्थित 'त्व' नो च्च, 'थ्व' नो 'च्छ,' 'द्व' नो 'ज्ज' अने 'ध्व' नो 'ज्झ' थाय छे.

[1]त्व=च्च

कृत्वा किच्चा। चत्वरम् चच्चरं। ज्ञात्वा णच्चा। दत्त्वा दच्चा। भुक्त्वा भोच्चा। श्रुत्वा सोच्चा।

थ्व=च्छ — पृथ्वी पिच्छी।

ध्व=झ — ध्वजः[2] झओ।

द्व=ज्ज — विद्वान् विज्जं।

ध्व=ज्झ — बुध्वा बुज्झा। साध्वसम् सज्झसं।

२६. संस्कृतमां ह्रस्व स्वरथी पर आवेला 'थ्य', 'श्च', 'त्स' अने 'प्स' नो प्राकृतमां 'च्छ' थाय[3] छे.

थ्य—पथ्यम् पच्छं। पथ्या पच्छा। मिथ्या मिच्छा। सामर्थ्यम् सामथ्य--सामच्छं।

[4]श्च—आश्चर्यम् अच्छेरं। पश्चात् पच्छा। पश्चिमम् पच्छिमं। वृश्चिकः विंछिओ।

---

१ जू० पा० प्र० पृ० ३८ (टिप्पण—चत्वरम् चच्चरं)

२ ध्वजः धजो—(पा० प्र० पृ० ३२—नि० ३८)

३ जू० प० प्र० पृ० २१ (थ्य=च्छ) पृ० ३८—(श्च=च्छ) पृ० २९—(त्स=च्छ] पृ० ३८—(प्स=च्छ)

४ एक मात्र 'निश्चल' शब्दने आ नियम लागतो नथी: निश्चलः=निच्चलो, पाली—निच्चलो

त्स—उत्सवः उच्छवो। उत्साहः उच्छाहो। उत्सुकः उच्छुओ। चिकित्सति चिइच्छइ। मत्सरः मच्छरो। संवत्सरः संवच्छरो।

प्स—अप्सराः अच्छरा। जुगुप्सति जुगुच्छइ। लिप्सति लिच्छइ।

च्छ—श्च

(१) प्राकृतमां 'श्च' नो 'च्छ' थाय छे त्यारे मागधीमां तो एथी उलटुं थाय छे एटले 'च्छ' नो 'श्च' थाय छे:

उच्छलति	उच्छलइ	उश्चलदि।
गच्छ	गच्छ	गश्च।
तिर्यक्	तिरिच्छि	तिरिश्चि।
पिच्छिलः	पिच्छिलो	पिश्चिले।
पृच्छति	पुच्छइ	पुश्चदि।
वत्सलः	वच्छलो	वश्चले।

[1]द्य, य्य, [2]र्य—ज

२७. पदनी आदिमां रहेला 'द्य', 'य्य' अने 'र्य' नो 'ज' थाय छे तथा पदमध्यस्थित 'द्य' 'य्य' अने 'र्य' नो 'ज्ज' थाय छे:

द्य—द्युतिः—जुई। द्योतः—जोओ।

द्य—अवद्यम् अवज्जं। मद्यम् मज्जं। वैद्यः वेज्जो।

य्य—जय्यः जज्जो। शय्या सेज्जा।

र्य—कार्यम् कज्जं। पर्याप्तम् पज्जत्तं। पर्यायः पज्जाओ। भार्या भज्जा। मर्यादा मज्जाया। वर्यम् वज्जं।

---

१ जू० पा० प्र० पृ० १८—(द्य=ज, द्य=ज्ज) पालीमां केटलेक ठेकाणे 'द्य' नो 'य्य' पण थाय छे—पृ० १९—(द्य=य्य, टिप्पण)

२ पालीमां तो 'र्य' नो 'यिर' 'य्य' के 'रिय' थाय छे—(जू० पा० प्र० पृ० १५–१६)

र्य—य्य[1]

(१) शौरसेनीमां 'र्य' नो विकल्पे 'य्य' थाय छे:

आर्यपुत्र:	अज्जउत्तो	अय्यउत्तो,	अज्जउत्तो ।
कार्यम्	कज्जं	कय्यं,	कज्जं ।
पर्याकुल:	पज्जाउलो	पय्याकुलो,	पज्जाकुलो ।
सूर्यः	सुज्जो	सुय्यो,	सुज्जो ।

द्य—य्य[2]

(१) मागधीमां 'द्य' नो 'य्य' थाय छे:

अद्य	अज्ज	अय्य ।
मद्यम्	मज्जं	मय्यं ।
विद्याधर:	विज्जाहरो	वियाहले ।

[3]ध्य, ह्य—झ

२८. पदादिभूत 'ध्य' अने 'ह्य' नो 'झ' थाय छे अने पदमध्यस्थित 'ध्य' तथा 'ह्य' नो 'ज्झ' थाय छे:

ध्य—ध्यानम् झाणं । ध्यायति झायइ ।

उपाध्याय: उवज्झायो । बध्यते बज्झइ । विन्ध्य: विंझो[4] ।

साध्यम् सज्झं । स्वाध्याय: सज्झाओ ।

[5]ह्य—गुह्यम् गुज्झं । नह्यति नज्झइ । मह्यम् मज्झं । सह्य: सज्झो ।

---

१ जूओ टिप्पण २ जुं पृ० ३३ ।

२ जूओ टिप्पण १ लुं पृ० ३३ ।

३ जू० पा० प्र० पृ० १९—(ध्य=झ, ध्य=ज्झ)

४ अनुस्वारथी अने गुरु के दीर्घस्वरथी पर आवेला कोइ पण व्यंजनना स्थानमां अहीं जणावेलां द्विरुक्त(क्त, ज्झ वगेरे) विधानो थतां नथी. माटे ज 'विन्ध्य:' नुं 'विंज्झो' नहि पण 'विंझो' थयुं. जूओ पा० प्र० पृ० १९ टि० संध्या संझा ।

५ पालीमां 'ह्य' नो 'य्ह' थाय छे—(पा० प्र० पृ० २२—ह्य=य्ह)

र्त–ट

२९ संस्कृतना 'र्त'[1] नो प्राकृतमां सामान्य रीते 'ट्ट'[2] थाय छे:

कैवर्तः केवट्टो। जर्तः जट्टो। नर्तकी नट्टई। प्रवर्तते पयट्टइ। राजवर्तकम् रायवट्टयं। वर्ती वट्टी। वर्तुलम् वट्टुलं। वार्ता वट्टा। संवर्तितम् संवट्टिअं।

न्त=न्द

(१) शौरसेनीमां क्यांय क्यांय 'न्त' नो 'न्द' थाय छे:

अन्तःपुरम्	अन्तेउरं	अन्देउरं।
निश्चिन्तः	निच्चिंतो	निच्चिंदो।
महान्	महंतो	महंदो।

---

१ २९मो नियम नीचे जणावेला शब्दोमां लागतो नथी अर्थात् नीचेना शब्दोमां 'र्त' नो 'ट्ट' थतो नथी:

आवर्तकः आवत्तओ।	प्रवर्तकः पवत्तओ।
आवर्तनम् आवत्तणं।	प्रवर्तनम् पवत्तणं।
उत्कर्तितम् उक्कत्तिअं।	मुहूर्तः मुहुत्तो।
कर्तरी कत्तरी।	मूर्तः मुत्तो।
कार्तिकः कत्तिओ।	मूर्तिः मुत्ती।
कीर्तिः कित्ती।	वर्तिका वत्तिआ।
धूर्तः धुत्तो।	वार्तिकम् वत्तिअं।
निवर्तकः निवत्तओ।	संवर्तकः संवत्तओ।
निवर्तनम् निवत्तणं।	संवर्तनम् संवत्तणं।
निर्वर्तकः निव्वत्तओ।	

(जूओ पृ० १६ नि० ५, संयुक्त 'लादि' लोप)

२ जु० पा० प्र० पृ० ५८ (त=ट)

[1] म्न, ज्ञ–ण

३० संस्कृतना 'म्न' अने 'ज्ञ' नो प्राकृतमां 'ण' थाय छे अने पदमध्यस्थित 'म्न' अने 'ज्ञ' नो 'ण्ण' थाय छे:

म्न–निम्नम् निण्णं। प्रद्युम्नः पज्जुण्णो।

ज्ञ–प्रज्ञा पण्णा। विज्ञानम् विण्णाणं। आज्ञा आणा[2]।

ज्ञानम् णाणं। संज्ञा संणा[3]।

[4] ज्ञ, ञ्ज, ण्य, न्य—ञ्ञ

(१) प्राकृतमां 'ज्ञ' नो 'ण' थाय छे त्यारे मागधीमां 'ज्ञ' नो 'ञ्ञ' थाय छे अने 'ञ्ज,' 'ण्य' अने 'न्य' नो पण 'ञ्ञ' थाय छे:

ज्ञ—अवज्ञा	अवण्णा	अवञ्ञा।
प्रज्ञा	पण्णा	पञ्ञा।
सर्वज्ञः	सव्वण्णू	शव्वञ्ञे।
ञ्ज—अञ्जलिः	अञ्जली	अञ्ञली।
धनञ्जयः	धणंजयो	धणञ्ञए।
प्राञ्जलः	पंजलो	पञ्ञले।
ण्य—अब्रह्मण्यम्	अबम्हण्णं	अबम्हञ्ञं।
पुण्यम्	पुण्णं	पुञ्ञं।
पुण्यवान्	पुण्णवंतो	पुञ्ञवंते।
न्य—अभिमन्युः	अहिमन्नू	अहिमञ्ञू।
कन्यका	कन्नया	कञ्ञया।
सामान्यम्	सामन्नं	शामञ्ञं।

---

१ जु० पा० प्र० पृ० ४८ (म्न=न्न) टिप्पण. जु० पा० प्र० पृ० २४ (ज्ञ=ण) टिप्पण.

२–३ जूओ पृ० ३४ टिप्पण ४ थुं.

४ जूओ पा० प्र० पृ० २३–२४ (ज्ञ=ञ्ञ, ण्य=ञ्ञ, न्य=ञ्ञ)

[1]स्त–थ

३१ संस्कृतना 'स्त'नो प्राकृतमां 'थ' थाय छे अने पदमध्यस्थित 'स्त' नो 'त्थ' थाय छे:[2]

स्तवः थवो । स्तम्भः थंभो । स्तब्धः थद्धो [ठद्धो] स्तुतिः थुई । स्तोकम् थोअं । स्तोत्रम् थोत्तं । स्त्यानम् थीणं ।

अस्ति अत्थि । पर्यस्तः पल्लत्थो । प्रशस्तः पसत्थो । प्रस्तरः पत्थरो । स्वस्ति सत्थि । हस्तः हत्थो ।

र्थ, स्थ—स्त

(१) 'र्थ' अने 'स्थ' नो मागधीमां 'स्त' थाय छे:

अर्थपतिः	अत्थवई	अस्तवदी ।
सार्थवाहः	सत्थवाहो	शास्तवाहे ।
उपस्थितः	उवट्ठिओ	उवस्तिदे ।
सुस्थितः	सुट्ठिओ	शुस्तिदे ।

[3]ष्ट–ठ

३२ संस्कृतना 'ष्ट' नो प्राकृतमां 'ठ' थाय छे अने पदमध्यस्थित 'ष्ट' नो 'ट्ठ' थाय छे:[4]

---

१ जू० पा० प्र० पृ० २७–(स्त=थ, स्त=त्थ)

२ 'समस्त' अने 'स्तम्ब' शब्दना 'स्त' नो 'थ' थतो नथीः समस्तम् समत्तं । स्तम्बः तम्बो ।

३ जू० पा० प्र० पृ० २६ (ष्ट=ठ)

४ इष्टा, उष्ट्र अने संदष्ट शब्दना 'ष्ट' नो 'ठ' थतो नथीः इष्टा इट्टा । उष्ट्रः उट्टो । संदष्टम् संदट्टं । जूओ पा०प्र० पृ० २६ टिप्पण।

अनिष्टम् अणिट्ठं । इष्टः इट्ठो । कष्टम् कट्ठं । काष्टम् कट्ठं । दष्टः दट्ठो । दृष्टिः दिट्ठी । पुष्टः पुट्ठो । मुष्टिः मुट्ठी । यष्टिः लट्ठी । सुराष्ट्राः सुरट्ठा । सृष्टिः सिट्ठी ।

ट्ट, ष्ठ—स्ट

(१) 'ट्ट' अने 'ष्ठ' नो मागधीमां 'स्ट' थाय छे:

ट्ट—पट्टः पट्टो पस्टे । भट्टारिका भट्टारिया भस्टालिका
भट्टिनी भट्टिणी भस्टिणी ।

ष्ठ—कोष्ठागारम् कोट्ठागारं कोस्टागालं ।
सुष्ठु सुट्ठु शुस्टु ।

ष्ट—सट

(१) पैशाचीमां 'ष्ट' ना स्थाने 'सट' बोलाय छे:

कष्टम्	कट्ठं	कसटं ।
दृष्टम्	दिट्ठं	दिसटं ।

[1]ड्म, [2]क्म—प

३३ संस्कृतना 'ड्म' अने 'क्म'नो[3] प्राकृतमां 'प' थाय छे अने पदम- ध्यस्थित 'ड्म' अने 'क्म' नो 'प्प' थाय छे:

[4]कुड्मलम् कुंपलं ।
रुक्मिणी रुप्पिणी ।

१–२ पालीमां तो 'ड्म' नो 'ड्डुम' अने 'क्म' नो 'कुम' थाय छे– (जू० पा० पृ० ४९)

३ कोइ एक ठेकाणे 'क्म' नो 'च्म' पण थाय छे:—रुक्मी रुच्मी, रुम्मी.

४ कुड्मलम्—कुड्डमलं (पा० प्र० पृ० ४३ टिप्पण)

[1]ष्प, स्प—फ

३४ संस्कृतना 'ष्प' अने 'स्प' नो 'फ' थाय छे अने पदमध्यस्थित 'ष्प' तथा 'स्प' नो 'प्फ' [2]थाय छे:

ष्प—निष्पावः निप्फावो। निष्पेषः निप्फेसो। पुष्पम् पुप्फं। शष्पम् सप्फं।

स्प—स्पन्दनम् फंदणं। प्रतिस्पर्धी पाडिप्फद्धी। बृहस्पतिः बुहप्फई।

[3]ह्व—भ

३५ प्राकृतमां 'ह्व' नो 'भ' अने पदमध्यस्थित 'ह्व' नो 'ब्भ' विकल्पे थाय छे:

जिह्वा जिब्भा जीहा। विह्वलः विब्भलो, विहलो।

[4]न्म—म्म

३६ संस्कृतना 'न्म' नो 'म्म' थाय छे:

जन्म जम्मो। मन्मथः वम्महो। मन्मनः मम्मणं।

[5]ग्म—म्म

३७ संस्कृतना 'ग्म' नो 'म्म' विकल्पे थाय छे:

तिग्मम् तिम्मं, तिग्गं। युग्मम् जुम्मं, जुग्गं।

---

१ जुओ पा० प्र० पृ० ३९ (स्प=फ, स्प=प्फ, ष्प=प्फ)

२ पदमध्यस्थित 'स्प' अने 'ष्प' नो प्रायः 'प्प' पण थाय छे

निष्पुंसनम् निप्पुंसणं। परस्परम् परोप्परं।

निष्प्रभः निप्पहो। बृहस्पतिः बुहप्पई।

निस्पृहः निप्पिहो। जु० पाली प्र० पृ० ३९

३ जुओ पा० प्र० पृ० ३५–(ग ह्वर=गब्भरं) टिप्पण तथा पृ० ६४–ह्व=भ)

४ जुओ पा० प्र० पृ० ४६–(न्म=म्म)

५ पालीमां प्रायः 'ग्म' नो 'गुम' थाय छे:–(जु० पा० प्र० पृ० ४९)

[1]श्म, ष्म, स्म, ह्म, क्ष्म–म्ह

३८ संस्कृतमां प्रयोजाता 'श्म', 'ष्म', 'स्म', 'ह्म' अने पक्ष्मना 'क्ष्म'नो प्राकृतमां 'म्ह' [2]थाय छेः

श्म—कश्मीराः कम्हारा। कुश्मानः कुम्हाणो।

ष्म—ऊष्मा उम्हा। ग्रीष्मः गिम्हो।

स्म—अस्मादृशः अम्हारिसो। विस्मयः विम्हओ।

ह्म—ब्रह्मा बम्हा। ब्राह्मणः बम्हणो। ब्रह्मचर्यम् बम्हचेरं मुह्माः सुम्हा।

क्ष्म—पक्ष्मलम् पम्हलं। पक्ष्माणि पम्हाइं।

(१) अपभ्रंशमां 'स्म' ना स्थाने 'म्भ' पण बोलाय छेः

ग्रीष्मः	गिम्हो	गिम्भो,	गिम्हो।
श्लेष्मा	सिम्हो	सिम्भो,	सिम्हो।

[3]श्न, ष्ण, स्न, ह्न, ह्ण, क्ष्ण, क्ष्म–ण्ह

३९ संस्कृतमां प्रयोजाता 'श्न', 'ष्ण', 'स्न', 'ह्न', 'ह्ण', 'क्ष्ण' अने सूक्ष्मना 'क्ष्म'नो 'ण्ह' थाय छेः

श्न—प्रश्नः पण्हो। शिश्नः सिण्हो।

ष्ण—उष्णीषम् उण्हीसं। कृष्णः कण्हो। जिष्णुः जिण्हू विष्णुः विण्हू

स्न—ज्योत्स्ना जोण्हा। प्रस्नुतः पण्हुओ। स्नातः ण्हाओ।

ह्न— जह्नुः जण्हू। वह्निः वण्ही।

---

१ जुओ पा० प्र० पृ० ५०–(श्म=म्ह, ष्म=म्ह, स्म=म्ह)

२ आ नियम केटलेक ठेकाणे लागतो नथीः—रश्मिः रस्सी। स्मरः सरो—जूओ पाली प्र० पृ० ५०–(स्म=स)

३ जूओ पा० प्र० पृ० ४६ (नियम–६३) तथा पृ० ४७ श्न=ण्ह, ष्ण=ण्ह. पृ० ४८ टिप्पण तीक्ष्णः तिक्खिणो, तिक्खो, तिण्हो। पृ० ४९ टिप्पण पूर्वाह्णः पुब्बण्हो।

ह्ण — अपराह्णः अवरण्हो। पूर्वाह्णः पुव्वण्हो।
क्ष्ण — तीक्ष्णम् तिण्हं। श्लक्ष्णम् सण्हं।
क्ष्म — सूक्ष्मम् सण्हं।

स्न—सिन[1]

(१) प्राकृतमां 'स्न' नो 'ण्ह' थाय छे त्यारे पैशाचीमां तो क्यांय क्यांय 'स्न' ने बदले 'सिन' बोलाय छे:

स्नातम् ण्हायं सिनातं।
स्नुषा सुण्हा, ण्हुसा सिनुसा, सुनुसा।

ह्ल—ल्ह[2]

४० संस्कृतना 'ह्ल'नो प्राकृतमां 'ल्ह' थाय छे:

कह्लारम् कल्हारं। प्रह्लादः पल्हाओ।

ज्ञ—ज[3]

४१ संस्कृतना 'ज्ञ' नो प्राकृतमां 'ज' विकल्पे थाय छे अने पदमध्यस्थित 'ज्ञ' नो 'ज्ज' थाय छे:

अभिज्ञः अहिज्जो, अहिण्णू। आज्ञा अज्जा, आणा। आत्मज्ञः अप्पज्जो, अप्पण्णू। इङ्गितज्ञः इङ्गिअज्जो, इङ्गिअण्णू। दैवज्ञः देवज्जो, देवण्णू। प्रज्ञा पज्जा, पण्णा। प्राज्ञः पज्जो, पण्णो। मनोज्ञम् मणोज्जं, मणुण्णं। सर्वज्ञः सव्वज्जो, सव्वण्णू। संज्ञा संजा, संणा।

र्ह—रिह[4]

४२ 'र्ह' व्यंजननो प्राकृतमां 'रिह' थाय छे:

अर्हति अरिहइ। अर्हः अरिहो। गर्हा गरिहा। बर्हः बरिहो।

---

१ जूओ प्रा० प्र० पृ० ४६ (नि० ६३) स्नानम् सिनानं। स्नुषा सुणिसा, सुण्हा, (ण्हुसा)

२ पालीमां 'ह्ल'नो 'हिल' थाय छे: ह्लादः हिलादो—पा० प्र० पृ० ३२

३ जू० पाली प्र० पृ० २४ टिप्पण—प्रज्ञानम् पजानं।

४ जूओ पा० प्र० पृ० ११ (नियम १३)

र्श, र्ष-रिस

४३ संस्कृतना 'र्श' अने 'र्ष' नो प्राकृतमां 'रिस' विकल्पे थाय छेः[1]

र्श—आदर्शः आयरिसो, आयंसो । दर्शनम् दरिसणं, दंसणं ।
सुदर्शनः सुदरिसणो, सुदंसणो ।

र्ष—वर्षम् वरिसं, वासं । वर्षशतम् वरिससयं, वाससयं ।
वर्षा वरिसा, वासा ।

ल्ल-इल

४४ संस्कृतना संयुक्त 'ल' नो 'इल'[2] थाय छे[3]:

अम्लम् अंबिलं । क्लाम्यति किलम्मइ । क्लाम्यत् किलंतं । क्लिष्टम् किलिट्ठं । क्लिन्नम् किलिन्नं । क्लेशः किलेसो । ग्लायति गिलाइ । ग्लानम् गिलाणं । प्लुष्टम् पिलुट्ठं । प्लोषः पिलोसो । म्लायति मिलाइ । म्लानम् मिलाणं । श्लेषः सिलेसो । श्लेष्मा सिलिम्हा । श्लोकः सिलोओ । श्लिष्टम् सिलिट्ठं । शुक्लम् सुइलं ।

र्य[4]-रिअ

४५ संस्कृतना 'र्य' व्यंजननो प्राकृतमां 'रिअ' थाय छेः

आचार्यः आयरिओ । गाम्भीर्यम् गंभीरिअं । गाम्भीर्यम् गहीरिअं । चौर्यम् चोरिअं । धैर्यम् धीरिअं । ब्रह्मचर्यम् बम्हचारिअं । भार्या भारिआ । वर्यम् वरिअं । वीर्यम् वीरिअं । स्थैर्यम् थेरिअं । सूर्यः सूरिओ । सौन्दर्यम् सुंदरिअं । शौर्यम् सोरिअं ।

---

१ जु० पा० प्र० पृ० ११ टिप्पण-अर्शः अरिसो । आर्षम् आरिसं ।

२ ,, ,, ,, ,, ३१ (नि० ३७)

३ आ नियम क्यांय क्यांय लागतो पण नथीः—क्लमः कमो । प्लवः पवो ।

४ जुओ पृ० ३३—२७ मा नियम उपरनुं टिप्पण

र्य—रिय

(१) प्राकृतनी पेठे पैशाचीमां पण क्यांय क्यांय 'र्य' ने बदले 'रिय' बोलाय छे:

भार्या भज्जा भारिया, भज्जा ।

ह्य—य्ह

४६ 'ह्य' नो 'य्ह' प्राकृतमां विकल्पे थाय छे:

गुह्यम् गुय्हं, गुज्झं[१] ।
सह्य: सय्हो, सज्झो ।

[२]वी—उवी

४७ स्त्रीलिङ्गि पदने अंते वर्तता संयुक्त 'वी'नो प्राकृतमां 'उवी' थाय छे:

गुर्वी गुरुवी । तन्वी तणुवी । पृथ्वी पुहुवी । बह्वी बहुवी । लघ्वी लहुवी । मृद्वी मउवी ।

---

१ जुओ पृ० ३४-२मुं टिप्पण ।

२ जुओ नि० २८-पृ० ३४

३ पट्टः पटुनी (पालि प्र० पृ० २६२ स्त्रीप्रत्यय)

प्रकरण ५

उपर एटले प्रकरण २-३-४मां आपेला नियमो सामान्य नियमो कहेवाय छे एटले ज्यां कोई बीजो खास नियम न लागतो होय त्यां ए ज नियमो लागू थाय छे. आ नीचे जे नियमो आपवामां आवे छे ते विशेष नियमो छे एटले ज्यां आ नियमोनी प्राप्ति थती होय त्यां सामान्य नियमो न लगाडतां प्रथम आ ज नियमो लगाववाना छे.

स्वरना विशेष विकारो

४८ 'अ' विकार

(क) [1]अ=आ—

नीचे जणावेला शब्दोमां आदिना 'अ' नो विकल्पे 'आ' थाय छेः

अभियातिः	आहिआई, अहिआई।	प्रतिस्पर्धी	पाडिप्फद्धी, पडिप्फद्धी।
अस्पर्शः	आफंसो, अफंसो।	प्रवचनम्	पावयणं, पवयणं।
चतुरन्तम्	चाउरंतं, चउरंतं।	प्ररोहः	पारोहो, परोहो।
दक्षिणः	दाहिणो, दक्खिणो।	प्रवासी	पावासू, पवासू।
परकीयम्	पारकेरं, परकेरं।	प्रसिद्धिः	पासिद्धी, पसिद्धी।
परकीयम्	पारक्कं, परक्कं।	प्रसुप्तः	पासुत्तो, पसुत्तो।
पुनः	पुणा, पुण।	मनस्वी	माणंसी, मणंसी।
प्रकटम्	पायडं, पयडं।	मनस्विनी	माणंसिनी, मणंसिणी।
प्रतिपत्	पाडिवआ, पडिवआ।	समृद्धिः	सामिद्धी, समिद्धी।
प्रतिसिद्धिः	पाडिसिद्धी, पडिसिद्धी।	सदृक्षः	सारिच्छो, सरिच्छो इत्यादि।

[1] पाली प्र० पृ० ५२-(अ=आ)

(ख) [1]अ=इ—

नीचे जणावेला शब्दोमां चिह्नित 'अ' नो 'इ' थाय छे—ते क्यांय नित्ये थाय छे अने क्यांय विकल्पे थाय छे:

ईषत् इसि । उत्तमः उत्तिमो । कतमः कइमो । कृपणः किविणो । दत्तम् दिण्णं । मरिचम् मिरिअं । मध्यमः मज्झिमो । मृदङ्गः मुइंगो । वेतसः वेडिसो । व्यजनम् विअणं । व्यलीकम् विलीअं । स्वप्नः सिविणो ।

वैकल्पिक उदाहरणोः —

अङ्गारः इंगारो, अंगारो । ललाटम् णिडालं, णडालं ।
पक्वम् पिक्कं, पक्कं । सप्तपर्णः छत्तिवण्णो, छत्तवण्णो ।

(ग) अ=ई—

नीचे आपेला शब्दना आद्य 'अ' नो विकल्पे 'ई' थाय छे:

हरः हीरो, हरो ।

(घ) [2]अ=उ—

नीचे सूचवेला शब्दोमां चिह्नित 'अ' नो 'उ' थाय छे—ते क्यांय नित्य थाय छे अने क्यांय विकल्पे थाय छे:

अभिज्ञः	अहिण्णू ।	गवयः	गउओ ।
आगमज्ञः	आगमण्णू ।	गवयाः	गउआ
कृतज्ञः	कयण्णू ।	ध्वनिः	झुणी ।
विज्ञः	विण्णू ।	विष्वक्	वीसुं
सर्वज्ञः	सव्वण्णू ।		[3]इत्यादि ।

---

१ पाली प्र० पृ० ५२-(अ=इ)

२ पाली प्र० पृ० ५२-(अ=उ)

३ बीजा पण प्रयोगानुसारी शब्दो 'आदि' शब्दथी समजवाना छे,

वैकल्पिक उदाहरणो:

खण्डितः	खुडिओ,	खंडिओ ।
चण्डम्	चुडं,	चंडं ।
प्रथमम्	पुढमं, पढुमं, पुढुमं,	पढमं ।
स्वपिति	सुवइ,	सोवइ ।

(ङ) [1]अ=ए—

नीचे जणावेला शब्दोमां चिह्नित 'अ' नो 'ए' थाय छे–ते क्यांय नित्ये थाय छे अने क्यांय विकल्पे थाय छे:

अत्र	एत्थ ।	ब्रह्मचर्यम्	बम्हचेरं ।
अन्तःपुरम्	अन्तेउरं ।	[2]शय्या	सेज्जा ।
अन्तश्चारी	अंतेआरी ।	सौन्दर्यम्	सुन्देरं ।
कन्दुकम्	गेन्दुअं ।		

वैकल्पिक उदाहरणो—

आश्चर्यम् अच्छेरं, अच्छरिअं । पर्यन्तः पेरंतो, पज्जंतो ।
उत्करः उक्केरो, उक्करो । वल्ली वेल्ली, वल्ली ।

(च) अ=ओ—

नीचे जणावेला शब्दोमां चिह्नित 'अ' नो 'ओ' थाय छे—ते क्यांय नित्ये थाय छे अने क्यांय विकल्पे थाय छे:

नमस्कारः नमोक्कारो । पद्मम् पोम्मं । परस्परम् परोप्परं ।

वैकल्पिक उदाहरणो—

अर्पयति ओप्पेइ, अप्पेइ । स्वपिति सोवइ, सुवइ ।
अर्पितम् ओप्पिअं, अप्पिअं ।

---

१ पाली प्र० पृ० ५२–(अ=इ)

२ शय्या सेय्य (पाली)

(छ) अ=अइ—

'मय' प्रत्ययांत शब्दमां आवेला 'म' ना 'अ' नो विकल्पे 'अइ' थाय छे:

जलमयम्	जलमइअं,	जलमयं ।
विषमयम्	विसमइअं,	विसमअं ।
दुःखमयम्	दुहमइअं,	दुहमयं ।
सुखमयम्	सुहमइअं.	सुहमयं ।

(ज) अ=आइ—

न पुनः—न [1]उणाइ, न उणो ।

पुनः—पुणाइ, पुणो ।

(झ) 'अ' लोप—

अरण्यम्—रण्णं, अरण्णं ।

अलाबूः—लाऊ, अलाऊ ।

४९. 'आ' विकार—

(क) आ=अ—

नीचे सूचवेला शब्दोमां अने अव्ययोमां चिह्नित 'आ' नो 'अ' थाय छे—ते क्यांय नित्ये अने क्यांय विकल्पे थाय छे:

[2]आचार्यः आयरिओ ।	महाराष्ट्रः मरहट्टो ।
कांसिकः कंसिओ ।	मांसम् मंसं ।
कांस्यम् कंसं ।	वांशिकः वंसिओ ।
पाण्डवः पंडवो ।	श्यामाकः सामओ ।
पांसनः पंसणो ।	सांयात्रिकः संजत्तिओ ।
पांसुः पंसू ।	सांसिद्धिकः संसिद्धिओ [3]इत्यादि ।

१ अहीं 'पुनः' शब्दना आदि 'प' नो लोप थएलो छे— जूओ पृ० २६ टिप्पण २ जुं ।

२ पाली प्र० पृ० ५२ [आ=अ]

३ जुओ पृ० ४ नि० १ ।

४ जुओ टिप्पण (अ=उ) पृ० ४४

वैकल्पिक उदाहरणो—

उत्खातम् उक्खयं, उक्खायं। पूर्वाह्णः पुव्वण्हो, पुव्वाण्हो।
कालकः कलओ, कालओ। बलाका बलया, बलाया।
कुमारः कुमरो, कुमारो। ब्राह्मणः बम्हणो, बाम्हणो।
खादिरम् खइरं, खाइरं। स्थापितः ठविओ, ठाविओ।
चामरः चमरो, चामरो। (परिष्ठापितः परिट्ठविओ, परिट्ठाविओ।
तालवृन्तम् तलवेंटं, तालवेंटं। संस्थापितः संठविओ, संठाविओ।)
नाराचः नराओ, नाराओ। हालिकः हलिओ, हालिओ इत्यादि.
प्राकृतम् पययं, पाययं।

अव्ययो—

अथवा अहव, अहवा। तथा तह, तहा।
यथा जह, जहा। वा व, वा। हा ह, हा इत्यादि।

(ख) आ=इ—

नीचेना शब्दोमां चिह्नित 'आ' नो विकल्पे 'इ' थाय छे:

आचार्यः आइरिओ. आयरिओ।
कूर्पासः कुप्पिसो, कुप्पासो।
निशाकरः निसिअरो, निसाअरो।

(ग) आ=ई—

खल्वाटः खल्लीडो।
स्त्यानम् ठीणं (थीणं[२])।

(घ) आ=उ—

आर्द्रम् उल्लं। सास्ना सुण्हा। स्तावकः थुवओ।

---

१ आ बन्ने रूपो आचार्य हेमचंद्रने संमत नथी: प्रा० व्या० अ० ८-१-६७-पृ० १३

२ जूओ पृ० ३७ नि० ३१

(छ) आ=ऊ—

आर्या अज्जू[1]।

आसारः ऊसारो, आसारो (वैकल्पिक)

(ज) आ[2]=ए—

ग्राह्यम्[3] गेज्झं ।

वैकल्पिक—

असहार्यः असहेज्जो, असहज्जो ।
एतावन्मात्रम् एत्तिअमेत्तं, एत्तिअमत्तं ।
भोजनमात्रम् भोअणमेत्तं, भोअणमत्तं ।
द्वारम् देरं, दारं ।
पारापतः पारेवओ, पारावओ ।
पश्चात्कर्म पच्छेकम्मं, पच्छाकम्मं ।
पुराकर्म पुरेकम्मं, पुराकम्मं ।

(झ) आ=ओ—

आर्द्रम् ओल्लं । आली ओली[5]।

९० इ—विकार

(क) [6]इ=अ—

इति[7] इअ । तित्तिरिः तित्तिर—तित्तिरो । पथिन् पह—

---

१ आ शब्दनो प्रयोग 'सासू' अर्थमां ज थाय छे।

२ पाली प्र० पृ० ५३ [आ=ए]

३ वैदिक 'गृह्यम्' (का० ३-१-११८) उपरथी प्रा० 'गिज्झं-गेज्झं' विशेष सुकर जणाय छे.

४ जुओ पृ० ३३ नि० २७

५ आ शब्दने 'पंक्ति' अर्थमां ज वापरवानो छेः—ओली-गू० ओळ, ओळखुं ।

६ पाली प्र० पृ० ५३—(इ=अ)

७ आ अव्ययने वाक्यनी आदिमां ज वापरवानुं छे.

पहो। पृथिवी पुहई। प्रतिश्रुत् पडंसुआ। बिभीतकः बहेडओ। मूषिकः मूसओ। हरिद्रा हलद्दा।

वैकल्पिक—

इङ्गुदम् अंगुअं, इंगुअं।
शिथिलम् सढिलं, सिढिलं।
[प्रशिथिलम् पसढिलं, पसिढिलं।]

(ख) [1]इ=ई—

जिह्वा जीहा। त्रिंशत् तीसा।
विंशति वीसा। सिंहः सीहो।

वैकल्पिक—

निस्सरति नीसरइ, निस्सरइ।
निस्सहम् नीसहं, निस्सहं।

(ग) [2]इ=उ—

इक्षुः [3]उच्छू। द्विविधः दुविहो।
[4]द्वि दु। नि णु
द्विजातिः दुआई। नि नु।
द्विधा [5]दुहा। निमज्जति णुमज्जइ।
द्विमात्रः दुमत्तो। निमग्नः णुमन्नो।
द्विरेखः दुरेहो। प्रवासिन् पावासु—पावासू।
द्विवचनम् दुवयणं। प्रवासिकः पावासुओ।

---

१ संज्ञासूचक शब्दोमां आ नियम लागतो नथीः—सिंहदत्तः सिंहदत्तो। सिंहराजः सिंहराओ।

२ पाली प्र० पृ० ५३–(इ=उ)

३ इक्षुः=उच्छु (पाली)

४ जु० पाली प्र० पृ० ३२–(टिप्पण.)

५ जुओ पृ० ५१ टिप्पण ३–(इ=ओ)

वैकल्पिक—

युधिष्ठिरः	जहुट्ठिलो,	जहिट्ठिलो।
द्विगुणः	दुउणो,	बिउणो।
द्वितीयः	दुइओ,	बिइओ।

(घ) [1]इ=ए—

मिरा मेरा

वैकल्पिक—

किंशुकम् केसुअं, किंसुअं।

(ङ) [2]इ=ओ—

द्विवचनम् दोवयणं।

वैकल्पिक—

द्विधा [3]दोहा, दुहा।

(च) नि=ओ—

वैकल्पिक—

निर्झरः ओज्झरो, निज्झरो।

९१ ई—विकार

(क) [4]ई=अ—

हरीतकी [5]हरडई।

---

१ पाली प्र० पृ० ५३–(इ=ए)

२ पाली प्र० पृ० ५३– (इ=ओ)

३ साधारण रीते आ बन्ने शब्दनो प्रयोग 'कृ' धातुनी पूर्वे थाय छे:– द्विधा क्रियते दुहा किज्जइ, दोहा किज्जइ। द्विधा कृतम् दुहा इ(कि) अं, दोहा इ(कि) अं।

४ पाली प्र० पृ० ५३–(ई=अ)

५ हरीतकी हरीटकी (पाली)

(ख) ई=आ—

कश्मीराः कम्हारा ।

(ग) ई=इ—

नीचेना शब्दोमां 'ई' नो 'इ' थाय छे–ते क्यांय नित्ये अने क्यांय विकल्पे थाय छेः—

अवसीदत् ओसिअंत ।	द्वितीयम् दुइअं ।
आनीतम् आणिअं ।	प्रदीपितम् पलिविअं ।
गभीरम् गहिरं ।	प्रसीद पसिअ ।
जीवतु जिवउ ।	वल्मीकः वम्मिओ ।
तदानीम् तयाणिं ।	व्रीडितम् विलिअं ।
तृतीयम् तइअं ।	शिरीषः सिरिसो ।

वैकल्पिक—

अलीकम्	अलिअं,	अलीअं ।
उपनीतम्	उवणिअं,	उवणीअं ।
करीषः	करिसो,	करीसो ।
जीवति	जिवइ,	जीवइ ।
पानीयम्	पाणिअं,	पाणीअं ।

(घ) ई=उ—

जीर्णम् जुण्णं,[1] जिण्णं ।

(ङ) ई=ऊ—

तीर्थम् तूहं[2]

---

१ जिण्णं (पाली)

२ 'तीर्थ' शब्दनुं 'तूह' रूप तेना 'थ' नो 'ह' थया पछी ज थाय छे, अन्यथा–'तित्थं'।

वैकल्पिक—

विहीनः विहूणो, विहीणो ।
हीनः हूणो, हीणो ।

(च) ई=ए—

आपीडः आमेलो । ईदृशः एरिसो ।
कीदृशः केरिसो । पीयूषम् पेऊसं ।
बिभीतकः बहेडओ ।

वैकल्पिक—

नीडम् नेडं, नीडं ।
पीठम् पेढं, पीढं ।

५२ उ-विकार

(क) [1]उ=अ—

नीचेना शब्दोमां चिह्नित 'उ' नो 'अ' थाय छे–ते क्यांय नित्ये अने क्यांय विकल्पे थाय छे:

अगुरु अगरुं ।
गुडूची गलोइ । मुकुलः मउलो ।
गुर्वी गरुई । मुकुलम् मउलं ।
मुकुटः मउडो । युधिष्ठिरः जहुट्ठिलो ।
मुकुरम् मउरं । सौकुमार्यम् सोअमल्लं ।

वैकल्पिक—

उपरि अवरिं, उवरिं । गुरुकः गरुओ, गुरुओ ।

(ख) उ=इ—

[2]पुरुषः पुरिसो । पौरुषम् पउरिसं । भ्रुकुटिः भिउडी ।

---

१ मुकुलम् मकुलं (पाली प्र० पृ० ५३–उ=अ)
२ पाली प्र० पृ० ५४ (उ=इ)

(ग) उ=ई—

क्षुतम् छीअं ।

(घ) उ=ऊ—

दुर्भगः दूहवो, दुहओ । दुस्सहः दूसहो, दुस्सहो ।
मुसलम् मूसलं, मुसलं । सुभगः सूहवो, सुहओ ।

(ङ) उं[1]=ओ—

कुतूहलम् कोउहलं, कुऊहलं ।

९२ ऊ-विकार

(क) ऊं[2]=अ—

दुकूलम् दुअलं, दुऊलं । सूक्ष्मम् [3]सण्हं, सुण्हं ।

(ख) ऊ=इ—

नूपुरम् निउरं, नुउरं ।

(ग) ऊ=ई—

उद्व्यूढम् उव्वीढं, उव्वूढं ।

(घ) ऊ=उ—

नीचेना शब्दोमां 'ऊ' नो 'उ' थाय छे–ते क्यांय नित्ये अने क्यांय विकल्पे थाय छेः

[4]कण्डूयते कंडुअइ । भ्रूः भुमया ।
कण्डूया कंडुया । वातूलः वाउलो ।
कण्डूयनम् कंडुयणं । हनूमान् हणुमंतो ।

---

१ पाली प्र० पृ० ५४ (उ=ओ)

२ पाली प्र० पृ० ५५ (ऊ=अ) सरखावो भ्रूकुंसः भ्रकुंसः । भ्रूकुटिः भ्रकुटिः ।

३ 'सूक्ष्म' अर्थने सूचवता 'श्लक्ष्ण' शब्द उपरथी 'सण्ह' रूपने उतारवुं विशेष सरल लागे छे–("श्लक्ष्णं सूक्ष्मं दभ्रं कृशं तनु" ६१ अमरको० तृतीयकाण्ड)

४ अहीं 'कण्डूय' धातुनां बधां रूपो समजवानां छे.

वैकल्पिक—

कुतूहलम् कोउहलं, कोऊहलं।
मधूकम् महुअं, महूअं।

(ङ) ऊ=ए—

नूपुरम् नेउरं, नूउरं।

(च) ऊ=ओ—

नीचेना शब्दोमां 'ऊ' नो 'ओ' थाय छे–ते क्यांय नित्ये अने क्यांय विकल्पे थाय छे:—

[1]कूर्परम् कोप्परं। ताम्बूलम् तंबोलं।
कूष्माण्डी कोहण्डी। तूणीरम् तोणीरं।
[2]गुडूची गलोई। मूल्यम् मोलं।
स्थूलम् थोरं।

वैकल्पिक—

तूणम् तोणं, तूणं। स्थूणा थोणा, थूणा।

५४ ऋ—विकार

(क) ऋ=आ—

कृशा कासा, किसा। मृदुत्वम् माउक्कं, मउत्तणं।
मृदुकम् माउक्कं, मउअं।

(ख) [3]ऋ=इ—

नीचेना शब्दोमां 'ऋ' नो 'इ' थाय छे–ते क्यांय नित्ये अने क्यांय विकल्पे थाय छे:

उत्कृष्टम् उक्किट्ठं। ऋद्धिः इद्धी। ऋषिः इसी।

---

१ कूर्परः कप्परो (पाली)

२ गुडूची गोळोची—पाली प्र० पृ० ५५ (ऊ=ओ)

३ पाली प्र० पृ० २ (ऋ=इ)

कृच्छ्रम् किच्छं । कृतिः किई । कृत्तिः किची । कृत्या किचा ।
कृपः किवो । कृपणः किविणो । कृपा किवा । कृपाणम् किवाणं ।
कृशः किसो । कृशानुः किसाणू । कृपितः किसिओ । कृसरा किसरा ।
गृष्टिः गिट्ठी । गृद्धिः गिद्धी । घुसृणम् घुसिणं । घृणा घिणा ।
तृप्तम् तित्तं । दृष्टम् दिट्ठं । दृष्टिः दिट्ठी । धृतिः धिई ।
नप्तृकः नत्तिओ । नृपः निवो । नृशंसः निसंसो । पृथक् पिहं ।
पृथ्वी पिच्छी । बृंहितः बिंहिओ । भृङ्गः भिंगो । भृङ्गारः भिंगारो ।
भृगुः भिऊ । मातृ माई (मातॄणाम् माईणं) मृदङ्गः मिइंगो ।
मृष्टम् [1]मिट्ठं । वितृष्णः विइण्हो । वृश्चिकः विञ्छुओ । वृत्तम् वित्तं ।
वृत्तिः वित्ती । वृद्धकविः विद्धकई । वृष्टः विट्ठो । वृष्टिः विट्ठी ।
वृसी विसी । व्याहृतम् वाहिअं (त्तं) । शृगालः सिआलो ।
शृङ्गारः सिंगारो । सकृत् सइ । समृद्धिः समिद्धी । सृष्टम् सिट्ठं ।
सृष्टिः सिट्ठी । स्पृहा छिहा । हृतम् हिअं । हृदयम् हिअयं ।

वैकल्पिक—

घृष्टः घिट्ठो, घट्ठो । पृष्ठम् [2]पिट्ठं, पट्ठं । [पृष्टिः पिट्ठी, पट्ठी]
बृहस्पतिः बिहप्फई, बहप्फई । मसृणम् मसिणं, मसणं ।
[3]मातृगृहम् माइहरं, माउहरं । मातृमण्डलम् माइमंडलं, माउमंडलं ।
मातृष्वसा माइसिआ, माउसिआ । मृगाङ्कः मिअंको । मयंको ।

---

१ आ शब्द, रसने सूचवे छेः मीठो रस. रस सिवाय बीजा अर्थमां ए रूप वपरातुं नथी.

२ आ रूप समासमां पूर्वपद तरीके वपराय छे, उत्तरपद तरीके नथी वपरातुंः महिपृष्ठम्–महिव(प)ट्ठं ।

३ ज्यारे 'मातृ' शब्द गौण होय त्यारे तेथी बनेलां बधां रूपोमां तेना 'ऋ' नो 'उ' अने 'इ' थाय छे.

मृत्यु: मिच्चू, मच्चू । वृद्धः विड्ढो, वुड्ढो । वृन्तम् विंटं, वेंटं । शृङ्गम् सिंगं, संगं ।

(ग) [1]ऋ=उ—

नीचेना शब्दोमां 'ऋ' नो 'उ' थाय छे:

ऋजुः उज्जू । ऋतुः उऊ । ऋषभः उसहो । जामातृकः जामाउओ । नप्तृकः नत्तुओ । निभृतम् निहुअं । निवृतम् निउअं । निर्वृतम् निव्वुअं । निर्वृतिः निव्वुई । परभृतः परहुओ । परामृष्टः परामुट्ठो । पितृकः पिउओ । पृथक् पुहं । पृथिवी पुहई । पृथ्वी पुहुवी । प्रभृति पहुडि । प्रवृत्तिः पउत्ती । प्रवृष्टः पउट्ठो । प्राभृतम् पाहुडं । प्रावृतः पाउओ । प्रावृष् पाउसो । भृतिः भुई । भ्रातृकः भाउओ । मातृकः माउओ । मातृका माउआ । मृणालम् मुणालं । मृदङ्गः मुइंगो । वृत्तान्तः वुत्तंतो । वृद्धः वुड्ढो । वृद्धिः वुड्ढी । वृन्दम् वुंदं । वृन्दावनः वुंदावणो । विवृतम् विउअं । वृष्टः वुट्ठो । वृष्टिः वुट्ठी । स्पृष्टः पुट्ठो । संवृतम् संवुअं । इत्यादि ।

वैकल्पिक—

निवृत्तम् निउत्तं, निअत्तं । बृहस्पतिः बुहप्फई, बहप्फई । मृषा मुसा, मोसा । वृन्दारकाः वुंदारया, वंदारया । वृषभः उसहो, वसहो ।

(घ) ऋ=ऊ—

मृषा मूसा, मुसा । (वै०)

(ङ) [2]ऋ=ए—

वृन्तम् वेंटं, विंटं । (,,)

---

१ पाली प्र० पृ० २ (ऋ=उ)

२ पाली प्र० पृ० ३ (ऋ=ए) टिप्पण ।

(च) ऋ=ओ—

मृषा मोसा, मुसा। वृन्तम् वोंटं विंटं। (वै०)

(छ) ऋ=अरि—

दृप्तः दरिओ।

(ज) ऋ=दि—

आदृतः आदिओ।

(झ) ऋ=रि—

नीचेना शब्दोमां 'ऋ' नो 'रि' थाय छे–ते क्यांय नित्ये अने क्यांय विकल्पे थाय छे:

[1]अन्यादृशः अन्नारिसो। अन्यादृक्षः अन्नारिच्छो। अन्यादृक् अन्नारि। अमूदृशः अमुरिसो। अमूदृक्षः अमुरिच्छो। अमूदृक् अमुरि। अस्मादृशः अम्हारिसो। अस्मादृक्षः अम्हारिच्छो। अस्मादृक् अम्हारि। ईदृशः एरिसो। ईदृक्षः एरिच्छो। ईदृक् एरि। एतादृशः एआरिसो। एतादृक्षः एआरिच्छो। एतादृक् एआरि। कीदृशः केरिसो। कीदृक्षः केरिच्छो। कीदृक् केरि। तादृशः तारिसो। तादृक्षः तारिच्छो। तादृक् तारि। भवादृशः भवारिसो। भवादृक्षः भवारिच्छो। भवादृक् भवारि। यादृशः जारिसो। यादृक्षः जारिच्छो। यादृक् जारि। युष्मादृशः तुम्हारिसो। युष्मादृक्षः तुम्हारिच्छो। युष्मादृक् तुम्हारि। सदृशः सरिसो। सदृक्षः सरिच्छो। सदृक् सरि।

वैकल्पिक—

ऋजुः रिज्जू, उज्जू। ऋणम् रिणं, अणं। ऋतुः रिऊ, उऊ। ऋषभः रिसहो, उसहो। ऋषिः रिसी, इसी।

---

१ अहीं 'अन्यादृश' वगेरे शब्दोमां स्वतन्त्र 'ऋ' नथी किन्तु 'दृ' मां 'ऋ' छे, 'द' लोप माटे जुओ पृ० १० नि० २।

ऋ=इ—

(१) उपर्युक्त 'अस्मादृश' थी मांडी 'सदृक्' सुधीना बधा शब्दोना 'दृ' ना 'ऋ' नो पैशाचीमां 'इ' थाय छेः

अस्मादृशः	अम्हारिसो	अम्हादिसो—अम्हातिसो ।
अन्यादृशः	अन्नारिसो	अञ्ञातिसो ।
ईदृशः	एरिसो	एतिसो ।
कीदृशः	केरिसो	केतिसो ।
तादृशः	तारिसो	तातिसो ।
भवादृशः	भवारिसो	भवातिसो ।
यादृशः	जारिसो	जातिसो ।
युष्मादृशः	तुम्हारिसो	तुम्हातिसो
सदृशः	सरिसो	सतिसो

५५ ए—विकार

(क) [1]ए=इ—

केसरम् किसरं, केसरं । चपेटा चविडा, चवेडा । देवरः दिअरो, देवरो । वेदना विअणा, वेअणा । (वै०)

(ख) ए=ऊ—

स्तेनः थूणो, थेणो । (वै०)

५६ ऐ–विकार—

(क) ऐ=अअ—

उच्चैस् उच्चअं । नीचैस् नीचअं ।

---

१ जूओ पृ० १२ (त, द–त)

२ पालीमां कोइ ठेकाणे 'ए' नो 'ओ' थाय छेः द्वेषः=दोसो– (पा० प्र० पृ० ५५–ए=ओ)

(ख) [1]ऐ=इ—

शनैश्चरः सणिच्छरो। सैन्धवम् सिंधवं।

सैन्यम् सिन्नं, सेन्नं। (वै०)

(ग) [2]ऐ=ई—

धैर्यम् धीरं।

चैत्यवन्दनम् चीवंदणं, चेइयवंदणं। (वै०)

(घ) ऐ=अइ—

नीचेना शब्दोमां 'ऐ' नो 'अइ' थाय छेः

ऐश्वर्यम् अइसरिअं। कैतवम् कइअवं। चैत्यम् चइत्तं। दैत्यः दइच्चो। दैन्यम् दइन्नं। दैवतम् दइअवं। भैरवः भइरवो। वैजवनः वइजवणो। वैतालीयम् वइआलीअं। वैदर्भः वइदब्भो। वैदेशः वइएसो। वैदेहः वइएहो। वैशाखः वइसाहो। वैशालः वइसालो। वैश्वानरः वइस्साणरो। स्वैरम् सइरं। इत्यादि.

वैकल्पिक—

कैरवम् कइरवं, केरवं। कैलासः कइलासो, केलासो। चैत्रः चइत्तो, चेत्तो। दैवम् दइव्वं, देव्वं। वैतालिकः वइआलिओ, वेआलिओ। वैरम् वइरं, वेरं। वैशम्पायनः वइसंपायणो, वेसंपायणो। वैश्रवणः वइसवणो, वेसवणो। वैशिकम् वइसिअं, वेसिअं। इत्यादि.

५७ ओ-विकार—

(क) ओ=अ—

वैकल्पिक—

अन्योन्यम् अन्नन्नं, अन्नुन्नं। आतोद्यम् आवज्जं, आउज्जं।

[3]प्रकोष्ठः पवट्ठो, पउट्ठो। मनोहरम् मणहरं, मणोहरं।

---

१ पाली प्र० पृ० ४ (ऐ=इ) २ पाली प्र० पृ० ४ (ऐ=ई)

३ ज्यारे आ ये शब्दमां 'ओ' नो 'अ' थाय छे त्यारे ज तेना 'त' अने 'क' नो 'व' पण थाय छे.

शिरोवेदना	सिरविअणा,	सिरोविअणा।
सरोरुहम्	सररुहं,	सरोरुहं।

(ख) ओ=ऊ—

सोच्छ्वासः सूसासो।

(ग) ओ=अउ, आअ—

ओ=अउ—गोकः गउओ। गोकाः गउआ। गो गउ–गऊ।

ओ=आअ—गो गाअ–गाओ (पुंलिंग)

गो गाअ–गाई (स्त्रीलिंग)

५८ औ-विकार—

(क) औ=अउ—

नीचेना शब्दोना 'औ' नो 'अउ' थाय छे:

कौक्षेयकम्	कउच्छेअयं।	पौरः	पउरो।
कौरवः	कउरवो।	पौरुषम्	पउरिसं।
कौलः	कउलो।	मौनम्	मउणं।
कौशलम्	कउसलं।	मौलिः	मउली।
गौडः	गउडो।	सौधम्	सउहं।
गौरवम्	गउरवं।	सौराः	सउरा।

(ख) [1]औ=आ—

गौरवम् गारवम्

---

[1] पाली प्र० पृ० ५ (औ=आ) टिप्पण, पालीमां कोई कोई ठेकाणे 'औ' नो 'अ' पण थाय छे: (औ=अ)–पालीप्र पृ० ५ टिप्पण.

(ग) [1]औ=उ

नीचेना शब्दोमां 'औ' नो 'उ' थाय छेः

दौवारिकः दुवारिओ। पौलोमी पुलोमी । मौञ्जायनः मुंजायणो । शौण्डः सुंडो । शौद्धोदनिः सुद्धोअणी। सौगन्ध्यम् सुगन्धत्तणं। सौन्दर्यम् सुंदेरं। सौवर्णिकः सुवण्णिओ।

कौक्षेयकम् कुच्छेअयं, कोच्छेअयं। (वै०)

(घ) औ=आव—

नौः नावा ।

[1] पाली प्र० पृ० ५-(औ=उ)

प्रकरण ६

असंयुक्त व्यंजनोना विशेष फेरफारो

५९ क-विकार--

[1]क=ख--

कर्परम् खप्परं । कीलः खीलो ।

कीलकः खीलओ । [2]कुब्जः खुज्जो ।

[3]क=ग--

अमुकः अमुगो । कन्दुकम् गेंदुअं ।

अमुकः असुगो । तीर्थंकरः तित्थगरो ।

आकर्षः आगरिसो । दुकुलम् दुगुलं ।

आकारः आगारो । मदकलः मयगलो ।

उपासकः उवासगो । मरकतम् मरगयं ।

एकः एगो । श्रावकः सावगो ।

एकत्वम् एगत्तं । लोकः लोगो ।

क=च--

[4]किरातः चिलाओ ।

क=भ--

शीकरः सीभरो, सीअरो । (वै०)

क=म--

चन्द्रिका चंदिमा ।

---

१ पाली प्र० पृ० ५५ (क=ख)

२ 'खुज्ज' शब्द 'कुबडा' अर्थमां ज वपराय छे.

३ पाली प्र० पृ० ५५ (क=ग)

४ 'चिलाअ' शब्द 'भिल्ल' अर्थमां ज वपराय छे.

क=व—

[1]प्रकोष्ठः पवट्टो, पउट्ठो।

क=ह—

चिकुरः चिहुरो। निकषः निहसो। स्फटिकः फलिहो।

शीकरः सीहरो, सीअरो। (वै०)

६० ख–विकार—

ख=क—

शृङ्खलम् संकलं। शृङ्खला संकला।

६१ ग–विकार—

ग=म—

पुंनागानि पुंनामाइं। भागिनी भामिणी।

ग=ल—

छागः छालो। छागी छाली।

ग=व—

दुर्भगः [2]दूहवो। सुभगः सूहवो।

६२ च–विकार—

च=ज[3]—

पिशाची पिसाजी, पिसाई। (वै०)

च=ट—

आकुञ्चनम् आउंटणं।

च=ल—

पिशाचः पिसल्लो, पिसाओ। (वै०)

---

१ जूओ पृ० ६०–टिप्पण ३।

२ ज्यारे 'दु'नो 'दू' अने 'सु'नो 'सू' थतो नथी त्यारे 'ग' नो 'व' पण थतो नथी–जूओ उ–विकार (घ) उ=ऊ पृ० ५४

३ पाली प्र० पृ० ५६ (च=ज)

च=स—

खचितः खसिओ, खइओ। (वै०)

६३ ज-विकार

ज=झ—

जटिलः झडिलो, जडिलो। (वै०)

६४ ट-विकार

ट=ढ—कैटभः केढवो। शकटः सयढो। सटा सढा।

[1]ट=ल—स्फटिकः फलिहो।

चपेटा चविला, चविडा। (वै०)

[2]पाटयति फालेइ, फाडेइ। ,,

६५ ठ-विकार

ठ=ल—अङ्कोठः अंकोल्लो।

अङ्कोठतैलम् अंकोल्लतेल्लं।

ठ=ह—पिठरः पिहडो, पिढरो (वै०)

६६ ण-विकार

[3]ण=ल—वेणुः वेलू, वेणू। (वै०)

६७ त-विकार

त=च— तुच्छम् चुच्छं।

त=छ— तुच्छम् छुच्छं।

त=ट— तगरः टगरो। तूवरः टूवरो। त्रसरः टसरो।

---

१ पाली प्र० पृ० ५८–(ट=ल) पालीमां केटलेक ठेकाणे 'ट'नो 'ळ' पण थाय छेः—(ट=ळ पृ० ५८)

२ अहीं 'पाटि' धातुनां बधां रूपो समजवानां छे.

३ पाली प्र० पृ० ५८ (ण=ळ) वेणुः=वेळु–पाली

त=ड—

નીચેના શબ્દોમાં 'त' નો 'ड' થાય છે–તે ક્યાંય નિત્યે અને ક્યાંય વિકલ્પે થાય છે:—

पताका पडाया ।
[1]प्रति पडि ।

[प्रतिकरोति पडिकरइ । प्रतिनिवृत्तम् पडिनिअत्तं । प्रतिपत पडिवया । प्रतिपन्नम् पडिवन्नं । प्रतिभासः पडिहासो । प्रतिमा पडिमा । प्रतिश्रुत् पडंसुआ । प्रतिसारः पडिसारो । प्रतिस्पर्धी पाडिप्फद्धी । प्रतिहासः पडिहासो । प्रतिहारः पडिहारो ।]

प्रभृति पहुडि । मृतकम् मडयं ।
प्राभृतम् पाहुडं । व्यापृतः वावडो ।
बिभीतकः बहेडओ । सूत्रकृतम् सुत्त (सुअ) गडं ।
हरीतकी हरडई । इत्यादि.

વૈકલ્પિક—

अवहृतम्	अवहडं,	अवहयं ।
अवहृतम्	ओहडं,	ओहयं ।
आहृतम्	आहडं,	आहयं ।
कृतम्	कडं,	कयं ।
दुष्कृतम्	दुक्कडं	दुक्कयं ।
मृतम्	मडं,	मयं ।
वेतसः	वेडिसो,	वेअसो ।
सुकृतम्	सुकडं	सुकयं ।

[1] प्रति=पटि (त=ट) पाली प्र० पृ० ५८.

त=ण—

अतिमुक्तकम् अणिउँतयं। गर्भितः गब्भिणो।

त=र—

सप्ततिः सत्तरी।

त=ल—

अतसी अलसी। सातवाहनः सालवाहणो।

सातवाहनी सालआहणी— सालाहणी।

वैकल्पिक—

पलितम् पलिलं, पलिअं।

त=व— आतोद्यम् आवज्जं, आउज्जं।

पीतलम् पीवलं, पीअलं।

त=ह—

[2]वितस्तिः विहत्थी।

वैकल्पिक—

कातरः काहलो, कायरो।

भरतः भरहो, भरओ।

मातुलिङ्गम् माहुलिंगं, माउलिंगं।

वसतिः वसही, वसई।

६८ थ-विकार

थ=ढ—

प्रथमः पढमो। मेथिः मेढी। शिथिरः (लः) सिढिलो।

वैकल्पिक—

निशीथः निसीढो, निसीहो।

[3]पृथिवी पुढवी, पुहवी।

---

१ जूओ पृ० ६०, ३ टिप्पण।

२ वितस्तिः विदत्थि—(त=द) पाली प्र० पृ० ५९

३ पृथिवी पठवी—(थ=ठ) पाली प्र० पृ० ५९

थ=ध—

पृथक् पिधं, पिहं ।

६९ द-विकार

[1]द=ड—

[2]दंश डंस इत्यादि.

[2]दह डह इत्यादि.

वैकल्पिक—कदनम् कडणं, कयणं। दग्धः डड्ढो, दड्ढो। दण्डः डंडो, दंडो। दम्भः डम्भो, दम्भो। दर्भः डब्भो, दब्भो। दष्टः डट्ठो दट्ठो। दरः डरो, दरो। दशनम् डसणं, दसणं। दाहः डाहो, दाहो। दोला डोला, दोला। दोहदः डोहलो, दोहलो।

द=ध—दीप्[3] धीप्, दीप्। दीप्यते धिप्पइ, दिप्पइ। (वै०)

(क) द=र—संख्यावाचक शब्दना अनादिभूत, असंयुक्त अने एकपदस्थित एवा 'द' नो 'र' थाय छे:

एकादश एआरह। द्वादश बारह। त्रयोदश तेरह।

(ख) द=र—कदली करली[4]। गद्गदम् गग्गरं।

[5]द=ल—प्रदीपयति पलीवेइ[6]। प्रदीप्तम् पलित्तं। दोहदः दोहलो। कदम्बः कलम्बो, कयम्बो। (वै०)

द=व—कदर्थितः कवट्टिओ।

द=ह—ककुदम् कउहं।

---

१ पाली प्र० पृ० ५९–(द=ड)

२ अहीं आ बन्ने धातुनां बधां रूपो समजवानां छे.

३ अहीं 'दीप्' धातुनां बधां रूपो समजवानां छे.

४ आ शब्दनो अर्थ 'केळ' थतो नथी.

५ पाली प्र० पृ० ६०–(द=ळ–दोहदः दोहळो)

६ अहीं 'प्रदीप्' धातुनां बधां रूपो समजवानां छे.

७० ध--विकार

ध=ढ—निषधः निसढो।

औषधम् ओसढं, ओसहं। (वै०)

७१ न-विकार

न=ण्ह—नापितः ण्हाविओ, नाविओ। (वै०)

[1]न=ल—निम्बः लिंबो, निंबो। (वै०)

७२ प-विकार

[2]प=फ—पनसः फणसो। परिघः फलिहो। परिखा फलिहा। परुषः फरुसो। [3]पाटि फाडि। [पाटयति फाडेइ इत्यादि] पारिभद्रः फालिहद्दो।

प=म—आपीडः आमेलो, आवेडो। नीपः नीमो, नीवो। (वै०)

प=व—प्रभूतम् वहुत्तं।

प=र—पापर्द्धिः पारद्धी।

७३ ब-विकार

[4]ब=भ—बिसिनी भिसिणी।

ब=म—कबन्धः कमन्धो।

ब=य—कबन्धः कयन्धो। (वै०)

७४ भ-विकार.

भ=व—कैटभः केढवो।

---

१ पाली प्र० पृ० ६१—(न=ल)

२ पाली प्र० पृ० ४०—(प=फ) परुषः—फरुसो (पाली)

३ अहीं 'पाट' धातुनां बधां रूपो समजवानां छे.

४ पाली प्र० पृ० ६२—(ब=भ)

७५ म-विकार

म=ढ--विषमः विसढो, विसमो। (वै०)

म=व--मन्मथः वम्महो।

अभिमन्युः अहिवन्नू, अहिमन्नू। (वै०)

म=स--भ्रमरः भसलो, भमरो। (वै०)

७६ म-अनुनासिक

नीचेना शब्दोमां 'मु' ना 'म' नो लोप थाय छे अने 'म'नो लोप थया पछी शेष रहेल ('मु' ना) 'उ' ने स्थाने अनुनासिक 'उ' (उँ) थाय छे:

अतिमुक्तकम् अणिउँतयं। कामुकः काउँओ।

चामुण्डा चाउँण्डा। यमुना जउँणा।

७७ [1]य-विकार

य=आह--कतिपयम् कइवाहं।

य=ज्ज--उत्तरीयम् उत्तरिज्जं, उत्तरीअं। (वै०)

तृतीयः तइज्जो, तइओ। द्वितीय बिइज्जो, बीओ। (वै०)

य=ल--युष्मदीयः तुम्हकेरो। युष्मादृशः-तुम्हारिसो। [2]युष्मद्-तुम्ह। इत्यादि।

[3]य=ल--यष्टिः लट्ठी।

[4]य=व--कतिपयम्-कइअवं (वै०)

---

१ कोइ एकाद शब्दमां 'य' नो 'र' पण थइ जाय छे: स्नायुः-ण्हारु-[पाली-सिनेरु]

२ अहीं 'युष्मद्' शब्दनां बधी जातनां रूपोने पण समजवानां छे: युष्मत्पुत्रः-तुम्हपुत्तो इत्यादि

३ पाली प्र० पृ० ६३-(य=ल)

४ पाली प्र० पृ० ६३-(य-व)

य=ह—छाया [1]छाही, छाया। सच्छायम् सच्छाहं, सच्छायं (वै०)

७८ र-विकार

र=ड—किरिः किडी। [2]पिठरः पिहडो। भेरः भेडो।

र=डा—पर्याणम् पडायाणं, पल्लाणं।

र=ण—करवीरः कणवीरो।

[3]र=ल—नीचेना शब्दोमां 'र' नो 'ल' थाय छे—ते क्यांय नित्ये अने क्यांय विकल्पे थाय छे:

अपद्वारम् अवद्दालं।
अङ्गारः इंगालो।
करुणः कलुणो।
कातरः काहलो।
किरातः चिलाओ।
चरणः चलणो।
दरिद्रः दलिद्दो।
दरिद्राति दलिद्दाइ।
दारिद्र्यम् दालिद्दं।
परिखा फलिहा।
परिघः फलिहो।
पारिभद्रः फालिहद्दो।
भ्रमर[4]ः भसलो।
मुखरः मुहलो।
युधिष्ठिरः जहुट्ठिलो।
रुग्णः लुक्को।
वरुणः वलुणो।
शिथिरः सिढिलो।
सत्कारः सक्कालो।
सुकुमारः सोमालो।
स्थूरः थूलो।
स्थूरभद्रः थूलभद्दो।
हरिद्रः हलिद्दो।
हरिद्रा हलिद्दा। इत्यादि.

---

१ आ शब्दनो अर्थ 'आळो' के 'छांयो' ज थाय छे.

२ 'पिठर' शब्दनुं रूप 'पिहड' थाय छे. पण 'पिढड' थतुं नथीः—जुओ पृ० ६५ (ठ=ढ)

३ सरखावो मागधी र=ल (पृ० २६)

४ 'भ्रमर' शब्दनुं रूप 'भसल' थाय पण 'भमल' न थाय.

वैकल्पिक—

जठरम्	जढलं,	जढरं ।
निष्ठुरः	निट्ठुलो,	निट्ठुरो ।
बठरः	बढलो,	बढरो ।

७९ ल–विकार

[1]ल=ण—नीचेना शब्दोमां आदिना 'ल'नो नित्ये अने विकल्पे 'ण' थाय छे:

ललाटम् णलाडं, [2]णिलाडं ।

वैकल्पिक—

लाङ्गलम्	[3]णङ्गलं,	लंगलं ।
लाङ्गूलम्	णङ्गूलं,	लंगूलं ।
लाहलः	णाहलो,	लाहलो ।

ल=र— स्थूलम् थोरं ।

८० व–विकार

व=भ—विह्वलः भिब्भलो, विब्भलो, विहलो[4] । (वै०)

व=म—शबरः समरो । वैश्रवणः वेसमणो.

नीवी नीमी, नीवी । स्वप्नः सिमिणो, सिविणो (वै०)

८१ श–विकार

[5]श=छ—शमी छमी । शावः छावो ।

शिरा छिरा, सिरा (वै०)

---

१ पाली प्र० पृ० ६३—(ल=न)—ललाटम् नलाटं ।

२ जुओ पृ० ४५ (अ=इ)

३ लाङ्गलम् नाङ्गलं पाली [पृ० ३९

४ 'विह्वल' शब्दनुं 'भिहल' रूप थतुं नथी:—जुओ ह्व–भ,

५ पाली प्र० पृ० ६३—(श=छ)—शावः छावो ।

श=ह—एकादश एआरह, एआरस। दश दह, दश। दशबलः
दहबलो, दसबलो। दशमुखः दहमुहो, दसमुहो। दशरथः
दहरहो, दसरहो। द्वादश बारह, बारस। त्रयोदश
तेरह, तेरस इत्यादि।

८२ ष–विकार.

[1]ष=छ—[2]षट् छ [षट्पदः छप्पओ। षण्मुहो छंमुहो। षष्ठः
छट्ठो। षष्ठी छट्ठी]

ष=ण्ह—स्नुषा सुण्हा, सुसा[3]। (वै०)

ष=ह—पाषाणः पाहाणो, पासाणो। प्रत्यूषः पच्चूहो, पच्चूसो (वै०)

८३ स–विकार

स=छ—सप्तपर्णः छत्तिवण्णो। सुधा छुहा।

स=ह—दिवसः दिवहो, दिवसो। (वै०)

८४ ह–विकार

ह=र—उत्साहः[4] उत्थारो, उच्छाहो।

८५ लोप

नीचेना शब्दोमां नीचे जणावेला व्यंजनोनो लोप विकल्पे
थाय छे:

'क' लोप—प्राकारः पारो, पायारो।
व्याकरणम् वारणं, वायरणं।

'ग' लोप—आगतः आओ, आगओ

---

१ पाली प्र० पृ० ६४–(ष=छ) षट् छ।

२ अहीं 'षट्' शब्दनां बधां रूपो समजवानां छे.

३ जूओ पृ० ४१ 'स्न–सिन' अने एनुं टिप्पण।

४ 'उत्साह' शब्दनुं 'उच्छार' रूप थाय नहि.

'ज' लोप—दनुजः दणू, दणुओ । दनुजवधः दणुवहो, दणुअवहो।
भाजनम् भाणं, भायणं । राजकुलम् राउलं, रायउलं ।

'द' लोप—उदुम्बरः उम्बरो, उउंबरो । दुर्गादेवी दुग्गावी,
दुग्गादे (ए) वी । पादपतनम् पावडणं, पायवडणं ।
पादपीठम् पावीढं, पायवीढं ।

'य' लोप—किसलयम् किसलं, किसलयं।
कालायसम् कालासं, कालायसं ।
हृदयम् हिअं, हिअयं। सहृदयः सहिओ, सहिअयो ।

'व' लोप—

अवटः अडो, अवडो । आवर्तमानः अत्तमाणो, आवत्तमाणो । एवमेव एमेव, एवमेव। जीवितम् जीअं, जीविअं। तावत् ता, ताव । देवकुलम् देउलं, देवउलं । प्रावारकः पारओ, पावारओ । यावत् जा, जाव ।

लोप—

केटलेक ठेकाणे शब्दना आदि व्यंजननो पण लोप थई जाय छेः

च अ । चिह्नम् इंधं । पुनः उणो इत्यादि ।

प्रकरण ७

संयुक्त व्यंजनोना विशेष फेरफार

[सूचना:—आ नीचे संयुक्त व्यंजनोना विशेष फेरफारोने आपवामां आवे छे अने साथे जे जे शब्दोनां वैकल्पिक बन्ने रूपो थाय छे तेओनुं बीजुं रूप लक्ष्यमां रहे ए माटे तेने पण अहीं आवा [ ] कौंसमां जणावी दीधुं छे.]

८६ क्क

(क) [1]क्त=क्क—

मुक्तः मुक्को [मुत्तो]। शक्तः सक्को [सत्तो]।

(ख) ग्ण=क्क—

[2]रुग्णः लुक्को [लुग्गो]।

(ग) त्व=क्क—

मृदुत्वम् माउक्कं [माउत्तणं]।

(घ) ष्ट=क्क—

दष्टः डक्को [दट्ठो]।

८७ क्ख, ख

(क) क्ष्ण=क्ख—

तीक्ष्णम् तिक्खं, [तिण्हं]।

(ख) स्त=ख—

स्तम्भः खंभो [थंभो]

---

१ पाली प्र० पृ० ४१ (टिप्पण)

२ रुग्णः लुग्गो (पाली प्र० पृ० ४९ टिप्पण ग्ण=ग्ग)

३ जुओ पृ० ४०–३ टिप्पण

(ग) स्थ=ख—

स्थाणुः[1] खाणू।

(घ) स्फ=ख—

स्फेटकः खेडओ।

स्फेटिकः खेडिओ।

स्फोटकः खोडओ।

८८ ग्ग, ङ्ग

(क) क्त=ग्ग—

रक्तः रग्गो [रत्तो]

(ख) ल्क=ङ्ग—

शुल्कम् सुङ्गं,[2] (चुंगी-हिं०) [सुक्कं]

८९ च्च

(क) त=च्च—

कृत्तिः किच्ची।

(ख) थ्य=च्च—

तथ्यम् तच्चं [तच्छं]

९० च्छ, छ

(क) स्थ=छ—स्थगितम् छइअं [थइअं]

(ख) स्प=छ—स्पृहा छिहा।

(ग) स्प=च्छ—निस्पृहः निच्छिहो [निप्पिहो]।

९१ ज्ज, ञ्ज

[3]न्य=ज्ज, ञ्ज—

अभिमन्युः अहिमज्जू, अहिमञ्जू [आहिमन्नू]

---

१ आ शब्द 'महादेव' ने सूचवतो होय त्यारे तेनुं 'खाणु' ने बदले 'थाणु' रूप थाय छे।

२ शुल्कम् सुङ्कं—(पाली प्र० पृ० ३०—टिप्पण)

३ अभिमन्युः अभिमञ्ञु (न्य=ञ्ञ—पाली प्र० पृ० २१)

९२ज्झ

न्ध=ज्झ—

(धातु) इन्धू इज्झा (समिन्धू समिज्झाइ । वि+इन्ध विज्झाइ)

९३ञ्चु

श्चि=ञ्चु—

[1]वृश्चिकः विञ्चुओ, [विंछिओ]

९४ ट्ट

(क) [2]र्त=ट्ट—पतनम् पट्टणं। मृत्तिका मट्टिआ।

वृत्तः वट्टो।

(ख) र्थ=ट्ट—कदर्थितः कवट्टिओ।

(ग) स्त=ट्ट—पर्यस्तः पल्लट्टो।

९५ ड्ढ, ठ

(क) र्थ=ड्ढ—

[3]अर्थः [4]अड्ढो [अत्थो]

चतुर्थः चउड्ढो [चउत्थो]

(ख) स्त=ठ—

स्तम्भ्यते ठंभिज्जइ।

[5]स्तब्धः ठड्ढो [थद्धो]

---

१ वृश्चिकः विच्छिको (पाली)

२ पाली प्र० पृ० ५८—(त=ट)

३ अर्थः अत्थो, अट्ठो, अड्ढो—(पाली प्र० पृ० १० टिप्पण)

४ 'अड्ढ' शब्दनो प्रयोग 'प्रयोजन' अर्थमां थाय छे अने 'अत्थ' शब्दनो 'धन' अर्थमां थाय छे.

५ स्तब्धः थद्धो । स्तम्भः थंभो—(स्त=थ पाली प्र० पृ० २७)

[1]स्तम्भ	ठंभ	(धातु)
[2]स्तम्भः	ठंभो।	
स्त्यानम्	ठीणं।	[थीणं]

(ग) [3]स्थ=ठ—विसंस्थुलम् विसंठुलं।

स्थ=ट्ठ-- अस्थि[4] अट्ठि।

१६ ड्ड

(क) र्त=ड्ड—

गर्तः गड्डो।

(ख) र्द=ड्ड—

कपर्दः	कवड्डो।	
गर्दभः	गड्डहो	[गद्दहो]
छर्द	छड्ड	(धातु)
छर्दयति	छड्डेइ।	
छर्दिः	छड्डी।	
मर्दितः	मड्डिओ।	
विच्छर्दः	विच्छड्डो।	
वितर्दिः	विअड्डी।	
संमर्दः	संमड्डो।	

---

१ आ 'स्तम्भ' धातुने अहीं असंदार्थक ज लेवानो छे.

२ 'स्तम्भ' शब्दनो अर्थ पण 'स्तम्भ' धातुनी जेवो ज समजवानो छे

३ पाली प्र० पृ० २८-(स्थ=ठ)

४ अस्थि अट्ठि (पाली प्र० पृ० २९-स्थ=ट्ठ)

૧૭ [1]ड्ढ, ढ

નીચે જણાવેલા શબ્દોમાં સંયુક્ત 'ध' નો ड्ढ અને ढ થાય છે:—

(ક) र्ध, द्ध, ग्ध, ब्ध=ड्ढ—

अर्धम्	अड्ढं	[अद्धं]
ऋद्धिः	इड्ढी,	[इद्धी]
दग्धः	दड्ढो ।	
विदग्धः	विअड्ढो	
वृद्धः	वुड्ढो,	[विद्धो]
वृद्धिः	वुड्ढी ।	
श्रद्धा:	सड्ढा,	[सद्धा]
स्तब्धः	ठड्ढो ।	

(ખ) र्ध=ढ—मूर्धा मुंढा, [मुद्धा]

૧૮ ण्ट, ण्ड, ण्ण

न्त=ण्ट—

[2]वृन्तम् वेण्टं (तालवृन्तम् तालवेण्टं)

न्द=ण्ड—

कन्दरिका कण्डलिआ ।

भिन्दिपालः भिण्डिवालो ।

(ક) ञ्च=ण्ण—

पञ्चदश पण्णरह ।

पञ्चाशत् पण्णासा ।

---

१ पाली प्र० पृ० ८२— (द्ध=ड्ढ, र्ध=ड्ढ, ग्ध=ड्ढ)

२ वृन्तम्=वण्टं—(पाली प्र० पृ० ५८, न्त=ण्ट)

(ख) त्त=ण्ण—

[1]दत्तम् दिण्णं ।

(ग) ह्न=ण्ण—

मध्याह्नः मज्झण्णो, [मज्झण्हो]

९९ त्थ

(क) त्स=त्थ—

[2]उत्साहः उत्थारो ।

(ख) त्म=त्थ—

अध्यात्म अज्झत्थं [अज्झप्पं]

१०० द्ध

ष्ट=द्ध— आश्लिष्टः आलिद्धो ।

न्त, न्ध

[3]न्य=न्त—

मन्युः मन्तू । [मन्नू]

ह्न=न्ध—

चिह्नम् चिन्धं [चिण्हं]

१०१ प्प, प्फ, फ

[4]त्म=प्प—

आत्मा अप्पा । [अत्ता]

आत्मानः अप्पाणो [अत्ताणो]

---

१ 'दत्त' शब्दनुं 'दण्ण' के 'दित्त' रूप थतुं नथी.

२ उत्साहः=उस्साहो—(पाली प्र० पृ० ३०)

३ जूओ पृ० ३६, ३ने एनुं चोथुं टिप्पण।

४ पालीभाषामां 'त्म' नो 'तुम' थतो जणाय छे:—आत्मा आतुमा, अत्ता—(पाली प्र० पृ० ५०)

ष्म=प्फ, फ—

भीष्म: भिप्फो ।

श्लेष्मा[1] सेफो [सिलिम्हो]

स्म=प्प—

भस्म भप्पो [भस्सो]

१०२ ब्भ, म्ब, म्भ

ध्व=ब्भ—

ऊर्ध्वम् उब्भं [उद्धं]

म्र=म्ब—

आम्रम् अंबं ।

ताम्रम् तंबं ।

(क) श्म=म्भ—

कश्मीराः कम्भारा [कम्हारा]

(ख) ह्म=म्भ—

ब्राह्मणः बम्भणो [बम्हणो]

ब्रह्मचर्यम् बम्भचेरं [बम्हचेरं]

१०३ र

(क) र्य=र—

आश्चर्यम् अच्छेरं । तूर्यम् तूरं । धैर्यम् धीरं, [धिज्जं] पर्यन्तः पेरंतो । [पज्जंतो] ब्रह्मचर्यम् बम्हचेरं । शौण्डीर्यम् सोंडीरं । सौन्दर्यम् सुन्देरं ।

(ख) र्ह=र—

दशार्हः दसारो ।

(ग) त्र=र—

धात्री धारी ।

---

१ श्लेमा=सिलेसुमा, सेम्हो—(पाली प्र० पृ० ४९, म=उम्)

२ पाली प्र० पृ० १५—(म्र=म्ब नि० १८)

१०४ ल, ल्ल

ण्ड=ल—

कूष्माण्डी कोहली [कोहण्डी]

र्य=ल्ल—

[1]पर्यस्तम् पल्लट्टं, [पल्लत्थं]

पर्याणम् पल्लाणं ।

सौकुमार्यम् सोअमल्लं ।

१०५ स्स

[2]स्प=स्स—

बृहस्पतिः बहस्सई [बहप्फई]

वनस्पतिः वणस्सई [वणप्फई]

१०६ ह

(क) क्ष=ह— दक्षिणः दाहिणो [दक्खिणो]

(ख) ख=ह— दुःखम् दुहं [[3]दुक्खं]

दुःखितः दुहिओ [दुक्खिओ]

(ग) र्थ=ह— तीर्थम् तहं [तित्थं]

(घ) र्घ=ह— दीर्घः दीहो, [दिग्घो]

(ङ) र्ष=ह— कार्षापणः काहावणो ।

(च) ष्प=ह— [4]बाष्पः बाहो

---

१ पर्यस्तिका पल्लत्थिका—(पाली प्र० पृ० १६—टिप्पण)

२ वनस्पतिः वनप्पति—(पाली प्र० पृ० ३९—स्प=प्प)

३ पाली प्र० पृ० ८—नियम १० (ख)

४ आ शब्द, बे अर्थमां प्रसिद्ध छे—एक तो आंसु अने बीजो बाफ; तेमां ज्यारे ए बाफ--गरमी--नो वाचक होय त्यारे तेनुं ' बाह ' ने बदले ' बप्फ ' रूप थाय छे ।

(छ) ष्म=ह– कुष्माण्डी कोहण्डी।

कुष्माण्डम् कोहण्डं।

१०७ द्विर्भाव

(क) नीचे जणाव्या प्रमाणे चिह्नित व्यंजनोनो द्विर्भाव थाय छे– ते क्यांय नित्ये अने क्यांय विकल्पे थाय छेः—

ऋजुः उज्जू। यौवनम् जुव्वणं।
तैलम् तेल्लं। विचाकिलम् वेइल्लं।
प्रभूतम् बहुत्तं। व्रीडा विड्डा इत्यादि।
प्रेम पेम्मं।
मण्डूकः मंडूक्को।

वैकल्पिकः—असदीयम् अम्हक्केरं अम्हकेरं, अम्हकेरं।

एकः	एक्को,	एओ।
कर्णिकारः	कण्णिआरो,	कणिआरो।
कुतूहलम्	कोउहल्लं,	कोउहलं।
च्चिअ	[1]च्चिअ,	चिअ (एव)
च्चेअ	च्चेअ,	चेअ (एव)
तूष्णीकः	तुण्हिक्को,	तुण्हिओ।
दैवम्	दइव्वं,	दइवं।
नखः	नक्खो,	नहो।
निहितम्	निहित्तं,	निहिअं।
नीडम्	नेड्डं,	नीडं।

---

१ 'चिअ' अने 'चेअ' ए बन्ने अवधारण सूचक अव्यय छे (हे० ८–२–१८४) अने संस्कृतमां वपराता 'चैव' साथे विशेष समानता धरावे छे–उच्चारना कारणने लीधे ए बन्ने 'चैव' मांथी पण थई शके छे.

मूकः	मुक्को,	मूओ।
मृदुकम्	माउक्कं,	माउअं।
व्याकुलः	वाउल्लो,	वाउलो।
व्याहृतः	वाहित्तो,	वाहिओ।
सेवा	[1]सेव्वा,	सेवा।
स्रोतस्	सोत्तं,	सोअं।
स्त्यानम्	थिण्णं,	थीणं।
स्थूलः	थुल्लो,	थोरो।
स्थाणुः	खण्णू,	खाणू।
हूतम्	हुत्तं,	हूअं इत्यादि।

(ख) समासमां आवेला उत्तरपदना आदिना व्यंजननो द्विर्भाव विकल्पे थाय छे:—

आलान-स्तम्भः	आणाल-खंभो,	आणाल-क्खंभो।
कुसुम-प्रकरः	कुसुम-पयरो,	कुसुम-प्पयरो।
दुः-सहः	दु-सहो,	दु-स्सहो।
देव-स्तुतिः	देव-थुई,	देव-त्थुई।
नदी-ग्रामः	नइ-गामो,	नइ-ग्गामो।
निः-सहम्	नि-सहं,	नि-स्सहं।
हर-स्कन्दाः	हर-खंदा,	हर-क्खंदा।

१०८ शब्द-विशेष विकार

जे शब्दोमां कोई पण सामान्य के विशेष नियम न लागु पडतां चिह्नित भागना केटलाक विशेष विकारो थाय छे, ते आ नीचे आपवामां आवे छे:—

अयस्कारः एक्कारो।

[2]आश्चर्यम् अच्छअरं, अच्छरिअं, अच्छरिज्जं अच्छरीअं।

---

१ जूओ पृ० १–टिप्पण २ जुं।

२ आश्चर्यम्=अच्छरियं, अच्छयिरं, अच्छेरं–(पाली प्र० पृ० ४४ टिप्पण)

उदूखल:	ओहलो	[उऊहलो]
उलूखलम्	ओक्खलं	[उलूहलं]
कदलम्	केलं,	[कयलं]
कदली	केली,	[कयली]
कर्णिकार:	कण्णेरो,	[कण्णिआरो]
कुतूहलम्	कोहलं,	[कोउहल्लं]
चतुर्गुण:	चोग्गुणो,	[चउग्गुणो]
चतुर्थ:	चोत्थो,	[चउत्थो]
चतुर्थी	चोत्थी,	[चउत्थी]
चतुर्दश	चोद्दह,	[चउद्दह]
चतुर्दशी	चोद्दसी,	[चउद्दसी]
चतुर्वार:	चोव्वारो,	[चउव्वारो]
त्रयस्त्रिंशत्	तेत्तीसा ।	
त्रयोदश	तेरह ।	
त्रयोविंशति:	तेवीसा ।	
त्रिंशत्	तीसा ।	
नवनीतम्	नोणीअं, लोणीअं ।	
[1]नवफलिका	नोहलिआ ।	
नवमालिका	नोमालिआ ।	
निषण्ण:	णुमण्णो,	[णिसण्णो]
पूगफलम्	पोप्फलं ।	
पूगफली	पोप्फली ।	
पूतर:	पोरो ।	
प्रावरणम्	पङ्गुरणं, पाउरणं,	[पावरणं]

---

१ अवक्कओ–पाली प्र० पृ० ४४ नि० ५७

बदरम्	बोरं ।	
बदरी	बोरी ।	
मयूखः	मोहो,	[मऊहो]
रुदितम्	रुण्णं ।	
लवणम्	लोणं	[लवणं]
विचकिलम्	वेइल्लं ।	
विंशतिः	वीसा ।	
सुकुमारः	सोमालो	[सुकुमालो]
[1]स्थविरः	थेरो ।	

१०९ शब्द—सर्वथाविकार—

आ नीचे ते शब्दो आपवामां आवे छे जे केटलेक अंशे के सर्वथा (पोताना मूळ रूपथी) अन्य रूपवाळा थई जाय छेः—

अधस् हेट्ठं ।
अप ओ, [अव]
अप्सरस अच्छरसा, अच्छरा ।
अयि ऐ[2] ।
अव ओ, [अव]
आयुः आउसं, [आऊ]
आरब्धः आढत्तो, [आरद्धो]
इदानीम् एण्हि, एत्ताहे, दाणिं [इआणिं] शौ० दाणिं ।
त्रस्तम् हित्थं, तट्ठं [तत्थं]
दिश् दिसा ।
दुहिता धूआ, [दुहिआ]
दंष्ट्रा दाढा ।
द्रहः हरो ।
द्रहकः हरओ ।
धनुष् धणुहं, [धणू]
धृतिः दिही, [धिइ]

---

१ स्थविरः=थेरो–(पाली)

२ आ सिवाय बीजे क्यांय 'ऐ' नो प्रयोग इष्ट नथी–(जूओ पृ० १–टिप्पण)

[1]ईषत् कूर, [ईसि]
उत ओ, [उअ]
उप ऊ, ओ, [उव]
उभयम् अवहं, उवहं, [उभयं]
ककुभ् कउहा ।
क्षिप्तम् छूढं [खित्तं]
क्षुध् छुहा ।
गृहम्[2] घरं ।
छुप्तः छिक्को [छुत्तो]
तिर्यक्[3] तिरिआ, तिरिच्छि ।
पदातिः पाइक्को [पयाई]
प्रावृष् पाउसो ।
[4]पितृष्वसा पिउच्छा, पिउसिआ।
पूर्वम् पुरिमं पुव्वं । शौ० पुरवं ।

बहिस् बाहिं, बाहिरं ।
बृहस्पतिः भयस्सई [बहस्सई]
भगिनी बहिणी, [भइणी]
मलिनम् मइलं[मलिणं]
मातृष्वसा माउच्छा, माउसिआ ।
मार्जारः मंजरो, वंजरो [मज्जारो]
वनिता विलया, [वणिआ]
विद्रुतः विद्दाओ ।
वृक्षः रुक्खो, [वच्छो]
वैडुर्यम् वेरुलिअं, वेडुज्जं ।
शुक्तिः सिप्पी, [सुत्ती]
[5]स्तोकम् थेवं, थोवं, थोक्कं [थोअं]
स्त्री इत्थी [थी]
[6]श्मशानम् मसाणं, सुसाणं [मसाणं]
हृदयम् हिअयं पै० हितपं, हितपकं।

---

१ विशेषणसूचक 'ईषत्' शब्दनुं ज 'कूर' रूप थाय छे, किंतु विशेष्यसूचकनुं नहि.

२ 'गृहपति' शब्दनुं 'घरवइ' ने बदले 'गहवइ' रूप थाय छे.

३ तिर्यक्=तिरियो-(पाली) पा० प्र० पृ० १६ नि० १९)

४ पितृष्वसा पितुच्छा (पा० प्र० पृ० ३४ टिप्पण)

५ स्तोकम् थोकं-(स्त=थ-पा० प्र० पृ० २७)

६ श्मशानम् मसानं, सुसानं-(पा० प्र० पृ० ५१-टिप्पण)

११० अन्तः स्वरवृद्धि—

नीचेना शब्दोमां चिह्नित संयुक्त व्यंजननी वच्चे नीचे जणाव्या प्रमाणे स्वरो उमराय छेः—

			उमेरातो स्वरः
[1]अग्नि	अगणी	[अग्गी]	अ
अर्हन्	अरहन्तो अरिहंतो, अरुहंतो ।		अ, इ, उ
[2]अर्ह	अरह, अरिह, अरुह ।		,,
[3]कृत्स्नः	कसिणो ।		इ
कृष्णः	[4]कसणो, कसिणो	[किण्हो]	अ, इ
क्रियाः	किरिया	[किया]	इ
क्ष्मा	छमा ।		अ
चैत्यम्	चेइअं ।		इ
छद्म	छउमं	[छम्मं]	उ
[5]ज्या	जीआ ।		ई
तप्तः	तविओ	[तत्तो]	इ
[6]द्वारम्	दुवारं	[दारं]	उ
द्वादश	दुवालस ।		,,
दिष्ट्या	दिट्ठिआ ।		इ
[7]पद्मम्	पउमं	[पोम्मं]	उ

---

१ अग्निः अग्गि, अगिनि, गिनि–(पा० प्र० पृ० ४९)

२ अहीं 'अर्ह' धातुनां बधां रूपो समजवानां छे.

३ कृत्स्नः कसिणो, किण्हो, सिण्णो–(पा० प्र० पृ० ४७)

४ आ बन्ने पो वर्ण के रंग अर्थमां ज वपराय छे.

५ ज्या जिया–(पा० प्र० पृ० ८८–य=इ)

६ द्वारं दुवारं, द्वारं (पा० प्र० पृ० ३२ टिप्पण)

७ पा० प्र० पृ० ४९–(म=उम्–पद्मम् पदुमं)

			उमेरातो स्वरः
[1]प्लक्षः	पलक्खो।		अ
भव्यः	भविओ।	[भव्वो]	इ
मूर्खः	मुरुक्खो,	[मुक्खो]	उ
रत्नं	रयणं।		अ
[2]वज्रम्	वइरं	[वज्जं]	इ
शार्ङ्गम्	सारंगं।		अ
[3]श्री	सिरी।		इ
[4]श्वः	सुवे।		उ
[5]श्लाघा	सलाहा।		अ
[6]स्निग्धम्	सणिद्धं, सिणिद्धं,	[निद्धं]	अ, इ
स्नुषा	[7]सुनुसा	[सुण्हा, ण्हुसा सुसा]	उ
[8]सूक्ष्मम्	सुहुमं, सुहमं।		उ, अ
[9]स्नेहः	सणेहो नेहो।		अ
स्याद्	सिआ		इ

---

१ प्लक्षः पिलक्खो–(प्रा० प्र० पृ० ३१ नि० ३७)

२ वज्रः वजिरो–(पा० पृ० १३ टिपण)

३ श्रीः सिरी–(पा० पृ० १३ टिप्पण)

४ श्वः सुवे, स्वे–(पा० पृ० ३३ टिप्पण) श्वः सुव=सुवे–जूओ पृ० ४६ अ=ए

५ श्लाघा सिलाघा–(पा० पृ० ३१)

६ स्निग्धम् सिनिद्धो, निद्धो- (पा० पृ० ४६ नि० ५३)

७ जूओ पृ० ७३ तथा ४१

८ सूक्ष्मम्= सुखुमं–(पा० पृ० १८ टिप्पण)

९ स्नेहः सिनेहो, स्नेहो, सनेहो–(पा० पृ० ४६ नि० ५३)

उमरातो स्वरः

स्याद्वादः	सिआवाओ ।	इ
स्रुघ्नम्	सुरुग्घं ।	उ
[1]स्वः	सुवो ।	,,
स्वे	सुवे ।	,,
स्वप्नः	सिविणो ।	इ
[2]ह्यः	हिओ [य्हो]	,,
[3]ह्रीः	हिरी	इ

१११ अक्षर-व्यत्यय—

आ नीचे जे शब्दोमां चिह्नित अक्षरोनो परस्पर व्यत्यय—पूर्वापरभाव—थइ जाय छे ते आपवामां आवे छे:—

अचलपुरम्	अलचपुरं ।	
आलानः	आणालो	
करेणुः	कणेरू ।	
महाराष्ट्रम्	मरहट्ठं ।	
लघुकम्	हलुअं	[लहुअं]
[4]ललाटम्	णडालं	[णलाडं]
वाराणसी	वाणारसी ।	
हरितालः	हलिआरो	[हरिआलो]
ह्रदः	द्रहो	[हरो]

---

१ समासान्तर्गत 'स्व' शब्दनुं 'सुव' ने बदले 'स' रूप थाय छे: स्वजनः सजणो

२ ह्यः हीयो, हिय्यो—(पा० पृ० २२ टिप्पण)

३ ह्रीः हिरी—(पा० पृ० १३ टिप्पण)

४ जुओ पृ० ७२ ल=ण

अपभ्रंश–आदेशो

(१) नीचे जणावेला शब्दोनां अपभ्रंश रूपो आ प्रमाणे छे:

अन्यादृश	([1]अन्नादि (इ) स)	अन्नाइस ।
		[2]अवराइस ।
ईदृक्		एह ।
ईदृश	(ईदि (इ) स)	अइस ।
कीदृक्		केह ।
कीदृश	(कीदि (इ) स)	कइस ।
तादृक्		तेह ।
तादृश	(तादि (इ) स)	तइस ।
यादृक्		जेह ।
यादृश	(जादि (इ) स)	जइस ।
वर्त्म		विच्च ।
विषण्ण		वुन्न ।

अपभ्रंशनां उमेरणो

(१) अपभ्रंशमां कोइ कोइ शब्दमां कोइ कोइ अक्षरनो वधारा तरीके उमेरो थइ जाय छे:—

उक्तम्	उत्तं	वुत्तं	('व' नो वधारो)
परस्परं	परोप्परं	अपरोप्परं	('अ' नो वधारो)
व्यासः	वासो	व्रासु, वासु	('र' नो वधारो)

---

१ आ ( ) कोउंसमां आपेलां रूपो अपभ्रंशरूपोनी पूर्वावस्थाना सूचक छे. आ शब्दोनां प्राकृतरूपो जोवा माटे जूओ पृ० ५८ ऋ=रि पृ० ५९ ऋ=इ ।

२ जेम 'अन्य' शब्दनुं 'अन्यादृश' रूप थाय छे तेम आ 'अवराइस' शब्द जोतां तेना मूळरूप तरीके 'अपरादृश' रूप पण कल्पी शकाय ।

संधि प्रकरण ८

१ प्राकृतमां जूदां जूदां बे [1]पदोना स्वरोनो संधि थाय छे अने ते पण प्रयोगानुसारे विकल्पे थाय छेः—

स्वरसंधि—

अ+अ=आ—मगह+अहिवई=मगहाहिवई, मगहअहिवई [मगधाधिपतिः]

दंड+अहीसो=दंडाहीसो, दण्डअहीसो [दण्डाधीशः]

अ=आ=आ—विसम+आयवो=विसमायवो,विसमआयवो [विषमातपः]

आ+अ=आ—रमा+अहीणो=रमाहीणो, रमाअहीणो [रमाधीनः]

आ+आ=आ—रमा+आरामो=रमारामो, रमाआरामो [रमारामः]

इ+इ=ई —मुणि+इणो–मुणीणो, मुणिइणो [मुनीनः]

इ+ई=ई—मुणि+ईसरो–मुणीसरो, मुणिईसरो [मुनीश्वरः]

दहि+ईसरो–दहीसरो, दहिईसरो [दधीश्वरः]

---

१ जे बे पदोना स्वरोमां संधि थवानो छे, ते बे पदो सामासिक होय के असामासिक होय अर्थात् कोई प्रकारे जूदां जूदां होवां जोईए.

जेमके; सामासिक–दंड+अहीसो दंडाहीसो, दंडअहीसो ।

असामासिक–दंडस्स+ईसो–दंडस्सेसो, दंडस्स ईसो ।

प्राकृत साहित्यमां विशेषे करीने सामासिक पदोना स्वरोमां संधि थएलो जणाय छे अने असामासिक पदोमां तो तेनो प्रयोग घणो ज विरल थएलो छे. असामासिक पदोमां संधि करवा जतां घणे ठेकाणे अर्थबोध दुर्लभ थई जाय छे माटे ज असामासिक करतां सामासिक पदोमां संधि–प्रयोगनो प्रचार वधु थएलो लागे छे अने ए अनुसारे अहीं उदाहरणोमां पण सामासिक पदोनी ज नोंध विशेष करेली छे. कोई ठेकाणे तो फक्त एक ज पदमां पण संधि थएलो छेः—

काहि+इ–काही, काहिइ [करिष्यति]

बि+इओ–बीओ बिइओ [द्वितियः]

२ जूओ पालिप्र० संधिकल्प नि० ३–पृ० ५८

ई+इ=ई—गामणी+इइहासो–गामणीइहासो, गामणी इइहासो [ग्रामणीतिहासः]

ई+ई=ई—गामणी+ईसरो–गामणीसरो, गामणीईसरो [ग्रामणीश्वरः]

उ+उ=ऊ–भाणु+उवज्झायो–भाणूवज्झायो, भाणुउवज्झायो [भानूपाध्यायः]

साउ+उअयं–साऊअयं, साउउअयं [स्वादूदकम्]

उ+ऊ=ऊ—साहु+ऊसवो,–साहूसवो, साहुउसवो [साधूत्सवः]

ऊ+उ=ऊ—वहू+उअरं–वहूअरं, वहूउअरं [वधूदरम्]

ऊ+ऊ=ऊ–कणेरू+ऊसिअं–कणेरूसिअं, कणेरूऊसिअं [करेणूच्छ्रितम्]

अ+इ=एं—वास+इसी–वासेसी, वासइसी [व्यासर्षिः]

आ+इ=ए—रामा+इअरो,–रामेअरो रामाइअरो [रामेतरः]

अ+ई=ए—वासर+ईसरो–वासरेसरो, वासरईसरो [वासरेश्वरः]

आ+ई=ए—विलया+ईसो–विलयेसो, विलयाईसो [वनितेशः]

अ+उ=ओ–गूढ+उअरं–गूढोअरं, गूढउअरं [गूढोदरम्]

आ+उ=ओ–रमा+उवचिअं–रमोवचिअं, रमाउवचिअं [रमोपचितम्]

अ+ऊ=ओ–सास+ऊसासा–सासोसासा, सासऊसासा, [श्वासोच्छ्वासौ]

आ+ऊ=ओ–विज्जुला+ऊसुंभिअं–विज्जुलोसुंभिअं, विज्जुलाऊसुंभिअं विद्युदुल्लसितम्]

ह्रस्व-दीर्घ विधान—

२ प्राकृतमां सामासिक शब्दोमां प्रयोगानुसारे (क्यांय नित्ये अने क्यांय विकल्पे) ह्रस्व स्वरनो दीर्घ स्वर थाय छे अने दीर्घ स्वरनो ह्रस्व स्वर थाय छे:—

---

१ जुओ पालि प्र० संधि० नि० २ पृ० ५७

¹ह्रस्वनो दीर्घ—अन्त+वेइ—अन्तावेई	[अन्तर्वेदिः]
सत्त+वीसा—सत्तावीसा	[सप्तविंशतिः]
पइ+हरं— पईहरं, पइहरं	[पतिगृहम्]
भुअ+यंतं—भुआयंतं, भुअयंतं	[भुजायन्त्रम्]
वारि+मई—वारीमई, वारिमई	[वारिमती]
वेलु+वणं-वेलूवणं, वेलुवणं	[वेणुवनम्]
²दीर्घनो ह्रस्व—गोरी+हरं—गोरिहरं, गोरीहरं	[गौरीगृहम्]

---

१ सरखावो वैदिक प्रयोग—

अष्ट+कपालम्—अष्टाकपालम् ।

अष्ट+हिरण्या—अष्टाहिरण्या ।

अष्ट+पदी-अष्टापदी (काशिका—६—३—१२६)

सरखावो संस्कृत प्रयोग—

दात्र+कर्णः—दात्राकर्णः ।

उप+नत्—उपानत् ।

केश+केशि—केशाकेशि । वगेरे(काशिका—६—३— ११५ थी १३९)

सरखावो पाली प्रयोग—

सम्म+धम्मो—सम्माधम्मो ।

सम्म+संबुद्धो—सम्मा संबुद्धो । (पा० प्र०पृ० ७४ संधिकल्प, नि० ११ तथा आ नियमनुं टिप्पण)

२ सरखावो वैदिक प्रयोग—

अजा+क्षीरेण—अजक्षीरेण ।

ऊर्णा+म्रदा—ऊर्णम्रदा ।

अजा+त्वम्—अजत्वम् ।—(का० ६—३—६३—६४)

सरखावो संस्कृत प्रयोग—

शिला+वहम्—शिलवहम्

ग्रामणी+पुत्रः—ग्रामणिपुत्रः ।

ब्रह्मबन्धू+पुत्रः—ब्रह्मबन्धुपुत्रः ।

(का० ६—३—६१ थी ६६ तथा ४३—४५)

जउँणा+यडं–जउंणयडं, जउंणायडं [यमुनातटम्]
नई+सोत्तं–नइसोत्तं, नईसोत्तं [नदीश्रोतः]
मणा+सिला–मणसिला, मणासिला [मनःशिला]
वहू+मुहं–वहुमुहं, वहुमूहं [वधूमुखम्]
सिला+खलिअं–सिलखलिअं, सिलाखलिअं
[शिलास्खलितम्]

संधिनिषेध—

३ 'इ' 'ई' के 'उ' 'ऊ' पछी कोई विजातीय स्वर आवे तो संधि थतो नथी अने 'ए' के 'ओ' पछी कोई पण स्वर आवे तो संधि थतो नथी.

पहावलि+अरुणो–पहावलिअरुणो [प्रभावल्यरुणः]
वहू+अवऊढो–वहुअवऊढो [वध्ववगूढः]
वणे+अडइ–वणे अडइ [वनेऽटति]
अहो+अच्छरिअं—अहो अच्छरिअं [अहो आश्चर्यम्]

४ स्वर पर रहेतां क्रियापदमां स्वरनो संधि थतो नथीः—

होइ+इह–होइ इह [भवति इह भवतीह]

५ उद्वृत्त[1] स्वर पर रहेतां प्रायः पूर्वना स्वरनो संधि थतो[2] नथी:

निसा+अरो–निसाअरो [निशाक (च) रः]

---

१ स्वरनी साथे रहेलो व्यंजन लोपाया पछी जे स्वर शेष रहे छे तेनुं नाम उद्वृत्त स्वर छेः–(असंयुक्त 'कादि' लोप–पृ० १०)

२ केटलेक ठेकाणे तो उद्वृत्त स्वर पर रहेतां पण संधि थई गएलो छेः—

कुम्भ+आरो=कुम्भारो (कुम्भकारः)
चक्क+आओ=चक्काओ (चक्रवाकः)
साल+आहणो=सालाहणो (सातवाहनः)
सु+उरिसो=सूरिसो (सुपुरुषः)इत्यादि

[1]स्वरलोप—

६ स्वर पर रहेतां पूर्ववर्ती स्वरनो प्रयोगानुसारे लोप थाय छे:

तिअस+ईसो–तिअसीसो [त्रिदशेशः]

नीसास+ऊसासा–नीसासूसासा [निश्श्वासोच्छ्वासौ]

७ पदथी पर आवेला 'अपि' शब्दना 'अ' नो लोप विकल्पे थाय छे:

केण+अवि–केणावि, केणावि [केनापि]

कहं+अपि–[2]कहंपि, कहमवि [कथमपि]

किं+अपिं–किं पि, किमवि [किमपि]

तं+अपि–तं पि, तमवि [तदपि]

८ स्वरांत पदथी पर आवेला 'इति' शब्दना 'इ' नो लोप थइ 'ति' ने स्थाने त्ति' थाय छे:

तहा+इति–तहात्ति, तहत्ति [तथेति]

पिओ+इति–पिओ त्ति, पिउत्ति [प्रिय इति]

पुरिसो इति पुरिसोत्ति, पुरिसुत्ति [पुरुष इति]

९ व्यंजनांत पदथी पर आवेला 'इति' शब्दना 'इ'नो लोप थाय छे:

किं+इति–किंति [किमिति]

जं+इति–जंति [यदिति]

दिट्ठं+इति–दिट्ठंति [दृष्टमिति]

न जुत्तं+इति–न जुत्तं ति [न युक्तमिति]

१० त्यदादि अने अव्ययथी पर आवेला त्यदादि अने अव्ययना आदि स्वरनो प्रायः लोप थई जाय छे:—

त्यदादि–त्यदादिः एस+इमो–एसमो [एषोऽयम्]

---

१ जूओ पालि० सं० नि० १ (क) पृ० ५५।

२ जूओ ,, ,, ,, २६ पृ० ८१।

त्यदादि–अव्यय: अम्हे[1] एत्थ अम्हेत्थ [वयमत्र]

अव्यय–अव्यय: जइ एत्थ जइत्थ [यद्यत्र]

अव्यय–त्यदादि: जइ अहं जइहं [यद्यहम्]

जइ इमा जइमा [यदीयम्]

व्यंजनसंधि

विसर्ग=ओ

११ अकारथी पर आवेला ' विसर्ग 'नो ओ थाय छे:—

अग्रत:=अग्गओ ।

अन्त:+विस्रम्भ:=अंतोवीसंभो ।

पुरत:=पुरओ ।

मन:शिला=मणोसिला ।

मार्गत:=मग्गओ ।

सर्वत:=सव्वओ ।

[2]म=अनुस्वार

१२ पदने अंते रहेला मकारनो अनुस्वार थाय छे:–

गिरिम्=गिरिं । जलम्=जलं । फलम्=फलं । वृक्षम्=वच्छं ।

१३ स्वर पर रहेतां अन्त्य 'म' नो अनुस्वार विकल्पे थाय[3] छे:

उसभम्+अजिअं=उसभं अजिअं, उसभमजिअं [ऋषभमजितम्]

---

१ पालि प्र० सं० नि० १–(ख) पृ० ६५–ते+अहं=तेहं ।

२ कोई ठेकाणे डबल ' म्म ' नी आदिमां रहेला ' म् ' नो पण अनुस्वार थई जाय छे. जेमके–वणम्मि=वणंमि (वने)

३ जूओ पालि प्र० सं० पृ० ७७–यं+आहु=यमाहु (यदाहु:) धनं+एव=धनमेव ।

ङ, ञ, ण, न=अनुस्वार

१४ व्यंजन पर रहेतां 'ङ', 'ञ', 'ण' अने 'न' ने स्थाने अनुस्वार थाय छे:

ङ–पङ्क्ति=पंति–पंती । पराङ्मुख=परंमुह–परंमुहो ।

ञ–कञ्चुक=कंचुक–कंचुओ । लाञ्छन=लंछण–लंछणं ।

ण–षण्मुख=छंमुख–छंमुहो । उत्कण्ठा=उक्कंठा ।

न–विन्ध्य=विंझ–विंझो । सन्ध्या=संझा ।

(१) शौरसेनीमां 'इ' अने 'ए' पर रहेतां अन्त्य 'म' पछी विकल्पे 'ण' उमेराय छे:

युक्तम् इदम्	जुत्त+इणं जुत्तमिणं	= जुत्तं णिणं, जुत्तं इणं ।
सदृक्षम् इदम्	सरिसं+इणं सरिसमिणं	= सरिसं णिणं, सरिसं इणं ।
किम् एतत्	किं + एअं किमेअं	= किंणेदं किमेदं ।
एवम् एतत्	एवं + एअं एवमेअं	= एवं णेदं, एवमेदं ।

अनुस्वार आगम.

१५ नीचे जणावेला शब्दोना अन्त्य व्यंजननो लोप थइ अंत्य स्वर उपर अनुस्वार थाय छे:

ऋधक् इहं । ऋधकक् इहयं । तत् तं । पृथक् पिहं । यत् जं । विष्वक् वीसुं । सम्यक् सम्मं । साक्षात् सक्खं ।

---

१ जूओ पा० प्र० सं० नि० २० पृ० ८०––चिरं आयति=चिरं नायति, चिरमायति ।

१६ नीचे जणावेला शब्दोना प्रथम स्वर उपर, द्वितीय स्वर उपर अने तृतीय स्वर उपर प्रयोगानुसारे (विकल्पे के नित्ये) अनुस्वार थाय छे:

प्रथम स्वर उपर—अश्रु अंसु। कर्कोटः कंकोडो। कुड्मलम् कुंपलं। गुच्छम् गुंछं। गृष्टिः गिंठी, गिट्ठी। त्र्यस्रम् तंसं। दर्शनम् दंसणं। पुच्छम् पुंछं। पर्शुः पंसू। बुध्नम् बुंधं। मार्जारः मंजारो, मज्जारो। मूर्धा मुंढा। वक्रम्—वंकं। वृश्चिकः—विंछिओ। श्मश्रु मंसू।

द्वितीय स्वर उपर—इह इहं [इहमेगेसिं] प्रतिश्रुत् पडंसुआ। मनस्वी—मणंसी। मनस्विनी मणंसिणी। मनःशिला मणंसिला, मणासिला। वयस्यः वयंसो।

तृतीय स्वर उपर—अतिमुक्तकम्—अणिउँतयं, अइमुंतयं, अइमुत्तयं। उपरि—अवरिं।

कोइ स्थळे मात्र छंदनी पूरवणी माटे पण अनुस्वार थाय छे:
देवनागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए—
देवंनागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए[२]।
[देवनागसुवर्णकिन्नरगणसद्भूतभावार्चिते]

१७ जे स्थळे स्वरथी शरु थतुं पद बेवडायुं होय त्यां वच्चे 'म' विकल्पे उमेराय छे:

एक्क+एक्कं	एक्कमेक्कं,	एक्केक्कं	(एकैकम्)
एक्क+एक्केण	एक्कमेक्केण,	एक्केक्केण	(एकैकेन)
अंग+अंगम्मि	अंगमंगम्मि,	अंगअंगम्मि	(अङ्गअङ्गे) इत्यादि।

---

१ जूओ पा० प्र० सं० नि० १८ पृ० ७८, नि० २४–पृ० ८१

२ 'श्रुतस्तव'ना छेल्ला श्लोकनुं बीजुं चरण छे—
जूओ पुक्खरवरदीवड्ढे–(प्रतिक्रमण)

अनुनासिकविधान—

१८ कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग अने पवर्ग पर रहेतां अनुस्वारने स्थाने अनुक्रमे ङ, ञ, ण, न अने म विकल्पे थाय छेः[२]

कवर्ग—अङ्गणम् अंगणं, अङ्गणं। पङ्कः पंको, पङ्को ।
लङ्घनम् लंघणं, लङ्घणं । शङ्खः संखो, सङ्खो ।

चवर्ग—कञ्चुकः कंचुओ, कञ्चुओ। लाञ्छनम् लंछणं, लञ्छणं।
अञ्जितम् अंजिअं, अञ्जिअं । संध्या संझा, सञ्झा

टवर्ग—कण्टकः कंटओ, कण्टओ । उत्कण्ठा उक्कंठा, उक्कण्ठा ।
काण्डम् कांडं, काण्डं । षण्ढः संढो, सण्ढो ।

तवर्ग—अन्तरम् अंतरं, अन्तरं । पन्थः पंथो, पन्थो ।
चन्द्रः चंदो, चन्दो । बान्धवः बंधवो, बन्धवो ।

पवर्ग—कम्पते कंपइ, कम्पइ । वंफइ, वम्फइ [काङ्क्षति]
कदम्बः कलंबो, कलम्बो । आरम्भः आरंभो, आरम्भो ।

'अनुस्वार' लोप

१९ नीचे जणावेला शब्दोमां प्रयोगानुसारे (विकल्पे के नित्ये) अनुस्वारनो लोप[३] थाय छेः

त्रिंशत्–तीसा । विंशतिः वीसा । संस्कृतम्–सक्कयं ।
संस्कारः—सक्कारो । इत्यादि ।

वैकल्पिक—

इदानीं–इआणि, इआणिं । एवं–एव, एवं ।

---

१ आ नियमने कोइ नित्य विधिरूपे स्वीकारे छे.

२ जूओ पा० प्र० सं० नि० १३–पृ० ७५ ।

३ जूओ पा० प्र० सं० नि० २५–पृ० ८२ ।

४ सरखावो सं+स्कर्ता=सस्कर्ता ।

कथम् कह, कहं ।
कांस्यम् कासं, कंसं ।
किं कि, किं ।
किंशुकम् केसुअं, किंसुअं ।
दाणिं दाणि, दाणिं [इदानीम्]
नूनं नूण, नूणं ।

पांसुः पांसू, पंसू ।
मांसलम् मासलं, मंसलं ।
मांसम् मासं, मंसं, ।
संमुखम्—समुहं, संमुहं ।
सिंहः—सीहो, सिंघो ।
इत्यादि ।
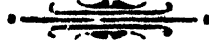
प्रकरण ९

उपसर्ग–अव्यय निपात

उवसग्गा—

प–प्र—परूवेइ (प्ररूपयति) पभासेइ (प्रभाषते)

परा–परा—पराघाओ (पराघातः) पराजिणइ (पराजयते)

ओ, अव–अप— ओसरइ, अवसरइ (अपसरति)

ओसरिअं, अवसरिअं (अपसृतम्)

सं–सम्—संखिवइ (संक्षिपति) संखित्तं (संक्षिप्तम्)

अणु, अनु–अनु—अणुजाणइ (अनुजानाति) अनुमई (अनुमतिः)

ओ, अव–अव—ओअरइ (अवतरति) ओआरो (अवतारः)

ओआसो, अवयासो (अवकाशः)

ओ, नि, नी–निर्[१]—ओमल्लं, निम्मल्लं (निर्माल्यम्)

निग्गओ (निर्गतः) नीसहो (निस्सहः)

दु, दू–दुर्—दुन्नयो (दुर्नयः) दूहवो (दुर्भगः)

अभि, अहि–अभि--अभिहणइ (अभिहन्ति) अहिप्पाओ (अभिप्रायः)

वि–वि —विकुव्वइ (विकुर्वति) विणओ (विनयः) वेणइआ (वैनयिकी)

अधि, अहि–अधि—अज्झायो (अध्यायः) अहीइ (अधीते)

सु, सू–सु—सुकरं (सुकरम्) सूहवो (सुभगः)

उ–उत्—उग्गच्छइ (उद्गच्छति) उग्गओ (उद्गतः) उप्पत्तिआ (औत्पत्तिकी)

अइ, अति–अति—अईओ (अतीतः) वइक्कंतो (व्यतिक्रान्तः)

अतिसओ (अतिशयः) अच्चन्तं (अत्यन्तम्)

णि, नि–नि—णिवेसो (निवेशः) संनिवेसो (संनिवेशः) निविसइ (निविशते)

---

१ फक्त 'माल्य' शब्दनी पूर्वना ज 'निर्' नो 'ओ' थाय छे.

पडि, पति, परि-प्रति—पडिमा (प्रतिमा), पतिट्ठा (प्रतिष्ठा)
परिट्ठा (प्रतिष्ठा)

परि, पलि-परि—परिवुडो (परिवृतः) पलिहो (परिघः)

इ, पि, वि, अपि अवि-अपि—पिहेइ (पिदधाति) पिहित्ता (पिधाय)
किंपि, किमवि, किमपि (किमपि) कोइ, कोवि (कोऽपि)

ऊ, ओ, उव-उप—ऊज्झायो, ओज्झायो, उवज्झायो (उपाध्यायः)

आ-आ—आवासो (आवासः) आयंतो (आचान्तः)

धात्वर्थं बाधते कश्चित् कश्चित् तमनुवर्तते।
तमेव विशिनष्ट्यन्योऽनर्थकोऽन्यः प्रयुज्यते ॥

अव्वयाइं (अव्ययानि)

अहो, हंहो, हा, हे, नाम, अहह, हीसि, अहह अने अरिरिहो विगेरे अनेक अव्ययो छे अने ते बधानो प्रयोग संस्कृतनी पेठे प्राकृतमां पण थाय छे. तो पण अहीं नीचे केटलाक विशेष अव्ययोनी नोंध करीए छीए:—

अइ	अति	अतिशय.
अइ	अयि	संभावना.
अईव	अतीव	विशेष.
अओ	अतः	आथी, एथी.
अकट्टु	अकृत्वा	नहि करीने.
अग्गओ	अग्रतः	आगळथी.
अग्गे	अग्रे	आघे, आगळ.
अंग	अङ्ग	संबोधन.
अज्ज	अद्य	आज.

१ फक्त 'स्था' धातुनी पूर्वेना ज 'प्रति' नो 'परि' थाय छे.

अण (नञ्-)	अन	निषेध.
अण्णमण्णं	अन्योऽन्यम्	अन्योन्य.
अण्णहा	अन्यथा	विपरीत.
अणंतरं	अनन्तरम्	आंतरा विना.
अतीव	अतीव	
अत्थं	अस्तम्	अदर्शन, आथमबुं.
अत्थि	अस्ति	सत्तासूचक.
अत्थु	अस्तु	विधिसूचक, निषेधसूचक.
अदु	अदः	
अदुवा / अदुव	अथवा	पक्षांतर.
अद्धा	अद्धा	समय.
अंतरं	अन्तरम्	आंतरुं.
अंतो	अन्तर्	अंदर, वच्चे.
अन्नहा	अन्यथा	विपरीत
अन्नु / अन्नह (अप०)	अन्यथा	
अप्पणो	आत्मनः	आपणे जाते-पोते.
अपरज्जु	अपरेद्युः	परमदिवसे.
अप्पेव	अप्येवम्	संशय.
अभिक्खं	अभीक्ष्णम्	वारंवार.
अभितो	अभितः	चारे बाजु.
अम्मो		आश्चर्य.
अम्महे (शौ०)		'एं हें हं' हर्षनुं सूचन.
अरे	अरे	संभाषण.

अरे	अरति (अरइ)	रतिकलह.
अलं	अलम्	सामर्थ्य, निषेध, पूरतुं.
अलाहि	अलंहि	निवारण, निषेध.
अवस्सं	अवश्यम्	अवश्य.
अवसें (अप०)	अवशेन	,,
अवस	अवश्यम्	,,
अवरिं	उपरि	उपर.
अव्वो		सूचना, पश्चात्ताप, संभाषण, विस्मय, संताप, आदर, भय, अपराध, खेद, दुःख, आनंद.
असइं	असकृत्	अनेकवार.
अह	अथ	आरंभ.
अहत्ता	अधस्तात्	नीचे.
अहवइ (अप०)	अथवा	पक्षांतर.
अहव अहवा	अथवा	,,
अहा	यथा	जेम.
अहे	अधः	नीचे.
अहो	अहो	ओहो (आश्चर्य)
आम	ओम्	स्वीकार.
आवि	आविः	प्रकट.
आहच्च	आहत्य	बलात्कार.
आहरजाहर(अप०)	एहिरेयाहिरे	आवरोजावरो.
इ		पादपूरक.
इओ	इतः	आथी, एथी, वाक्यारंभ,

इक्कसरिअं	एकसृतम् (?)	संप्रति.
इत्थत्तं	इत्थंत्वम्	ए प्रकारे.
इच्चत्थो	इत्यर्थः	ए अर्थ.
इयाणिं	इदानीम्	हमणां.
एम्वहि (अप०)	,,	,,
इर	किल	निश्चय.
इह	इह	अहीं.
इहं	ऋधक्	सत्य.
इहयं	ऋधकक्	,,
इहरा	इतरथा	अन्यथा.
इं	किम्	प्रश्न, गर्हा.
ईसिं	ईषत्	थोडुं.
ईसि	,,	,,
उ	तु	तो.
उअ	उत	पश्य—जो.
उट्ठबइस (अप०)	उत्तिष्ठविश	ऊठबेश.
उत्तरओ	उत्तरतः	उत्तरथी, उत्तरमां.
उत्तरसुवे	उत्तरश्वः	आवती काल पछी.
उद	उत	विकल्प, अपि.
उदाहु	उदाहो	विकल्प.
उप्पिं	उपरि	उपर.
उवरिं	,,	,,
उवरि	,,	,,
उ		गर्हा, क्षेप, विस्मय, सूचना.
एअं	एतत्	ए.

एकइआ एक्कइआ एक्कया	एकदा	एक वखत.
एक्कसरिअं	एकसृतम् (?)	संप्रति.
एक्कसि इक्कसि (अप०)	एकश:	एकवार.
एक्कसि इक्कसि	एकदा	एक वखत.
एक्कसिअं इक्कसिअं	,,	,,
एगइआ एगया	एकदा	एक वखत.
एगयओ	एकैकत:	एक एक.
एगंततो	एकान्तत:	एक तरफी.
एगज्झं	ऐकध्यम्	एक प्रकार.
एतावता एयावया	एतावता	एटले.
एत्थं एत्थ	अत्र	अहीं.
एत्थु एत्तहे (अप०)	अत्र	,,
एत्तहे (अप०)	इत:	आथी, एथी, वाक्यारंभ.
एव	एव	नक्की, ए ज प्रमाणे.
य्येव[1] (शौ०)	,,	,,

---

१ जुओ पा० प्र० पृ० ७८ नि० १७

वा + एव= वा येव। तेसु + एव=तेसु येव।

न + एव=न येव। ते + एव=ते येव।

बोधि + एव=बोधि येव। सो + एव=सो येव।

जि (अप०)		ज "तासु जि" तेनो ज.
एवं	एवम्	एम, ए प्रमाणे.
एम्व (अप०)	,,	,,
एवमेव	एवमेव	एम ज.
एमेव	,,	,,
एम्वइ (अप०)	,,	,,
ए	अपि	संभावना.
ओ		सूचना, पश्चात्ताप.
कओ	कुतः	क्यांथी.
कउ कहंतिहु } (अप०)	,,	,,
कत्थइ	कुत्रचित्	कोइ ठेकाणे.
कल्लं	कल्यम्	काले.
कह कहं	कथम्	केम, केवी रीते.
केम, केम्व, किम, किम्व, किह, किध } (अप०)	,,	,,
कहि कहिं	कुत्र	क्यां.
केत्थु (अप०)	,,	,,
कालओ	कालतः	काले करीने, वखते.
काहे	कर्हि (?)	क्यारे.
किं		प्रश्न, गर्हा.
किंचि	किंचित्	कांई.

किंणा क्रिण्णा क्रिणो	किन्तु	प्रश्न. ,,
किर	किल	नक्की
किल	,,	,,
केवच्चिरं	कियच्चिरम्	केटला लांबा समय सुधी.
केवच्चिरेण	कियच्चिरेण	,,
केवलं		एकलुं.
केहि (अप०)		तादर्थ्यसूचन "सग्गहो केहिं" स्वर्गने माटे.
खलु		नक्की.
खाइअं (यं)		वळी.
खाइं (अप०)		अनर्थक-स्थलपूरणे.
खेत्तओ	क्षेत्रत:	क्षेत्रमां, क्षेत्रथी.
खु		नक्की
गंधओ	गन्धत:	गंधे.
गुणओ	गुणत:	गुणे.
घइं (अप०)		अनर्थक-स्थलपूरक.
घुग्घ (अप०)		घुघु--चेष्टानुं अनुकरण.
च	च	अने.
च्च		नक्की.
चिअ च्चेअ	चैव	,,
जइ	यदि	जो.
छुडु (अप०)	,,	,,
जओ	यत:	जेथी, कारणके.

जणि, जणु (अप०)		जाण्ये, 'इव'नुं सूचन.
जत्थ	यत्र	ज्यां—जेमां.
जेत्थु, जत्तु (अप०)	यत्र	ज्यां—जेमां.
जति	यदि	जो.
जदि	यदि	,,
जह, जहा	यथा	जेम, जे रीते.
जेम, जेम्व, जिम, जिम्व, जिह, जिध (अप०)	,,	,,
जहेव	यथैव	,,
जं	यत्	जे, के.
जाव	यावत्	ज्यांसुधी.
जाम, जाउं, जामहिं (अप०)	,,	,,
जावज्जीवं	यावज्जीवम्	जीवतां सुधी.
जुअंजुअं	युतंयुतम् (?)	पृथक्पृथक्—जूदुंजूदुं.
जेण	येन	जे तरफ.
जे	ये	पादपूरक.
झगिति		संप्रति.
झत्ति	झटिति	शीघ्र—झट.
ण	न	निषेध.
णइ		अवधारण.

णं		वाक्यालंकार,
णं (शौ०)	ननु	वितर्क.
णमो	नमः	नमस्कार.
णवर		केवल.
णवरि		अनंतर.
णवरं	नवरम्	विशेष.
णवि		विपरीतता.
णाइ	नैव (?)	निषेध.
णाइं	,,	,,
णाणा	नाना	जूदुंजूदुं.
णिच्चं	नित्यम्	नित्य.
णूण	नूनम्	नक्की. तर्क.
णूणं	,,	,,
णो	नो	निषेध.
तं	तत्	वाक्यारंभ, ते.
तंजहा	तद्यथा	जेमके.
तए	तदा	त्यारे, त्यारपछी.
तओ	ततः	तेथी.
ततो	,,	,,
तत्तो	,,	,,
तणेण (अप०)		तादर्थ्यसूचन.
तत्थ	तत्र	त्यां, तेमां.
तेत्तहे (अप०)	,,	,,
तप्पभिइं	तत्प्रभृति	त्यारथी.
तह } तहा }	तथा	तेम, तेवी रीते.

तेम, तेम्व, तिम, तिम्व, तिह, तिध (अप०)	तथा	तेम, तेवी रीते
तहेव	तथैव	तेम, तेवी रीते.
तहि	तत्र	त्यां–तेमां.
तहिं	,,	,,
ताव	तावत्	त्यांसुधी, वाक्यारंभ.
ताउं, ताम, तामहिं (अप०)	तावत्	,,
तिरियं	तिर्यक्	वांकुं.
तिरो	तिरः	छूपावुं.
तीअं	अतीतम्	अतीत.
तु	तु	तो.
तेण	तेन	ते तरफ.
तेत्थु, तत्तु (अप०)	तत्र	त्यां–तेमां.
तेहिं (अप०)		तादर्थ्य सूचन.
तो	तु	तो
तो (अप०)	ततः, तदा	तेथी, त्यारे.
थू	थूत्	तिरस्कार.
दर	दर	अडधुं, ओछुं.
दिवारत्तं	दिवारात्रम्	रात–दिवस.
दिवा, दिआ, दिवा	दिवा	दिवस.
दिवे (अप०)	,,	,,
दुट्ठु	दुष्टु	दुष्ट, खराब.

दुहओ	द्विधा	बन्ने बाजुथी.
दुहा	,,	बन्ने रीते, बे भागे.
दे	,,	संमुखीकरण, संबोधन.
धणियं		बाढ.
धुवं	ध्रुवम्	ध्रुव, चोकस.
ध्रुवु (अप०)	,,	,,
न	न	निषेध.
नउ (अप०)		गू० नो. जाण्ये, 'इव' अर्थनुं सूचन.
नाइ		
नावइ	ज्ञायते (?)	हिं० नांइ.
नं		
नत्थि	नास्ति	नथी.
नहि	नहि	निषेध.
नाहिं (अप०)	,,	,,
निच्चं	नित्यम्	नित्य.
नूण	नूनम्	वितर्क.
नूणं	,,	
नेव	नैव	नहि ज.
नो	नो	निषेध.
पच्चुअ	प्रत्युत	उलटुं.
पच्चलिउ (अप०)	,,	
पगे	प्रगे	प्रातःकाळे.
पच्छा	पश्चात्	पछी.
पच्छइ (अप०)	,,	,,

पडिरूवं (पं) पतिरूवं (पं) पटिरूवं (पं)	प्रतिरूपम्	सरखुं.
परज्जु	परेद्युः	परम दिवसे.
परं	परम्	परंतु.
पर (अप०)	,,	,,
परंमुहं	पराङ्मुखम्	पराङ्मुख, विमुख.
परसवे	परश्वः	आवता परम दिवसे.
परितो	परितः	चारे बाजु.
परोप्परं परुप्परं	परस्परम्	परस्पर.
अवरोप्परं अवरुप्परं (अप०)	,,	,,
पसज्झ	प्रसह्य	हठात्.
पाडिक्कं	प्रत्येकम्	एकएक.
पाडिएक्कं	,,	,,
पातो	प्रातः	सवारे.
पायो पाओ	प्रायः	प्रायः, घणुं करीने.
प्राउ प्राइव प्राइम्व पग्गिम्व (अप०)	,,	,,
पिव	अपि+इव	सरखुं, जेवुं.
पि	अपि	पण.
पुण	पुनः	फरीने. वळी.

पुणरुत्तं	पुनरुक्तम्	,, कृतकरण.
पुणो	पुनः	फरीने, वळी.
पुणु (अप०)	,,	,,
पुणरवि	पुनरपि	फरीपण, वळीपण.
पुरओ	पुरतः	आगळ.
पुरत्था	पुरस्तात्	,,
पुरा	पुरा	पहेलां, भूतकाळ.
पुहं	पृथक्	जुदुं.
पिहं	,,	,,
पेच्च	प्रेत्य	परलोक.
बले	बले	निर्धारण—चूंटी काढवुं. निश्चय.
बहिद्धा	बहिर्धा	बहार.
बहिया	बहिर्	,,
बहिं	,,	,,
भुज्जो	भूयः	फरीने.
भो !	भोः	आमंत्रण.
मग्गतो	मार्गतः	पाछळ.
मणयं	मनाक्	थोडुं.
मणाउं (अप०)	,,	,,
मणे	मने	विमर्श.
माइं	माऽति	निषेध.
मामि		सखीनुं संबोधन.
मिव	मा+इव	जेवुं.
मुसा	मृषा	खोटुं.

मुहु	मुहुः	वारंवार.
मूसा	मृषा	खोटुं.
मा	मा	निषेध.
मं (अप०)	मा	,,
मोरउल्ला	मुधा,	फोकट.
मोसा	मृषा	खोटुं.
य	च	अने.
ग्हो	ह्यः	गई काले.
र	र	पादपूरक.
रहो	रहः	गुप्त.
रे	रे	संभाषण.
रे	रति+रइ=रे	रतिकलह.
रेसि, रेसिं (अप०)	,,	तादर्थ्यसूचन.
लहु	लघु	शीघ्र.
व	वा	विकल्प. जेवुं.
व्व	इव	जेवुं.
वणे	वने	अनुकंपा, निश्चय, विकल्प, संभावना.
वहिल्ल (अप०)	शीघ्रम् पद्दमिल्ल(?)	वहेलुं.
वा	वा,	विकल्प, जेवुं.
वि	अपि	पण.
विअ	इव	जेवुं.
विणा	विना	वगर.
विणु (अप०)	,,	,,
विव	इव	जेवुं.
वीसुं	विष्वक्	व्याप्ति.

वे	वै	निश्चय,
वेव्व		आमंत्रण.
वेव्वे	,,	भय, वारण, विषाद, आमंत्रण.
सइ	सदा	सदा.
सइ	सकृत्	एकवार.
सक्खं	साक्षात्	प्रत्यक्ष.
सज्जो	सद्यः	शीघ्र.
सणियं	शनैः	धीरे.
सद्धिं	सार्धम्	साथे.
सपक्खिं	सपक्षम्	बराबर सामे
सपडिदिसिं	सप्रतिदिग्	,,
समं	समम्	साथे.
समाणु (अप०)	समानम्	,,
सम्मं	सम्यक्	ठीक, सारुं.
सयं	स्वयम्	जाते. पोते.
सया	सदा	सदा
सव्वओ	सर्वतः	बधे, बधेथी. ,,
सव्वत्थ	सर्वत्र	बधे.
सव्वेत्तहे (अप०)	,,	,,
सह	सह	साथे.
सहुं (अप०)	,,	,,
सहसा	सहसा	अविमर्श, शीघ्र, त्वरा.
सायं	सायम्	संध्या, सांज.
सिय (अ)	स्यात्	कदाच.

सिया (आ)	,,	,,
सुवत्थि	स्वस्ति	कल्याण.
सुवे	श्वः	आवती काले.
से		अथ, वाक्यारंभ.
सेवं	तदेवं	समाप्ति. स्वीकार.
हञ्जे (शौ०)	..	दासीनुं आमंत्रण.
हंता	हन्त	कोमलामंत्रण-हा.
हंद	हन्त	गृहाण—ले.
हंदि	हन्त	खेद, विकल्प, पश्चात्ताप, निश्चय, सत्य, गृहाण.
हद्धी	हाधिक्	खेद, निर्वेद.
हरे	हारे	क्षेप, संभाषण. रतिकलह.
हला		एला—सखीनुं संबोधन.
हले	हाऽऽले !	एली-...
हव्वं	हव्यम्	शीघ्र-
हाहा	हाहा	खेद.
हिर		निश्चय.
हीमाणहे (शौ०)		विस्मय, निर्वेद.
हीही (शौ०)		खीखी (विदूषकनुं हसवुं)
हु		निश्चय, वितर्क, विस्मय, संभावना.
हुहुरु (अप०)		'सुरुरु' के 'सरर' अवाजनुं अनुकरण.
हुं		दान, पृच्छा, निवारण.
हेट्ठा	अधः	, नीचे.

आ उपरांत ते बीजां सर्वादिशब्दजन्य (यदा, कदा विगेरे) अव्ययो छे, तेनो उल्लेख तद्धित प्रकरणमां आवनारो छे. खरुं विचारिए तो—

" इयन्त इति संख्यानं निपातानां न विद्यते "

निपात

आगळ जणाव्या प्रमाणे देश्यप्राकृत ए, प्रस्तुत प्राकृतनुं एक अंग छे. तेमां जे जे शब्दोनो प्रयोग थएलो छे ते बधा शब्दो 'निपात' ने नामे ओळखाय छे. कारण के, ए शब्दोनी रचना, कोई जातनी व्युत्पत्ति के वर्णविकारनी अपेक्षा राखती नथी. किंतु ए, लौकिक संकेत अने उच्चारण उपर निर्भर छे. अहीं एवा—देश्यप्राकृतमां वपराता केटलाक—निपातो आपीए छीए:

अर्थ—

अगया	असुरा:	
अत्थ (नञ्) के	अकाण्डम्	अकाळे.
अल्लं		दिन.
*आऊ	आप:	पाणी.
*आसीसा	आशी:	आशिष.
*उज्जल्लो	उज्ज्वल:—बली	बलवान.
कड्डं	कुतूहलम्	कोड.
*कत्थइ	क्वचित्	
*कन्दुट्टं	कन्दोत्थम	उत्पल
*ककुधं	ककुदम्	स्कंध.
करसी	श्मशानम्	
*खुड्डओ	क्षुल्लक:	
*खेड्डं	खेलम्	क्रीडा.

*गोणो	गौः	
*गावी	,,	
*घायणो	गायनः	
चचिकं	स्थासकः	कुंभारनुं एक जातनुं उपकरण.
छिछि	धिक्धिक्	
छिछई	पुंश्चली	छिनाळ.
*जम्मणं	जन्म	
झसुरं	ताम्बूलम्	
णामुक्कसिअं	कार्यम्	
णेलच्छो	पण्डकः	नपुंसक, हीजडो.
*तेआलीसा	त्रयश्चत्वारिंशत्	तेंताळीश.
*तेवण्णा	त्रिपञ्चाशत्	ते (त्रे) पन.
तिंगिच्छि	पौष्पं रजः	पुष्पनी रज.
*छिद्धि	धिक्धिक्	
*धिरत्थु	धिगस्तु	
*निहेलणं	निलयनम्	घर.
*पक्कलो	पक्वलः	समर्थः.
*पञ्चावण्णा	पञ्चपञ्चाशत्	पंचावन.
*पणपन्ना	,,	,,
पलही	कर्पासः	कपास.
*पडिसिद्धी पाडिसिद्धी	प्रतिस्पर्धा	
* भिमोरो	हिमोरः	
*बइल्लो	बलीवर्दः	बळद.
*भट्टिओ	भर्तृकः	विष्णु.

*आ निशानीवाळा शब्दो संस्कृत शब्दो साथे समानता धरावे छे.

भवंतो	भवान्	तमे.
बहिद्धा	बहिर्धा	मैथुन, बहि.
मघोणो	मघवा	इन्द्र.
महन्तो	महान्	
मुव्वहइ	उद्वहति	
लज्जालुइणी	लज्जावती	लाजवंतीनो छोड.
विउसग्गो	व्युत्सर्गः	त्याग.
वोसिरणं	व्युत्सर्जनम्	,,
वम्हलो	अपस्मारः	रोगविशेष—वाई.
वड्डयरं	बृहत्तरम्	वडेरुं.
वडो	वटः	
सक्खिणो	साक्षी	
साहुली	शाखा	

अपभ्रंशमां आवता केटलाक निपातो—

देश्य शब्दो

अप्पण	आत्मीय	आपणुं.
कोड्ड	कौतुक	कोड.
खेड्ड	क्रीडा	खेल. रमत.
जाइट्ठिआ	यद्दृष्टिका	जे जे जोयुं.
झकट		
ढक्करि	अद्भुत	
दडवड	अवस्कन्द	दडवडवुं.
द्रवक्क	भय	
द्रेहि	दृष्टि	

नवग्ग	नवक	नोखुं. नवुं. हिं० अनोखा.
नालिअ	मूढ	
निच्चट्ट	(नित्यस्थ–निच्चट्ठ) गाढ.	
मब्भीस	मा भैषीः	मा बीश–भय न पाम.
रवण्ण	रमण	रम्य.
वढ	(वट !)	मूढ.
विट्टाल[1]		वटाळ, वटलावुं.
सड्डुल		असाधारण.
हेल्लि	(हे आले !)	हे सखी.

आ उपरांत बीजा पण देश्यप्राकृत शब्दो छे अने ते अनेक छे. ते माटेनी विशेष माहिती हेमचंद्रकृत 'देशीनाममाला' ने जोवाथी मळी शके तेम छे. आवा केटलाक शब्दो 'षड्भाषाचंद्रिका' मां पण नोंधाएला छे.

---

१ आ शब्दनो विशेष संबंध सं० 'विपरिवर्त' के 'परिवर्त' साथे होइ शके. बदलावुं, पलटावुं अने वटलावुं ए त्रणेनी उत्पत्ति एक सरखी लागे छे.

नाम प्रकरण १०

नामना प्रकारो

संस्कृत भाषामां नामोना बे विभाग छे. जेमके–स्वरांत नाम अने व्यंजनांत नाम. पण प्राकृतभाषामां तेम नथी. कारण के, व्यंजनांत नाममात्र कोइ रीते स्वरांत थया सिवाय प्राकृतभाषामां प्रयोजातुं ज नथी, एथी प्राकृतमां बधां नामो स्वरांत होय छे माटे प्राकृत नामोनो विभाग आ प्रमाणे छे:

अकारांत, आकारांत, इकारांत, ईकारांत, उकारांत, ऊकारांत, एकारांत अने ओकारांत. [संस्कृत ऋकारांत नामो प्राकृतमां रूपाख्यानने प्रसंगे अकारांत, आकारांत, इकारांत के उकारांत थतां होवाथी एने उपरनी गणत्रीमां जूदां गण्यां नथी.]

नामना अन्त्यस्वरनो फेरफार.

१ 'ग्रामणी,' 'स्वलपू' ए ज प्रकारना बीजा अनेक शब्दो (सेनानी, सुधी; कारभू, कटप्रू वगेरे) नो अन्त्य स्वर रूपाख्यानने प्रसंगे ह्रस्व थाय छे.

२ नान्यतरजातिमां वपरातां नामोनो अन्त्य दीर्घ स्वर ह्रस्व थाय छे.

नामनी जातिओ

प्राकृत नामोनी जातिओ संस्कृत नामोनी जेवी छे. जे विशेषता छे ते आ प्रमाणे छे:

१ नकारांत अने सकारांत नामो प्राकृतमां नरजातिनां गणाय छे.

२ तरणि, प्रावृष् अने शरद् ए त्रण नामो प्राकृतमां नरजातिमां रहे छे.

३ नेत्रवाचक शब्दो तेनी खास जाति उपरांत नरजातिमां पण वपराय छे.

४ वचन, विद्युत्, कुल, छन्दस् माहात्म्य, दुःख अने भाजन वगेरे शब्दो पोत पोतानी खास जाति उपरांत नरजातिमां पण रहे छे.

५ गुण, देव, बिंदु, खड्ग, मण्डलाग्र, कररुह अने वृक्ष वगेरे शब्दो पोतानी जाति उपरांत नान्यतरजातिमां पण वपराय छे.

६ गरिमन्, महिमन् वगेरे 'इमन्' छेडावाळां नामोने अने पीणिमा (पीनत्व), पुप्फिमा (पुष्पत्व) वगेरे 'इमा' छेडावाळां नामोने तेओनी खास जाति उपरांत नारीजातिमां पण समजवानां छे.

७ अञ्जलि, पृष्ठ, अक्षि, प्रश्न, चौर्य, कुक्षि, बालि, निधि, विधि, रश्मि अने ग्रन्थि वगेरे नामो पोत पोतानी जाति उपरांत नारीजातिमां पण वपराय छे.

वचन—विभक्तिओ

१ गूजरातीनी पेठे प्राकृतमां द्विवचननो प्रयोग ज नथी, तेने बदले सर्वत्र बहुवचनथी काम चलावाय छे अने 'द्वित्व' अर्थनी विशेष स्पष्टता माटे बहुवचनांत नामनी साथे तेना विशेषणरूप विभक्त्यंत 'द्वि' शब्दनो व्यवहार थाय छे.

२ चतुर्थी अने षष्ठी ए बन्ने विभक्तिना प्रत्ययो एक सरखा होवाथी चतुर्थी विभक्ति, षष्ठी विभक्तिमां समाई जाय छे तो पण कोइ स्थळे अर्थविशेषमां नाममात्रनुं चतुर्थीनुं एकवचन संस्कृतनी जेवुं पण थतुं होवाथी ए बन्ने विभक्तिओने जूदी जूदी गणावेली छे एथी विभक्तिओनी संख्यामां प्राकृत अने संस्कृतनी समानता छे.

प्रत्ययो

नीचे जणावेला प्रत्ययो नरजातिनां अने नान्यतरजातिनां दरेक अकारांत नामोथी योजी शकाय छे.

प्राकृत भाषाना प्रत्ययो

विभक्ति.	एकवचन.	बहुवचन.
पढमा	०	०.
बीआ	म्	०.
तइआ	ण	हि, हिं, हिँ.
चउत्थी } छट्ठी }	स्स, ०	ण.
पंचमी	त्तो, ओ, उ, हि, हिंतो, ०	त्तो, ओ, उ, हि, हिंतो, सुंतो.
सत्तमी	मि, म्मि, ०	सु.
संबोहण (संबोधन)	०	०.

शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशमां प्रत्ययोनी विशेषता आ प्रमाणे छे:

शौरसेनी

पंचमी	दो, दु.	

मागधी

पढमा	०	
चउत्थी } छट्ठी }	ह	हँ.

पैशाची

पंचमी	तो, तु.	

अपभ्रंश

पढमा	उ, ०	०.
बीआ	उ, ०	०.
तइआ	ण, मृ	हिं.
चउत्थी } छट्ठी }	सु, स्सु, हो, ०	हं, ०.
पंचमी	हु, हे	हुं.
सत्तमी	०	हिं.
संबोहण	उ, ०	हो, ०.

प्राकृत प्रत्ययोने लगता नियमो

ज्यां ज्यां प्राकृत प्रत्ययोमां ० छे त्यां आ प्रमाणे समजवानुं छेः

पढमा—पुंलिंगी प्रत्येक अकारांत नामनुं प्रथमानुं एकवचन ओकारांत थाय छे. अने बहुवचन आकारांत थाय छे.

बीआ—पुंलिंगी अकारांत नामनुं द्वितीयानुं बहुवचन आकारांत अने एकारांत थाय छे.

चउत्थी—मात्र तादर्थ्यने सूचववा माटे अकारांत नामनुं चोथीनुं एकवचन संस्कृतनी जेवुं पण थाय छे. मात्र एक 'वध' शब्दथी तादर्थ्य अर्थमां संस्कृतना 'आय' प्रत्ययनी जेवो वधारानो 'आइ' प्रत्यय पण लागे छे. आर्षप्राकृतमां तो केटलेक स्थळे आ 'आइ' प्रत्ययने बदले 'आए' प्रत्यय पण वपराय छे अने ते हरकोइ शब्दने लागी शके छे.

पंचमी—अकारांत नामनुं पंचमीनुं एकवचन आकारांत पण थाय छे.

सत्तमी—अकारांत नामनुं सप्तमीनुं एकवचन एकारांत पण थाय छे.

संबोहण—पुंलिंगी अकारांत नामनुं संबोधननुं एकवचन आकारांत अने ओकारांत थाय छे तथा संबोधनमां विभक्ति विनानुं ए अकारांत नाम पण वपराय छे अने संबोधननां बहुवचननां रूपो प्रथमा (पढमा) नी जेवां थाय छे.

प्रत्ययो लागतां नामना मूळ अंगमां थता फेरफारो

तइया—तृतीया विभक्तिना प्रत्ययो पर रहेतां अकारांत नामना अन्त्य ' अ ' नो ' ए ' थाय छे.

पंचमी—पंचमीना एकवचननी पूर्वना अकारांत नामना अन्त्य ' अ ' नो ' आ ' थाय छे अने बहुवचनना स्वरादि प्रत्ययो पर रहेतां पण अंत्य ' अ ' नो ' आ ' थाय छे.

पंचमीना बहुवचनना ' म ' अने ' ह ' थी शरू थता प्रत्ययो पर रहेतां अकारांत नामना अन्त्य ' अ ' नो ' आ ' अने ' ए ' थाय छे.

तइया, छट्ठी, सत्तमी — तृतीयाना एकवचनना ' ण ' उपर अने षष्ठीना तथा सप्तमीना बहुवचन उपर अनुस्वार विकल्पे थाय छे.

छट्ठी—छट्ठीना बहुवचननो प्रत्यय पर रहेतां पूर्वना नामनो कोइ पण अन्त्य स्वर दीर्घ थाय छे.

सत्तमी—सप्तमीना एकवचननो ' सि ' प्रत्यय लागतां मूळ अंगना छेवटना स्वर उपर अनुस्वार थाय छे. आ ' सि ' प्रत्ययवाळुं रूप विशेषे करीने [1]आर्षप्राकृतमां वपरायुं छे.

---

१ " एयावंती सव्वावंती लोगंसि "—आ० प्र० श्रु० प्र० अ० उ० १, " लोगंसि परमदंसी " आ० प्र० श्रु० तृ० अ० उ० २.

सप्तमीना बहुवचनमनो प्रत्यय पर रहेनां अकारांत नामना अन्त्य 'अ' नो 'ए' थाय छे.

शौरसेनी—प्रत्ययने लगता नियमो

पंचमी—प्राकृतमां पंचमीना एकवचनना प्रत्ययो लागतां मूळ अंगनो जे फेरफार जणाव्यो छे ते शौरसेनीमां पण लागु थाय छे. बाकी बधां शौरसेनीनां रूपाख्यानो प्राकृतनी प्रमाणे छे.

मागधी—प्रत्ययने लगता नियमो

पढमा—ज्यां शून्य छे त्यां मागधीमां पुंलिंगी अकारांत नामनुं प्रथमानुं अने संबोधननुं एकवचन 'एकारांत' थाय छे. मागधीनुं आ एकारांत रूप आर्षप्राकृतमां पण वपराएलुं छे अने आ एक ज रूपनी वपराशने लीधे ए आर्षप्राकृतने पण 'अर्धमागधी' तरीके जणाववामां आवेलुं छे.[1]

चउत्थी } छट्ठी } मागधीमां चोथी अने छट्ठी विभक्तिमां अकारांत के आकारांत नामथी एकवचनमां 'ह' अने बहुवचनमां 'हँ' प्रत्यय विकल्पे लागे छे अने ते बन्ने प्रत्ययो लागतां पूर्वना स्वरनो दीर्घ थाय छे. बाकीनां बधां मागधी रूपो शौरसेनी प्रमाणे समजी लेवानां छे. उपर जणावेलो बहुवचनने 'हँ' प्रत्यय प्राकृतमां पण वापरी शकाय छे.

पैशाची—प्रत्ययने लगता नियमो

पंचमी—शौरसेनीमां पंचमीना एकवचनमां जे फेरफार जणाव्यो छे ते पैशाचीमां पण समजवानो छे. बाकी बधां पैशाचीनां

× × × × ×

रूपाख्यानो शौरसेनी प्रमाणे समजवानां छे.

---

१ जूओ हे० प्रा० व्या० अ० ८, पा० ४, सू० २८७.

अपभ्रंश—प्रत्ययने लगता नियमो

पढमा }
बीआ } ज्यां शून्य छे त्यां अपभ्रंशमां प्रथमा अने द्वितीया विभक्तिमां (एकवचन अने बहुवचनमां) अकारांत नाम आकारांत थइने वपराय छे अने एमने एम पण वपराय छे. तथा प्रथमाना एकवचनमां पुंलिंगी अकारांत नाम प्राकृतनी पेठे ओकारांत थइने पण वपराय छे.

चउत्थी }
छट्ठी } ज्यां शून्य छे त्यां मूळ अंग जेमनुं तेम वपराय छे अने दीर्घांत थइने पण वपराय छे.

सत्तमी—ज्यां शून्य छे त्यां मूळ अंग इकारांत अने एकारांत थइने वपराय छे.

संबोहण—ज्यां शून्य छे त्यां संबोधननां बधां रूपाख्यानो प्रथमा विभक्ति जेवां समजवानां छे.

अपभ्रंश-प्रत्यय लागतां अंगमां थता फेरफारो

तइया—तृतीया विभक्तिना प्राकृत प्रत्ययो लागतां मूळ अंगमां के प्रत्ययोमां जे फेरफार थाय छे ते ज फेरफार अपभ्रंशना ए प्रत्ययो लागतां पण समजवानो छे अने ए उपरांत तृतीयाना बहुवचननो प्रत्यय लागतां मूळ अंग आकारांत थाय छे अने एमनुं एम पण वपराय छे.

चउत्थी }
पंचमी }
छट्ठी }
सत्तमी } चोथी, पांचमी अने छट्ठी विभक्तिना एकवचनना अने बहुवचनना प्रत्ययो लागतां मूळ अंगना अंत्यस्वरनो दीर्घ विकल्पे थाय छे तथा सातमीना बहुवचननो ज प्रत्यय लागतां पण मूळ अंगमां पूर्वोक्त फेरफार थाय छे.

संबोहण—अपभ्रंशनुं (एकवचन अने बहुवचननुं) संबोधनी रूप प्रथमानी पेठे समजवानुं छे अने बहुवचननो ' हो ' प्रत्यय लागतां मूळ अंगना अंत्य स्वरनो दीर्घ विकल्पे थाय छे.

पुंलिंग अने नपुंसकलिंग

अकारांत शब्दनां प्राकृत रूपाख्यानो (पुंलिंग–नरजाति)

वीर[1]

	एकव०	बहुव०
प०	वीरो, (वीरे)[2]	वीरा.
बी०	वीरं	वीरे, वीरा.
त०	वीरेण. वीरेणं	वीरेहि, वीरेहिं, वीरेहिँ.
च०छ०	वीरस्स	वीराण, वीराणं, (वीराहँ.)
ता० च०	वीराय. वीरस्स	,, ,,

१ 'वीर'नां पालिरूपो

१	वीरो	वीरा (वीरसे).
२	वीरं	वीरे.
३	वीरेन	वीरेहि, वीरेभि.
४	वीराय, वीरस्स	वीरानं.
५	वीरा. वीरस्मा, वीरम्हा	वीरेहि, वीरेभि.
६	वीरस्स	वीरानं.
७	वीरे, वीरस्मिं, वीरम्हि	वीरेसु.
८ सं०	वीर, वीरा	वीरा.

जुओ पालिप्र० नामकल्प अकारांत 'बुद्ध' शब्द अने ते रूपो उपरनां टिप्पणो.

२ ( ) आ निशानमां आपेलां रूपो बाहुलिक छे.

३ वीर+म – वीरं (जुओ प्रकरण ८, म – अनुस्वार १२)

पं०	वीरत्तो,	वीरत्तो,
	वीराओ, वीराउ,	वीराओ, वीराउ,
	वीराहि,	वीराहि, वीरेहि,
	वीराहिंतो,	वीराहिंतो, वीरेहिंतो,
	वीरा	वीरासुंतो, वीरेसुंतो.
स०	वीरंसि, वीरम्मि.[१]	वीरेसु, वीरेसुं.
	वीरे	
संबो०	वीरो, (वीरे)	वीरा.
	वीर, वीरा	

'वह' (वध) शब्दनां रूपो 'वीर' शब्दनी जेवां ज समजी लेवां. जे विशेष छे ते आ प्रमाणे:

ता० च० वहाय, वहाइ, वहस्स (एकवचन)

आर्षप्राकृतमां जे शब्दने ता० चतुर्थीनो सूचक 'आए' प्रत्यय लागेलो छे तेनुं रूप आ प्रमाणे छे:

ता० च० मोक्ख—मोक्खाए,[३] मोक्खाय, मोक्खस्स (एकवचन)

,, हिअय—हिअयाए,[४] हिअयाय, हिअयस्स ,,

१ जुओ प्रकरण २. दीर्घस्वर=ह्रस्वस्वर-१.

२ जुओ प्रकरण ८, म=अनुस्वार-१२. (टिप्पण)

३ जुओ सूत्रकृतांगसूत्र प्र० श्रु० तृ० अ० तृ० उ० गा० २१— "उवसग्गे नियामित्ता आमोक्खाए परिव्वएज्जा" इत्यादि.

४ जुओ आचारांगसूत्र प्र० श्रु० प्र० अ० उ० ६— "से बेमि: अप्पेगे अजिणाए वहंति, मंसाए * सोणियाए * एवं हिययाए" इत्यादि.

ता० च० मंस—मंसाए, मंसाय, मंसस्स (एकवचन)
,, अजिण--अजिणाए, अजिणाय, अजिणस्स ,,

ए प्रमाणे अरिहंत (अर्हत्), धम्म (धर्म), गंधव्व (गन्धर्व), मणुस्स (मनुष्य), पिसाअ (पिशाच), नायपुत्त (ज्ञातपुत्र), सुगत, गोण, गउअ, गाअ (गो), भिसअ (भिषक्), सरअ (शरत्), मेघ, नर, सुर, असुर, उरग (—य), नाग (—य), जक्ख (यक्ष), किंनर वगेरे बधा अकारांत पुंलिंग शब्दोनां रूपो समजी लेवां.

वीर (शौरसेनीरूपो[1])

पं० ए० वीरादो, वीरादु

बाकी बधां प्राकृत प्रमाणे.

वील[2] (वीर) (मागधीरूपो)

प० ए० वीले

छ० वीलाह, वीलस्स वीलाहँ, वीलाण, वीलाणं.

बाकी बधां शौरसेनी प्रमाणे.

वीर (पैशाचीरूपो[3])

पं० ए० वीरातो, वीरातु

बाकी बधां शौरसेनी प्रमाणे.

---

१ शौरसेनी, मागधी वगेरेनां जे रूपो प्राकृतथी जुदां थाय छे ते ज अहीं जणावेलां छे.

२ जूओ पृ० २६ र–ल.

३ पैशाचीमां 'ण' प्रत्ययनो उपयोग करती वखते (पृ० २३) 'ण–न' नियमने जूओ. ३ वीर+ण–वीरेन.

६ वीर+ण वीरान.

वीर (अपभ्रंशरूपो)

	एकव०	बहुव०
१	वीरु, वीरो, वीर, वीरा	वीर, वीरा.
२	वीरु, वीर, वीरा.	वीर, वीरा.
३	वीरेण, वीरेणं, वीरें,	वीरेहिं, वीराहिं, वीरहिं.
४-६	वीरस्सु, वीरासु, वीरसु वीराहो, वीरहो, वीर, वीरा	वीराहं, वीरहं, वीर, वीरा.
५	वीराहु, वीरहु, वीराहे, वीरहे	वीराहुं, वीरहुं.
७	वीरि, वीरे	वीराहिं, वीरहिं.
८ (सं०)	वीरु ! वीरो ! वीर ! वीरा !	वीराहो ! वीरहो ! वीर ! वीरा !

'वीर' शब्दनां उपर जणावेलां बधी जातनां रूपो प्रमाणे प्रत्येक पुंलिंगी अकारांत शब्दनां शौरसेनी रूपो, मागधीरूपो, पैशाची रूपो अने अपभ्रंश रूपो समजी लेवानां छे.

अकारांत शब्दनां प्राकृत रूपाख्यानो (नपुंसकलिंग-नान्यतरजाति)

अकारांत नपुंसक नामोनां बधी जातनां रूपाख्यानो बनाववानी मवळी प्रक्रिया उपर प्रमाणे छे. जे कांइ खास भेद छे ते आ प्रमाणे छे:

१ वीर+उ=वीरु-जुओ स्वरलोप-६ पृ० १६.

प्रत्ययो

प०	म्	णि, इँ, इं.
बी०	,,	,, ,, ,,
सं०	०	,, ,, ,,

१ अकारांत नान्यतरजातिना नामने लागता उपर जणावेला बधा प्रत्ययो कोई पण नान्यतरजातिना नामने लगाडवाना छे.

२ शौरसेनी[1], मागधी अने पैशाचीमां पण ए ज प्रत्ययोनो उपयोग थाय छे.

३ 'णि, इँ, इं' प्रत्ययोनी पूर्वना अंगनो अन्त्य स्वर दीर्घ थाय छे.

४ संबोधनमां—ज्यां शून्य छे त्यां—एकवचनमां नान्यतर नामोनुं मूळ रूप ज वपराय छे अने बहुवचन. प्रथमानी जेवुं थाय छे.

कुल

	एकव०	बहुव०		
प०	कुलं	कुलाणि.	कुलाइँ.	कुलाइं.
बी०	,,	,,	,,	,,
सं०	कुल !	,,	,,	,,

१ शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशनां रूपाख्यानो करती वखते ते ते भाषाना स्वरविकार अने व्यंजनविकारना नियमो तरफ लक्ष्य राखवुं जोईए.

२ नपुंसकलिंगी अकारांतनां पालिरूपो

कुल

प०	कुलं	कुला, कुलानि.
बी०	कुलं	कुले, कुलानि.

शेष 'वीर' नां पालिरूपोनी जेवां—जुओ पालिप्र० पृ० ११०. क्लीवलिंग 'चित्त' शब्द.

३ कुल+म=कुलं—जुओ म=अनुस्वार—१० पृ० ९१.

बाकी बधां रूपो ते ते भाषा प्रमाणे ' वीर ' नी जेवां थाय छे.

ए रीते गुण, देव, सोमव (सोमपा), गोव (गोपा), कररुह, [1]सिर (शिरस्), नभ, नह (नभस्), दाम (दामन्), सेय (श्रेयस्), वय (वचस्–वयस्), सुमण (सुमनस), सम्म (शर्मन्), चम्म (चर्मन्) वगेरे शब्दोनां रूपो जाणी लेवानां छे.

अपभ्रंश

नान्यतरजातिनां रूपाख्यानोनी अपभ्रंशमां जे खास विशेषता छे ते आ प्रमाणे:

१ प्रथमा अने द्वितीयाना बहुवचनमां प्राकृतनी पेठे त्रण प्रत्ययो न लागतां मात्र एक ' इं ' प्रत्यय लागे छे अने एनी पूर्वनो स्वर विकल्पे दीर्घ थाय छे.

२ जे नान्यतर शब्दने छेडे ' क ' प्रत्यय लागेलो होय तेने प्रथमा अने द्वितीयाना एकवचनमां ' उं ' प्रत्यय लागे छे.

---

१ जे शब्दो ' अस् ' अने ' अन् ' छेडावाळा छे ते प्राकृतमां नरजातिना गणाय छे (पृ० १२३–नामनी जातिओ) पण पालिमां एवा ' अस् ' छेडावाळा शब्दोने (मनोगणने) नरजातिना अने नान्यतरजातिना गणवामां आव्या छे: पालिप्र० पृ० १३३–१३४ अने तेनुं टिप्पण.

प्राकृतमां अने पालिमां ए ' अस् ' अने ' अन् ' छेडावाळा शब्दोना बधां रूपो ' वीर ' अने ' कुल ' नां जेवां थाय छे तो पण आर्षप्राकृतमां अने पालिमां ए शब्दोनां केटलांक रूपो 'वीर' अने ' कुल ' थी जुदां थाय छे. जेमके:

मण. मन (मनस्)

पालि	आर्षप्रा०	संस्कृत
तृ० ५० ए० मनसा	तृ० ए० मणसा	(मनसा)
	पं० ए० मणसो	(मनसः)

रूपाख्यानो

कुल

१	[1] कुलु, कुल, कुला	कुलाइं, कुलइं.
२	” ” ”	” ”

पालि	आर्षप्रा०	संस्कृत
च० छ० ए० मनसो	च० छ० ए० मनसो	(मनसः)
स० ए० मनसि	स० ए० मणसि	(मनसि)

कम्म (कर्मन्)

पालि	आर्षप्रा०	संस्कृत
तृ० ए० कम्मना, कम्मुना	तृ० ए० कम्मणा, कम्मुणा	(कर्मणा)
च० छ० ए० कम्मुनो	च० छ० ए० कम्मुणो	(कर्मणः)
पं० ए० कम्मना, कम्मुना	पं० ए० कम्मणा, कम्मुणा	(कर्मणः)
स० ए० कम्मनि	स० ए० कम्मणि	(कर्मणि)

उदाहरण—“ सिरसा, मणसा मत्थएण वंदामि ”—मुनिवंदनसूत्र.

“ मणसि काउं गुलियं म्वाइ ” प्राकृतकथासंग्रह—उदायननी कथा पृ० १२, पं० २२.

“ कम्मुणा बंभणो होइ कम्मुणा होइ ग्वत्तिओ ”—
उत्तराध्ययन अ० २५, गा० ३३.

आ आर्ष रूपोनी सिद्धिने माटे आ० हेमचंद्रे “ शेषं संस्कृतवत सिद्धम् ” (८-४-४४८) ए सूत्रने रचेलुं छे.

‘स्थामन्’ वगेरे शब्दनां पालिरूपोनी विशेषता माटे जुओ पालि प्र० पृ० १३५, अं० ९१-९२.

आर्षप्राकृतमां पण केटलेक स्थळे ‘ स्थामन ’ वगेरे शब्दनां रूपो ए पालिरूपोनी जेवां वपराएलां छे.

१ जुओ अपभ्रंश-प्रत्ययने लगता नियमो—पहेला बीजा—पृ० २२९.

कुलअ (कुलक)

१	[1]कुलउं	कुलआइं, कुलअइं.
२	,,	,, ,,

बाकी बधां रूपो 'वीर' नां अपभ्रंश रूपोनी पेठे समजी लेवानां छे.

अकारांत-सर्वादि-शब्द

नीचेना शब्दोने 'सर्वादि' तरीके गणवामां आवे छे:
सव्व-अप० साहु, सव्व (सर्व), वीस (विश्व), उह, उभ (उभ), अवह, [2]उवह, उभय (उभय), अण्ण, अन्न (अन्य), अण्ण (न्न) यर (अन्यतर), इअर (इतर), कयर (कतर), कइम (कतम), णेम, नेम (नेम), सम, सिम, [3]पुरिम, पुव्व (पूर्व) अवर (अपर), दाहिण, दक्खिण (दाक्षिण), उत्तर, अवर, अहर (अधर), स,सुव (स्व), अंतर, [4]तं (तद्), ज (यद्) [5]अमु (अदस्), इम (इदम्), एत

१ कुलअ + उं = कुलउं-जूओ स्वरलोप-६ पृ० ९६.

२ 'उवह' रूप आ० हेमचंद्रने संमत नथी-हे० प्रा० व्या० ८-२-१३८ पृ० ६५. आर्षप्राकृतमां 'उभयोकालं' प्रयोगमां 'उभय' ने बदले 'उभयो' के 'उभओ' ("उभओकालं पि अजिअसंतिथयं"- अजितशांतिस्तवन गा० ३९) रूप पण वपराएलुं छे.

३ जूओ पृ० ८७ शब्द-सर्वथा विकार.

४ जेम संस्कृतमां 'तद्' नी जेवुं 'त्यद्' पण एक सर्वनाम छे तेम ए सर्वनाम पालिमां पण छे, एनां रूपो 'त' नी जेवां थाय छे:

त्यो त्ये

त्यं त्ये पालिप्र० पृ० १४३ नुं छेल्लुं टिप्पण. प्राकृतमां तो आ 'त्य' सर्वनाम मळतुं नथी.

५ आ शब्दनां रूपो उकारांत शब्दोना प्रसंगे आवनारां छे.

(एतद्), इक्क, एक्क, एग, एअ (एक), दु (द्वि) तुम्ह (युष्मद्), अम्ह (अस्मद्) कि, अप० काइं, कवण (किम्), भवन्त (भवतु).

१ सर्वादि शब्दो विशेषणरूप होवाथी त्रणे लिंगे वापरी शकाय छे.

२ 'अमु' अने 'दु' शब्द सिवाय ए बधा सर्वादि शब्दो अकारांत छे, तेथी तेनां बधी जातनां बधां रूपाख्यानो पुंलिंगमां 'वीर' अने नपुंसकमां 'कुल' नी जेवां समजवानां छे. ज्यां जे विशेषता छे ते आ प्रमाणे छे:

३ प्रथमाना बहुवचनमां सर्वादि शब्दोना अन्त्य 'अ' नो 'ए' थाय छे अने ए एक ज रूप प्रथमाना बहुवचनमां वपराय छे.

४ सर्वादि शब्दोने छट्ठीना बहुवचनमां 'एसिं' प्रत्यय विकल्पे लागे छे.

५ सर्वादि शब्दोने सप्तमीना एकवचनमां 'त्थ' 'स्सिं' 'हिं' अने 'म्मि' प्रत्यय लागे छे.

रूपाख्यानो (नरजाति)

सव्व[3] (प्राकृत)

	एकव०	बहुव०
प०	सव्वो (सव्वे)	सव्वे.
बी०	सव्वं	सव्वे. सव्वा.

---

१ संख्यावाचक शब्दोना प्रकरणमां 'उभ' अने 'दु' शब्दनां रूपो आवशे.

२ जुओ पृ० १२१ भवंतो ।

३ 'सव्व' शब्दनां पालि रूपो माटे जुओ पृ० १३० उपरनुं पेलुं टिप्पण. खास भेद आ छे:

प० तथा सं० बहुव० सव्वे.

छ० ,, सव्वेसं, सव्वेसानं.

तथा पंचमीना एकवचनमां 'वीरा' नी पेठे 'सव्वा' अने सप्तमीना एकवचनमां 'वीरे' नी पेठे 'सव्वे' रूप थतां नथी.

त०—सव्वेण, सव्वेणं	सव्वेहि, सव्वेहिं, सव्वेहिँ.
च० छ०—सव्वस्स	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाणं, (सव्वाहँ).
पं०—सव्वत्तो,	सव्वत्तो,
सव्वाउ, सव्वाओ,	सव्वाउ, सव्वाओ,
सव्वाहि,	सव्वाहि, सव्वेहि,
सव्वाहिंतो,	सव्वाहिंतो, सव्वेहिंतो
सव्वा	सव्वासुंतो, सव्वेसुंतो.
स०—सव्वत्थ, सव्वस्सिं, सव्वहिं, सव्वम्मि	सव्वेसु, सव्वेसुं.

सव्व (शौरसेनी)

शौरसेनीमां 'सव्व' शब्दनां बधां रूपो 'सव्व' नां प्राकृत रूपो जेवां छे. पंचमीना एकवचनमां विशेषता छे ते 'वीर' ना शौरसेनीरूप प्रमाणे समजवी.

शव्व (मागधी)

प्रथमाना एकवचनमां अने छट्ठी विभक्तिमां 'शव्व' नां मागधी रूपो 'वीर'[1] 'नां मागधी रूपो जेवां जाणवां अने बाकी बधां 'सव्व' नां शौरसेनी रूपो प्रमाणे समजवां.

---

१ जुओ पृ० १३२. २ जुओ पृ० १३२.

सव्व (पैशाची)

पंचमीनुं एकवचन '[1]वीर' ना पैशाचीरूप प्रमाणे अने बाकी बधां 'सव्व' नां शौरसेनी रूपो प्रमाणे.

सव्व, [2]साह (अपभ्रंश)

	एकव०	बहुव०
१	सव्वु, सव्वो. सव्व, सव्वा	सव्वे, सव्व. सव्वा.
२	सव्वु. सव्व. सव्वा	सव्व. सव्वा.
३	सव्वेण, सव्वेणं. सव्वें	सव्वेहिं, सव्वाहिं. सव्वहिं.
४–६	सव्वस्सु. सव्वासु. सव्वसु. सव्वहो. सव्वाहो. सव्व, सव्वा	सव्वेसिं. सव्वहं. सव्वाहं. सव्व. सव्वा.
५	सव्वहां. सव्वाहां	सव्वहु. सव्वाहु.
७	सव्वहिं. सव्वाहिं	सव्वहिं. सव्वाहिं.

बाकी बीजा बधा सर्वादिओनां रूपो पण ए 'सव्व' (प्राकृत, शौरसेनी) शव्व (मागधी) अने सव्व (अपभ्रंश) नी पेठे करी लेवानां छे. तो पण केटलाक प्रसिद्ध प्रसिद्ध सर्वादिनां रूपो नीचे प्रमाणे आपीए छीए:

---

१ जूओ पृ० १३०.

२ अपभ्रंशमां 'सव्व' ने स्थाने 'साह' शब्द पण वपराय छे अने एनां बधां रूपो 'सव्व' नां अपभ्रंश रूपोनी पेठे थाय छे.

त, ण (तद्)

१	स, सो (मा० शे)	ते, णे.
२	तं, णं	ते, ता, णे, णा.
३	तेण, तेणं, तिणा	तेहि, तेहिं, तेहिँ.[१]
	णेण, णेणं	णेहि, णेहिं, णेहिँ.[१]
	(पै० नेन)	
४—६	तस्स, तास (मा० ताह)	तास, तेसिं, ताण, ताणं,
	णस्स	णेसिं, णाण, णाणं,
	से[२]	सिं (मा० ताहँ).
५	तो, तम्हा, तत्तो.	तत्तो,
	ताओ, ताउ	ताओ, ताउ,
	ताहि,	ताहि, तेहि,
	ताहिंतो	ताहिंतो, तेहिंतो,
	ता	तासुंतो, तेसुंतो.
	(शौ० मा० तादो, तादु)	
	(पै० तातो, तातु)	

---

१ केटलाक प्रयोगोने अनुसारे 'त' ने बदले 'ण' पण वपराय छे: हे० प्रा० व्या० ८-३-७०-पृ० ९५.

'त' नां पालिरूपो माटे जुओ पालिप्र० पृ० १४१-१४२ त (तद्) शब्द:

प०	सो	ते.
बी०	तं, नं	ते, ने.
त०	तेन, नेन	तेहि, तेभि,
		नेहि, नेभि इत्यादि.

२ आ 'तास' ने बदले 'से' रूप पण कोइ वैयाकरण वापरे छे: हे० प्रा० व्या० ८-३-८१-पृ० ९७.

	णत्तो,	णत्तो,
	णाओ, णाउ,	णाओ, णाउ,
	णाहि,	णाहि, णेहि,
	णाहिंतो,	णाहिंतो, णेहिंतो,
	णा	णासुंतो, णेसुंतो.
७	ताहे, ताला, तइआ	तेसु, तेसुं,
	तम्मि, तस्सिं, तहिं, तत्थ,	
	णम्मि, णस्सिं, णहिं, णत्थ	णेसु, णेसुं.

' त ' शब्दनां प्राकृतरूपो साथे शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीनां पण विशेष रूपो जणावेलां छे.

' सव्व ' नां अपभ्रंशरूपोनी पेठे ' त ' शब्दनां अपभ्रंशरूपो पण समजी लेवां. जे फेर छे ते आ प्रमाणे:

प० ए०	सु, सो, स, सा, त्रं.[1]
बी० ए०	सु, स, सा, त्रं.

जं (यत्)
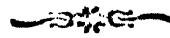
प०	जो (मा० जे)	जे.
बी०	जं	जा, जे.
त०	जेण, जेणं, जिणा	जेहि, जेहिं, जेहिँ.
च० छ०	जस्स, जास (मा० जाह)	जेसिं, जाण, जाणं. (मा० जाहँ).

---

१ आ त्रणे रूपो ' तदा ' ना अर्थमां ज वपराय छे.

२ आ ' त्रं ' रूप त्रणे लिंगमां काम आवे छे.

३ ' ज ' नां पालिरूपो माटे जुओ पालिप्र० पृ० १४१ य (यद्) शब्द.

प०	जम्हा, जत्तो,	जत्तो,
	जाओ जाउ	जाओ, जाउ,
	जाहि, जाहिंतो, जा	जाहि, जेहि,
	(शौ० मा० जादो, जादु)	जाहिंतो. जेहिंतो,
	(पै० जातो. जातु)	जासुंतो. जेसुंतो.
स०	जम्मि, जस्सि, जहिं, जत्थ	
	जाहे जाला, जइआ.	जेसु. जेसुं.

'ज' नां अपभ्रंशरूपो 'सव्व' नां अपभ्रंशरूपोनी पेठे करी लेवां. विशेषता आ प्रमाणे.

प० ए०—जु. जो. ज, जा, ध्रुं[२]

बी० ए०—,, ,, ,, ,,

(क) किम्[३]

प०—को (मा० के)	के.
बी०—कं	के, का.
त०—केण. केणं, किणा	केहि, केहिं, केहिँ.
च० छ०—कस्स, कास	काम, केसिं, काण, काणं.
(मा० काह)	(मा० काहँ)

---

१ आ त्रण रूपो 'यदा' ना अर्थमां ज वपराय छे.

२ आ रूप त्रणे लिंगमां सरखुं छे.

३ जेवां 'सव्व' नां पालिरूपो छे तेवां 'क' नां पण छे. विशेषता एटली छे के, च० छ० ए० किस्स. स० ए० किम्मि, किम्हि—आ रूपो वधारानां थाय छे—पालिप्र० पृ० १८१.

पं०—कम्हा, किणो, कीस, कत्तो,	कत्तो,
काओ, काउ,	काओ, काउ,
काहि, काहिंतो, का	काहि, केहि,
(शौ० मा० कादो, कादु)	काहिंतो, केहिंतो,
(पै० कातो, कातु)	कासुंतो, केसुंतो.
स० कम्मि, कस्सिं, कहिं, कत्थ	
[1]काहे, काला, कइआ	केसु, केसुं.

क, कवण, काइं (किम्) अपभ्रंश

अपभ्रंश रूपाख्यानने प्रसंगे 'क' ने स्थाने 'कवण' अने 'काइं' शब्द पण वपराय छे.

'क' नां अपभ्रंशरूपो अने 'सव्व' नां अपभ्रंशरूपो बन्ने सरखां छे. जे विशेषता छे ते आ प्रमाणे:

प० ए० कु, को, क, का
कवणु, कवणो, कवण, कवणा

बी० ए० कु, क, का
कवणु, कवण, कवणा

पं० ए० किहे कहां, काहां
कवणिहे, कवणहां, कवणाहां

१. आ त्रण रूपो 'कदा' ना अर्थमां ज वपराय छे.

२ 'काइ' (काइं) नां रूपाख्यानो इकारांत नामना अपभ्रंश रूपोनी जेवां जाणवानां छे.

[1]इम (इदम्)

प०—अयं, इमो (मा० इमे)	इमे
बी०—इमं, इणं, णं	इमे, इमा, णे, णा.
त०—इमेण, इमेणं, इमिणा णेण, णेणं (पै० नेन)	इमेहि, इमेहिं, इमेहिँ. (एहि, एहिं, एहिँ) णेहि, णेहिं, णेहिँ.
च० छ०—इमस्स, अस्स, से (मा० इमाह)	सिं, इमेसिं, इमाण, इमाणं. (मा० इमाहँ)
पं०— इमत्तो, इमाउ, इमाओ इमाहि, इमाहिंतो इमा (शौ० मा० इमादो, इमादु) (पै० इमातो, इमातु)	इमत्तो, इमाउ, इमाओ, इमाहि, इमेहि. इमाहिंतो. इमेहिंतो इमासुंतो, इमेसुंतो.
स०— इमस्सि, इमम्मि, अस्सि, इह	इमेसु, इमेसुं, (एसु. एसुं).

---

१ 'इम' नां पालिरूपो 'सव्व' नां पालिरूपो जेवां छे. 'सव्व' नां रूपो करतां जे विशेष छे ते आ छे:

प०—अयं	
त०—अनेन, इमिना	एहि, एभि, इमेहि, इमेभि.
च० छ०—अस्स, इमस्स	एसं, एसानं, इमेसं, इमेसानं,
पं०—अस्मा, अम्हा इमस्मा, इमम्हा	एहि. एभि. इमेहि. इमेभि.
स०—अस्मिं, अम्हि इमस्मिं, इमम्हि	एसु, इमेसु

—पालिप्र० पृ० १४४-१४५ इम (इदम) शब्द.

आय (इदम्) अपभ्रंश

'सव्व' नां अपभ्रंश रूपोनी पेठे 'आय' नां अपभ्रंश रूपो समजी लेवां.

प०—आयु, आयो   आये, आय, आया.
आय, आया

बी०—आयु, आय, आया   आय, आया.
आयेण, आयेणं,   आयेहिं, आयहिं, आयाहिँ
आयें   वगेरे.

---

[1]एअ (एतद्)

प०—एस, एसो,   एए (शौ० मा० एदे)
इणं, इणमो
(मा० एशे, एश[2])   (पै० एते)

बी०—एअं   एए, एआ.
(शौ० मा० एदं)   (शौ० मा० एदे, एदा)
(पै० एतं)   (पै० एते, एता)

त०—एएणं, एएणं, एइणा   एएहि, एएहिं, एएहिँ.

---

१ आ 'एअ' शब्दने शौरसेनी अने मागधीमां रूपाख्यानने प्रसंगे 'एद' शब्द समजवानो छे अने पैशाचीमां 'एत' शब्द समजवानो छे.

'एत' नां पालिरूपो 'सव्व' नां पालिरूपोनी जेवां छे:

प० एसो   एते.

बी० एतं   एते वगेरे.

जेम संस्कृतमां अन्वादेशने सूचववा 'एत' ने बदले 'एन' रूप वपराय छे तेम पालिमां पण छे—जूओ पालिप्र० पृ० १४४ एत (एतद्) शब्द अने ए उपरनुं टिप्पण.

२ एस=एश—जूओ स–श. पृ० २७

(शौ० मा० एदेण, एदेणं, (शौ० मा० एदेहि, एदेहिं,
एदिणा) एदेहिँ)
(पै० एतेन, एतिना) (पै० एतेहि, एतेहिं, एतेहिँ)
च० छ०--से, एअस्स सिं, एएसिं, एआण, एआणं.
(शौ० एदस्स) (शौ० एदेसिं, एदाण, एदाणं)
(मा० शे, एदाह) (मा० शिं, एदाहँ,
(पै० एतस्स) एदाण, एदाणं)
(पै० एतेसिं, एतान)
पं०--एत्तो, एत्ताहे, एअत्तो एअत्तो,
एआउ, एआओ, एआउ, एआओ,
एआहि, एआहिंतो, एआ एआहि, एएहि,
(शौ० मा० एदादु, एदादो) एआहिंतो, एएहिंतो,
(पै० एतातु, एतातो) एआसुंतो, एएसुंतो.
स०--एत्थ, अयम्मि, ईअम्मि एएसु, एएसुं.
एअम्मि, एअस्सिं

एद, एअ (एतत्) अपभ्रंश

'सव्व' नां अपभ्रंश रूपोनी पेठे 'एद' के 'एअ' नां अपभ्रंश रूपो करी लेवां. जे फेरफार छे ते आ प्रमाणेः

प०--एहो एइ
बी०--,, ,,

अकारांत–सर्वादि–शब्द (नान्यतर जाति)

सर्वादि शब्दनां बधी जातनां नपुंसकलिंगी रूपाख्यानो पुंलिंगी सर्वादि प्रमाणे छे. मात्र प्रथमा अने द्वितीयामां जे विशेष छे ते 'कुल' नी पेठे समजी लेवानो छे. जेमके;

सव्व (सर्व)

प०—	सव्वं	सव्वाणि, सव्वाइँ, सव्वाइं.
बी०—	,,	,, ,, ,,

बाकीनां, 'सव्व' नां प्राकृत, शौरसेनी, मागधी अने पैशाची रूपो प्रमाणे.

सव्व (अपभ्रंश).

प०—	सव्वु, सव्व, सव्वा	सव्वाइं, सव्वइं.
बी०—	,, ,, ,,	,, ,,

सव्वअ (सर्वक–अपभ्रंश)

प०—	सव्वउं,	सव्वआइं, सव्वअइं.
बी०—	,,	,, ,,

बाकीनां, 'सव्व' नां अपभ्रंश रूपो प्रमाणे.

त (तत्)

प०—	तं, णं	ताणि, ताइँ, ताइं.
		णाणि, णाइँ, णाइं.
		,, ,, ,,
बी०—	तं, णं	,, ,, ,,

बाकी बधां पुंलिंगी 'त' प्रमाणे.

---

१ जुओ पृ० १३४. २ जुओ पृ० १३८–१४०. ३ जुओ पृ० १४०. ४ जुओ पृ० १४१.

त (अपभ्रंश)

प०— [1]त्रं, तु, त, ता ताइं, तइं.

बी०— ,, ,, ,, ,, ,, ,,

तअ (तक–अपभ्रंश)

प०— त्रं, तउं तआइं, तअइं.

बी०— ,, ,, ,, ,,

बाकी बधां, ' [2]त ' नां अपभ्रंश रूपो प्रमाणे.

ज (यत्)

प०— जं जाणिं, जाइँ, जाइं.

बी०— जं जाणि, जाइँ, जाइं.

बाकीनां, पुंलिंगी ' [3]ज ' प्रमाणे.

ज (अपभ्रंश)

प०— [4]ध्रुं, जु, ज, जा जाइं, जइं.

बी०— ,, ,, ,, ,, ,, ,,

जअ

प०— ध्रुं, जउं जआइं, जअइं

बी०— ,, ,, ,, ,,

बाकीनां, ' [5]ज ' नां अपभ्रंश रूपो प्रमाणे.

१ जुओ पृ० १४२. २ जुओ पृ० १४२. ३ जुओ पृ० १४२–१४३. ४ जुओ पृ० १४३. ५ जुओ पृ० १४३.

किं

प०—	किं	काणि, काइँ, काइं.
बी०—	,,	,, ,, ,,

बाकीनां, पुंलिंगी '[1]क' नी पेठे

किं (अपभ्रंश)

प०—	किं, [2]काइं, कवणु, कवण, कवणा	काइं, कइं, कवणाइं, कवणइं, काईइं, काइइं, कीइं[3], किइं.
बी०—	किं, काइं, कवणु, कवण, कवणा	,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,

बाकी बधां, 'क' नां [4]अपभ्रंश रूपो प्रमाणे.

इम (इदम्)

प०—	इणं, इणमो, इदं	इमाणि, इमाइँ, इमाइं.
बी०—	,, ,, ,,	,, ,, ,,

शेष, पुंलिंगी '[5]इम' नी जेवां.

इम, इमअ (अपभ्रंश)

प०—	इमु	आयाइं, आयइं.
बी०—	,,	,, ,,

बाकीनां, 'इम' नां [6]अपभ्रंश रूपोनी पेठे.

---

१ जुओ पृ० १४३–१४४. २ जुओ पृ० १४४. ३ का + ईइं=कीइं–जुओ पृ० ९६ स्वरलोप. ४ जुओ पृ० १४४. ५ जुओ पृ० १४५. ६ जुओ पृ० १४६.

एअ (एतत्)

प०—	एस, एअं, इणं, इणमो	एआणि, एआइँ, एआइं.
बी०—	एअं	,, ,, ,,

शेष, पुंलिंगी ' एअ ' नी पेठे.

एद, एअ (अपभ्रंश)

प०—	एहु	एईइं, एइइं.
बी०—	,,	,, ,,

शेष ' एअ ' नां [1]अपभ्रंश रूपोनी पेठे.

' युष्मद् ' अने ' अस्मद् ' नां रूपो त्रणे लिंगमां एक सरखां थाय छे अने ए आ प्रमाणे छे.

[2]तुम्ह (युष्मद्)

प— एकव०—तं, तुं, तुवं, तुह, तुमं (त्वम्)

---

१ जुओ पृ० १४६. २ जुओ पृ० १४७.

३ **तुम्ह** (युष्मद्)-**पालिरूपो**

१	त्वं तुवं	तुम्हे (वो)
२	त्वं (तुम्हं) तुवं तवं तं	तुम्हे, तुम्हाकं (तुम्हं) (वो)
३–५	त्वया, तया (पं०—त्वम्हा) (त०—ते)	तुम्हेहि, तुम्हेभि (त०—वो)
४–६	तव, तुय्हं, तुम्हं (ते)	तुम्हाकं (वो)
७	त्वयि, तयि	तुम्हेसु

—जुओ पालिप्र० पृ० ११५१.

बहुव०—भे, [1]तुब्भे, तुज्झ, तुम्ह, तुय्हे, उय्हे (यूयम्)

दु– एकव०—तं, तुं, तुमं, तुवं, तुह, तुमे, तुए (त्वाम्)

बहुव०—वो, तुज्झ, तुब्भे, तुय्हे, उय्हे, भे (युष्मान्–वः)

त– एकव०—भे, दि, दे, ते, तइ, तए, तुमं, तुमइ, तुमए, तुमे, तुमाइ (त्वया)

बहुव०—भे, तुब्भेहिं, उज्झेहिं, उम्हेहिं, तुय्हेहिं, उय्हेहिं–(युष्माभिः)

पं– एकव०—तुय्ह, तुब्भ, तहिंतो, (त्वत्)

तइत्तो, तइओ, तइउ, तईहिंतो.

तुवत्तो, तुवाओ, तुवाउ, तुवाहि, तुवाहिंतो, तुवा.

तुमत्तो, तुमाओ, तुमाउ, तुमाहि, तुमाहिंतो, तुमा.

तुहत्तो, तुहाओ, तुहाउ, तुहाहि, तुहाहिंतो, तुहा.

तुब्भत्तो, तुब्भाओ, तुब्भाउ, तुब्भाहि, तुब्भाहिंतो, तुब्भा.

बहुव०—तुब्भत्तो, तुब्भाओ, तुब्भाउ, तुब्भाहि, तुब्भेहि, तुब्भाहिंतो, तुब्भेहिंतो, तुब्भासुंतो, तुब्भेसुंतो. (युष्मत्)

तुय्हत्तो, तुय्हाओ, तुय्हाउ, तुय्हाहि, तुय्हेहि, तुय्हाहिंतो, तुय्हेहिंतो, तुय्हासुंतो, तुय्हेसुंतो.

उय्हत्तो, उय्हाओ, उय्हाउ, उय्हाहि, उय्हेहि, उय्हाहिंतो, उय्हेहिंतो, उय्हासुंतो, उय्हेसुंतो.

उम्हत्तो, उम्हाओ, उम्हाउ, उम्हाहि, उम्हेहि, उम्हाहिंतो, उम्हेहिंतो, उम्हासुंतो, उम्हेसुंतो.

---

१ युष्मद्–शब्दनां रूपोमां आवेला 'ब्भ' नो विकल्पे 'ज्झ' अने 'म्ह' थाय छेः तुब्भे, तुज्झे, तुम्हे इत्यादि.

च० छ०—एकव०—तइ, तु, ते तुम्हं, तुह, तुहं, तुव, तुम, तुमे,
तुमो, तुमाइ, दि, दे, इ, ए, तुब्भ, उब्भ, उय्ह
(तुभ्यम्-तव-ते)

बहुव०—तु, वो, भे, तुब्भ, तुब्भं, तुब्भाण, तुब्भाणं,
तुवाण, तुवाणं, तुमाण, तुमाणं, तुहाण, तुहाणं,
उम्हाण, उम्हाणं, तुम्हाहँ
(युष्मभ्यम्—युष्माकम्—वः)

स०— एकव०—तुमे, तुमए, तुमाइ, तइ, तए (त्वयि)
तुम्मि, तुवम्मि, तुमम्मि, तुहम्मि, तुब्भम्मि

बहुव०—तुसु, तुवेसु, तुमेसु, तुहेसु, तुब्भेसु (युष्मासु)
[1]तुवसु, तुमसु, तुहसु, तुब्भसु, [2]तुब्भासु.

---

[3]अम्ह (अस्मद्)

प— एकव०—म्मि, अम्मि, अम्हि, हं, अहं, अहयं (अहम्)
(मा० हगे)

---

१. २ आ रूपो आ० हेमचंद्रनां मते थतां नथी—हे० प्रा० व्या० ८-३-१०३, पृ० १०२.

३ **अम्ह** (अस्मद्)—**पालिरूपो**

१ अहं	मयं, अम्हे (अस्मा) (नो)
२ मं, ममं (अम्हं)	अम्हाकं, अम्हे (अम्हं) (अस्मा) (नो)
३-५—मया (त०—मे)	अम्हेहि, अम्हेभि (त०—नो)
४-६—मम, ममं (मे) मय्हं, अम्हं	अस्माकं, अम्हाकं (च०—नो)
७ मयि	अम्हेसु (अस्मासु)

—जूओ पालिप्र० पृ० १५३-१५४

बहुव०—अम्ह, अम्हे, अम्हो, मो, वयं, भे (वयम्)
(मा० हगे)

दु- एकव०—णे, णं, मि, अम्मि, अम्ह, मम्ह, मं, ममं, मिमं,
अहं-(माम्—मा)

बहुव०—अम्हे, अम्हो, अम्ह, णे (अस्मान्—नः)

त- एकव०—मि, मे, ममं, ममए, ममाइ, मइ, मए, मयाइ, णे (मया)

बहुव०—अम्हेहि, अम्हाहि, अम्ह, अम्हे, णे (अस्माभिः)

पं- एकव०—मइत्तो, मइओ, मइउ, मईहिंतो. (मत्)
ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममाहि, ममाहिंतो, ममा.
महत्तो, महाओ, महाउ, महाहि, महाहिंतो, महा.
मज्झत्तो, मज्झाओ, मज्झाउ, मज्झाहि, मज्झाहिंतो,
मज्झा.

बहुव०—ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममाहि, ममेहि,-(अस्मत्)
ममाहिंतो, ममेहिंतो, ममासुंतो, ममेसुंतो.
अम्हत्तो, अम्हाउ, अम्हाओ, अम्हाहि, अम्हेहि,
अम्हाहिंतो, अम्हेहिंतो, अम्हासुंतो. अम्हेसुंतो.

च, छ- एकव०-मे, मइ, मम, महं, मज्झ, मज्झं, अम्ह, अम्हं
(मह्यम्-मे-मम)

बहुव०-णे, णो, मज्झ, अम्ह, अम्हं अम्हे, अम्हो,
अम्हाण,-णं, ममाण,-णं, महाण,-णं, मज्झाण-णं,
अम्हाहँ (अस्मभ्यम्—अस्माकम्-नः)

स- एकव०—मि, मइ, ममाइ, मए, मे (मयि)
अम्हम्मि, ममम्मि, महम्मि, मज्झम्मि.

बहुव०—[1]अम्हेसु, ममेसु, महेसु, मज्झेसु (अस्मासु)
[2]अम्हसु, ममसु, महसु, मज्झसु, [3]अम्हासु.

तुम्ह (युष्मद्) अपभ्रंश

	प०—तुहुं	तुम्हइं, तुम्हे.
	बी०—पइं, तइं	,, ,,
	त०—,, ,,	तुम्हेहिं.
च०	छ०—तउ, तुज्झ, तुध्र	तुम्हहं.
	पं०—,, ,, ,,	,,
	स०—पइं, तइं	तुम्हासु, तुम्हासुं

अम्ह (अस्मद्) अपभ्रंश

	प०—हउं	अम्हइं, अम्हे.
	बी०—मइं	,, ,,
	त०—मइं	अम्हेहिं.
च०	छ०—महु, मज्झु	अम्हहं.
	पं०—,, ,,	,,
	स०—मइं,	अम्हासु, अम्हासुं.

आकारांत शब्दनां प्राकृत रूपाख्यानो (नरजाति)

आकारांत नामोनां रूपाख्यानोनो प्रयोग विशेष विरल छे तो पण प्रसंगवशे तेनां रूपाख्यानोनी प्रक्रिया जणावीए छीए:

---

१ जूओ पृ० १२७–तइया छ ी सत्तमी.

२–३ जूओ पृ० १५३ नुं टिप्पण: हे० प्रा० व्या० ८–३–११७, पृ० १०४.

१ अकारांत नामने लागता प्रत्ययो आकारांत नामने लगाडवाथी तेनां रूपाख्यानो तैयार थाय छे.

२ मात्र एक पंचमीनो 'हि' प्रत्यय आकारांत नामने लागतो नथी.

३ प्रत्यय विनाने स्थळे एटले ज्यां शून्य छे त्यां मूळ अंगने ज रूपाख्यान तरीके समजवुं.

४ संबोधनना रूपो प्रथमानी जेवां थाय छे.

हाहा

प०—हाहा	हाहा.
बी०—हाहां	,,
त०—हाहाग, हाहाणं	हाहाहिं, हाहाहिं, हाहाहि॑.
च० छ०—हाहस्स	हाहाण, हाहाणं.
[ता० च० हाहे, हाहस्स	,, ,,]
पं०—हाहत्तो, हाहाओ, हाहाउ, हाहाहिंतो	हाहत्तो हाहाओ, हाहाउ, हाहाहिंतो. हाहासुंतो.
स०—हाहा (ह) म्मि	हाहासु, हाहासुं.
सं०—हे हाहा !	हे हाहा !

ए रीते किलालवा ([1]किलालपा) गोवा (गोपा) अने सोमवा (सोमपा) वगेरे शब्दोनां रूपो समजवां.

---

१ षड्भाषाचंद्रिकाने मते कृदंतथी बनेला नामनो अंत्य स्वर ह्रस्व थाय छे एथी 'किलालपा' 'गोपा' अने 'सोमपा' नुं प्राकृत

नान्यतर जातिमां तो कोइ शब्द आकारांत होतो ज नथी (जूओ पृ० १२३–नामना अन्त्यस्वरनो फेरफार–नि० २)

आकारांत शब्दनां शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीनां रूपो 'हाहा' नां प्राकृत रूपो जेवां थाय छे, ज्यां जे विशेष छे ते 'वीर' नी पेठे समजवानो छे.

आकारांत शब्दनां अपभ्रंशनां रूपो 'वीर' नां अपभ्रंश रूपोनी जेवां प्रायः बनाववानां छे.

इकारांत, उकारांत शब्दनां प्राकृत रूपाख्यानो (नरजाति) प्रत्ययो.

नरजातिनां अने नान्यतरजातिनां दरेक इकारांत अने उकारांत नामोने नीचे जणावेला प्रत्ययो लगाडवाना छे.

प्राकृत भाषाना प्रत्ययो.

	एकवचन	बहुवचन
प०—	०	अउ, अओ, णो. ०
बी०–	+	णो, ०

रूप 'किलालप' 'गोप' अने 'सोमप' बने छे अने आम थतुं होवाथी ए त्रणे शब्दोनां रूपो बराबर 'वीर' नी जेवां थाय छे: "क्विपः" २–२–४७, पृ० ८५ षड्भाषाच०

षड्भा०	हे०
प० ए० किलालवो.	प० ए० किलालवा.
,, गोवो.	,, गोवा.
,, सोमवो.	,, सोमपा.

षड्भाषा०ना उपर्युक्त नियमने बदले आ० हेमचंद्र जे नियम करे छे ते माटे जूओ पृ० १२३–नामना अंत्यस्वरनो फेरफार–नि० १.

त०—	णा	+
च० छ०—	णो, +	+
पं०—	णो, +	+
स०—	+	+
सं०—	*	अउ, अओ, णो, ०

प्राकृत प्रत्ययोने लगता नियमो.

१ ज्यां ज्यां ० छे त्यां मूळ अंगने अंते दीर्घ करीने वापरवानुं छे.

२ ज्यां ज्यां + छे त्यां अकारांत नामने लागता [1]प्रत्ययो पण समजवाना छे. मात्र पंचमीनो एक 'हि' प्रत्यय लेवानो नथी.

३ ज्यां * छे त्यां (संबोधनना एकवचनमां) मूळ अंगने अंते विकल्पे दीर्घ करवानो छे.

४ पंचमीना स्वरादि, मकारादि अने हकारादि प्रत्ययो पर रहेतां अंत्य 'इ' अने 'उ' नो दीर्घ थाय छे.

५ तृतीया, षष्ठी अने सप्तमीना बहुवचनना प्रत्ययो पर रहेतां अंत्य 'इ' अने 'उ' नो दीर्घ थाय छे.

६ उकारांत नामोने प्रथमाना बहुवचनमां एक 'अवो' प्रत्यय पण वधारे लागे छे:—भाणु + अवो=भाणवो (सं० भानवः)

---

१ जूओ पृ० १२५. 'प्राकृत प्रत्ययोने लगता नियमो' ना मथाळा नीचे (पृ० १२६ मां) जणावेलुं कार्य अहिं इकारांत अने उकारांतमां—थतुं नथी.

रूपाख्यानो

इसि (ऋषि)

प०	[1]इसी	इसउ, इसओ, इसिणो, इसी.
बी०	इसिं	इसिणो, इसी.
त०	इसिणा	इसीहि, इसीहिं, इसीहिँ.
च०, छ०	इसिणो, इसिस्स	इसीण, इसीणं.

१ कोईने मते इकारांत अने उकारांत शब्दोनुं प्रथमानुं एकवचन द्वितीयाना एकवचननी जेवुं पण थाय छेः—जेमके—इसी, इसिं। विहू, विहुं। हे० प्रा० व्या० ८-३-१९, पृ० ८४.

इकारांतनां पालिरूपो.

इसि

१	इसि	इसी, इसयो.
२	इसिं	इसी, इसयो.
३	इसिना	इसीहि, इसीभि.
४-६	इसिनो, इसिस्स	इसीनं.
५	इसिना, इसिस्मा, इसिम्हा	इसीही, इसीभि.
७	इसिस्मिं, इसिम्हि	इसिसु, इसीसु.
सं०	इसि !, इसे !	इसी !, इसयो !

प्राकृतना 'णो' प्रत्ययनी पेठे पालिमां पण प्रथमाना अने द्वितीयाना बहुवचनमां 'नो' प्रत्यय वपराएलो छेः "सारमतिनो, सम्मादिट्ठिनो, मिच्छादिट्ठिनो, वजिरबुद्धिनो, अधिपतिनो, जानिपतिनो" वगेरे.

पालिमां अग्गि (अग्नि), मुनि, आदि, गिरि, रंसि (रश्मि) सखि (सखि) अने गामनि (ग्रामणी) शब्दोनां रूपोमां विशेषता छे ते आ प्रमाणेः

[ता० च० इसये, इसिणो, इसिस्स इसीण, इसीणं]
च० छ०— (माग० इशिह) (मा० इशिहँ)
पं० इसिणो, इसित्तो, इसीओ, इसित्तो, इसीओ, इसीउ,
इसीउ, इसीहिन्तो इसीहिन्तो, इसीसुंतो.

अग्गि.

एकव०	बहुव०
प०—अग्गिनि, गिनि	अग्गियो (वधारानां रूपो)
स०—अगिगनि	”
सं०—अग्गि !	

मुनि

छ०—मुने (मुनेः)	(वधारानां रूपो)

आदि

स०—आदो (आदौ)	(वधारानां रूपो)
आदु	
आदि	
आदिनि	

गिरि

स०— गिरे	(वधारानां रूपो)

रंसि

त०— रंसिन	(वधारानां रूपो)

सखि

प०—सखा	सखायो, सखानो, सखिनो, सखा.
बी०—सखारं	
सखानं	सखानो, सखिनो,
सखायं	सखायो, सखी.
सखं	

पं०—(शौर० इसिदो, इसिदु)
(माग० इशिदो, इशिदु)
(पैशा० इसितो, इसितु)

स० [1]इसिंसि, इसिम्मि   इसीसु, इसीसुं.

सं० हे इसि ! हे इसी !   हे इसउ ! हे इसओ ! हे इसिणो ! हे इसी !

त० पं०—सखिना (पं०—सखारा, सखारस्मा) सखेहि,
सखेभि: सखारेहि, सखारेभि.

च० छ०—सखिस्स   सखीनं, सखारानं.
सखिनो

स०—सखे   सखेसु, सखारेसु.

सं०—सख !, सखे !,   सखायो !
सखा !, सखि !   सखानो !,
सखी !   सखिनो !

गामनी

प० गामनी   गामनी, गामनिनो.

बी० गामनीनं, गामनिं   ,,   ,,

पं०—गामनिना

स०—   गामनीसु

सं०— गामनि !   गामनी !, गामनिनो !

बाकीनां 'इसि' प्रमाणे.

ए बधां रूपो माटे जुओ पालिप्र० पृ० ८७–९१ अने ते उपरनां टिप्पणो.

१ जुओ पृ० १२७, सप्तमीना 'सि' प्रत्ययने लगतुं लखाण—
"तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिंसि गब्भे" आचारांग सूत्र, त्रीजी चूलिका—महावीरनो अधिकार.

खास विशेषताः

[शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशमां 'इन्' छेडा-वाळां 'इकारांत' नामोना अंत्य 'न्' नो संबोधनना एकवचनमां विकल्पे 'आ' थाय छे:

हे दंडिआ ! हे दंडि !

हे सुहिआ ! हे सुहि (सुखिन्)

हे तवस्सिआ ! हे तवस्सि !

हे कंचुइआ ! हे कंचुइ ! (कञ्चुकिन्)

हे मणस्सिआ ! हे मणस्सि ! (मनस्विन्)]

ए प्रमाणे अग्गि (अग्नि), मुणि (मुनि), बोहि (बोधि), संधि, रासि (राशि), गिरि, रवि, कइ (कवि) कवि, (कपि-कवि), अरि, तिमि, समाहि (समाधि), निहि (निधि), विहि (विधि), [1]दंडि (दण्डिन्), करि (करिन्), तवस्सि (तपस्विन्).

---

१ प्राकृतमां अने पालिमां 'दंडि' वगेरे 'इन' छेडावाळा शब्दोनां रूपो साधारण इकारांत शब्दनी पेठे थाय छे. तो पण पालिमां ए 'इन' छेडावाळा शब्दोनां केटलांक वधारानां रूपो साधारण इकारांत करतां जुदां पडे छे अने ते बधां आ प्रमाणे छे: (जे रूपो जुदां पडे तेने वधारे **मोटा** अक्षरोमां मूकेलां छे).

१ **दंडी**	दंडी, **दंडियो**, **दंडिनो**.
२ **दंडियं**, **दंडिनं**, दंडिं	दंडी, **दंडिये**, **दंडिने**, **दंडिनो**.
३ दंडिना	दंडीहि, दंडीभि.
४ दंडिनो, दंडिस्स	दंडीनं
५ दंडिना, दंडिम्हा, **दंडिस्मा**	दंडीहि, दंडीभि.
६ **दंडिनो**, दंडिस्स	दंडीनं

[1] गामणि (ग्रामणी), पणि (प्रणी), सेणाणि (सेनानी), पहि (प्रधी) अने सुहि (सुधी) वगेरे शब्दोनां प्राकृत, शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीनां रूपो समजवानां छे.

---

[2] भाणु (भानु)

प०—भाणू	भाणुणो, भाणवो, भाणओ, भाणउ, भाणू.
बी०—भाणुं	भाणुणो, भाणू.
त०—भाणुणा	भाणूहि, भाणूहिं, भाणूहिँ.
च० छ०—भाणूणो, भाणुम्स	भाणूण, भाणूणं.

---

७ **दंडिनि, दंडिने** दंडिस्मिं, दंडिम्हि	दंडीसु, **दंडिनेसु.**
सं० दंडि !	दंडी ! **दंडिनो !**

—पालिप्र० पृ० १३२ 'दंडी' अने तेनुं टिप्पण.

१ आ छेल्ला पांच शब्दोना संबोधनना एकवचनमां ते ते शब्दनुं एकलुं मूळ अंग ज वपराय छे: हे गामणि ! हे पणि ! हे सेणाणि ! वगेरे.

२ **उकारांतनां पालिरूपो**

भानु

१ भानु	भानू, भानवो.
२ भानुं	,, ,,
३–५ भानुना	भानूहि, भानूभि.
५ भानुस्मा, भानुम्हा	
४–६ भानुनो, भानुस्स	भानूनं.

(ना० न०—माणवे माणुणो. माणम्म)

(माग० माणुह)	(माग० माणूहँ)
पं०—माणुणो. माणुत्तो. माणूओ.	माणूतो. माणूओ.
माणूउ, माणूहितो	माणूउ. माणूहिंतो
	माणूसुंतो.

(शौर० माणूदो. माणुदु)

(माग० माणूदो. माणुदु)

(पैशा० मानुतो. मानुतु)

७ मानुम्मि, मानुम्हि	मानूनु.
सं० मानु !	मानू ! मानवे ! मानवो !

प्राकृतना 'णो' प्रत्ययनी पेठे पालिमां पण प्रथमाना अने द्वितीयाना बहुवचनमां 'नो' प्रत्यय वपराएलो छे: "हेतुनो, जन्तुनो, गरुनो" वगेरे.

पालिमां हेतु, जन्तु, अभिभु, सयंभु, सब्बञ्ञु शब्दोनां रूपोमां विशेषता छे ते आ प्रमाणे:—

हेतु. जंतु

बहुवचन

१ हेतुयो, जंतुयो (बधागनां रूपो)

२ ,, ,,

एकवचन

७ हेतो सं० (हेतो) (बधागनां रूपो)

अभिभू (बधागनां रूपो)

१ अभिभू	अभिभू, अभिभुवो
२ अभिभुं	,, ,,

स०—भाणुंसि, भाणुम्मि भाणूसु, भाणूसु.

सं०—भाणु ! भाणू ! भाणुणो ! भाणवो ! भाणओ !

भाणउ ! भाणू !

ए प्रमाणे जउ (यदु), धम्मण्णु (धर्मज्ञ), सव्वण्णु (सर्वज्ञ), दइवण्णु (दैवज्ञ), गुरु, गउ (गो), साहु (साधु), बन्धु, वपु (वपुष्), मेरु, कारु, धणु (धनुष्), सिंधु, केउ (केतु), विज्जु (विद्युत्), राहु, संकु (शङ्कु), उच्छु (इक्षु), पवासु (प्रवासिन्), वेलु (वेणु), सेउ (सेतु), मच्चु (मृत्यु), [1]खलपु (खलपू), गोत्तभु (गोत्रभू), सरभु (शरभू), अभिभु (अभिभू), अने सयंभु (स्वयंभू) वगेरे शब्दोनां प्राकृत, शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीनां रूपो समजवानां छे.

---

५ अभिभुना

सं० अभिभू ! अभिभुवो !

बाकीनां 'भानु' प्रमाणे.

सहभू, सव्वञ्ञू

(वधारानां)

१–२–सं० बहुवचन सहभुनो

१–२–सं० ,, सव्वञ्ञू, सव्वञ्ञुनो

—पालिप्र० पृ० ९२–९३.

बाकीनां 'अभिभू' प्रमाणे.

---

१ आ छेल्ला पांच शब्दोना संबोधनना एकवचनमां ते ते शब्दनुं एकलुं मूळ अंग ज वपराय छे: हे खलपु ! हे गोत्तभु ! हे सरभु ! वगेरे.

[1]अमु (अदस्)

[आ शब्द सर्वादिमां छे छतां एनां रूपो विशेषे करीने 'भाणु' नां रूपो साथे मळतां आवे छे माटे एने 'भाणु' नां रूपो पछी मूकवामां आव्यो छे.]

प०— अह, अमू, [2]असो — अमुणो, अमवो, अमउ, अमओ, अमू.

बी०— अमुं — अमुणो, अमू.

स०— अयम्मि, इअम्मि, अमुम्मि — अमूसु, अमूसुं.

शेष रूपो 'भाणु' नी जेवां

---

१ अमु (अदस्) नां पालिरूपो:

१ अमु — अमू, अमुयो

२ अमुं — ,, ,,

३ अमुना — अमूहि. अमूभि.

४–६ अमुनो — अमूसं, अमूसानं.

अमुस्स (सं० अमुष्य)

५ अमुना, — अमूहि, अमूभि.

अमुस्मा (सं० अमुष्मात्)

अमुम्हा

७ अमुस्मिं (सं० अमुष्मिन्) — अमूसु.

अमुम्हि

जुओ पालिप्र० पृ० १४७.

२ आ आर्षरूप सं० 'असौ' उपरथी थयेलुं छे—जुओ पृ० ७ नि० १२ औ=ओ. "असो तत्तमकासी य" सूत्रकृ० अ० १, उ० ३, गा० ८.

' इसि ' अने ' भाणु ' शब्दनां प्राकृत रूपोनी साथे ज शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीनां वधारानां रूपो जणावेलां छे.

अपभ्रंशमां जे विशेषता छे ते आ प्रमाणे:

अपभ्रंशभाषाना प्रत्ययो.

	एकव०	बहुव०
प०—	०	०.
बी०—	०	०.
त०—	ण, एं, म्	हिं.
च० छ०—	०	हुं, हं.
पं०—	हे	हुं.
स०—	हि	हिं, हुं.
सं०—	०	हो, ०.

ज्यां ज्यां ० छे त्यां मूळ अंगने ज अंते विकल्पे दीर्घ करीने वापरवानुं छे.

अपभ्रंशना बधा प्रत्ययो पर रहेतां मूळ अंगने अंते विकल्पे दीर्घ थाय छे.

अपभ्रंश-रूपाख्यानो

इसि

प०—	इसि, इसी	इसि, इसी.
बी०—	,, ,,	,, ,,
त०—	इसिण, इसिणं, इसीण, इसीणं, इसिएं, इसीएं, इसिं, इसीं	इसिहिं, इसीहिं.

च० छ०—इसि, इसी	इसिहुं, इसीहुं;
	इसिहं, इसीहं.
पं०— इसिहे, इसीहे	इसिहुं, इसीहुं.
स०— इसिहि, इसीहि	इसिहिं, इसीहिं;
	(इसिहुं, इसीहुं)
सं०— इसि ! इसी !	इसिहो ! इसीहो !
	इसि ! इसी !

ए प्रमाणे दरेक इकारांत पुंलिंगी शब्दनां अपभ्रंश रूपो समजवानां छे.

भाणु.

प०— भाणु, भाणू	भाणु, भाणू.
बी०— ,, ,,	,, ,,
त०— भाणुण, भाणुणं,	भाणूहिं, भाणूहिं.
भाणूण, भाणूणं.	
भाणूएं, भाणूएं,	
भाणुं, भाणूं	
च० छ०—भाणु, भाणू	भाणुहुं, भाणूहुं;
	भाणुहं, भाणूहं.
प०— भाणुहे, भाणूहे	भाणुहुं, भाणूहुं.
स०— भाणुहि, भाणूहि	भाणुहिं, भाणूहिं,
	(भाणुहुं, भाणूहुं)
सं०— भाणु ! भाणू !	भाणुहो ! भाणूहो !
	भाणु ! भाणू !

ए प्रमाणे दरेक उकारांत पुलिंगी शब्दनां अपभ्रंश रूपो समजवानां छे.

इकारांत अने उकारांत शब्दनां प्राकृत रूपाख्यानो
(नान्यतर जाति)

[1]दहि (दधि)

१ [2]दहिं	दहीणि, दहीइँ, दहीइं.
२ ,,	,, ,, ,,
सं०–दहि !	,, ! ,, ! ,, !

बाकी बधां ते ते भाषा प्रमाणे इकारांत पुंलिंगी 'इसि' नी जेवां.

---

१ जूओ अकारांत नपुंसक नामोनुं प्रकरण अने तेने लगता प्रत्ययो तथा नियमो––पृ० १३३–१३४

२ कोइने मते इकारांत अने उकारांत नपुंसक नामोनां प्रथमाना अने द्वितीयाना एकवचनमां आवां बे रूपो थाय छे:

दहिं, दहिँ (सं० दधि, दधिँ)

महुं, महुँ (सं० मधु, मधुँ)

—हे० प्रा० व्या०–८–३–२५, पृ० ८५.

तादर्थ्य अर्थमां संस्कृतना रूपने मळतुं 'दहिणे' (दध्ने) अने 'महुणे' (मधुने) रूप पण वपराय छे.

नपुंसकलिंगी इकारांतनां अने उकारांतनां पालिरूपो

'दधि'

१ दधि (दधिं)	दधी, दधीनि.
२ दधिं	,, ,,

शेष, इकारांत पुंलिंगी 'इसि' प्रमाणे.

---

३ **'गामनी'** नां पालिरूपो

गामनि	गामनी, गामनीनि
गामनिं	,, ,,

शेष इकारांत पुंलिंगी 'गामनी' प्रमाणे.

ए प्रमाणे सत्थि (सक्थि), वारि, अच्छि (अक्षि), सुरि (सुरि), अइरि (अतिरि) अने गामणि (ग्रामणी) वगेरे शब्दोनां रूपो पण समजवां.

महु (मधु)

१	महुं	महूणि, महूइँ, महूइं.
२	,,	,, ,, ,,
सं०	महु !	,, ,, ,,

बाकी बधां ते ते भाषा प्रमाणे उकारांत पुंलिंगी ' भाणु ' नी जेवां.

ए प्रमाणे दारु, वत्थु (वस्तु), चित्तगु (चित्रगु), सुगु, वसु, अंबु, अंसु–अस्सु (अश्रु) जउ (जतु), बहु अने लहु (लघु) वगेरे शब्दोनां रूपो पण समजवां.

---

१ ' मधु '

१ मधु	मधू, मधूनि.
२ मधुं	,, ,,

शेष, उकारांत पुंलिंगी ' भानु ' प्रमाणे.

' गोत्रभू ' नां पालिरूपो

गोत्रभु	गोत्रभू, गोत्रभूनि.
गोत्रभुं	गोत्रभू, गोत्रभूनि.

शेष, उकारांत पुंलिंगी ' अभिभू ' प्रमाणे:–

जुओ पालिप्र० पृ० ११३–११५ अने एनां टिप्पण.

---

[1]अमु (अदस्)

प०– अह, अमुं अमूइं, अमूइँ, अमूणि
बी०– अमुं " " "
बाकी बधां [2]पुंलिंगी ' अमु ' नी पेठे.

दहि (अपभ्रंश)

१ दहि दहीइं, दहिइं
२ " " "
बाकी बधां ' इसि ' नां अपभ्रंश रूपोनी जेवां.

महु (अपभ्रंश)

१ महु महूइं महुइं
२ " " "
बाकी बधां ' भाणु ' नां अपभ्रंश रूपोनी जेवां.

---

[3]ऋकारांत शब्दनां प्राकृत रूपाख्यानो (नरजाति)

ऋकारांत नामोनी बे जात छे–केटलांक ऋकारांत नाम विशेष्यरूपे वपराय छे अने केटलांक ऋकारांत नाम विशेषणरूपे वपराय छे:

---

१ ' अमु ' नां पालिरूपो

१ अमु अमू
२ " "
शेष पुंलिंगी ' ' अमु ' पेठे–जूओ पालिप्र० पृ० १४८

२ जूओ पृ० १६६

३ जूओ पृ० १२३ नामना प्रकारो.

विशेष्यरूप—जामायर (जामातृ), पियर (पितृ), भायर (भ्रातृ) वगेरे ।

विशेषणरूप—कत्तार (कर्तृ), दायार (दातृ), भत्तार (भर्तृ) वगेरे ।

[आ भेदने लीधे एक जातनां पण ए बन्ने नामोनां रूपोमां विशेष अंतर छे.]

ऋकारांत (विशेष्यवाचक).

१. प्रथमानुं अने द्वितीयानुं एकवचन बाद करतां बधी विभक्ति-ओमां विशेष्यवाचक ऋकारांत नामना अन्त्य ' ऋ ' नो विकल्पे ' उ ' थाय छे.

२. प्रथमाथी लइने बधी विभक्तिओमां विशेष्यवाचक ऋकारांत नामना अंत्य ' ऋ ' नो ' अर ' थाय छे.

३. प्रथमाना एकवचनमां विशेष्यवाचक ऋकारांत नामनुं आकारांत रूप पण विकल्पे वपराय छे.

४. संबोधनना एकवचनमां विशेष्यवाचक ऋकारांत नामना अंत्य ऋ नो 'अ' अने 'अरं' विकल्पे थाय छे.

[सूचना–उपर जणाव्या प्रमाणे प्रथमाथी लइने बधी विभक्तिओमां ऋकारांत नाम अकारांत अने उकारांत बने छे माटे तेनां रूपाख्यानोनी प्रक्रिया, ' जिण ' अने ' भाणु ' नां रूपाख्यानोनी प्रक्रिया जेवी समजवानी छे. अहीं तो मात्र सरळता माटे तेनां रूपाख्यानो आपीए छीए.]

---

[1]पिउ, पिअर (पितृ)

प०—	पिआ, पिअरो (मा० पिअले)	पिअरा, पिउणो, पिअवो, पिअओ, पिअउ, पिऊ.
बी०—	पिअरं	पिअरे, पिअरा, पिउणो, पिऊ.
त०—	पिअरेण, पिअरेणं, पिउणा	पिअरेहि, पिअरेहिं, पिअरेहिँ, पिऊहि, पिऊहिं, पिऊहिँ.
च०, छ०—	पिअरस्स (मा० पिअलाह) पिउणो, पिउस्स	पिअराण, पिअराणं, (मा० पिअलाहँ) पिऊण, पिऊणं.
पं०—	पिउणो, पिउत्तो, पिऊओ, पिऊउ, पिऊहिंतो,	पिउत्तो, पिऊओ, पिऊउ, पिऊहिंतो, पिऊसुंतो.

---

१ ऋकारांतनां पालिरूपो

पितु

१	पिता	पितरो (पिता).
२	पितरं	पितरो, पितरे.
३	पितरा (पित्या, पेत्या) पितुना	पितरेहि, पितरेभि. पितूहि, पितूभि.
४—६	पितु, पितुनो, पितुस्स	पितरानं, पितानं. पितूनं, पितुन्नं.
५	पितरा (पित्या, पेत्या) पितुना	पितरेहि, पितरेभि. पितूहि, पितूभि.
७	पितरि	पितरेसु, पितुसु, पितूसु.
सं०—	हे पित ! पिता !	पितरो !

—जूओ पालिप्र० पृ० ९४ अने एनुं टिप्पण.

दाउणो, दाउत्तो, दाउत्तो,
दाऊओ, दाऊउ, दाऊओ, दाऊउ,
दाऊहिंतो दाऊहिंतो, दाऊसुंतो.

(शौ० दायारादो, दायारादु)

(मा० दायालादो, दायालादु)

(पै० तायारातो, तायारातु)

स०— दायारे, दायारंसि, दायारम्मि, दायारेसु, दायारेसुं,
दाउंसि दाउम्मि दाऊसु, दाऊसुं.

सं०— हे दाय !, दायार !, दायारा, दाउणो, दायवो,
दायारो !, दायारा ! दायओ, दायउ, दाऊ.

ए रीते कत्तार, कत्तु, (कर्तृ), भत्तार, भत्तु (भर्तृ) वगेरे शब्दोनां रूपो समजवानां छे.

ऋकारांतनां प्राकृत रूपाख्यानोनी साथे ज (तेनां) शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीनां पण विशेषतावाळां रूपाख्यानो आपेलां छे.

ऋकारांतनां अपभ्रंशरूपाख्यानो आ प्रमाणे छे:

आगळ कह्या प्रमाणे दरेक ऋकारांत अंग, अकारांत अने उकारांत थया पछी ज प्राकृतमां वापरी शकाय छे. तो ए—मूळ ऋकारांतनां—अकारांत अंगनां अपभ्रंशरूपो 'वीर'नां अपभ्रंशरूपो जेवां करवानां छे अने ए उकारांत अंगनां, 'भाणु'नां अपभ्रंशरूपो जेवां समजवानां छे. कदाच कोई मूळ ऋकारांत अंग प्राकृतमां आवतां इकारांत थतुं होय तो तेनां अपभ्रंशरूपो 'इसि'नां अपभ्रंशरूपो जेवां जाणी लेवां.

उदाहरण तरीके एक 'पितृ' शब्दनां नीचे जणाव्या प्रमाणे आठ अंगो संभवी शके छे:–

पिअ, पिद; पिइ, पिदि; पिउ, पिदु; पिअर, पिदर.

ए आठमांना 'पिअ' अने 'पिद' तथा 'पिअर' अने 'पिदर' नां अपभ्रंशरूपो 'वीर'नां अपभ्रंश रूपो जेवां जाणवां. 'पिइ' 'पिदि' नां अपभ्रंशरूपो 'इसि' नां अपभ्रंशरूपो जेवां समजवां अने 'पिउ' ने 'पिदु' नां अपभ्रंशरूपो 'भाणु' नां अपभ्रंशरूपो जेवां करी लेवां.

(कोइ पण [1]ऋकारांत शब्दनां अपभ्रंशअंगो करती वखते तेनां प्राकृत अंगो तरफ अने प्रयोगो तरफ लक्ष्य राखवुं.)

---

१ केटलाक ऋकारांत शब्दोनां अपभ्रंश अंगोने अहीं आपीए छीए:–

कर्तृ=	कत्त, कत्ति, कत्तु.
	कट्ट, कट्टि, कट्टु.
नेतृ=	नेअ, नेइ, नेउ.
	नेद, नेदि, नेदु.
पोतृ=	पोद, पोदु.
	पोअ, पोउ.
भर्तृ=	भत्त, भत्ति, भत्तु.
	भट्ट, भट्टि, भट्टु.
भ्रातृ=	भाय, भाइ, भाउ.
	भाद, भादि, भादु.
होतृ=	होद, होदु.
	होअ, होउ.

ऋकारांत शब्दनां प्राकृत रूपाख्यानो (नान्यतरजाति)

सुपिअर, सुपिउ (सुपितृ)

प०—	सुपिअरं	सुपिअराइं, सुपिअराइँ, सुपिअराणि, सुपिऊइं, सुपिऊइँ, सुपिऊणि.
बी०—	सुपिअरं	सुपिअराइं, सुपिअराइँ, सुपिअराणि, सुपिऊइं, सुपिऊइँ, सुपिऊणि.
सं०—	सुपिअरं! सुपिअ! सुपिअर !	सुपिअराइं, सुपिअराइँ, सुपिअराणि, सुपिऊइं, सुपिऊइँ, सुपिऊणि.

शेष रूपो, ते ते भाषा प्रमाणे पुंलिंगी पिउ, पिअर (पितृ)नी जेवां छे.

दायार, दाउ (दातृ)

प०—	दायारं	दायाराइं, दायाराइँ, दायाराणि, दाऊइं, दाऊइँ, दाऊणि.
बी०—	दायारं	दायाराइं, दायाराइँ, दायाराणि, दाऊइं, दाऊइँ, दाऊणि.
सं०—	हे दाय ! हे दायार !	दायाराइं, दायाराइँ, दायाराणि, दाऊइं, दाऊइँ, दाऊणि.

शेष रूपो, ते ते भाषा प्रमाणे पुंलिंगी दायार, दाउ (दातृ)नी जेवां छे.

नपुंसकलिंगी ऋकारांतनां अपभ्रंशरूपो 'कुल', 'दहि', अने 'महु' नां अपभ्रंशरूपो जेवां जाणवानां छे. (जुओ पुंलिंगी ऋकारांतनां अपभ्रंशरूपो विषेनुं लखाण).

एकारांत अने [1]ओकारांतनां प्राकृत रूपाख्यानो

एकारांत अने ओकारांत नामोनां रूपाख्यानो प्राकृतमां उपलब्ध थतां नथी, तो पण ए शब्दोने छेडे 'अ' (स्वार्थिक-क) लगाडी तेनां रूपाख्यानो बनावाय छे अने ते ते भाषा प्रमाणे ते बधां रूपाख्यानो पुंलिंगमां अकारांत ('जिण') नी जेवां छे, नपुंसकमां अकारांत ('कुल') नी जेवां छे अने स्त्रीलिंगमां स्त्रीलिंगनी प्रक्रिया प्रमाणे बने छे.

---

१ प्राकृतमां 'गो' शब्दनां 'गोण' 'गाअ' 'गउ' एवां त्रण अंगो बने छे (जूओ पृ० १२० पं० १ तथा पृ० ६१ ओ=अउ, आअ) अने रूपाख्यानने प्रसंगे पण ए त्रण अंगो वपराय छे तेम पालिमां 'गो' शब्दनां 'गोण' (गोन) 'गु' अने 'गवय' एवां अंगो बने छे (जूओ पालिप्र० पृ० ९८ अं० ३२ अने तेनुं टिप्पण) अने रूपाख्यानने प्रसंगे वपराय छे. प्राकृतमां रूपाख्यानने प्रसंगे मूळ 'गो' अंग नथी वपरातुं. आर्षप्राकृतमां मूळ 'गो' अंग अने ते द्वारा थएलां रूपो पण (जूओ पृ० १३६ 'कम्म'नां आर्षरूपो माटेनुं टिप्पण) मळी आवे छे तेम पालिमां ए मूळ 'गो' अंगनां पण रूपो-जे रूपो आर्षप्राकृतमां वपराएलां छे-छे अने ते आ प्रमाणे:

गो

१	गो	गावो, गवो.
२	गावं	गावो,
	गवं	गवो.
	गावुं	
	गवुं	
३	गावेन	गोहि, गोभि.
	गवेन	
	गवा	

जेमके-सं० सुरै-प्रा० सुरेअ[२] । सं० ग्लौ-प्रा० गिलोअ । इत्यादि ।

सुरेअ

सुरेओ	सुरेआ ।
सुरेअं,	सुरेए, सुरेआ ।
सुरेएण, सुरेएणं	सुरेएहि, सुरेएहिं, सुरेएहिँ ।

शेष रूपो, ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर' नी समान छे.

४–६	गावस्स	गोनं, गुन्नं,
	गवस्स	गवं.
५	गावा, गावस्मा, गावम्हा	गोहि, गोभि.
	गवा, गवस्मा, गवम्हा	गवेहि, गवेभि.
७	गावे, गावस्मिं, गावम्हि	गावेसु
	गवे, गवस्मिं, गवम्हि	गवेसु
		गोसु.
सं०–गो !		गावो, गवो–

जुओ पालिप्र० पृ० ९७–९८

आर्षप्राकृतनुं उदाहरण—"अवले होइ गवं पचोइए "–
सूत्र० प्र० श्रु० अ० २, उ० ३ गा० ५.
"गो–महिस–गवेलयप्पभूया "–
भगव० शत० २, उ० ५ तुंगियानो
अधिकार. (पृ० २७७ रा० जि०)

औकारांत 'नौ' शब्दनुं प्राकृत अंग 'नाव' बने छे (जुओ पृ० ६२ औ=आव) "एगं महं नावं सयासवं *सा ना (ना)वा तेहि "= भगव० श० १, उ० ६ (प्रश्नोत्तर–२२७ पृ० १७१ रा० जि०)

२ जुओ षड्भाषाचं० पृ० ९६.

गिलोअ

गिलोओ	गिलोआ।
गिलोअं	गिलोए, गिलोआ।
गिलोएण, गिलोएणं,	गिलोएहि, गिलोएहिं गिलोएहिँ।

शेष रूपो, ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर' नी समान छे.

---

२. केटलेक ठेकाणे एकारांत अने ओकारांत नामोनुं प्राकृतरूप, संस्कृतना सिद्धरूप उपरथी पण बनाववामां आवे छे: सुराहि (सं० सुराभिः) सुरासु (सं० सुरासु) इत्यादि.

व्यंजनांत शब्दो

प्राकृतमां रूपाख्यानने प्रसंगे कोइ शब्द व्यंजनांत संभवी शकतो नथी.[1] एथी एनां ते ते भाषानां बधां रूपो पूर्वोक्त स्वरांत शब्दनी पेठे समजवानां छे. फक्त 'अत्' अने 'अन्' छेडावाळां नामोनां रूपोमां विशेषता छे अने ए आ प्रमाणे छे:

---

१ जूओ प्रकरण ३–अंत्यव्यंजनलोप. **षड्भाषाचंद्रिकाने** मते छेडे धातुवाळां व्यंजनांत नामोना छेवटना व्यंजनमां 'अ' उमेराय छे अने बीजां व्यंजनांत नामोने छेडे स्वार्थिक 'अ' (क) प्रत्यय उमेराय छे एथी ए बधां नामोनां रूपो अकारांत नामनी जेवां थाय छे: (पृ० ११६ "हलोऽक्") धातु–गोदुह् + अ = गोदुह. अधातु–सुगिर् + अ = सुगिर. सुदिव् + अ = सुज्जुअ (सुद्युक)

'अत्' छेडावाळां नामो (नरजाति)

जे नामो [1]मत्वर्थीय 'अत्' छेडावाळां छे के वर्तमानकृदंत तरीके वा भविष्यत्कृदंत तरीके 'अत्' छेडावाळां छे ते नामोना अंत्य 'अत्' नो प्राकृतमां 'अंत' थाय छे, तेथी एनां बधां रूपो ते ते भाषा प्रमाणे अकारांत 'वीर' नी जेवां बने छे.

फक्त आर्षप्राकृतमां एवां केटलांक नामोनां रूपो संस्कृतनां सिद्धरूपो उपरथी पण बनाववामां आवेलां छे:

भगवन्तः= [2]भगवंतो

भगवता= भगवया

भगवतः= भगवओ इत्यादि.

[3]शौरसेनी

शौरसेनीमां कृतवत्, भवत्, भगवत् अने संपादितवत् शब्दना अंत्य व्यंजननो मात्र प्रथमाना एकवचनमां अनुस्वार थाय छे:

कयवं (कृतवान्)

भवं (भवान्)

[4]भगवं (भगवान्)

---

१ आ 'अंत' उपरांत मत्वर्थीय बीजा पण अनेक आदेशो थाय छे ते माटे जुओ तद्धितप्रकरणमां 'मतु'ना आदेशो.

२ "थेरा भगवंतो" "भगवया महावीरेणं" "भगवओ महावीरस्स"–(भगव० राय० पृ० २३९–२४१–२४५)

३ शौरसेनीने लगती अपवाद विनानी बधी प्रक्रिया मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशमां पण समजी लेवी.

४ आ रूप आर्षप्राकृतमां प्रथमामां अने द्वितीयामां पण वपराएलुं छे: "भगवं महावीरे" "भगवं गोयमं"–(भगव० राय० पृ० २३२)

संपाइअवं (संपादितवान्)
संपादिदवं

रूपाख्यानो

'भगवंत (भगवत्)

भयवंत

१	भगवंतो	भगवंता.
	(शौ० मा० पै० भगवं)	
	(मा० भगवंते)	
२	भगवंतं	भगवंते, भगवंता.

' अत्' छेडावाळां नामनां पालिरूपोः

१ भगवंत

१	भगवा	भगवंतो, भगवंता.
२	भगवंतं	भगवंते.
३	भगवता भगवंतेन	भगवंतेहि, भगवंतेभि.
४–६	भगवतो भगवंतस्स	भगवतं, भगवंतानं.
५	भगवता, भगवंता भगवंतस्मा, भगवंतम्हा	भगवंतेहि, भगवंतेभि.
७	भगवति, भगवंते भगवंतस्मि, भगवंतम्हि	भगवंतेसु.
सं०	भगवं, भगव भगवा (भगवंत)	भगवंतो भगवंता.

[जूओ पृ० १८२ 'भगवंत' नां आर्षरूपो]

—जूओ पालिप्र० पृ० ११६–११७–११८ अने एनां टिप्पण.

३	भगवंतेण, भगवंतेणं	भगवंतेहि, भगवंतेहिं, भगवंतेहिँ.
सं०–	भगवंत !, भगवंता !, भगवंतो !	भगवंता.

(शौ० मा० पै० भगवं, भगव !)

ए प्रमाणे बधां, ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर' नी प्रमाणे.

'भवंत (भवतु)

१	भवंतो (शौ० मा० पै० भवं) (मा० भवंते)	भवंते.
२	भवंतं	भवंते, भवंता.
३	भवंतेण, भवंतेणं	भवंतेहि, भवंतेहिं भवंतेहिँ.
सं०	भवन्त, भवंता, भवंतो	भवंता !

---

१ पालिमां 'भवंत' शब्दनां विशेष रूपो आ प्रमाणे छे:

१	भवंतो, भोंतो, भवंता	(बहुवचन)
३	भवता, भोता, भवंतेन	(एकवचन)
४–६	भवतो, भोतो, भवंतस्स	(,,)
सं०–	भो !, भंते !, भोंत !	(,,)
,,	भवंतो, भोंतो, भवंता, भोंता	(बहुवचन)

'संत' शब्दनुं पालिमां (सं० 'सद्भिः' उपरथी) 'सब्भि' रूप पण वपराय छे:—जूओ पालिप्र० पृ० ११८–११९–१२० अने तेनां टिप्पणो.

(शौ० मा० पै० भवं, भव)

(मा० भवंते, भंते)

ए प्रमाणे बधां, ते ते भाषा प्रमाणे 'सव्व' नी पेठे.

'भवंत (भवत्—वर्तमानकृदंत)

१	भवंतो (मा० भवंते)	भवंता.
२	भवंतं	भवंते, भवंता.
३	भवंतेण, भवंतेणं	भवंतेहि, भवंतेहिं, भवंतेहिँ.
सं०	भवन्त ! भवंतो ! भवंता ! (मा० भवंते !)	भवंता.

ए प्रमाणे बधां ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर' नी जेवां.

'अत्' छेडावाळां वर्तमानकृदंतनां पालिरूपो:

१ गच्छंत (गच्छत्—वर्तमानकृदंत)

१	गच्छं, गच्छंतो	गच्छंतो (गच्छं) गच्छंता.
२	गच्छंतं	गच्छंते.

शेष बधां 'भगवंत' प्रमाणे.

केटलांक 'अत्' छेडावाळां नामोनां पालिरूपोनी विशेषता आ प्रमाणे छे:

'महंत' (महत्) अने अरहंत (अर्हत्) शब्दना प्रथमाना एकवचनमां 'महा' अने 'अरहा' (आर्षप्रा० अरहा) रूप वधारे थाय छे.—पालि प्र० पृ० ११८–११९.

[1]भवमाण (भवतृ—वर्तमानकृदंत)

१	भवमाणो,	भवमाणा.
	(मा० भवमाणे)	
२	भवमाणं	भवमाणे, भवमाणा.
३	भवमाणेण,	भवमाणेहि, भवमाणेहिं,
	भवमाणेणं	भवमाणेहिँ.

शेष, ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर' नी जेवां.

भविस्संत (भविष्यत्—भविष्यत्कृदंत)

१	भविस्संतो	भविस्संता.
	(मा० भविस्संते)	
२	भविस्सतं	भविस्संते, भविस्संता.
३	भविस्संतेण,	भविस्संतेहि,
	भविस्संतेणं	भविस्संतेहिं,
		भविस्संतेहिँ.
सं०	भविस्संत ! भविस्संतो !	भविस्संता.
	भविस्संतो !	
	(मा० भविस्संते)	

(शौ० मा० पै० भविस्सं ![2] भविस्स !)

ए प्रमाणे बधां 'वीर' प्रमाणे.

भविस्समाण (भविष्यत्—भविष्यत्कृदंत)

भविस्समाणो भविस्समाणा.

---

१ कृदंतना आ 'अतृ' ने स्थाने 'अंत' अने 'माण' एवा बे आदेशो थाय छे—जुओ कृदंतप्रकरण.

२. संस्कृत 'भविष्यन् !' उपरथी.

(मा० भविस्समाणे)

भविस्समाणं	भविस्समाणे,
	भविस्समाणा.
भाविस्समाणेण,	भाविस्समाणेहि,
भाविस्समाणेणं	भविस्समाणेहिं,
	भविस्समाणेहिँ.

शेष, ते ते भाषा प्रमाणे ' वीर ' नी पेठे.

नान्यतरजाति

उपर जणावेलां नामोनां क्लीबलिंगी रूपो प्रथमा अने द्विती-यामां बराबर ' कुल ' नी जेवां थाय छे अने बाकी बधां ते ते भाषा प्रमाणे पुंलिंगी रूपोनी जेवां थाय छे, जेमके;

[1]भगवंत

१	भगवंतं	भगवंताणि, भगवंताइँ,
		भगवंताइं.

---

[1] ' भगवंत ' ना पालिरूपो (नान्यतरजाति)

१	भगवं, भगवंतं	भगवंता, भगवंतानि.
		भगवंति.
२	भगवंतं	भगवंते, भगवंतानि,
		भगवंति.

शेष, ' भगवंत ' नी पेठे.

' गच्छंत ' (गच्छत्) नां पालिरूपो

१	गच्छं, गच्छंतं	गच्छंता, गच्छंतानि.
२	गच्छंतं	गच्छंते, गच्छंतानि.

शेष, पुंलिंगी ' गच्छंत ' नी पेठे:—जूओ पालिप्र० पृ० १३८ अने एनां टिप्पण.

२	भगवंतं	भगवंताणि, भगवंताइँ, भगवंताइं.
सं०	भगवंत !	भगवंताणि, भगवंताइँ, भगवंताइं.

बाकी बधां पुंलिंगी 'भगवंत'नी पेठे.

अपभ्रंशरूपो

अपभ्रंशरूपो पण 'वीर' अने 'कुल'नी जेवां थाय छे. जेमके;

भगवंत (नरजाति)

१	भगवंतु, भगवंतो भगवंत, भगवंता	भगवंत, भगवंता.
२	भगवंतु, भगवंत, भगवंता	भगवंत, भगवंता.
३	भगवंतेण, भगवंतेणं भगवंतें	भगवंतेहिं, भगवंताहिं, भगवंतहिं.
४–६	भगवंतासु, भगवंतसु, भगवंतस्सु, भगवंताहो, भगवंतहो, भगवंत, भगवंता	भगवंताहं, भगवंतहं, भगवंत, भगवंता.
५	भगवंताहु, भगवंतहु, भगवंताहे, भगवंतहे	भगवंताहुं, भगवंतहुं.
७	भगवंति, भगवंते	भगवंताहिं, भगवंतहिं.
सं०	भगवंतु, भगवंतो, भगवंत, भगवंता	भगवंताहो, भगवंतहो, भगवंत, भगवंता.

भगवंत (नान्यतरजाति)

१	भगवंतु, भगवंत, भगवंता	भगवंताइं, भगवंतइं.
२	भगवंतु, भगवंत, भगवंता	भगवंताइं, भगवंतइं.

बाकी बधां 'भगवंत' नां अपभ्रंशरूपो प्रमाणे.

'अन्' छेडावाळां नामो (नरजाति)

१ 'अन्' छेडावाळां नामोना नकारांत अंगना छेवटना 'अन्' नो 'आण' विकल्पे थाय छे:

अद्धाण, अद्ध (अध्वन्), अप्पाण, अप्प (आत्मन्), उच्छाण, उच्छ (उक्षन्), गावाण, गाव (ग्रावन्) जुवाण, जुव (युवन्) तक्खाण, तक्ख (तक्षन्) पूसाण, पूस (पूषन्) बम्हाण, बम्ह (ब्रह्मन्), महवाण, महव (मघवन्), मुद्धाण, मुद्ध (मूर्द्धन्) रायाण, राय (राजन्) साण, स (श्वन्), सुकम्माण, सुकम्म (सुकर्मन्) इत्यादि.

२ 'अन्' नो 'आण' थया पछी ए 'आण' छेडावाळां नामोनां रूपो ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर' नी जेवां जाणवानां छे. जेमके;

अद्धाण

१	अद्धाणो (मा० अद्धाणे)	अद्धाणा.
२	अद्धाणं	अद्धाणे, अद्धाणा. इत्यादि.

रायाण

१	रायाणो	रायाणा
	(मा० लायाणे)	
२	रायाणं	रायाणे, रायाणा. इत्यादि.

सुकम्माण

१	सुकम्माणो	सुकम्माणा
	(मा० शुकम्माणे)	
२	सुकम्माणं	सुकम्माणे, सुकम्माणा. इत्यादि.

---

३ ज्यारे 'आण' थतो नथी त्यारे ए 'अन्' छेडावाळां नामोनां रूपो बनाववानी रीत आ प्रमाणे छे:

प्रत्ययो

प०—	+, ०	णो, ०
बी०—	इणं, ०	णो, ०
त०—	णा, ०	०
च०, छ०—	णो, ०	इणं, ०
पं०—	णो, ०	०
स०—	:०	०
सं०—	+, ०	णो, ०

१. ज्यां शून्य छे त्यां अकारांत 'वीर'नी जेवी प्रक्रिया समजवानी छे.

२. ज्यां + आ निशान छे त्यां 'अन्' छेडावाळा नामना अंत्य 'न्' नो 'आ' विकल्पे थाय छे.

३. 'णो' प्रत्यय पर रहेतां पूर्वना स्वरनो दीर्घ थाय छे.

४. 'इणं' प्रत्यय पर रहेतां पूर्वनो स्वर लोपाय छे.

पूस (पूसन्)

प०— पूसा, पूसो (मा०—पूशे) | पूसाणो, पूसा।

बी०— पूसिणं, पूसं | पूसाणो, पूसे, पूसा।

त०— पूसणा, पूसेण, पूसेणं | पूसेहि, पूसेहिं, पूसेहिँ।

च०, छ०—पूसाणो, पूसस्स (मा० पूशाह) | पूसिणं, पूसाण, पूसाणं। (मा० पूशाहँ)

पं०— पूसाणो, पूसत्तो, | पूसत्तो,
पूसाओ, पूसाउ, | पूसाओ, पूसाउ,
पूसाहि, | पूसाहि, पूसेहि,
पूसाहिंतो, | पूसाहिंतो, पूसेहिंतो,
पूसा | पूसासुंतो, पूसेसुंतो।
(शौ० पूसादो, पूसादु)
(मा० पूशादो, पूशादु)
(पै० पूसातो, पूसातु)

स०— पूसे, पूसम्मि पूसंसि | पूसेसु, पूसेसुं।

सं०— हे पूसा! हे पूसो, पूस! | हे पूसाणो, हे पूसा।

महव

१ महवा, महवो | महवाणो, महवा.
(शौ० [1]महवं)
(मा० महवे)

---

१ 'मघवं' पण थाय छे. आ रूप आर्षप्राकृतमां पण वपराएलुं छे: "मघवं पागसासणे"—कल्पसूत्र.

२	महविणं, महवं	महवाणो, महवे, महवा.
३	महवणा, महवेणं, महवेण	महवेहि, महवेहिं, महवेहिँ.
४–६	महवाणो, महवस्स	महविणं, महवाण, महवाणं.
	(मा० महवाह)	(मा० महवाहँ)

बाकी बधां ' पूस ' प्रमाणे

'अप्प (आत्मन्)

१. ' आत्मन् ' शब्दने तृतीयाना एकवचनमां ' णिआ ' अने ' णइआ ' प्रत्यय वधारे लागे छे.

---

१ ' अन् ' छेडावाळां नामोनां पालिरूपोः

[अन् ' छेडावाळां नामोनां पालिरूपो विशेष अनियमित होवाथी अहीं जरा वीगतथी आपेलां छेः–]

अत्त, आतुम (आत्मन्)

१	अत्ता, आतुमा	अत्ता, अत्तानो, आतुमानो.
२	अत्तानं, अत्तं, आतुमानं, आतुमं	अत्तानो, अत्ते, आतुमानो.
३	अत्तना, अत्तेन, आतुमेन	अत्तनेहि, अत्तनेभि, अत्तेहि, अत्तेभि, आतुमेहि, आतुमेभि.
४–६	अत्तनो, अत्तस्स, आतुमस्स	अत्तानं, आतुमानं.

प०	अप्पा, अप्पो	अप्पाणो, अप्पा।
	(मा० अप्पे)	
बी०	अप्पिणं, अप्पं	अप्पाणो, अप्पे, अप्पा।
त०	अप्पणिआ, अप्पणइआ, अप्पणा, अप्पेण, अप्पेणं	अप्पेहि, अप्पेहिं, अप्पेहिँ।
च०,-छ०-	अप्पाणो, अप्पस्स	अप्पिणं, अप्पाण, अप्पाणं।
	(मा० अप्पाह)	(मा० अप्पाहँ)

इत्यादि बधां रूपो ते ते भाषा प्रमाणे 'पूस' नी समान छे.

२ राय (राजन्)

१. तृतीया, पंचमी, षष्ठी अने सप्तमीना बहुवचनमां 'राजन्' शब्दनो 'राई' आदेश विकल्पे थाय छे.

५	अत्तना, अत्तस्मा, अत्तम्हा, आतुमस्मा, आतुमम्हा	अत्तनेहि, अत्तनेभि, अत्तेहि, अत्तेभि, आतुमेहि, आतुमेभि
७	अत्तनि, अत्ते, अत्तस्मिं, अत्तम्हि, आतुमे, आतुमस्मिं, आतुमम्हि	अत्तनेसु, आतुमेसु
८ सं०	अत्त! अत्ता! आतुम! आतुमा!	अत्तानो! अत्ता! आतुमानो!

२ राज (राजन्)

१	राजा	राजानो, राजा.
२	राजानं राजं	राजानो.
३	रञ्ञा, राजेन, राजिना	राजूहि, राजूभि, राजेहि, राजेभि.

२. 'णा' अने पंचमी तथा षष्ठीना 'णो' प्रत्यय पर रहेतां 'राजन्' शब्दनो 'रण्' आदेश विकल्पे थाय छे.

४—६	रञ्ञो (रञ्ञस्स)	रञ्ञं,
	राजिनो, राजस्स	राजूनं, राजानं.
५	रञ्ञा	राजूहि, राजूभि,
	राजस्मा, राजम्हा	राजेहि, राजेभि.
७	रञ्ञे, राजिनि,	राजुसु,
	राजस्मिं, राजम्हि	राजेसु.
८ सं०	राज, राजा	राजानो, राजा.

ब्रह्म (ब्रह्मन् प्रा० बम्ह)

१	ब्रह्मा	ब्रह्मानो (ब्रह्मा)
२	ब्रह्मानं, ब्रह्मं	,,
३—५	ब्रह्मुना (ब्रह्मना)	ब्रह्मेहि, ब्रह्मेभि.
		(ब्रह्मुहि, ब्रह्मुभि)
४—६	ब्रह्मस्स	ब्रह्मानं.
	ब्रह्मुनो	ब्रह्मूनं.
७	ब्रह्मनि ब्रह्मे	ब्रह्मेसु
८ सं०	ब्रह्म (ब्रह्मा)	ब्रह्मानो (ब्रह्मा)

अद्ध (अध्वन्)

१	अद्धा	अद्धा, अद्धानो
२	अद्धानं	अद्धाने
३—५	अद्धुना	अद्धानेहि, अद्धानेभि.
४—६	अद्धुनो	अद्धानं
७	अद्धनि अद्धाने	अद्धानेसु
८ सं०	अद्ध !	अद्धा ! अद्धानो !

३. 'णो', 'णा' अने सप्तमीना एकवचनमां ' राजन् ' शब्दनो ' राइ ' आदेश विकल्पे थाय छे.

विशेषताः

[शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशमां ' अन् ' छेडा-वाळां नामोना अंत्य ' न् ' नो संबोधनना एकवचनमां विकल्पे अनुस्वार थाय छे:

युव (युवन्=प्रा० जुव)

१	युवा (यूनो)	युवा, युवानो, युवाना
२	युवानं, युवं	युवाने, युवे.
३	युवाना, युवानेन, युवेन	युवानेहि, युवानेभि. युवेहि, युवेभि.
४–६	युवानस्स, युवस्स	युवानानं, युवानं.
५	युवाना, युवानस्मा, युवानम्हा	युवानेहि, युवानेभि. युवेहि, युवेभि.
७	युवाने, युवानस्मि, युवानम्हि, युवे, युवस्मि, युवम्हि	युवानेसु युवासु, युवसु.
८ सं०	युव, युवा, युवान, युवाना	युवानो युवाना.

[' मघव ' (मघवन्) नां रूपो ' युव ' जेवां अने ' मघवंत ' (मघवन्) नां रूपो ' गुणवंत 'नी जेवां.]

मुद्ध (मूर्धन्=प्रा० मुंढा)

१	मुद्धा	मुद्धा, मुद्धानो.
२	मुद्धं	मुद्धाने.

हे अप्पं !, अप्प !

(सं० भवन्) भवं, भव !]

(सं० भगवन्) हे भयवं !, भयव !.

हे रायं !, राय !.

हे सुकम्मं !, सुकम्म !.

३–५	मुद्धना	
७	मुद्धनि	मुद्धानेसु

शेष 'वीर'नी जेवां.

सा (श्वन्=प्रा० स, साण)

१	सा,	सा, सानो
२	सं, सानं	से, साने
३	सेन, साना	सेहि, सेभि. (साहि, साभि) सानेहि, सानेभि.
४–६	सस्स	सानं
४	साय	
५	सा, सस्मा, सम्हा, साना	सेहि, सेभि सानेहि, सानेभि
७	से, सस्मिं, सम्हि, साने	सासु
८ सं०	स	सा, सानो

आ उपरांत दळ्हधम्म (दढधम्म), पच्चक्खधम्म, गांडीवधन्व, विस्सकम्म, विवत्तच्छद (विवृत्तछद्म=विअट्टछउम), पुथुलोम, अथब्बन (अहब्वण) अने वत्तह (वृत्रहन्) वगेरे अनेक शब्दो 'अन्' छेडावाळा छे. तेमां 'पच्चक्खधम्म' अने 'गांडीवधन्व'नां रूपो 'सा'

प०—	राया,	रायाणो. राइणो,
	रायो	राया.
	(मा० लाये)	
बी०—	राइणं,	रायाणो, 'राइणो,
	रायं	राये, राया.
त०—	राइणा, रण्णा	राईहि, राईहिं, राईहिँ.
	रायेण, रायेणं	रायेहि, रायेहिं, रायेहिँ.
च० छ०—	रण्णो, राइणो	राईण, राईणं.
	रायस्स	रायाण, रायाणं.
	(ता०—रण्णे)	
	(मा० लायाह)	(मा० लायाहँ)
पं०—	रण्णो, राइणो,	राइत्तो, राईओ,
	रायत्तो, रायाओ,	राईउ, राईहि,
	रायाउ, रायाहि,	राईहिंतो, राईसुंतो,
	रायाहिंतो, राया	रायत्तो, रायाओ,
		रायाउ,
		रायाहि, रायेहि,
		रायाहिंतो, रायेहिंतो,
		रायासुंतो, रायेसुंतो.

(अन्) नी जेवां थाय छे. 'विस्सकम्म 'थी 'अहव्वन' सुधीना शब्दोनां रूपो 'वीर' नी जेवां थाय छे अने बाकी रहेला 'दळ्हधम्म' अने 'वत्तह' नां रूपोमां थोडी विशेषता छे ते पालिप्रकाशथी समजी लेवी—जूओ पालिप्र० पृ० १२१—१२९ अने एनां टिप्पणो.

१ सं० 'राज्ञः' उपरथी 'रण्णो' रूप पण थाय छे—जूओ म्न, ज्ञ—ण पृ० ३६ तथा पृ० ९७ विसर्ग=ओ.

(शौ० रायादो, रायादु)
(मा० लायादो, लायादु)
(पै० रायातो, रायातु)

स०— राइंसि, राइम्मि — राईसु, राईसुं
रायंसि, रायम्मि, राये — रायेसु, रायेसुं.

सं०— राया, रायो, राय. — रायाणो, राइणो, राया.
(शौ० पै० रायं, राय, राया, रायो)
(मा० लायं, लाय, लाया, लाये)

'अन्' छेडावाळां नामोनां प्राकृत रूपोनी साथे ज शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीनां साधारण रूपो आपेलां छे फक्त 'राजन्' शब्दनां पैशाचीरूपोमां आ एक खास विशेपता छे:

पैशाची:

एकवचन		बहुवचन	
त०—[1]राचिञा, रञ्ञा[2]	(राज्ञा)	बी०—राचिञो, रञ्ञो	(राज्ञः)
च० छ०—राचिञो, रञ्ञो	(राज्ञः)		
पं०— ,, ,,	,,		
सं०— राचिञि, रञ्ञि	(राज्ञि)		

नान्यतरजाति

उपर जणावेलां 'अन्' छेडावाळां नामोनां क्लीबलिंगी रूपो प्रथमा अने द्वितीयामां बराबर 'कुल'नी जेवां थाय छे अने बाकी बधां ते ते भाषा प्रमाणे पुंलिंगी रूपोनी जेवां थाय छे. जेमके;

---

१ सरखावो 'राजन्' नां पालिरूपो–पृ० १९३

२ जुओ ज्ञ=ञ मागधी (पृ० ३६) मागधीनी पेठे पैशाचीमां पण 'ज्ञ,' 'ण्य' अने 'न्य'नो 'ञ्ञ' थाय छे.

सुपूस, सुपूसाण (सुपूषन्)

१	सुपूसं[1],	सुपूसाणि, सुपूसाइँ सुपूसाइं
	सुपूसाणं	सुपूसाणाणि, सुपूसाणाइँ सुपूसाणाइं
२	सुपूसं,	सुपूसाणि, सुपूसाइँ सुपूसाइं
	सुपूसाणं	सुपूसाणाणि, सुपूसाणाइँ सुपूसाणाइं

शेष रूपो, ते ते भाषा प्रमाणे 'पूस' नी पेठे.

सुअप्प सुअप्पाण (सुआत्मन्)

१	सुअप्पं[2]	सुअप्पाणि, सुअप्पाइँ, सुअप्पाइं
	सुअप्पाणं	सुअप्पाणाणि, सुअप्पाणाइँ, सुअप्पाणाइं.
२	सुअप्पं	सुअप्पाणि. सुअप्पाइँ, सुअप्पाइं
	सुअप्पाणं	सुअप्पाणाणि, सुअप्पाणाइँ, सुअप्पाणाइं.

शेष, पुंलिंगी 'अप्प' नी पेठे

---

१ सुपूसं गयणं.

२ सुअप्पं कुलं.

सुराय, सुरायाण (सुराजन्)

१ सुरायं[1] सुरायाणि, सुरायाइँ,
सुरायाइं
सुरायाणं सुरायाणाणि, सुरायाणाइँ,
सुरायाणाइं.

२ सुरायं सुरायाणि, सुरायाइँ,
सुरायाइं
सुरायाणं सुरायाणाणि, सुरायाणाइँ,
सुरायाणाइं.

शेष बधां पुंलिंगी 'राजन्' नी जेवां

अपभ्रंशरूपो

ए नामोमां अपभ्रंशरूपो पण 'वीर' अने 'कुल' नी जेम थाय छे. जेमके;

पूस, पूसाण (पूषन्–नरजाति)

१ पूसु, पूसो, पूस, पूसा, पूसाणु, पूसाणो, पूसाण, पूसाणा — पूस, पूसा पूसाण. पूसाणा.

२ पूसु, पूस, पूसा, पूसाणु, पूसाण, पूसाणा — पूस, पूसा, पूसाण, पूसाणा

३ पूसेण, पूसेणं, पूसें, पूसाणेण, पूसाणेणं, पूसाणें — पूसेहिं, पूसाहिं, पूसहिं, पूसाणेहिं, पूसाणाहिं, पूसाणहिं.

---

१ सुरायं नयरं.

	एकवचन	बहुवचन
४–६	पूसासु, पूससु, पूसस्सु पूसाहो, पूसहो, पूस, पूसा, पूसाणासु, पूसाणसु, पूसाणस्सु, पूसाणाहो, पूसाणहो, पूसाण, पूसाणा	पूसाहं, पूसहं पूस, पूसा पूसाणाहं, पूसाणहं पूसाण, पूसाणा.
९	पूसाहु, पूसहु, पूसाहे, पूसहे पूसाणाहु, पूसाणहु, पूसाणाहे, पूसाणहे	पूसाहुं, पूसहुं पूसाणाहुं, पूसाणहुं
७	पूसि, पूसे पूसाणि, पूसाणे	पूसाहिं, पूसहिं पूसाणाहिं, पूसाणहिं.
८ (सं०)	पूसु, पूसो, पूस, पूसा पूसाणु, पूसाणो, पूसाण, पूसाणा	पूसाहो, पूसहो पूस, पूसा पूसाणाहो, पूसाणहो, पूसाण, पूसाणा.

सुपूस, सुपूसाण (नान्यतरजाति)

१	सुपूसु, सुपूस, सुपूसा	सुपूसाइं, सुपूसइं
२	सुपूसु, सुपूस, सुपूसा	सुपूसाइं, सुपूसइं

बाकी बधां, ' पूस ' नां अपभ्रंश रूपो प्रमाणे.

ए ज प्रमाणे राय, अप्प वगेरे 'अन्' छेडावाळां नामोनां बधां अपभ्रंश रूपो करी लेवानां छे.

[पूस, अप्प, राय वगेरे शब्दोनां शौरसेनी रूपोनो पण अपभ्रंशमां उपयोग थइ शके छे]

'अस्' छेडावाळां नामो ([1]नरजाति)

प्राकृतमां अने पालिमां 'अस्' छेडावाळां नामोनां रूपो [2]अकारांत शब्दोनी जेवां थाय छे.[3] जेमके;

सुमण (सुमनस्)

१	सुमणो	सुमणा
२	सुमणं	सुमणे, सुमणा
३	सुमणेण, सुमणेणं	सुमणेहि, सुमणेहिं, सुमणेहिँ

इत्यादि बधां ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर' नी जेवां समजवां.

---

१ जुओ पृ० १२३ (नामनी जातिओ)

२ पृ० १०—अंत्यव्यंजनलोप.

३ पालिमां 'पुमस्' (सं० पुंस्) शब्दनां रूपोमां विशेषता छे ते आ प्रमाणे:

पुम (पुमस्)

१	पुमा	पुमा
	पुमो	पुमानो
२	पुमानं	पुमानो
	पुमं	पुमाने, पुमे
३	पुमाना	पुमानेहि,
	पुमुना	पुमानेभि,
	पुमेन	पुमेहि, पुमेभि

ए प्रमाणे सुवय (सुवचस्) सुमेह (ध) (सुमेधस्) विमण (विमनस्) पवय (प्रवयस्) अने दुव्वय (दुर्वचस्) वगेरे शब्दोनां रूपो समजवां.

स्त्रीलिंग

स्त्रीलिंग नामो पांच प्रकारनां छे, जेमके—आकारांत, इकारांत, ईकारांत, उकारांत, ऊकारांत ।

आकारांत

१ प्राकृतमां आकारांत नामो बे जातनां छे, जेमके—केटलांक आकारांत नामोनुं मूळरूप (संस्कृतमां) अकारांत होय छे ते अने केटलांक आकारांत नामोनुं मूळरूप (संस्कृतमां) अकारांत नथी

४–६	पुमुनो	पुमानं
	पुमस्स	
५	पुमाना	पुमानेहि, पुमानेभि
	पुमुना	
	पुमा, पुमस्मा	पुमेहि, पुमेभि
	पुमम्हा	
७	पुमाने	पुमानेसु
	पुमे	पुमासु, पुमेसु
	पुमस्मिं, पुमम्हि	
८ सं०—पुमं,		पुमानो
	पुम	पुमा

'चन्द्रमस्' शब्दनुं प्रथमाना एकवचनमां 'चंदिमा' रूप थाय छे अने बाकीनां रूपो अकारांतनी जेवां थाय छेः—जूओ पालिप्र० पृ० १३०–१३१ अने एनां टिप्पणो.

होतुं ते. [ए बन्ने जातनां आकारांत नामोनां रूपोमां थोडुं अंतर छे माटे ज अहीं ए विभाग जणाव्यो छे.]

२ स्त्रीलिंगे थनार (संस्कृत) अकारांत नामना छेवटना 'अ' नो 'आ' थाय छेः रम=रमा इत्यादि।

३ 'विद्युत्' शब्दने वर्जीने स्त्रीलिंगी व्यंजनांत शब्दना छेवटना व्यंजननो 'आ' के 'या' थाय छेः वाच्=वाआ, वाया इत्यादि।

४ स्त्रीलिंगी रकारांत शब्दना छेवटना 'र' नो 'रा' थाय छेः गिर्=गिरा। धुर्=धुरा। पुर्=पुरा इत्यादि।

५ नीचेनां संस्कृत नामोनां प्राकृत रूपो आ रीते थाय छेः

[1]अप्सरस्–अच्छरसा। आशिष्–आसिसा। दुहितृ–दुहिआ, धूआ। ननान्द–नणंदा। नौ–नावा। पितृष्वसृ–पिउसिआ, पिउच्छा। बाहु–बाहा। माता–माआ[2], [3]माय (अ) रा। मातृष्वसृ-माउसिआ, माउच्छा। स्वसृ–ससा।

ईकारांत

१ स्त्रीलिंगे थनारा विशेषणवाचक अने व्यक्तिवाचक शब्दो प्राकृतमां आकारांत अने ईकारांत बने छेः

नीला, नीली (नीला), हसमाणी, हसमाणा (हसमाना) सव्वी, सव्वा (सर्वा) सुप्पणही, सुप्पणहा (शूर्पनखा) इत्यादि।

२ संस्कृतमां जे शब्दो आ जणावेला (हेम० २–४–२० अने पाणि० ४–१–१५ (सूत्रांक–४७०) सूत्रथी ईकारांत बने छे ते शब्दोने प्राकृतमां आकारांत अने ईकारांत समजवाना छेः

---

१ आ शब्दोमांना केटलाक शब्दो तो आगळ आवी गया छे– जुओ शब्दविशेषविकार पृ० ८४–८६ नि० १०८–१०९

२ आ शब्दनो माता–जननी–अर्थ छे.

३ आ शब्दनो देवी अर्थ छे.

ओपगवी, ओपगवा (औपगवी), वेई, वेआ (वैदी), सुप्पणेयी, सुप्पणेया (सौपर्णेयी), अक्खिई, अक्खिआ (आक्षिकी), थेणी, थेणा (स्त्रैणी) पुंम्ही, पुंम्हा (पौंस्नी), साहणी, साहणा (साधनी) कुरुचरी, कुरुचरा (कुरुचरी) इत्यादि ।

३ छाया अने हरिद्रा शब्द प्राकृतमां ईकारांत पण बने छेः छाही, छाया (छाया), हलद्दी, हलद्दा (हरिद्रा)

स्त्रीलिंगी नामोने लागता प्राकृत प्रत्ययो

प०—	०	[1]आ, उ, ओ, ०
बी०—	म्	[1]आ, उ, ओ, ०
त०—	अ, [1]आ, इ, ए	हि, हिं, हिँ
च०, छ०—	अ, [2]आ, इ ए	ण, णं
पं०—	अ, [2]आ, इ, ए, त्तो, ओ, उ, हिंतो	त्तो, ओ, उ, हिंतो, सुंतो
स०—	अ, [2]आ, इ, ए	सु, सुं

प्राकृत प्रत्ययोने लगता नियमो

१ 'त्तो' अने 'म्' सिवायना प्रत्ययो पर रहेतां पूर्वनो ह्रस्व स्वर दीर्घ थाय छे.

२ 'म्' प्रत्यय पर रहेतां पूर्वनो दीर्घ स्वर ह्रस्व थाय छे.

३ ज्यां शून्य (०) छे त्यां शब्दोनुं मूळरूप पण वपराय छे अने जो मूळरूप ह्रस्वांत होय तो तेने दीर्घांत करीने वापरवानुं छे.

---

१ आ प्रत्यय इकारांत नामने ज लागी शके छे.

२ आ प्रत्ययने आकारांत नामने लगाडवानो नथी.

४ संबोधनना एकवचनमां ईकारांत अने ऊकारांत नामोनो अंत्य स्वर ह्रस्व, थाय छे अने बहुवचन, प्रथमानी जेवुं थाय छे.

५ संबोधनना एकवचनमां इकारांत अने उकारांत नामोना अंत्य स्वरनो दीर्घ विकल्पे थाय छे अने बहुवचन प्रथमानी सरखुं थाय छे.

६ जे आकारांत शब्दोनुं मूळ (संस्कृत) रूप अकारांत होय छे, ते शब्दोना अंत्य 'आ'कारनो, संबोधनना एकवचनमां 'ए' विकल्पे थाय छे अने बहुवचन प्रथमानी सरखुं थाय छे.

७ संबोधनना एकवचनमां, बीजा [1]आकारांत शब्दोनुं मूळ-रूप ज वपराय छे अने बहुवचन प्रथमानी सरखुं थाय छे.

विशेषता

शौरसेनी, पैशाची अने मागधीमां पण स्त्रीलिंगी नामोने प्राकृतना ज प्रत्ययो लगाडवाना छे. मात्र मागधीमां छट्ठी विभक्तिमां फेर छे अने ए आ प्रमाणे छे:

फक्त आकारांत नामोने मागधीमां छट्ठीना एकवचनमां 'ह' प्रत्यय अने बहुवचनमां 'हँ' प्रत्यय लागे छे जेमके,

मालाह	मालाहँ

स्त्रीलिंगी नामोने लागता अपभ्रंश प्रत्ययो

	एकव०	बहुव०
प०—	०	उ, ओ, ०
बी०—	०	उ, ओ, ०

---

१ जूओ पृ० २०४ नि० ५.

त०—	ए	हिं
च० छ०—	हे, ०	हुं, ०
पं०—	हे	हु
स०	हि	हिं
सं०—	०	हो, ०

अपभ्रंश प्रत्ययने लगता नियमोः

१ अपभ्रंशना प्रत्ययो लागतां नामनो अंत्य स्वर ह्रस्व अने दीर्घ थाय छे.

२ ज्यां शून्य छे त्यां पण उपरनो नियम लागु थाय छे.

प्राकृत रूपाख्यानो

[1]माला

प०—	माला	मालाउ, मालाओ, माला
बी०—	मालं	मालाउ, मालाओ, माला

---

[1] आकारांत स्त्रीलिंगी शब्दनां पालिरूपोः

माला

१	माला	माला, मालायो.
२	मालं	माला, मालायो.
३—५	मालाय	मालाहि, मालाभि.
४—६	मालाय	मालानं.
७	मालाय मालायं	मालासु.
८ सं०—माले		माला, मालायो.

—जुओ पालिप्र० पृ० ९९—१००—१०१

त०—	मालाअ, मालाइ, मालाए	मालाहि, मालाहिं, मालाहिँ
च०,छ०—	मालाअ, मालाइ, मालाए	[1]मालाण, मालाणं
	(मा० मालाह)	(मा० मालाहँ)
पं०—	मालाअ, मालाइ, मालाए, मालत्तो, मालाओ, मालाउ, मालाहिंतो	मालत्तो, मालाओ, मालाउ, मालाहिंतो मालासुंतो
स०—	मालाअ, मालाइ, मालाए	मालासु, मालासुं
सं०—	[2]माले !, माला !	मालाउ !, मालाओ !, माला !

ए रीते नावा (नौ) गउआ (गौका) सद्धा (श्रद्धा), मेहा (मेधा) पण्णा (प्रज्ञा), तण्हा (तृष्णा), विज्जा (विद्या), पुच्छा (पृच्छा) चिंता, छुहा (क्षुध्-छुह) कउहा (ककुभ्-कउह), निसा (निशा) अने दिसा (दिशा) वगेरे आकारांत शब्दोनां रूपाख्यानो 'माला' नी पेठे छे.

---

१ आकारांत स्त्रीलिंगी शब्दोने षष्ठीना बहुवचनमां मागधीनो 'हँ' प्रत्यय पण लागे छे. जेमके—सरिआ + सरिआणं, सरिआहँ। माला+ मालाणं, मालाहँ।

२ 'अम्मा' शब्दनुं संबोधननुं एकवचन 'अम्मो' पण थाय छे.

वाया (वाचा)

प०—	वाया	वायाउ, वायाओ, वाया.
सं०—	वाया	वायाउ, वायाओ, वाया.

शेष रूपो 'माला' नी जेवां.

ए रीते अच्छरसा (अप्सरस्), आसिसा (आशिष्), धूआ, दुहिआ ((दुहितृ), नणंदा (ननान्दृ), नावा (नौ), पिउच्छा, पिउसिआ (पितृष्वसृ), बाहा (बाहु), माआ, माअ (य) रा, (मातृ) माउसिआ, माउच्छा (मातृष्वसृ) अने ससा (स्वसृ) वगेरे आकारांत शब्दोनां रूपाख्यानो समजवानां छे.

गइ[1] (गति)

प०—	गई	गईउ, गईओ, गई
बी०—	गइं	गईउ, गईओ, गई

---

१ इकारांत स्त्रीलिंगी शब्दनां पालिरूपो :

रत्ति (रात्रि)

१	रत्ति	रत्ती, रत्तियो
२	रत्तिं	,, ,,
३—५	रत्तिया	रत्तीहि, रत्तीभि.
४—६	रत्तिया	रत्तीनं
७	रत्तिया	रत्तीसु
	रत्तियं	
८	रत्ति	रत्ती, रत्तियो

—जूओ पालिप्र० पृ० १०१—१०२

त०—	गईअ, गईआ,	गईहि, गईहिं,
	गईइ, गईए	गईहिँ
च०, छ०—	गईअ, गईआ,	गईण, गईणं
	गईइ, गईए	
पं०—	गईअ, गईआ,	
	गईइ, गईए	
	गइत्तो, गईओ,	गइत्तो, गईओ, गईउ,
	गईउ, गईहिंतो	गईहिंतो, गईसुंतो
स०—	गईअ, गईआ,	गईसु, गईसुं
	गईइ, गईए	([1]गइसु, गइसुं)
सं०—	गई ! गइ !	गईउ, गईओ, गई

ए प्रमाणे जुत्ति (युक्ति) माइ (मातृ) भूमि, जुवइ (युवति) धूलि, रइ (रति), बुद्धि, मइ (मति), दिहि, धिइ (धृति) अने सिप्पि, सुत्ति (शुक्ति) वगेरे इकारांत शब्दोनां रूपाख्यानो समजवानां छे

[सं० 'रात्र्यः' उपरथी पालिमां 'रत्यो,' 'रात्र्या' अने 'रात्र्याः' उपरथी 'रत्या,' 'रात्र्याम' उपरथी रत्यं अने 'रत्तिं' तथा 'रात्रौ' उपरथी 'रत्तो' रूपो पण बने छे]

१ जूओ हे० प्रा० व्या० ८–३–१६

धेणु (धेनु)

प०—	धेणू	धेणूउ, धेणूओ, धेणू
बी०—	धेणुं	धेणूउ, धेणूओ, धेणू
त०—	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूहि, धेणूहिं, धेणूहिँ
च०, छ०—	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूण, धेणूणं
पं०—	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए धेणुत्तो, धेणूओ, धेणूउ, धेणूहिंतो	धेणुत्तो, धेणूओ, धेणूउ, धेणूहिंतो, धेणूसुंतो
स०—	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूसु, धेणूसुं
सं०—	धेणू ! धेणु !	धेणूउ, धेणूओ, धेणू

१ उकारांत स्त्रीलिंगी शब्दनां पालिरूपो:

यागु (यवागू)

१	यागु	यागू, यागुयो.
२	यागुं	,, ,,
३-५	यागुया	यागूहि, यागूभि.
४-६	यागुया	यागूनं.
७	यागुया यागुयं	यागूसु.
८ सं०	यागु	यागू, यागुयो.

—जूओ पालिप्र० पृ० १०६–१०७

ए प्रमाणे गउ, कच्छु, विज्जु (विद्युत्), उज्जु (ऋजु), पियंगु (प्रियङ्गु) माउ (मातृ) दद्दु (दद्रु) पट्टु (पटु), गुरु, लहु (लघु) अने कण्डु वगेरे उकारांत शब्दोनां रूपो 'धेणु' नी पेठे समजवानां छे.

---

[1]नई (नदी)

प० —	नई	नईआ, नईउ, नईओ, नई
बी० —	नई	नईआ, नईउ, नईओ, नई
त० —	नईअ, नईआ, नईइ, नईए	नईहि, नईहिं, नईहिँ

---

१ ईकारांत स्त्रीलिंगी शब्दनां पालिरूपो:

नदी

१	नदी	नदी, नदियो (नज्जो)
२	नदिं, नदियं	,, ,, ,,
३–५	नदिया (नज्जा)	नदीहि, नदीभि.
४–६	नदिया (नज्जा)	नदीनं
७	नदिया (नज्जा) (नज्जं)	नदीसु
८ सं०	नदि	नदी, नदियो (नज्जो)

—जुओ पालिप्र० पृ० १०३–१०४–१०५–१०६ तथा एनां टिप्पणो.

[सं० नद्यः, नद्या, नद्याः अने नद्याम् उपरथी पालिमां उपर्युक्त नज्जो, नज्जा, नज्जा अने नज्जं रूपो बनेलां छे–जुओ पृ० ३३ अं० २७–द्य, द्य, र्य=ज]

च०, छ०—	नईअ, नईआ, नईइ, नईए	नईण, नईणं
पं०—	नईअ, नईआ, नईइ, नईए, नईतो, नईओ, नईउ, नईहिंतो	नइत्तो, नईओ, नईउ, नईहिंतो, नईसुंतो
स०—	नईअ, नईआ, नईइ, नईए	नईसुं, नईसु
सं०—	नइ !	नईआ, नईउ, नईओ, नई

ए प्रमाणे गाइ (गो) वावी (वापी), कयली (कदली), नारी, कुमारी, तरुणी, समणी (श्रमणी), साहुवी, [1]साहुणी(साध्वी), पुहवी (पृथ्वी), वाराणसी, तणुवी (तन्वी), इत्थी-थी (स्त्री) अने बहिणी (भगिनी) वगेरे ईकारांत शब्दोनां रूपाख्यानो 'नई' नी पेठे छे.

[2]वहू (वधू)

प०—	वहू	वहूउ, वहूओ, वहू
बी०—	वहुं	वहूउ, वहूओ, वहू

१ जुओ पृ० ४३–वी–उवी अने ते उपरनुं टिप्पण.

२ ऊकारांत स्त्रीलिंगी शब्दनां पालिरूपो:

वधू (प्रा० वहू)

१	वधू	वधू, वधुयो.
२	वधुं	,, ,,
३–५	वधुया	वधूहि, वधूभि,
४–६	वधुया	वधूनं.

त० —	वहूअ, वहूआ,	वहूहि, वहूहिं, वहूहिँ
	वहूइ, वहूए	
च०, छ० —	वहूअ, वहूआ,	वहूण, वहूणं
	वहूइ, वहूए	
पं० —	वहूअ, वहूआ,	
	वहूइ, वहूए	
	वहुत्तो, वहूओ,	वहुत्तो, वहूओ, वहूउ,
	वहूउ, वहूहिंतो	वहूहिंतो, वहूसुंतो
स० —	वहूअ, वहूआ,	वहूसु, वहूसुं
	वहूइ, वहूए	
सं० —	वहु !	वहूआ, वहूउ, वहूओ, वहू

ए प्रमाणे अज्जू (आर्या) पङ्गू, कणेरू, वामोरू, कद्दू (कद्रु) पीणोरू (पीनोरु) अने कक्कंधू (कर्कन्धू) वगेरे ऊकारांत शब्दोनां रूपाख्यानो समजवानां छे.

प्राकृतनां स्त्रीलिंगी रूपाख्यानोनी पेठे शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीनां पण रूपाख्यानो समजवानां छे—शौरसेनीमां, मागधीमां अने अपभ्रंशमां पंचमीना एकवचनमां (प्राकृतना 'ओ' अने 'उ' ने बदले) 'दो' अने 'दु' प्रत्यय वापरवाना छे, पैशाचीमां एने बदले 'तो' अने 'तु' वापरवाना छे अने मागधीनी जे खास विशेषता छे ते जणावी छे.[1]

---

७ वधुया — वधूसु.
वधुयं
८ स०—वधु — वधू, वधुयो
—जूओ पालिप्र० पृ० १०७–१०८

१ जूओ पृ० २०८

अपभ्रंशरूपाख्यानो

माला

१	माला, माल	मालाउ, मालउ,
		मालाओ, मालओ
		माल, माला.
२	माला, माल	मालाउ, मालउ,
		मालाओ, मालओ
		माल, माला.
३	मालाए, मालए	मालाहिं, मालहिं.
४—६	मालाहे, मालहे	मालाहु, मालहु,
	माला, माल	माला, माल
५	मालाहे, मालहे	मालाहु, मालहु
	मालत्तो, मालादो	मालत्तो, मालादो
	मालादु,	मालादु
	मालाहिंतो,	मालाहिंतो, मालासुंतो
७	मालाहि, मालहि	मालाहिं, मालहिं
८ सं०	माला, माल	मालाहो, मालहो
		माल, माला

मइ

१	मइ, मई	मइउ, मईउ
		मइओ, मईओ
		मइ, मई
२	मइ, मई	मइउ, मईउ
		मइओ, मईओ
		मइ, मई
३	मइए, मईए	मइहिं, मईहिं

४–६	मइहे, मईहे	मइहु, मईहु.
	मइ, मई	मइ, मई.
५	[1]मइहे, मईहे	मइहु, मईहु.
७	मइहि, मईहि	मइहिं, मईहिं.
८ सं०	मइ, मई	मइहो, मईहो, मइ, मई.

पइट्ठी (प्रविष्टा–पविट्ठा)

१	पइट्ठी, पइट्ठि	पइट्ठिउ, पइट्ठीउ, पइट्ठिओ, पइट्ठीओ, पइट्ठी, पइट्ठि.
२	पइट्ठी, पइट्ठि	पइट्ठिउ, पइट्ठीउ, पइट्ठिओ, पइट्ठीओ, पइट्ठी, पइट्ठि.
३	पइट्ठिए, पइट्ठीए	पइट्ठिहिं, पइट्ठीहिं.
४–६	पइट्ठिहे, पइट्ठीहे	पइट्ठिहु, पइट्ठीहु,
	पइट्ठी, पइट्ठि	पइट्ठी, पइट्ठि.
५	[1]पइट्ठिहे, पइट्ठीहे	पइट्ठिहु, पइट्ठीहु.
७	पइट्ठिहि, पइट्ठीहि	पइट्ठिहिं, पइट्ठीहि
८ सं०	पइट्ठि, पइट्ठी	पइट्ठिहो, पइट्ठीहो पइट्ठी, पइट्ठि

धेणु

१	धेणु, धेणू	धेणुउ, धेणूउ धेणुओ, धेणूओ

१ 'माला'नां पंचमीना रूपोनी पेठे अहीं मइत्तो, पइट्ठित्तो वगेरे रूपो पण समजवां–जूओ पृ० २१५

		धेणु, धेणू.
२	धेणु, धेणू	धेणुउ, धेणूउ धेणुओ, धेणूओ, धेणु, धेणू.
३	धेणुए, धेणूए	धेणुहिं, धेणूहिं.
४–६	धेणुहे, धेणूहे धेणु, धेणू	धेणुहु, धेणूहु, धेणु, धेणू .
५	धेणुहे, धेणूहे	धेणुहु, धेणूहु.
७	धेणुहि, धेणूहि	धेणुहिं, धेणूहिं.
८	सं०—धेणु, धेणू	धेणुहो, धेणूहो, धेणु, धेणू.

वहू

१	वहु, वहू	वहुउ, वहूउ वहुओ, वहूओ, वहु, वहू.
२	वहु, वहू	वहुउ, वहूउ वहुओ, वहूओ, वहु, वहू.
३	वहुए, वहूए	वहुहिं, वहूहिं.
४–६	वहुहे, वहूहे, वहु, वहू	वहुहु, वहूहु, वहु, वहू.
५	वहुहे, वहूहे	वहुहु, वहूहु

७ वहुहि, वहूहि वहुहिं, वहूहिं.

८ सं०–वहु, वहू वहुहो, वहूहो

वहु, वहू.

ए प्रमाणे बधा आकारांत, इकारांत, ईकारांत, उकारांत अने ऊकारांत शब्दोनां अपभ्रंशरूपो बनावी लेवानां छे.

---

[1]सर्वादि (स्त्रीलिंग)

स्त्रीलिंगी सर्वादि शब्दोनां प्राकृतरूपो, शौरसेनीरूपो, मागधीरूपो, पैशाचीरूपो, अने अपभ्रंशरूपो पूर्वे जणावेला साधारण स्त्रीलिंगी शब्दो प्रमाणे समजवानां छे.

केटलाक स्त्रीलिंगी सर्वादि शब्दोनां प्राकृत रूपोनी विशेषता आ प्रमाणे छे:

[स्त्रीलिंगी सर्वादि शब्दोना 'आकारांत' अंगनां रूपो 'माला'नी जेवां करवानां छे. ईकारांत अंगनां रूपो 'नई'नी जेवां करवानां छे अने उकारांत अंगनां रूपो 'धेणु'नी जेवां करवानां छे].

---

१ स्त्रीलिंगी सर्वादि शब्दोनां पालिरूपो--

सब्बा (सर्वा) नां वधारानां रूपोः

४–६ सब्बस्सा (सं० सर्वस्याः) सब्बासं (सं० सर्वासाम्)

सब्बासानं

७ सब्बस्सं (सं० सर्वस्याम्)–जुओ पालिप्र० पृ० १४० अने टिप्पण.

बाकी बधां 'माला'नां पालिरूपो जेवां.

[1]ती, ता, [2]णी, णा (तत्[3])

१	सा	तीआ, तीउ, तीओ, ती,
		ताउ, ताओ, ता.

---

१ पेली अने बीजीना एकवचनमां तथा छट्ठीना बहुवचनमां आ ईकारांत अंगनो प्रयोग थतो नथी.

२ जूओ पृ० १४१ नुं 'ण' उपरनुं टिप्पण.

३ ता (तद्) नां वधारानां रूपो:

१	सा	
३–५	तस्सा (सं० तस्याः)	ताहि, ताभि.
	ताय	नाहि, नाभि.
	नस्सा	
	नाय	
	अस्सा	
४–६	तस्साय, तस्सा ताय { सं० तस्यै तस्याः }	तासं (सं० तासाम्) तासानं
	नस्साय, नस्सा	नासं, नासानं
	नाय	
	अस्साय, अस्सा	आसं, आसानं
	तिस्साय, तिस्सा	सानं
७	तस्सं (सं० तस्याम्)	
	तस्सा	
	नस्सं, नस्सा	
	अस्सं, अस्सा	
	तिस्सं, तिस्सा	
	तायं, ताय	
	नायं, नाय	

बाकी बधां 'माला' नी पेठे.

—जूओ पालिप्र० पृ० १४३ अने टिप्पण.

२	तं	तीआ, तीउ, तीओ, ती,
	णं	ताउ, ताओ, ता.
३	तीअ, तीआ, तीइ, तीए,	तीहि, तीहिं, तीहिँ,
	ताअ, ताइ, ताए	ताहि, ताहिं, ताहिँ.
	(पै० नाए)	
४–६	से,	सिं,
	(तास) तिस्सा, तीसे	(तेसिं)
	तीअ, तीआ, तीइ, तीए,	
	ताअ, ताइ, ताए	ताण, ताणं.
स०–	(ताहिं) तीअ, तीआ,	
	तीइ, तीए,	
	ताअ, ताइ, ताए.	

शेष रूपो 'नई' अने 'माला'नी पेठे.

['णी' अने 'णा' अंगनां रूपो पण 'नई' अने 'माला'नी पेठे थाय छे]

---

[1]जी, जा (यत्)

१	जा	जीआ, जीउ, जीओ, जी,
		जाउ जाओ, जा.
२	जं	जीआ, जीउ, जीओ, जी,
		जाउ, जाओ, जा.
४–६	जिस्सा, जीसे.	जाण, जाणं.
	जीअ, जीआ,	
	जीइ, जीए,	
	जाअ, जाइ,	
	जाए	

---

१ जुओ पृ० २१९ उपरनुं टिप्पण १.

७ (जाहिं), जीअ, जीआ.
जीइ, जीए,
जाअ, जाइ,
जाए

शेष रूपो 'नई' नी अने 'माला' नी जेवां.

---

[1]की, का (किम्)

१	का	कीआ, कीउ, कीओ, की, काउ, काओ, का.
२	कं	कीआ, कीउ, कीओ, की, काउ, काओ, का.

४–६ किस्सा, कीसे, (कास)
कीअ, कीआ, कीइ, कीए
काअ, काइ, काए काण, काणं.

७ (काहिं), कीअ, कीआ,
कीइ, कीए,
काअ, काइ, काए

शेष रूपो 'नई' अने 'माला' नी जेवां.

इमा, [2]इमी (इदम्)

१	इमिआ, इमा, इमी	इमीआ, इमीउ, इमीओ, इमी,

१ जुओ पृ० २१९ उपरनुं टिप्पण १.

२ इम (इदम्) नां पालिरूपो:

१	अयं	इमा, इमायो.
२	इमं	,, ,,

		इमाउ, इमाओ,
		इमा.
३	इमीअ, इमीआ, इमीइ,	इमीहि, इमीहिं,
	इमीए,	इमीहिँ
	इमाअ, इमाइ, इमाए	इमाहि, इमाहिं,
	(पै० नाए)	इमाहिँ
		(आहि, आहिं,
		आहिँ)
४–६	से,	सिं.
	इमीअ, इमीआ, इमीइ, इमीए,	इमीण, इमीणं,
	इमाअ, इमाइ, इमाए	इमाण, इमाणं,

शेष रूपो ' नई ' अने ' माला ' नी जेवां.

३–५	इमाय	इमाहि, इमाभि.
४–६	इमाय,	इमासं, इमासानं.
	इमिस्सा, इमिस्साय	
	अस्सा, (सं० अस्याः)	
	अस्साय (सं० अस्यै)	
७	इमायं,	इमासु
	इमिस्सं,	
	अस्सं (सं० अस्याम्)	

—जुओ पालिप्र० पृ० १४५–१४६.

एआ, [1]एई

१	एसा, एस, इणं, इणमो	एईआ, एईउ, एईओ, एई, एआउ, एआओ, एआ.
४–६	से, एईअ, एईआ, एईइ, एईए, एआअ, एआइ, एआए	सिं, एईण, एईणं, एआण, एआणं.

शेष रूपो 'नई' अने 'माला' नी जेवां

---

[2]अमु (अदस्)

१	अह, अमू	अमूउ, अमूओ, अमू.

शेष 'धेणु' वत्

---

१ एता (एतद्) नां पालिरूपो:

१	एसा
३–५	एताय, एतिस्सा (सं० एतस्याः)
४–६	एताय, एतिस्सा, एतिस्साय { सं० एतस्यै एतस्याः }
७	एताय, एतायं एतिस्सं, एतस्सं (सं० एतस्याम्)

बाकी बधां 'माला' नी पेठे

—जुओ पालिप्र० पृ० १४४.

[जुओ पृ० १४६, १ टिप्पण]

---

२ 'अमु' नां पालिरूपो:

१	असु, अमु,	अमू, अमुयो.
२	अमुं	अमू, अमुयो.
३–५	अमुया	अमूहि, अमूभि.
४–६	अमुया, अमुस्सा	अमूसं, अमूसानं

ऋकारांत (स्त्रीलिंग)

ऋकारांत स्त्रीलिंगी 'मातृ' शब्दनां 'माआ' अने 'मायरा' आवां बे रूपो जूदा जूदा अर्थमां थाय छे ए आगळ जणावेलुं छे, एथी एनां शौरसेनी वगेरेनां बधां रूपो 'वाया' नी जेवां समजवानां छे, जेमके;

[1]माआ, मायरा (मातृ)

प०	माआ,	माआउ, माआओ, माआ,
	मायरा	मायराउ, मायराओ, मायरा.

७	अमुयं	अमूसु
	अमुस्सं	

—जूओ पालिप्र० पृ० १४८

१ जूओ पृ० २०४, नि० ५—'मायर' ने बदले 'माअर' पण थइ शके छे.

२ ऋकारांत स्त्रीलिंगी 'मातु' शब्दनां पालिरूपोः

मातु (मातृ)

१	माता	माता, मातरो.
२	मातरं	माता, मातरे.
३-५	मातरा	मातरेहि, मातरेभि.
	मातुया	मातूहि, मातूभि.
	मत्या	
४-६	मातु	मातरानं, मातानं,
	मातुया	मातूनं
	मत्या	
७	मातरि	मातरेसु,
	मातुया	मातूसु.
	मत्या	
	मातुयं, मत्यं	
८	सं०—मात, माता	माता, मातरो.

—जूओ पालिप्र० पृ० १०८-१०९-११० अने एनां टिप्पण.

बी०— माअं	माआउ, माआओ, माआ,
मायरं	मायराउ, मायराओ, मायरा.
त०— माआअ, माआइ,	माआहि, माआहिं, माआहिँ,
माआए,	मायराहि, मायराहिं, मायराहिँ.
मायराअ, मायराइ, मायराए	
च० छ०—माआअ, माआइ,	माआण, माआणं
माआए,	([1]माईणं)
मायराअ, मायराइ, मायराए	मायराण, मायराणं.
पं०— माआअ, माआइ, माआए,	माअत्तो, माआओ,
माअत्तो, माआओ,	माआउ, माआहिंतो,
माआउ, माआहिंतो.	माआसुंतो,
मायराअ, मायराइ,	मायरत्तो, मायराओ,
मायराए,	मायराउ,
मायरत्तो, मायराओ, मायराउ,	मायराहिंतो,
मायराहिंतो	मायरासुंतो.
स०— माआअ, माआइ माआए,	माआसु, माआसुं
मायराअ, मायराइ, मायराए	मायरासु, मायरासुं
सं०— माआ,	माआउ, माआओ,
	माआ,
मायर	मायराउ, मायराओ, मायरा.

[माआ (मातृ=माता+माआ) नुं [2]'माया' बनावीने पण 'माआ' नी जेवां ज रूपो बनावी शकाय छे.]

---

१ जूओ पृ० ५६ मातृ=माइ+माईणं (सं० मातृणाम्)

२ जूओ पृ० १८ 'कादि' नो 'य' अं० ८

['मातृ' शब्दनां 'माइ' अने 'माउ' एवां पण बे अंगो बने छे, पण रूपाख्यानने प्रसंगे ते बन्नेनो प्रयोग विरल जणाय छे[1].]

सं० [2]'दुहितृ'नुं प्राकृत रूप 'धूआ' थाय छे ए [3]आगळ जणावेलुं छे एथी एनां बधां रूपो 'माला'नी जेवां थाय छे.

ओकारांत 'गो' शब्दनां स्त्रीलिंगी अंगो त्रण थाय छे जेमके; [4]गोणी, गाई अने गउ. एमांना 'गउ'नां शौरसेनी वगेरेनां बधां

---

१ जूओ हे० प्रा० व्या० ८-३-४६-"माईण" "माऊए समन्निअं वंदे" 'षड्भाषाचंद्रिका'मां तो ए बन्ने अंगोने रूपाख्यानने प्रसंगे बधी विभक्तिओमां वापरेलां छे-"इदुद् मातुः" १-२-८३ पृ० १०८. 'माइ नां रूपो 'गइ'नी जेवां अने 'माउ'नां रूपो 'धेणु'नी जेवां थाय छे.

२ धीतु (दुहितृ) नां पालिरूपो

१	धीता	धीता, धीतरो.
२	धीतरं, धीतं	धीतरो, धीतरे.
३-५	धीतरा,	धीतरेहि, धीतरेभि,
	धीतुया	धीतूहि, धीतूभि.
४-६	धीतु,	धीतूनं
	धीतुया	धीतानं, धीतरानं
७	धीतरि,	धीतूसु,
	धीतुया	धीतरेसु.
	धीतुयं	

जूओ पालिप्र० पृ० ११०-१११

३ जूओ पृ० २०४ नि ५.

४ 'गो' शब्दनां प्राकृत रूपांतरोमां 'गावी' 'गोणी' 'गोता' अने 'गोपोतलिका'ने पण गणावेलां छेः-महाभाष्य पृ० ५०

रूपो बराबर 'धेणु' नी जेवां थाय छे अने 'गोणी' 'गाई'नां पण शौरसेनी वगेरेनां बधां रूपो बराबर 'नई' नी जेवां बने छे; जेमके,

गउ (गो)

प०—	गऊ	गऊउ, गऊओ, गऊ.
बी०—	गउं	गऊउ, गऊओ, गऊ.
त०—	गऊअ, गऊआ गऊइ, गऊए	गऊहि, गऊहिं, गऊहिँ
च० छ०—	गऊअ, गऊआ. गऊइ, गऊए	गऊण, गऊणं.
पं०—	गऊअ, गऊआ गऊइ, गऊए गऊत्तो, गऊओ गऊउ, गऊहिंतो	गऊत्तो, गऊओ, गऊउ, गऊहिंतो, गऊसुंतो.
स०—	गऊअ, गऊआ गऊइ, गऊए	गऊसु, गऊसुं.
सं०—	गऊ, गउ,	गऊउ. गऊओ, गऊ.

गाई, गोणी[1]

प०—	गाई,	गाईआ, गाईउ, गाईओ, गाई.

---

१ स्त्रीलिंगी 'गो' शब्दनां पालिरूपोः

गो

१	गो, गावी	गावी, गावो, गवो.
२	गाविं, गावं, गवं	गावी, गावो, गवो.

	गोणी	गोणीआ, गोणीउ,
		गोणीओ, गोणी.
बी०—	गाइं,	गाईआ, गाईउ,
		गाईओ, गाई.
	गोणिं	गोणीआ, गोणीउ,
		गोणीओ, गोणी.
त०—	गाईअ, गाईआ,	गाईहि, गाईहिं,
	गाईइ, गाईए	गाईहिँ.
	गोणीअ, गोणीआ,	गोणीहि, गोणीहिं,
	गोणीइ, गोणीए	गोणीहिँ.

इत्यादि बधां 'नई' नी जेवां.

'नौ' शब्दनुं स्त्रीलिंगी प्राकृत अंग 'नावा' थाय छे अने एनां बधां रूपो बराबर 'माला' नी जेवां बने छे, जेमके;

प०—	नावा	नावाउ, नावाओ, नावा
बी०—	नावं	नावाउ, नावाओ, नावा
त०—	नावाअ, नावाइ,	नावाहि, नावाहिं, नावाहिँ
	नावाए	

इत्यादि बधां 'माला' नी जेवां.

३	गाविं, गावं, गवं	गोहि, गोभि.
४	गाविं, गावं, गवं	गवं, गोनं, गुन्नं.
५	गाविं, गावं, गवं	गोहि, गोभि.
६	गाविं, गावं, गवं	गवं, गोनं, गुन्नं.
७	गाविं, गावं, गवं	गोसु.
८ सं०	गो !, गावं, गवं	गावी, गावो, गवो.

—जुओ पालिप्र० पृ० १११ नुं टिप्पण

संख्यावाचक शब्दो

विशेषता:

१ अट्ठारस (अष्टादश) सुधीना संख्यावाचक शब्दोने षष्ठीना बहुवचनमां ‘ण्ह’ अने ‘ण्हं’ प्रत्यय लागे छे: एगण्ह, एगण्हं। दुण्ह, दुण्हं। उभयण्ह, उभयण्हं वगेरे.

इक्क, एक्क, एग, एअ (एक)

आ शब्दनां ते ते भाषानां पुंलिंगी रूपो ‘सव्व’नी जेवां थाय छे, स्त्रीलिंगी रूपो ‘माला’नी जेवां थाय छे अने नपुंसकलिंगी रूपो नपुंसकी ‘सव्व’नी जेवां थाय छे. ए प्रमाणे बधा संख्यावाचक शब्दोमां यथासंभव समजवानुं छे.

[1]उभ, उह (उभ)

आ शब्दनां रूपो बहुवचनमां ज थाय छे अने ए ‘सव्व’नी पेठे छे.

---

१ संख्यावाचकशब्दनां पालिरूपो

(पालिप्रकाशमां पृ० १५५ थी १६८ सुधीमां संख्यावाचक शब्दोनां रूपो आपेलां छे.)

‘उभ’नां पालिरूपो

१–२ उभो।
उभे।
३–५ उभोहि, उभोभि,
उभेहि, उभेभि।
४–६ उभिन्नं।
७ उभोसु, उभेसु।

–जुओ पालिप्र० पृ० १५८

प०— उभे ।

बी०— उभे, उभा ।

त०— उभेहि, उभेहिं, उभेहिँ ।

च० छ०—उभण्ह, उभण्हं ।

पं०— उभत्तो, उभाओ, उभाउ,
उभाहि, उभेहि,
उभाहिंतो, उभेहिंतो,
उभासुंतो, उभेसुंतो ।

स०— उभेसु, उभेसुं ।

'उभ'नां अपभ्रंश रूपो 'सव्व'नां अपभ्रंश रूपोनी पेठे छे.

---

[1]दु (द्वि) त्रणे लिंगनां रूपो

आ शब्दनां रूपो बहुवचनमां ज थाय छे.

प०— दुवे, दोण्णि, दुण्णि, वेण्णि, विण्णि, दो, वे ।

बी०— दुवे, दोण्णि, दुण्णि, वेण्णि, विण्णि, दो, वे ।

त०— दोहि, दोहिं, दोहिँ,
वेहि, वेहिं, वेहिँ ।

---

१ 'द्वि'नां पालिरूपो

१—२ दुवे,
द्वे ।

३—५ द्वीहि, द्वीभि ।

४—६ दुविन्नं, द्विन्नं ।

७ द्वीसु ।

—जुओ पालिप्र० पृ० १५६

च० छ०—दोण्ह, दोण्हं, दुण्ह, दुण्हं,
वेण्ह, वेण्हं, विण्ह, विण्हं ।

पं०— दुत्तो, दोओ, दोउ, दोहिंतो, दोसुंतो,
वित्तो, वेओ, वेउ, वेहिंतो, वेसुंतो ।

स०— दोसु, दोसुं,
वेसु, वेसुं ।

'दु' नां अपभ्रंश वगेरेनां रूपो 'भाणु' नां बहुवचनांत रूपो जेवां छे.

---

[1]ति (त्रि) त्रणे लिंगनां रूपो

प०— } तिण्णि ।
बी०— }

च० छ०— तिण्ह, तिण्हं ।

शेष रूपो ते ते भाषा प्रमाणे 'इसि' नां बहुवचन रूपो जेवां छे.

---

१ पालिमां तो 'ति' (त्रि) शब्दनां रूपो पुंलिंगमां, स्त्रीलिंगमां अने नपुंसकलिंगमां जुदां जुदां थाय छे, जेमके:

	ति (पुंलिंग)	ति (स्त्रीलिंग)	ति (नपुंसकलिंग)
१–२	तयो ।	तिस्सो ।	तीणि
३–५	तीहि, तीभि ।	तीहि, तीभि ।	तीहि, तीभि ।
४–६	तिण्णं तिण्णन्नं	(तिस्सं) तिस्सन्नं ।	तिण्णं तिण्णन्नं ।
७	तीसु	तीसु ।	तीसु ।

—जूओ पालिप्र० पृ० १५७

[1]चउ (चतुर्) त्रणे लिंगनां रूपो

तृतीया, पंचमी अने सप्तमीना प्रत्ययो पर रहेतां आ शब्दना अंत्य 'उ' नो दीर्घ विकल्पे थाय छे.

प०—
बी०— } चत्तारो, चउरो, चत्तारि ।

त०— चऊहि, चऊहिं, चऊहिँ,

चउहि, चउहिं, चउहिँ ।

च० छ०—चउण्ह, चउण्हं.

शेष रूपो ते ते भाषा प्रमाणे 'भाणु'नां बहुवचनांत रूपो जेवां छे.

---

१ पालिमां 'चतु' (चतुर्) शब्दनां पण त्रणे लिंगमां रूपो जुदां जुदां थाय छे, जेमके:

	चतु (पुंलिंग)	चतु (स्त्रीलिंग)	चतु (नपुंसकलिंग)
१–२	चत्तारो, चतुरो ।	चतस्सो ।	चत्तारि ।
३–५	चतूहि, चतूभि ।	चतूहि, चतूभि ।	चतूहि, चतूभि ।
४–६	चतुन्नं ।	चतस्सन्नं ।	चतुन्नं ।
७	चतूसु ।	चतूसु ।	चतूसु ।

—जूओ पालिप्र० पृ० १५७–१५८

[1]पंच (पञ्च) त्रणे लिंगनां रूपो

प०— } पंच ।
बी०— }
त०— पंचेहि, पंचेहिं, पंचेहिँ,
[2]पंचहि, पंचहिं, पंचेहिँ ।
च० छ०—पंचण्ह, पंचण्हं ।

शेष रूपो ते ते भाषा प्रमाणे 'जिण'नां बहुवचनांत रूपो जेवां छे.

ए रीते छ (षट्), सत्त (सप्तन्), अट्ठ (अष्टन्), नव (नवन्), दह, दस (दशन्), एआरह, एगारह, एआरस (एकादश), दुवालस, बारह, बारस (द्वादश), तेरह, तेरस (त्रयोदश), चोद्दह, चोद्दस, चउद्दह, चउद्दस (चतुर्दश), पण्णरह, पण्णरस (पञ्चदश),

---

१ पंच (त्रणे लिंगे सरखां)

१—२ पंच ।
३—५ पंचहि, पंचभि ।
४—६ पंचन्नं ।
७ पंचसु ।

——जुओ पालिप्र० पृ० १५८

२ व्याकरणनो नियम जोतां तो 'पंचेहि' वगेरे 'ए'कारवाळां रूपो ज थई शके छे, आर्षप्राकृतमां 'पंचहि' वगेरे 'ए'कारविनानां पण रूपो वपराएलां छे जेमके:

["पंचहिं कामगुणेहिं"
"पंचहिं महव्वएहिं"
"पंचहिं किरिआहिं"
"पंचहिं समईहिं"—श्रमणसूत्र]

माटे अहीं ए बन्ने रूपो साथे देखाडेलां छे.

सोलस, सोलह (षोडश), सत्तरस, सत्तरह (सप्तदश) अने अट्ठा-रस, अट्ठारह (अष्टादश) ए बधां शब्दोनां रूपो 'पंच'नी पेठे समजवानां छे.

कइ[1] (कति)

(आ शब्दनां रूपो बहुवचनमां ज थाय छे)

प०— } कई
बी०— }

च० छ०—कइण्ह, कइण्हं

शेषरूपो, ते ते भाषा प्रमाणे 'इसि'नां बहुवचनांत रूपो जेवां छे.

नीचे जणावेला शब्दोमां जे शब्दो आकारांत छे तेनां रूपो 'माला'नी जेवां जाणवानां छे अने जे शब्दो इकारांत छे तेनां रूपो 'गइ'नी जेवां जाणवानां छे.

एगूणवीसा[2]	(एकोनविंशति)	एगवीसा }	
वीसा	(विंशति)	इक्कवीसा }	(एकविंशति)
		एक्कवीसा }	

१ 'कति'नां पालिरूपो (त्रणे लिंगे)

कति ।

कतीहि,

कतीभि ।

कतीनं,

कतिन्नं ।

कतीसु ।

—जूओ पालिप्र० पृ० १५६.

२ जओ पालिप्र० पृ० १५९–१६५

बावीसा (द्वाविंशति)
तेवीसा (त्रयोविंशति)
[1]चउवीसा, चोवीसा (चतुर्विंशति)
पणवीसा (पंचविंशति)
छव्वीसा (षड्विंशति)
सत्तावीसा (सप्तविंशति)
अट्ठावीसा, अट्ठवीसा, अडवीसा (अष्टाविंशति)
एगूणतीसा (एकोनत्रिंशत्)
तीसा (त्रिंशत्)
एगतीसा, एक्कतीसा, एक्कतीसा (एकत्रिंशत्)
बत्तीसा (द्वात्रिंशत्)

तेतीसा, तित्तीसा (त्रयस्त्रिंशत्)
चउतीसा, चोत्तीसा (चतुस्त्रिंशत्)
पणतीसा (पञ्चत्रिंशत्)
छत्तीसा (षट्त्रिंशत्)
सत्ततीसा (सप्तत्रिंशत्)
अट्ठतीसा, अडतीसा (अष्टत्रिंशत्)
एगूणचत्तालिसा (एकोनचत्वारिंशत्)
चत्तालिसा (चत्वारिंशत्)
एगचत्तालिसा, इक्कचत्तालिसा, एक्कचत्तालिसा, इगयाला (एकचत्वारिंशत्)

---

१ पालिभाषामां 'चउवीसा' शब्दनुं प्रथमानुं एकवचन 'चउवीसं' थाय छे (जुओ पालिप्र० पृ० १६० नि० १२७) अने ए रूप प्राकृतसाहित्यमां पण वपराएलुं छे. जेमके: "चउवीसं पि जिणवरा" (चतुर्विंशतिस्तव)

आचार्य हेमचंद्र ए 'चउवीसं' रूपने 'द्वितीया' विभक्तिवाळुं समजे छे अने उपर्युक्त वाक्यमां 'द्वितीया' नो अर्थ घटतो नथी पण 'प्रथमा' नो अर्थ घटे छे तेथी "क्यांय 'प्रथमा' ने बदले 'द्वितीया' पण वपराय छे" एम ए वाक्य आपीने ज जणावे छे.-(जुओ हे० प्रा० व्या० ८-३-१३७ पृ० १०८)

बेआलिसा
बेआला } (द्विचत्वारिंशत्)
दुचत्तालिसा

तिचत्तालिसा
तेआलिसा } (त्रिचत्वारिंशत्)
तेआला

चउचत्तालिसा
चोआलिसा } चतुश्चत्वारिंशत्)
चोआला
चउआला

पणचत्तालिसा
पणयाला } (पञ्चचत्वारिंशत्)

छचत्तालिसा
छायाला } (षट्चत्वारिंशत्)

सत्तचत्तालिसा
सगयाला } (सप्तचत्वारिंशत्)

अट्ठचत्तालिसा
अडयाला } (अष्टचत्वारिंशत्)

एगूणपण्णास्सा (एकोनपञ्चाशत्)

पण्णासा (पञ्चाशत्)

एगपण्णासा
इक्कपण्णासा } (एकपञ्चाशत्)
एक्कपण्णासा
एगावण्णा

बावण्णा
दुप्पण्णासा } (द्विपञ्चाशत्)

तेवण्णा
तिपण्णासा } (त्रिपञ्चाशत्)

चोवण्णा
चउपण्णासा } (चतुष्पञ्चाशत्)

पणपण्णा
पणपण्णासा } (पञ्चपञ्चाशत्)
पंचावण्णा

छप्पण्णा
छप्पणासा } (षट्पञ्चाशत्)

सत्तावन्ना
सत्तपण्णासा } (सप्तपञ्चाशत्)

अट्ठावन्ना
अडवन्ना } (अष्टपञ्चाशत्)
अट्ठपण्णासा

एगूणसट्ठि (एकोनषष्टि)

सट्ठि (षष्टि)

एगसट्ठि
इगसट्ठि } (एकषष्टि)

बासट्ठि (द्विषष्टि)

तेसट्ठि (त्रिषष्टि)

चउसट्ठि
चोसट्ठि } (चतुष्षष्टि)

पणसट्ठि (पञ्चषष्टि)

छासट्ठि (षट्षष्टि)

सत्तसट्ठि (सप्तषष्टि)

अडसट्ठि
अट्ठसट्ठि } (अष्टषष्टि)

एगूणसत्तरि (एकोनसप्तति)

प्राकृत	संस्कृत
सत्तरि	(सप्तति)
एग[1]सत्तरि / इक्कसत्तरि	(एकसप्तति)
बा(बि)सत्तरि / बावत्तरि	(द्विसप्तति)
तिसत्तरि	(त्रिसप्तति)
चोसत्तरि / चउसत्तरि	(चतुस्सप्तति)
पण्णसत्तरि	(पञ्चसप्तति)
छसत्तरि	(षट्सप्तति)
सत्तसत्तरि	(सप्तसप्तति)
अट्ठसत्तरि	(अष्टसप्तति)
एगूणासीइ	(एकोनाऽशीति)
असीइ	(अशीति)
एगासीइ	(एकाशीति)
बासीइ	(द्व्यशीति)
तेसीइ	(त्र्यशीति)
चउरासीइ / चोरासीइ	(चतुरशीति)
पणसीइ	(पञ्चाशीति)
छासीइ	(षडशीति)
सत्तासीइ	(सप्ताशीति)
अट्ठासीइ	(अष्टाशीति)
नवासीइ	(नवाशीति)
एगूणनवइ	(एकोननवति)
नवइ	(नवति)
एगणवइ / इगणवइ	(एकनवति)
बाणवइ	(द्विनवति)
तेणवइ	(त्रिनवति)
चउणवइ / चोणवइ	(चतुर्नवति)
पण्णणवइ / पञ्चणवइ	(पञ्चनवति)
छण्णवइ	(षण्णवति)
सत्त(त्ता)णवइ	(सप्तनवति)
अट्ठ(ड)णवइ	(अष्टनवति)
ण(न)वणवइ	(नवनवति)
एगूणसय	(एकोनशत)
सय	(शत)
दुसय	(द्विशत)
तिसय	(त्रिशत)
बे सयाइं—बसें—	(द्विशत)

---

१ 'सत्तरि' ने बदले 'हत्तरि' शब्द पण प्रयोगानुसार वपराय छे.

तिण्णि सयाइं—त्रणसें (त्रिशत)	
चत्तारि सयाइं—चारसें (चतुश्शत)	
इत्यादि.	
सहस्स	(सहस्र)
दह(स)सहस्स	(दशसहस्र)
अयुअ(त)	(अयुत)
लक्ख	(लक्ष)
दस(ह)लक्ख	(दशलक्ष)
पयुअ(त)	(प्रयुत)
कोडि	(कोटि)
कोडाकोडि	(कोटाकोटि)

प्रकरण ११

कारक–विभक्त्यर्थ

जेम संस्कृतमां छ कारक छे तेम अहीं प्राकृतमां पण छे अने तेनी बधी व्यवस्था संस्कृतने अनुसारे समजी लेवानी छे. परंतु जे केटलाक खास विभक्त्यर्थो छे तेने अहीं जणावी दईए छीए:

१. प्राकृतमां केटलेक ठेकाणे द्वितीया, तृतीया, पंचमी अने सप्तमीने स्थाने पण षष्ठी [१]विभक्ति वपराय छे:–

सीमाधरस्स वंदे [सीमाधरं वन्दे]

धणस्स लद्धो [धनेन लब्धः]

चोरस्स बीहइ [चौराद् बिभेति]

[२]अंतेउरस्स रमिउं आअओ [अन्तःपुरे रन्तुमागतः]

२. कोई कोई ठेकाणे द्वितीया अने तृतीयाने बदले सप्तमी वपराय छे:–

---

१ संस्कृतमां पण षष्ठी विभक्तिनो आवो ज उपयोग थएलो छे:

मातरं स्मरति	ने बदले	मातुः स्मरति ।
अन्नं नो देहि	,,	अन्नस्य नो देहि ।
फलैस्तृप्तः	,,	फलानां तृप्तः ।
अक्षैर्दीव्यति	,,	अक्षाणां दीव्यति ।
वृक्षात् पर्णं पतति	,,	वृक्षस्य पर्णं पतति ।
महत्सु विभाषते	,,	महतां विभाषते ।

—जूओ "षष्ठी शेषे" (पाणि० २–३–५०) तथा "शेषे" (हे० सं० २–२–८१)

२ जूओ षड्भाषाचन्द्रिका "क्वचिद्सादेः" २–३–३८ पृ० १६२ ।

[1]नयरे न जामि [नगरं न यामि]

[2]तेसु अलंकिआ पुहवी [तैरलंकृता पृथ्वी]

३. क्यांय क्यांय पंचमीने बदले तृतीया अने सप्तमी वपराय छे:-

[3]चोरेण बीहइ [चौराद् बिभेति]

[4]अंतेउरे रमिउं आगओ राया [अन्तःपुराद् रन्त्वा आगतो राजा]

४. कोई ठेकाणे तो सप्तमीने स्थाने द्वितीया पण वपराय छे:-

विज्जुज्जोयं भरइ रत्तिं [विद्युदुद्योते स्मरति रात्रिम्]

---

१ संस्कृतनी रीते पण आ वाक्यमां 'नगर'ने 'कर्म' कही शकाय अने 'आधार' पण कही शकाय एटले 'नगरे न यामि' अने 'नगरं न यामि' ए बन्ने वाक्यो शिष्टसंमत छे.

२ आ वाक्यमां जो 'तेषु सत्सु' ('तेओनी विद्यमानतामां') एवो अर्थ विवक्षित होय तो संस्कृतमां पण 'तैः अलंकृता पृथ्वी' आ वाक्यने बदले 'तेषु अलंकृता पृथ्वी' आवुं सप्तमीवाळुं वाक्य थइ शके छे.

३-४ अहीं जो 'चोर'ने 'भयना कारण' तरीके अने 'अंतःपुर'ने रमनारना 'आधार' तरीके कहेवानो आशय होय तो संस्कृतमां पण 'चोरेण बिभेति' अने 'अन्तःपुरे रन्त्वा' वगेरे वाक्य थइ शके छे.

५ आर्षप्राकृतमां ठेकठेकाणे आ 'तेणं कालेणं तेणं समएणं' प्रयोग वपराएलो छे, एनो अर्थ 'ते काळे अने ते समये' थाय छे, तेथी आ अने आवा बीजा प्रयोगोमां 'सप्तमी' विभक्तिने बदले 'तृतीया' विभक्ति वपराएली छे एम आचार्य हेमचंद्र जणावे छे. —(जुओ हे० प्रा० व्या ८-३-१३७ पृ० १०८) त्यारे आ प्रयोगनुं

विवरण करतां नवांगी टीकाकार आचार्य अभयदेव ए प्रयोगमां आवेला 'णं'ने वाक्यालंकाररूपे मानी ए प्रयोगने 'सप्तमी' विभक्तिवाळो पण जणावे छे. आचार्य अभयदेवनी दृष्टिए ए पदोनो पदच्छेद आ प्रमाणे छेः 'ते णं काले णं, ते णं समए णं'-" 'ते' इति प्राकृतशैलीवशात् 'तस्मिन्' × × × 'णं' कारोऽन्यत्रापि वाक्यालंकारार्थः, × × काले × अवसर्पिणीचतुर्थविभागलक्षणे, × × × समये कालस्यैव विशिष्टे भागे "-जूओ भगवती सूत्र रा० पृ० १८ टीका, ज्ञाता० सूत्र टीका पृ० १ समिति, उपासकदशासूत्र टीका पृ० १ समिति.

ए प्रयोगनुं विवरण करतां आचार्य मलयगिरि पण आचार्य अभयदेवनी पेठे पूर्व प्रमाणे जणावे छेः-जूओ सूर्यप्रज्ञप्तिनी टीका पृ० १ समिति.

आचार्य अभयदेव ए पदोनुं संस्कृत 'तेन कालेन तेन समयेन' पण करे छे अने आ पक्षमां तेओ आ वाक्यमां तृतीयानो अर्थ घटावे छे पण 'तृतीया'ने स्थाने 'सप्तमी' होवानी सूचना करता नथी — "अथवा तृतीयैवेयम्, ततः 'तेन कालेन हेतुभूतेन, तेन समयेन हेतुभूतेनैव "-जूओ भगवतीसूत्र रा० पृ०, १८ टीका.

प्रकरण १२

आख्यात

संस्कृतभाषामां धातुओना अनेक प्रकार छे, जेमके; पेला गणना, बीजा गणना, चोथा गणना, छट्ठा गणना वगेरे. तेमां पण प्रत्येक गणमां धातुओना त्रण पेटा प्रकार छेः परस्मैपदी, आत्मनेपदी अने उभयपदी. आम होवाथी संस्कृतमां धातुनां रूपाख्यानो अनेक प्रकारनां थाय छे. कारण के, तेमां प्रत्येक गणनी निशानीओ (विकरण प्रत्ययो) जुदी जुदी छे, प्रक्रियाओ जुदी जुदी छे, आत्मनेपद तथा परस्मैपदना प्रत्ययो पण जुदा जुदा छे.

पालिमां केटलुंक संस्कृतनी जेवुं छे पण तेमां वैदिक संस्कृतनी पेठे आत्मनेपद अने परस्मैपदनो नियम अचोक्कस छे. प्राकृतमां तो आत्मनेपद अने परस्मैपदनो कोई नियम ज नथी. जो के प्राकृतमां वर्तमानकाळना केटलाक प्रत्ययो संस्कृतना आत्मनेपदी प्रत्ययो साथे मळता आवे छे पण ए प्रत्ययो दरेक धातुने लगाडी शकाय छे.

पालिव्याकरणमां[१] आपेला नियमो उपरथी समजी शकाय छे के, संस्कृतनी पेठे गणभेदने लीधे पालिमां ते ते धातुनां रूपो जुदां जुदां बने छे पण प्राकृत व्याकरणना नियमोमां तेम नथी. प्राकृत-व्याकरणमां तो पेला गणना के चोथा गणना धातुनी एक सरखी प्रक्रिया छे, पण एटलुं खरुं के, ते ते धातुनां रूपो उपरथी सरखामणीने लीधे आपणे संस्कृतमां वपरातो ए धातुनो गण जरुर कळी शकीए.[२]

---

१ जुओ कात्यायननुं पालिव्याकरण—आख्यातकल्प.

२ दिव्वइ (दीव्यति)

चिणइ (चिनोति)

जाणइ (जानाति)

एकंदर रीते संस्कृत करतां पालिनी आख्यातप्रक्रिया सरळ छे अने प्राकृतमां तो ए सविशेष सरळ छे.

विभक्तिओ

वर्तमाना, सप्तमी, पंचमी, ह्यस्तनी, अद्यतनी, परोक्षा, आशी: (आशिरर्थ), श्वस्तनी, भविष्यन्ती अने क्रियातिपत्ति एम [1]दस विभक्तिओ संस्कृतमां छे, पालिमां आशिरर्थ अने श्वस्तनीनो प्रयोग नथी अने प्राकृतमां पंचमी अने सप्तमी एक सरखी छे, ह्यस्तनी, अद्यतनी अने परोक्षा एक सरखी छे, श्वस्तनी अने भविष्यन्ती एक सरखी छे एटले वर्तमाना, आज्ञार्थ–विध्यर्थ, भूतकाळ, भविष्यत्काळ अने क्रियातिपत्ति ए पांच ज विभक्तिओ क्रियापदने लगती छे. आख्यातने लगतो विभक्तिप्रयोग संस्कृतमां जे झीणवटथी करवामां आवे छे तेवी झीणवट पालि के प्राकृतमां नथी. पालिमां ए दरेक विभक्तिना प्रत्ययो जुदा जुदा छे पण प्राकृतमां तो आगळ जणाव्या प्रमाणे ए पांच विभक्तिओमां ज संस्कृतनी बधी विभक्तिओ समाएली छे.

आ चालु प्रकरणमां आख्यात विषे अने केटलांक कृदंत विषे समजाववानुं छे पण धातुओथी बनतां दरेक नामो विषे कांई कहेवानुं नथी माटे ज धातुना उपयोगनो विभाग करतां अहीं जणाववामां आवे छे के, साहित्यमां धातुओनो उपयोग खास करीने बे प्रकारे थएलो छे: **क्रियापदरूपे अने कृदंतरूपे.**

---

१ पाणिनिना संकेत प्रमाणे ए दस विभक्तिओनां नाम आ प्रमाणे छे: लट्, विधिलिङ्, लोट, लङ्, लिट्, आशीर्लिङ्, लुट्, लृट्, लङ्, अने लुङ्.

क्रियापदरूपे वपराता धातुना रूपाख्याननुं नाम '**आख्यात**' छे अने कृदंतरूपे वपराता धातुना रूपाख्यानने '**नाम**' कहेवामां आवे छे.

आख्यातरूपे वपराता धातुना रूपाख्याननी विविधता आ प्रमाणे छे:

कर्तरिरूप, कर्मणिरूप, भावेरूप (सह्यभेद), प्रेरककर्तरिरूप, प्रेरककर्मणिरूप, प्रेरकभावेरूप (प्रेरक सह्यभेद) इत्यादि ।

कृदंतरूपे वपराता धातुना रूपाख्यानना अनेक प्रकार आ रीते छे:

कर्तरि — वर्तमानकृदंत, प्रेरकवर्तमानकृदंत, कर्तृसूचकरूप, भविष्यत्कृदंत, प्रेरकभविष्यत्कृदंत ।

कर्मणि अने भावे-सह्यभेद — वर्तमानकृदंत, भविष्यत्कृदंत, प्रेरकवर्तमानकृदंत, प्रेरकभविष्यत्कृदंत, भूतकृदंत, विध्यर्थकृदंत, प्रेरकभूतकृदंत, प्रेरकविध्यर्थकृदंत ।

भावेरूप — हेत्वर्थकृदंत अने संबंधकभूतकृदंत ।

आ प्रकरणमां अहीं जणावेला क्रम प्रमाणे रूपाख्यानोनी समजूती आपवानी छे.

कर्तरिरूप

प्राकृतमां धातुओनी बे जात छे: व्यंजनांत धातु अने स्वरांत धातु

१ व्यंजनांत धातुना छेवटना व्यंजनमां 'अ'कार उमेराया पछी ज तेनां रूपाख्यानो थाय छे अने ए उमेरातो 'अ'कार विकरणरूप लेखाय छे:

भण् + अ–भण–भणइ (भणति)

कह् + अ–कह–कहइ (कथयति)

सम् + अ–समइ (शाम्यति)

हस + अ–हस–हसइ (हसति)

आव् + अ–आव–आवइ (आप्नोति)

सिंच् + अ–सिंच–सिंचइ (सिञ्चति)

रुन्ध् + अ–रुन्ध–रुन्धइ (रुणद्धि)

मुस् + अ–मुस–मुसइ (मुष्णाति)

तण् + अ–तण–तणइ (तनोति)

२ अकारांत सिवाय बाकीना स्वरांत धातुओने पण विकरण 'अ' विकल्पे लागे छे:

पा + अ–पाअ–पाअइ, पाइ (पाति)

जा + अ–जाअ–जाअइ, जाइ (याति)

धा + अ–धाअ–धाअइ, धाइ (धयति, धावति, दधाति)

झा + अ–झाअ–झाअइ, झाइ (ध्यायति)

जम्भा + अ–जम्भाअ–जम्भाइ (जृम्भते)

वाअ + अ–वाअ–वाअइ, वाइ (वाति)

मिला + अ–मिलाअ–मिलाअइ, मिलाइ–(म्लायति)

विक्की+विके + विकेअ–विकेअइ, विकेइ (विक्रीणाति)

हो + अ–होअ–होअइ, होइ (भवति)

हो + अ–होअ–होइऊण, होऊण (भूत्वा)

३ उवर्णांत धातुना अंत्य उवर्णनो 'अव्' थाय छे:

ण्हु–ण्हव्+अ–ण्हव–ण्हवइ (ह्नुते)

निण्हवइ (निह्नुते)

हु—हव्— हव—हवइ (जुहोति)

निहवइ (निजुहोति)

चु—चव्—चव—चवइ (च्यवते)

रु—रव्—रव—रवइ (रौति)

कु—कव्—कव—कवइ (कौति)

सू—सव्—सव—सवइ (सूते)

पसवइ (प्रसूते)

४ ऋवर्णांत धातुना अंत्य ऋवर्णनो 'अर्' थाय छे:

कृ—कर्—कर—करइ (करोति)

धृ—धर्—धर—धरइ (धरति)

मृ—मर्—मर—मरइ (म्रियते)

वृ—वर्—वर—वरइ (वृणोति, वृणुते)

सृ—सर्—सर—सरइ (सरति)

हृ—हर्—हर—हरइ (हरति)

तॄ—तर्—तर—तरइ (तरति)

जॄ—जर्—जर—जरइ (जीर्यति)

५ उपांत्यमां ऋवर्णवाळा धातुना ऋवर्णनो 'अरि' थाय छे:

कृष्—करिस्—करिस—करिसइ (कर्षति)

मृष्—मरिस्—मरिसइ (मृष्यते)

वृष्—वरिस्—वरिसइ (वर्षति)

हृष्—हरिस्—हरिसइ (हृष्यति)

६ धातुना 'इवर्ण' अने 'उवर्ण'नो अनुक्रमे 'ए' अने 'ओ' थाय छे:

नी—नेइ (नयति)

नेंति (नयन्ति)

उड्डी—उड्डेइ (उड्डयते)

उड्डेंति (उड्डयन्ते)

जि—जेऊण (जित्वा)

नी—नेऊण (नीत्वा)

७ केटलाक धातुना उपांत्य स्वरनो दीर्घ थाय छे:

रुष्—रूस्—रूस—रूसइ (रुष्यति)

तुष्—तूस्—तूस—तूसइ (तुष्यति)

शुष्—सूस—सूस—सूसइ (शुष्यति)

दुष्—दूस्—दूस—दूसइ (दुष्यति)

पुष्—पूस्—पूस—पूसइ (पुष्यति)

सीसइ (शिष्यते) इत्यादि ।

८ धातुना नियत स्वरने स्थाने प्रयोगानुसारे बीजो स्वर पण थाय छे:

वि०—हवइ—हिवइ (भवति)

चिणइ—चुणइ (चिनोति)

सद्दहणं—सद्दहाणं (श्रद्धानम्)

धावइ—धुवइ (धावति)

रुवइ—रोवइ (रोदीति) इत्यादि ।

नि०—दा—दे—देइ (ददाति, दाति, द्याति)

ला—ले—लेइ (लाति)

विहा—विहे—विहेइ (विदधाति, विभाति)

ब्रू—बे—बेमि (ब्रवीमि) इत्यादि ।

९ केटलाक धातुओनो अंत्य व्यंजन प्रयोगानुसारे बेवडो थाय छे:

वि०—फुडइ, फुट्टइ (स्फुटति)

चलइ, चल्लइ (चलति)

पमीलइ पमिल्लइ (प्रमीलति)

निमीलइ, निमिल्लइ (निमीलति)

संमीलइ, संमिल्लइ, (संमीलति)

उम्मीलइ, उम्मिल्लइ (उन्मीलति) इत्यादि।

नि०—जिम्मइ (जेमति) परिअट्टइ (पर्यटति)

सक्कइ (शक्नोति) पलोट्टइ (प्रलोटति)

लग्गइ (लगति) तुट्टइ (त्रुटति)

मग्गइ (मृगयते)। नट्टइ (नटति)

नस्सइ (नश्यति) सिव्वइ (सीव्यति)

कुप्पइ (कुप्यति) इत्यादि।

१० केटलाक धातुओना (प्रायः संस्कृतनो विकरण उमेराया पछी 'द्य' छेडावाळा धातुओना) अंत्य व्यंजननो प्रयोगानुसारे 'ज्ज' थाय छे[1]:

संपज्जइ (संपद्यते) सिज्जइ (स्विद्यति)

खिज्जइ (खिद्यते) सिज्जिरी (स्वेत्त्री, स्वेदयित्री)

इत्यादि।

११ उपरना नियमोथी तैयार थएला धातुना अंगने वर्तमानकाळमां नीचे जणावेला कर्तृबोधक प्रत्ययो लागे छे:—[2]

---

१ जूओ पृ० ३२—द्य, य्य, र्य=ज्ज (नि० २७)

२ पालिमां 'वर्तमाना' ना प्रत्ययो आ प्रमाणे छे:

	परस्मैपद		आत्मनेपद	
	एकव०	बहुव०	एकव०	बहुव०
१	मि	म	ए	म्हे
२	सि	थ	से	व्हे
३	ति	अंति	ते	अंते (रे)

—जूओ पालिप्र० पृ० १७१ नि० ११.

		एकव०—	बहुव०—
१	पुरुष	[1]मि,	मो, मु, म.
२	पुरुष	सि, से,[2]	इत्था, ह.
३	पुरुष	इ, ए	न्ति, न्ते, इरे[4].

सर्वपुरुष—सर्ववचन—ज्ज, ज्जा.

१ 'मि' प्रत्यय पर रहेतां धातुना अकारांत अंगना अंत्य 'अ' नो विकल्पे 'आ' थाय छे.

२ 'मो', 'मु' अने 'म' प्रत्यय पर रहेतां धातुना अकारांत अंगना अंत्य 'अ' नो विकल्पे 'आ' अने 'इ' थाय छे.

३ उपर जणावेला बधा प्रत्ययो पर रहेतां धातुना अकारांत अंगना अंत्य 'अ' नो विकल्पे 'ए' थाय छे.

[नामनां रूपोमां पालिमां अने प्राकृतमां सविशेष समानता छे तेथी नामना प्रकरणमां स्थळे स्थळे समानता बतावावा पालिनां रूपो सविस्तर मूकेलां छे पण धातुनां रूपोमां तेम नथी, तेथी आ प्रकरणमां ज्यां ज्यां जेटली समानता छे तेटलो उल्लेख करवामां आवशे पण धातुनां पालिरूपोनी वीगतथी नोंध नहि करवामां आवे]

१ केटलेक ठेकाणे 'मि' प्रत्ययने बदले 'म्' प्रत्यय पण वपराएलो छेः—मरं, मरामि (म्रिये) । सक्कं, सक्कामि (शक्नोमि) ।

२ 'से' अने 'ए' तथा शौरसेनीनो 'दे' अने पैशाचीनो 'ते' प्रत्यय, धातुना अकारांत अंगनेज लगाडवाना छे अर्थात अकारांत सिवायना धातुना अंगने ए बन्ने प्रत्ययो लागता नथीः—

पा + सि—पासि । पा + इ—पाइ (पासे, अने पाए, रूप थाय नहि).

३ कोई ठेकाणे आ 'इत्था' प्रत्यय त्रीजा पुरुषना एकवचनमां पण वपराएलो छेः—रोइत्था, रोयइ, रोयए—(रोचते).

४ आ 'इरे' प्रत्यय क्वचित् क्वचित् त्रीजा पुरुषना एकवचनमां पण वपराएलो छे. जेमके—सूसइ, सूसइरे—(शुष्यति).

४ 'ज्ज' अने 'ज्जा' प्रत्यय पर रहेतां तो धातुना अकारांत अंगना अंत्य 'अ' नो 'ए' थाय छे.

शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशभाषामां वर्तमान-काळने लगती विशेषतावाळी प्रक्रिया आ प्रमाणे छेः–

शौरसेनी–मागधी

१ पु०	मि	मो, मु, म ।
२ पु०	[1]सि, से[2]	इत्था, ध, ह ।
३ पु०	दि, दे	न्ति, न्ते, इरे ।

पैशाची

१ पु०		शौरसेनी प्रमाणे
२ पु०		,,
३ पु०	ति, ते	शौरसेनी प्रमाणे

अपभ्रंश

१ पु०	उं, मि	हुं, मो, मु, म ।
२ पु०	हि, सि, से	हु, ह, ध, इत्था ।
३ पु०	दि, दे, इ, ए	हिं, न्ति, न्ते, इरे ।

प्राकृतमां वर्तमानकाळना प्रत्ययो लागतां धातुना अंगमां जे जे फेरफार थवानुं जणाव्युं छे ते बधुं शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशना वर्तमानकाळना प्रत्ययो लागतां पण समजी लेवानुं छे.

धातुने लागता कोई पण प्रत्ययो लगाड्या पहेलां पण प्राकृतमां धातुने लगती जे जे प्रक्रिया (विकरण वगेरेनी प्रक्रिया)

---

१ जूओ पृ० २७ स-श.

२ जूओ पृ० २४९, २ टिप्पण.

जणावी छे ते बधी शौरसेनी, पैशाची, मागधी अने अपभ्रंशमां समजी लेवानी छे.

व्यंजनांत धातुनां रूपाख्यानो

हस्

एकवचन

	प्राकृतरू०—	शौरसेनीरू०— [1]मागधीरू०—	पैशाचीरू०—	अपभ्रंशरू०—
१ पुरुष—	हसमि, हसामि, हसेमि, हसेज्ज, हसेज्जा ।	प्राकृत प्रमाणे	प्राकृत प्रमाणे	हसउं, हसेउं, हसमि, हसामि, हसेमि, हसेज्ज, हसेज्जा ।
२ पुरुष—	हससि, हसेसि, हससे, हसेसे, हसेज्ज, हसेज्जा ।	प्राकृत प्रमाणे	प्राकृत प्रमाणे	हसहि, हसेहि, हससि, हसेसि, हससे, हसेसे, हसेज्ज, हसेज्जा ।
३ पुरुष—	हसइ, हसेइ,	हसदि, हसेदि,	हसति, हसेति,	हसदि, हसेदि,

१ जुओ स–द्रा पृ० २७ नि० (१)—हशामि वगेरे.

हसए,	हसदे,	हसते,	हसदे,
हसेए,	हसेदे,	हसेते,	हसेदे,
हसेज्ज,	हसेज्ज,	हसेज्ज,	हसइ,
हसेज्जा।	हसेज्जा।	हसेज्जा।	हसेइ,
			हसए,
			हसेए,
			हसेज्ज,
			हसेज्जा।

बहुवचन

प्राकृतरू०—	शौरसेनीरू०— मागधीरू०—	पैशाचीरू०—	अपभ्रंशरू०—
१ पुरुष—हसमो,	प्राकृत	प्राकृत	हसहुं,
हसामो,	रूपो	प्रमाणे	हसेहुं;
हसिमो,	प्रमाणे		हसमो,
हसेमो;			हसामो,
हसमु,			हसिमो,
हसामु,			हसेमो;
हसिमु,			हसमु,
हसेमु,			हसामु,
हसम,			हसिमु,
हसाम,			हसेमु;
हसिम,			हसम,
हसेम;			हसाम,

	हसेज्ज,			हसिम,
	हसेज्जा ।			हसेम;
				हसेज्ज,
				हसेज्जा ।
२ पुरुष—	हसइत्था,	हसइत्था,	शौरसेनी	हसइत्था,
	[1]हसित्था,	हसित्था,	प्रमाणे	हसित्था,
	हसेइत्था,	हसेत्था,		हसेत्था,
	हसह,	हसध,		हसध,
	हसेह,	हसेध,		हसेध,
	हसेज्ज,	हसह,		हसह,
	हसेज्जा ।	हसेह,		हसेह,
		हसेज्ज,		हसहु,
		हसेज्जा ।		हसेहु,
				हसेज्ज,
				हसेज्जा ।
३ पुरुष—	हसन्ति,	[2]प्राकृत	शौरसेनी	हसहिं,
	हसेंति,	रूपो	रूपो	हसेहिं,
	[3]हसिंति,	प्रमाणे	प्रमाणे	हसंति,
	हसंते,			हसेंति,

---

१ जूओ पृ० ९६ स्वरलोप नि० ६—हस + इत्था=हसित्था ।

२ प्राकृतनां हसंति, हसंते वगेरे रूपो उपरथी शौरसेनीमां हसंदि, वगेरे रूपो पण प्रायः यथासंभव थइ शके छे—जूओ पृ० ३५ नि० (१) न्त=न्द ।

३ जूओ पृ० ४ नि० १—हसेंति + हसिंति ।

हसेंते,	हसिंति,
हसिंते,	हसंते,
हसइरे,	हसेंते,
हसिरे,	हसिंते,
हसेइरे	हसइरे,
हसेज्ज,	हसिरे,
हसेज्जा।	हसेइरे,
	हसेज्ज,
	हसेज्जा।

आ रीते आगळ जणावेल बधां व्यंजनांत (धातुनां) अंगोनां वर्तमानकाळनां रूपो समजवानां छे.

स्वरांत धातुनां रूपाख्यानो

हो (भू)

स्वरांत धातुओनी प्रक्रिया व्यंजनांत धातुनी ('हस्' नी) सरखी छे. मात्र फेर आ छे:

स्वरांत धातु अने पुरुषबोधक प्रत्यय--ए बेनी-वच्चे पण 'ज्ज' 'ज्जा' विकल्पे उमेराय छे.

एकवचन

प्राकृतरू०—	शौरसेनीरू०— मागधीरू०—	पैशाचीरू०—	अपभ्रंशरू०—
१ पुरुष—[1]होअमि,	प्राकृत	प्राकृत	होअउं
होआमि,	रूपो	रूपो	होएउं
होएमि,	प्रमाणे	प्रमाणे	होअमि

---

१ पेलेथी नव रूपो विकरणवाळां छे अने बाकी बधां विकरण विनानां छे. विकरण माटे जूओ पृ० २४५ नि० २

(ज्ज) होएज्जमि,	होआमि
होएज्जामि,	होएमि
होएज्जेमि,	होएज्जउं, होएज्जमि
होएज्ज,	होएज्जामि
(ज्जा) होएज्जामि,	होएज्जेउं, होएज्जेमि
होएज्जा,	होएज्ज
होमि,	होएज्जाउं, होएज्जामि
(ज्ज) होज्जमि, (हुज्जमि)	होएज्जा
होज्जामि,	होउं
होज्जेमि,	होमि
होज्ज (हुज्ज)	होज्जउं, होज्जमि
(ज्जा) होज्जामि	होज्जामि
होज्जा (हुज्जा)	होज्जेउं, होज्जेमि
	होज्ज
	होज्जाउं, होज्जामि
	होज्जा ।

एकवचन

	प्राकृतरू०—	शौरसेनीरू०— मागधीरू०—	पैशाचीरू०—	अपभ्रंशरू०—
२ पुरुष—	होअसि	प्राकृत	प्राकृत	होअहि,
	होएसि	रूपो	रूपो	होएहि,
	होअसे	प्रमाणे	प्रमाणे	होअसि
	होएसे			होएसि
	होएज्जासि			होअसे
	होएज्जेसि			होएसे

होएज्जसे
होएज्जेसे
होएज्जासि
होसि
होज्जासि
होज्जेसि
होज्जसे
होज्जेसे
होज्जासि
होज्ज
होज्जा

होएज्जाहि
होएज्जेहि
होएज्जासि
होएज्जेसि
होएज्जसे
होएज्जेसे
होएज्जाहि
होएज्जासि
होहि,
होसि
होज्जाहि, होज्जासि
होज्जेहि, होज्जेसि
होज्जसे
होज्जेसे
होज्जाहि, होज्जासि
होज्ज
होज्जा।

३- पुरुष—होअइ	होअदि	होअति	होअइ, होअदि
होएइ	होएदि	होएति	होएइ, होएदि
होअए	होअदे	होअते	होअए, होअदे
होएए	होएदे	होएते	होएए, होएदे
होएज्जइ	होएज्जदि	होएज्जति	होएज्जइ, होएज्जदि
होएज्जेइ	होएज्जेदि	होएज्जेति	होएज्जेइ, होएज्जेदि
होएज्जए	होएज्जदे	होएज्जते	होएज्जए, होएज्जदे
होएज्जेइ	होएज्जेदे	होएज्जेते	होएज्जेएं, होएज्जेदे

होएज्जाइ	होएज्जादि	होएज्जाति	होएज्जाइ, होएज्जादि
होइ	होदि	होति	होइ, होदि
होज्जइ	होज्जदि	होज्जति	होज्जइ, होज्जदि
होज्जेइ	होज्जेदि	होज्जेति	होज्जेइ, होज्जेदि
होज्जए	होज्जदे	होज्जते	होज्जए, होज्जदे
होज्जेए	होज्जेदे	होज्जेते	होज्जेए, होज्जेदे
होज्जाइ	होज्जादि	होज्जाति	होज्जाइ, होज्जादि
होज्ज	होज्ज	होज्ज	होज्ज
होज्जा	होज्जा	होज्जा	होज्जा

बहुवचन

प्राकृतरू०—	शौरसेनीरू०— मागधीरू०—	पैशाचीरू०—	अपभ्रंशरू०—
१ पुरुष—होअमु	प्राकृत	प्राकृत	होअहुं
होआमु	रूपो	रूपो	होएहुं
होइमु, होएमु	प्रमाणे	प्रमाणे	होअमु
होअमो			होआमु
होआमो			होइमु
होइमो, होएमो			होएमु
होअम			होअमो
होआम			होआमो
होइम, होएम			होइमो
होएज्जमु			होएमो
होएज्जामु			होअम
होएज्जिमु			होआम

होएज्जेमु
होएज्जमो
होएज्जामो
होएज्जिमो
होएज्जेमो
होएज्जम
होएज्जाम
होएज्जिम
होएज्जेम
होमु
होमो
होम
होज्जमु
होज्जामु
होज्जिमु
होज्जेमु
होज्जमो
होज्जामो
होज्जिमो
होज्जेमो
होज्जम
होज्जाम
होज्जिम
होज्जेम
होज्ज

हाइम
होएम
होएज्जहुं
होएज्जेहुं
होएज्जमु
होएज्जामु
होएज्जिमु
होएज्जेमु
होएज्जमो
होएज्जामो
होएज्जिमो
होएज्जेमो
होएज्जम
होएज्जाम
होएज्जिम
होएज्जेम
होहुं
होमु
होमो
होम
होज्जहुं
होज्जेहुं
होज्जमु
होज्जामु
होज्जिमु

होज्जा	होज्जेमु
	होज्जमो
	होज्जामो
	होज्जिमो
	होज्जेमो
	होज्जम
	होज्जाम
	होज्जिम
	होज्जेम
	होज्जाहुं
	होज्ज
	होज्जा।

बहुवचन

	प्राकृतरू०–	शौरसेनीरू०– मागधीरू०–	पैशाचीरू०–	अपभ्रंशरू०–
२ पुरुष–	होअह	होअह, होअध	शौरसेनी	होअहु
	होएह	होएह, होएध	प्रमाणे	होअेहु
	होएज्जह	होएज्जह, होएज्जध		होएज्जहु, होएज्जेहु
	होएज्जेह	होएज्जेह, होएज्जेध		होएज्जाहु
	होएज्जाह	होएज्जाह, होएज्जाध		होज्जहु, होज्जेहु
	होज्जह	होज्जह, होज्जध		होज्जाहु
	होज्जेह	होज्जेह, होज्जेध		होहु
	होज्जाह	होज्जाह, होज्जाध		होअह, होअध
	होह	होह, होध		होएह, होएध
	होअइत्था	होअइत्था		होएज्जह, होएज्जध

होएइत्था	होएइत्था	होएज्जेह, होएज्जेध
होएज्जइत्था	होएज्जइत्था	होएज्जाह, होएज्जाध
होएज्जेइत्था	होएज्जेइत्था	होज्जह, होज्जध
होएज्जाइत्था	होएज्जाइत्था	होज्जेह, होज्जेध
होज्जइत्था	होज्जेइत्था	होज्जाह, होज्जाध
होज्जेइत्था	होज्जइत्था	होह, होध
होज्जाइत्था	होज्जाइत्था	होअइत्था
होइत्था (होत्था[1])	होइत्था	होएइत्था
होज्ज	होज्ज, होज्जा	होएज्जइत्था
होज्जा		होएज्जेइत्था
		होएज्जाइत्था
		होज्जेइत्था
		होज्जइत्था
		होज्जाइत्था
		होइत्था

३ पुरुष—होअंति	[2]प्राकृत	शौरसेनी	होअहिं
होएंति	रूपो	प्रमाणे	होएहिं
होअंते	प्रमाणे		होएज्जहिं
होएंते			होएज्जेहिं
होअइरे			होएज्जाहिं
होएइरे			होज्जहिं
होएज्जंति			होज्जेहिं

---

१ आ प्रयोग आर्षग्रंथोमां 'अभूत्' अर्थमां वपराएलो छे—जूओ भूतकाळनुं प्रकरण पृ० २६४.

२ जूओ पृ० २५३, २ टिप्पण.

होएज्जेंति	होज्जाहिं
होएज्जंते	होहिं
होएज्जेंते	होअंति, होएंति
होएज्जइरे	होअंते, होएंते
होएज्जेइरे	होअइरे, होएइरे
होएज्जांति	होएज्जंति, होएज्जेंति
होएज्जांते	होएज्जंते, होएज्जेंते
होएज्जाइरे	होएज्जइरे, होएज्जेइरे
होंति (हुंति)	होएज्जांति
होंते (हुंते)	होएज्जांते
होइरे	होएज्जाइरे
होज्जंति, होज्जेंति	होंति (हुंति)
होज्जंते, होज्जेंते	होंते (हुंते)
होज्जइरे, होज्जेइरे	होइरे
होज्जांति	होज्जंति, होज्जेंति
होज्जांते	होज्जंते, होज्जेंते
होज्जाइरे	होज्जइरे, होज्जेइरे
होज्ज	होज्जांति
होज्जा।	होज्जांते
	होज्जाइरे
	होज्ज
	होज्जा

ए रीते दरेक स्वरांत धातुनी (दा, पा, नी, जा, बू वगेरेनी) वर्तमानकाळनी बधी प्रक्रिया 'हो' नी पेठे समजवानी छे.

भूतकाळ

(स्वरांत अने व्यंजनांत धातुने लागता प्रत्ययो)

१ संस्कृतमां भूतकाळना त्रण प्रकार छे, जेमके–ह्यस्तनभूत, अद्यतनभूत अने परोक्षभूत. ए त्रणे काळना प्रत्ययो अने प्रक्रिया पण संस्कृतमां तद्दन जूदां जूदां छे. परंतु प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची के अपभ्रंश भाषामां तेम नथी. तेमां तो ते त्रणे काळ माटे एक सरखा ज प्रत्ययो छे. एटलुं ज नहि पण ते त्रणे काळना, त्रणे पुरुषोना अने त्रणे वचनोना पण एक सरखा ज प्रत्ययो छे अर्थात् भूतकाळनी प्रक्रिया के रूपमां प्राकृत, शौरसेनी वगेरे भाषामां क्यांय कशो भेद जणातो नथी.

प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशमां भूतकाळना ए प्रत्ययो आ प्रमाणे छेः–

१ [1]पु०
२ पु० } ईअ[2] (व्यंजनांत धातुने लागतो प्रत्यय)
३ पु०
,, } [3]सी, ही, हीअ (स्वरांत धातुने लागता प्रत्ययो)

---

१ कोईनो मत एवो छे के, वर्तमानकाळनी पेठे भूतकाळमां पण 'ज्ज' अने 'ज्जा' प्रत्यय वपराय छेः–होज्ज, होज्जा–(अभूत्)

२ पालिमां त्रीजा पुरुषना एकवचनमां 'ई' अने 'इ' एम बे परस्मैपदी प्रत्ययो छे अने ए, प्राकृतना 'ईअ' प्रत्यय साथे मळता आवे छेः पालिप्र० पृ० २१७ नि० १७६

३ पालिमां त्रीजा पुरुषना अने बीजा पुरुषना एकवचनमां परस्मैपदी 'सि' प्रत्यय वपराएलो छे अने ए, प्राकृतना 'सी' प्रत्यय साथे मळतो आवे छे. जेम प्राकृतमां त्रणे पुरुषमां एक सरखो 'सी' प्रत्यय स्वरांत धातुने लगाडवामां आवे छे तेम पालिमां त्रणे पुरुषमां एक सरखो 'सि' प्रत्यय स्वरांत धातुने लगाडवामां आवे छे. मात्र पालिनो ए 'सि' प्रत्यय प्रथम पुरुषना एकवचनमां अनुस्वारवाळो (सिं) वपराय छे एटलो ज भेद छेः पालिप्र० २१८ नि० १७९

व्यंजनांत धातु—हस् + ईअ—हसीअ ।
कर + ईअ—करीअ ।
भण् + ईअ—भणीअ ।

ए रीते व्यंजनांत धातुनां भूतकाळनां रूपो साधवानां छे.

स्वरांत धातु—हो + सी—होसी होअसी	हो + ही—होही होअही	हो+हीअ—होहीअ होअहीअ
पा + सी—पासी पाअसी	पा + ही—पाही पाअही	पा + हीअ—पाहीअ पाअहीअ
ठा + सी—ठासी ठाअसी	ठा + ही—ठाही ठाअही	ठा + हीअ—ठाहीअ ठाअहीअ
ने + सी—नेसी नेअसी	ने + ही—नेही नेअही	ने + हीअ—नेहीअ नेअहीअ

लासी, लाही, लाहीअ, लाअसी, लाअही, लाअहीअ ।

उड्डे + सी—उड्डेसी, उड्डेअसी, उड्डेही, उड्डेअही, उड्डेहीअ, उड्डेअहीअ ।

ए रीते स्वरांत धातुनां भूतकाळनां रूपो साधवानां छे.

[उपर जणावेला भूतकाळना प्रत्ययो करतां केटलाक जूदा प्रत्ययो पण आर्षग्रंथोमां वपराएला छे, आर्षरूपोमां विशेषे करीने

पालिरूपो भू

एकव०

१ अहोसि

२ अहोसि

३ अहोसिं

—जूओ पालिप्र० पृ० २१८ नि० १८०—पृ० २१९ नि० १८१

त्था, इत्थ, इत्था, इंसु अने अंसु; ए चार प्रत्ययो वपराएला छे. तेमां ' त्था ' अने ' इत्था, ' घणे ठेकाणे एकवचनमां वपराया छे अने ' इंसु ' तथा ' अंसु ' घणे ठेकाणे बहुवचनमां वपराया छे. ए जातनां केटलांएक आर्षरूपो जोवाथी एवुं अनुमान बांधी शकाय छे के, त्रीजा पुरुषना एकवचनमां ' त्था ' अने ' इत्था ' वपराया छे अने बहुवचनमां ' इंसु ' अने ' अंसु ' वपराया छे. जेमकेः—

[1]हो + त्था—होत्था (अभवत्, अभूत्, बभूव)

भुञ्ज + इत्था—भुञ्जित्था (भुक्तवान्)

---

१ आ ' होत्था ' ' पहारित्थ ' ' विहरित्था ' वगेरे एकवचनी रूपोनी अने ' करिंसु ' ' पुच्छिंसु ' ' आहंसु ' वगेरे बहुवचनी रूपोनी साधना पालिव्याकरण द्वारा शोधी शकाय छे. पालिभाषामां त्रीजा पुरुषना एकवचनमां आत्मनेपदी ' इत्थ ' अने बहुवचनमां परस्मैपदी ' इंसु, ' ' इसुं, ' अने ' अंसु ' प्रत्ययो वपराएला छे. उपर्युक्त आर्षरूपोमां वपराएलो ' इत्था ' पालिना ए ' इत्थ ' नुं रूपांतर जणाय छे, ' पहारित्थ ' रूपमां तो पालिनो जेवोने तेवो ' इत्थ ' प्रत्यय ज वपराएलो छे अने पालिना ' इंसु ' अने ' अंसु ' ए बे प्रत्ययो एमने एम ए आर्षरूपोमां वपराया छे. जेम संस्कृतमां ह्यस्तनी, अद्यतनी अने क्रियातिपत्तिनां रूपाख्यानोमां धातुनी पूर्वे ' अ ' उमेराय छे तेम पालिमां छे पण प्राकृतमां नथी.

पालिरूपो भू

एकव० ३ अभवित्थ (' इत्थ ' प्रत्ययवाळुं)

बहुव० ३ अगमिंसु, अगमंसु (' इंसु ' अने ' अंसु ' प्रत्ययवाळुं)

—जुओ पालिप्र० पृ० २१७ नि० १७६–१७७ तथा पृ० २२० ' गम ' नां रूपो अने टिप्पण.

री + इत्था—रीइत्था[1] (अरयिष्ट)

विहर् + इत्था—विहरित्था (विहृतवान्)

सेव् + इत्था—सेवित्था (सेवितवान्)

पहार् + इत्थ=पहारेत्थ (प्रधारितवान्)

गम्—गच्छ + इंसु—गच्छिंसु (अगच्छन्, अगमन्, जग्मुः)

प्रच्छ—पुच्छ + इंसु—पुच्छिंसु (पृष्टवन्तः)

कृ—कर + इंसु—करिंसु (अकुर्वन्, अकार्षुः, चक्रुः)

नृत्य्—नच्च + इंसु—नच्चिंसु (नृत्तवन्तः)

ब्रू—आह + अंसु—आहंसु (आहुः)

संस्कृतमां भूतकाळनां जे रूपाख्यानो तैयार थाय छे, ते उपरथी सीधी रीते पण वर्णविकारना नियमो द्वारा प्राकृतरूपाख्यानो बनावी शकाय छे. जेमके:—

सं०—	अब्रवीत्—	अब्बवी (प्रा०)
	अकार्षीत्—	अकासी (,,)
	अभूत्—	अहू (,,)
	अवोचत्—	अवोच्च (,,)
	अद्राक्षुः—	अदक्खू (,,)
	अकार्षम्—	अकरिस्सं (,,) इत्यादि.

प्राचीन प्राकृतमां—आर्षग्रंथोमां—आवां रूपाख्यानो घणां वपराएलां छे.

---

१ श्रीहेमचंद्रे पोताना प्राकृत—व्याकरणमां आ आर्षरूपो माटे कोई जातनो उल्लेख कर्यो जणातो नथी.

भविष्यत्काळ

संस्कृतमां भविष्यत्काळना त्रण प्रकार छे, जेमके-श्वस्तन-भविष्य, अद्यतनभविष्य अने परोक्षभविष्य (क्रियातिपत्ति). ए त्रणे भविष्यना पुरुषबोधक प्रत्ययो अने प्रक्रिया पण जूदां जूदां छे. परंतु प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची के अपभ्रंशमां तेम नथी-तेमां तो मात्र परोक्षभविष्यना ज प्रत्ययो अने प्रक्रिया नोखां नोखां छे अने श्वस्तन तथा अद्यतन भविष्यनी प्रक्रिया, प्रत्ययो तो तद्दन सरखां छे.

प्राकृतना भविष्यत्काळना प्रत्ययोः

१ पु०	स्सं, स्सामि, हामि, हिमि[1]	स्सामो, हामो, हिमो,
		स्सामु, हामु, हिमु;
		स्साम, हाम, हिम,
		हिस्सा, हित्था

१ भविष्यत्काळना उपर जणावेला प्रत्ययो धातुमात्रने लागे छे त्यारे पालिमां तो एवा प्रत्ययो मात्र 'भू' धातुने ज लागेला छेः-

भू पालिरूपो (भविष्यत्काळ)

१	होहामि,	होहाम,
	होहिस्सामि	होहिस्साम.
२	होहिसि,	होहिथ,
	होहिस्ससि	होहिस्सथ.
३	होहिति,	होहिंति,
	होहिस्सति	होहिस्संति. वगेरेः

जूओ पालिप्र० पृ० २०६ 'होहिति' वगेरे रूपो.

———

२ पु०	हिसि, हिसे[1]	हित्था, हिह
३ पु०	हिइ, हिए	हिंति, हिंते, हिइरे

सर्वपुरुष
सर्ववचन } ज्ज, ज्जा

शौरसेनी अने मागधीना भविष्यत्काळना प्रत्ययोः

शौरसेनीना वर्तमानकाळना प्रत्ययोनी आदिमां 'स्सि' उमेरवाथी ते बधा प्रत्ययो भविष्यत्काळना थाय छे. ए उपरांत पहेला पुरुषना एकवचनमां एक 'स्सं' प्रत्यय जुदो पण छे. जेमके;

१ पु०	स्सं, स्सिमि[2]	स्सिमो, स्सिमु, स्सिम ।
२ पु०	स्सिसि, स्सिसे	स्सिह, स्सिध, स्सिइत्था ।
३ पु०	स्सिदि, स्सिदे	स्सिंति, स्सिंते, स्सिइरे ।

---

१ प्राकृत, शौरसेनी वगेरेना 'से' 'ए' तथा 'दे' प्रत्ययो माटे जूओ पृ० २४९, २ टिप्पण

२ संस्कृतना भविष्यत्काळना प्रत्ययो अने पालिना भविष्यत्काळना प्रत्ययो एक सरखा छे, मात्र संस्कृतना 'स्य' ने बदले पालिमां 'स्स' वपराय छेः

परस्मैपद	१	स्सामि	स्साम
	२	स्ससि	स्सथ
	३	स्सति	स्संति
आत्मनेपद	१	स्सं	स्साम्हे
	२	स्ससे	स्सव्हे
	३	स्सते	स्संते

शौरसेनीना उपर जणावेला प्रत्ययो साथे पालिना आ प्रत्ययो मळता आवे छेः—

जूओ पालिप्र० २०४ नि० १३०

पैशाचीना भविष्यत्काळना प्रत्ययोः

१	पु०	शौरसेनी प्रमाणे	
२	पु०	,,	
३	पु०	एय्य	शौरसेनी प्रमाणे.

अपभ्रंशना भविष्यत्काळना प्रत्ययोः

अपभ्रंशना वर्तमानकाळना प्रत्ययोनी आदिमां 'स' अने 'स्सि' उमेरवार्थी ते बधा प्रत्ययो भविष्यत्काळना थाय छे. जेमके,

१	पु०	सउं, स्सिउं, समि, स्सिमि	सहुं, स्सिहुं, समो, स्सिमो, समु, स्सिमु, सम, स्सिम ।
२	पु०	सहि, स्सिहि, ससि, स्सिसि,ससे, स्सिसे	सहु, स्सिहु, सह, स्सिह, सध, स्सिध, सइत्था, स्सिइत्था ।
३	पु०	सदि, सदे, सइ, सए स्सिदि, स्सिदे, स्सिइ, स्सिए	सहिं, संति, संते, सइरे । स्सिहिं, स्सिंते, स्सिंते, स्सिइरे,

---

उपर जणावेला भविष्यत्काळना बधा प्रत्ययो पर रहेतां पूर्वना 'अ' नो 'इ' अने 'ए' थाय छे.

रूपाख्यानो—

भण

एकवचन

	प्राकृतरू०—	शौरसेनीरू०— मागधीरू०—	पैशाचीरू०—	अपभ्रंशरू०—
१ पुरुष—	भणिस्सं,	भणिस्सं	शौरसेनी	भणिसउं,
	भणेस्सं,	भणेस्सं	प्रमाणे	भणेसउं,
	भणिस्सामि,	भणिस्सिमि		भणिस्सिउं
	भणेस्सामि,	भणेस्सिमि		भणेस्सिउं
	भणिहामि,			भणिसमिं
	भणेहामि,			भणेसमि
	भणिहिमि,			भणिस्सिमि
	भणेहिमि			भणेस्सिमि
सर्व पुरुष अने सर्व वचन	भणेज्ज भणेज्जा			
२ पुरुष—	भणिहिसि	भणिस्सिसि	शौरसेनी	भणिसहि,
	भणेहिसि	भणेस्सिसि	प्रमाणे	भणेसहि,
	भणिहिसे	भणिस्सिसे		भणिस्सिहि
	भणेहिसे	भणेस्सिसे		भणेस्सिहि
				भणिससि
				भणेससि
				भणिस्सिसि
				भणेस्सिसि
				भणिससे
				भणेससे

			भणिस्सिसे
			भणेस्सिसे
३ पुरुष—भणिहिइ	भणिस्सिदि	[1]भनेय्य	भणिसदि
भणेहिइ	भणेस्सिदि		भणेसदि
भणिहिए	भणिस्सिदे		भणिसदे
भणेहिए	भणेस्सिदे		भणेसदे
			भणिसइ
			भणेसइ
			भणिसए
			भणेसए
			भणिस्सिदि
			भणेस्सिदि
			भणिस्सिदे
			भणेस्सिदे
			भणिस्सिइ
			भणेस्सिइ
			भणिस्सिए
			भणेस्सिए

बहुबचन

प्राकृतरू०—	शौरसेनीरू०— मागधीरू०—	पैशाचीरू०—	अपभ्रंशरू०—
१ पुरुष—भणिस्सामो	भणिस्सिमो	शौरसेनी	भणिसहुं
भणेस्सामो	भणेस्सिमो	प्रमाणे	भणेसहुं
भणिहामो	भणिस्सिमु		भणिस्सिहुं
भणेहामो	भणेस्सिमु		भणेस्सिहुं

१ जूओ पृ० २३ नि० (१)

भणिहिमो भणिस्सिम भणिसमो
भणेहिमो भणेस्सिम भणेसमो
भणिस्सामु भणिस्सिमो
भणेस्सामु भणेस्सिमो
भणिहामु भणिसमु
भणेहामु भणेसमु
भणिहिमु भणिस्सिमु
भणेहिमु भणेस्सिमु
भणिस्साम भणिसम
भणेस्साम भणेसम
भणिहाम भणिस्सम
भणेहाम भणेस्सिम
भणिहिम
भणेहिम
भणिहिस्सा
भणेहिस्सा
भणिहित्था
भणेहित्था

२ पुरुष—भणिहित्था भणिस्सिह शौरसेनी भणिसहु
भणेहित्था भणेस्सिह प्रमाणे भणेसहु
भणिहिह भणिस्सिध भणिस्सिहु
भणेहिह भणेस्सिध भणेस्सिहु
भणिस्सिइत्था भणिसह
भणेस्सिइत्था भणेसह
भणिस्सिह

भणेस्सिह
भणिसध
भणेसघ
भणिस्सिध
भणेस्सिध
भणिसइत्था
भणेसइत्था
भणिस्सिइत्था
भणेस्सिइत्था

३ पुरुष—	भणिहिंति	भणिस्सिंति	शौरसेनी	भणिसहिं
	भणेहिंति	भणेस्सिंति	प्रमाणे	भणेसहिं
	भणिहिंते	भणिस्सिंते		भणिस्सिहिं
	भणेहिंते	भणेस्सिंते		भणेस्सिहिं
	भणिहिइरे	भणिस्सिइरे		भणिसंति
	भणेहिइरे	भणेस्सिइरे		भणेसंति
				भणिस्सिंति
				भणेस्सिंति
				भणिसंते
				भणेसंते
				भणिस्सिंते
				भणेस्सिंते
				भणिसइरे
				भणेसइरे
				भणिस्सिइरे
				भणेस्सिइरे

['ज्ज' अने 'ज्जा' नो उपयोग प्राकृतनी पेठे शौरसेनी वगेरे बधी भाषाओमां करवानो छे]

ए रीते, व्यंजनांत धातुनां भविष्यत्काळनां बधी जातनां रूपो समजवानां छे अने प्राकृतरूपोनो (भणिहिइ वगेरेनो) उपयोग अपभ्रंशमां यथासंभव थइ शके छे.

हो (भू)

स्वरांत धातु अने पुरुषबोधक प्रत्यय—ए बेनी—वच्चे भविष्यत्काळमां पण 'ज्ज' अने 'ज्जा' विकल्पे आवे छे.

आगळ जणावेला नियमो प्रमाणे 'हो' धातुनां (बधा स्वरांत धातुनां) छ अंगो थाय छे अने ते छ अंगोने भविष्यत्काळना पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडवाथी अने ए प्रत्ययनिमित्तक थतो फेरफार ए अंगोमां करवाथी स्वरांत धातुनां बधां रूपाख्यानो तैयार थाय छे.

छ अंगो: हो—हो, होअ, होएज्ज, होएज्जा, होज्ज, होज्जा.

पा—पा, पाअ, पाएज्ज, पाएज्जा, पाज्ज, पाज्जा.

नी—नी, नीअ, नीएज्ज, नीएज्जा, निज्ज, निज्जा.

[बधा स्वरांत धातुनां छ छ अंगो उपर्युक्त रीते करी लेवानां छे]

जे रीते 'भण्' नां बधी जातनां रूपो आगळ बताववामां आव्यां छे ते ज रीते आ छ ए अंगनां प्रत्येकनां बधी जातनां रूपो बनावी लेवानां छे. जेमके;

एकवचन

	प्राकृतरू०—	शौरसेनीरू०— मागधीरू०—	पैशाचीरू०—	अपभ्रंशरू०—
१ पुरुष—	होस्सं	होस्सिमि	शौरसेनी	होसउं
	होइस्सं	होइस्सिमि	प्रमाणे	होइसउं

होएस्सं	होएस्सिमि	होएसउं
होएज्जिस्सं	होएज्जिस्सिमि	होएज्जिसउं
होएज्जेस्सं	होएज्जेस्सिमि	होएज्जेसउं
होएज्जास्सं (ज्जस्सं)	होएज्जा (ज्ज) स्सिमि	होएज्जासउं
होज्जिस्सं	होज्जिस्सिमि	होज्जिसउं
होज्जेस्सं	होज्जेस्सिमि	होज्जेसउं
होज्जास्सं (ज्जस्सं)	होज्जा (ज्ज) स्सिमि	होज्जासउं

[प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशनो मात्र एक ज प्रत्यय लगाडीने नमूनारूपे 'हो' नां ए छए अंगनां रूपो उपर आपेलां छे, ए ज प्रकारे दरेक प्रत्यय लगाडीने 'हो' नां (स्वरांत धातुनां) बधां रूपो समजी लेवानां छे.]

ए ज रीते 'हो' नी पेठे पा, ला, दा, मिला, गिला अने वा वगेरे स्वरांत धातुओनां दरेकनां छ छ अंगो करी बधां रूपाख्यानो बनावी लेवानां छे.

भविष्यत्काळनां संस्कृत सिद्धरूपोने पण वर्णविकारना नियमो लगाडी प्राकृतमां वापरी शकाय छे. जेमके:—

सं०— भोक्ष्यामः=भोक्खामो (प्रा०)
भविष्यति=भविस्सइ (,,)
करिष्यति=करिस्सइ (,,)
चरिष्यति=चरिस्सइ (,,)
भविष्यामि=भविस्सामि (,,) इत्यादि.

आर्षग्रंथोमां केटलांक रूपो तो आ ज प्रकारनां वपराएलां छे.

———

क्रियातिपत्ति–(परोक्षभविष्य)

ज्यारे शरतवाळां बे वाक्योनुं एक संयुक्त वाक्य बनेलुं होय अने तेमां देखाती बन्ने क्रियाओ कोइ सांकेतिक क्रिया जेवी जणाती होय त्यारे आ 'क्रियातिपत्ति' नो प्रयोग थाय छे.

प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशना प्रत्ययो:

सर्व पुरुष, सर्व वचन } ज्ज, ज्जा, अन्त, माण

धातुने 'न्त,' 'माण' प्रत्यय लाग्या पछी तैयार थएल अकारांत अंगनां ते ते भाषा प्रमाणे नामनी प्रथमा विभक्ति जेवां ज रूपाख्यानो थाय छे.

व्यंजनांत—भणेज्ज, भणेज्जा, भणंतो, भणमाणो } सर्व पुरुष, सर्व वचन.

स्वरांत—होज्ज, होज्जा, होंतो, होमाणो } ,, ,,

---

[1]आज्ञार्थ

१ पुरुष— मु मो

---

१ पालिमां वपराता आज्ञार्थ अने विध्यर्थ प्रत्ययो आ प्रमाणे छे:

	आज्ञार्थ		विध्यर्थ	
परस्मैपद	१ मि	म.	एय्यामि (प्रा० एज्जामि) ए,	एय्याम(प्रा० एज्जाम).
	२ हि	थ.	एय्यासि (प्रा० एज्जासि) ए,	एय्याथ(प्रा० एज्जाह).
	३ तु	अंतु.	एय्य (प्रा० एज्ज) ए,	एय्युं.
आत्मनेपद	१ ए	आमसे.	एय्यं, ए	एय्याम्हे.
	२ स्सु	व्हो.	एथो	एय्यव्हो.
	३ तं	अंतं.	एथ	एरं.

—जुओ पालिप्र० पृ० १०१ पंचमी तथा पृ० १०४ सप्तमी.

२ पुरुष— सु, *इज्जसु, *इज्जहि, *इज्जे, हि ह
(अप० इ, उ, ए)

३ पुरुष— उ (शौ० दु) न्तु

सर्व पुरुष, सर्व वचन—ज्ज, ज्जा

उपरना बधा प्रत्ययो पर रहेतां धातुना अकारांत अंगना अंत्य 'अ' नो ए[1] थाय छे.

'मु' अने 'मो' प्रत्यय पर रहेतां धातुना अकारांत अंगना अंत्य 'अ' नो 'आ' अने 'इ' विकल्पे थाय छे.

अकारांत अंगने लागेला 'हि' प्रत्ययनो लोप थाय छे.

हस—

१ पु०—	हसामु, हसिमु, हसेमु, हसमु.	हसामो, हसिमो, हसेमो, हसमो.
२ पु०—	हससु, हसेसु, हसेज्जसु, हसेज्जहि, हसेज्जे, हस.	हसह, हसेह.
३ पु०—	हसउ, हसेउ.	हसंतु, हसेंतु.

सर्व पु० सर्व वचन—हसेज्ज, हसेज्जा.

पालिना विध्यर्थप्रत्ययो थोडा रूपांतर साथे प्राकृतमां वपराया छेः प्राकृतमां धातुनां विध्यर्थक रूपोमां जे 'एज्ज' अने 'एज्जा' नो अंश आवे छे ते पालिना 'एय्य' अने 'एय्या' नुं जकारवाळुं रूपांतरमात्र छे अने ए पालिप्रत्ययो साथे बतावेलुं छे.

* आ त्रणे प्रत्ययो धातुना अकारांत अंगने ज लागे छे.

१ कोई ठेकाणे तो 'ए' ने बदले 'आ' पण थई जाय छे. जेमके—सुण—'सुणेउ' ने बदले सुणाउ (शृणोतु)

हो–

१ पु०–	होआमु, होइमु.	होआमो, होइमो,
	होएमु, होअमु,	होएमो, होअमो,
	[1]होएज्जामु, होएज्जिमु,	होएज्जामो, होएज्जिमो,
	होएज्जेमु, होएज्जमु,	होएज्जेमो, होएज्जमो,
	होज्जामु, होज्जिमु,	होज्जामो, होज्जिमो,
	होज्जेमु, होज्जमु,	होज्जेमो. होज्जमो,
	होमु, होज्ज, होज्जा.	होमो, होज्ज, होज्जा.

पूर्व प्रमाणे 'हो' नां ॐ अंगो बनावी आज्ञार्थनां बधां रूपाख्यानो 'हस'नी पेठे साधवानां छे. अने ए रीते बधा स्वरांत धातुनां (दा, ला, पा वगेरेनां) रूपाख्यानो समजवानां छे.

[शौरसेनीनो प्रत्यय मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशमां पण वापरवानो छे]

शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीनां रूपाख्यानो

हस्

१ पु०	हसामु वगेरे प्राकृत प्रमाणे	हसामो वगेरे प्राकृत प्रमाणे.
२ पु०	हससु वगेरे ,, ,,	हसह वगेरे ,, ,,
३ पु०	हसदु, हसेदु	हसंतु वगेरे ,, ,,

अपभ्रंशनां रूपाख्यानो

१ पु०	हसामु वगेरे प्राकृत प्रमाणे	हसामो वगेरे प्राकृत प्रमाणे
२ पु०	हसि, हसु, हसे, हससु वगेरे प्राकृत प्रमाणे	हसह वगेरे ,, ,,

---

१ जूओ पृ० २५४ 'ज्ज' अने 'ज्जा'नी वपराश.

३ पु०	[1]हसदु, हसेदु, हसउ, हसेउ	[2]हसंतु वगेरे प्राकृत प्रमाणे

हो

१ पु०	होआमु वगेरे प्राकृत प्रमाणे होइ, होउ, होए,	होआमो वगेरे प्राकृत प्रमाणे
२ पु०	होअसु वगेरे प्राकृत प्रमाणे	होअह वगेरे प्राकृत प्रमाणे
३ पु०	होअदु, होएदु होअउ, होएउ	होअंतु वगेरे प्राकृत प्रमाणे

ए रीते दरेक व्यंजनांत अने स्वरांत धातुओनां रूपो करी लेवानां छे.

विध्यर्थनी बधी प्रक्रिया आज्ञार्थना जेवी छे, विशेष ए छे के, सर्वपुरुष अने सर्ववचनमां एक 'ज्जइ' प्रत्यय वधारे लागे छे, ए 'ज्जइ' प्रत्यय पर रहेतां पूर्वना 'अ' 'ए' थाय छे:

सर्वपुरुष सर्ववचन { होज्जइ, होज्ज, होज्जा (भवेत्)
हसेज्जइ, हसेज्ज, हसेज्जा (हसेत्)

[आर्षग्रंथोमां विध्यर्थसूचक केटलांक खास रूपो मळी आवे छे, ते आ छे:—

1 जूओ पृ० १० असंयुक्त 'कादि' लोप—हसदु=हसउ

2 जूओ पृ० ३५ न्त=न्द नि० (१)

सिया	(स्यात्)
चरे	(चरेत्)
पढे	(पठेत्)
अच्छे	(आच्छिन्द्यात्)
अब्भे	(आभिन्द्यात्)

आ रूपो विध्यर्थसूचक संस्कृत सिद्ध रूपो उपरथी सीधी रीते वर्णविकारना नियमो द्वारा सधाएलां छे. ते हकीकत तेने पडखे ( ) आ निशानमां आपेलां रूपो उपरथी जणाइ आवे छे. ए रीते बीजां संस्कृतरूपो उपरथी पण प्राकृतरूपो साधी शकाय छे.]

अनियमित रूपाख्यान

[1]अस्–थवुं

वर्तमानकाळ

१ पुरुष	अत्थि, म्हि, अंसि	अत्थि, म्हो, म्ह.
२ पुरुष	अत्थि, सि	अत्थि.
३ पुरुष	अत्थि	अत्थि.

---

१ पालिमां पण त्रणे पुरुषना एकवचनमां विध्यर्थसूचक 'ए' प्रत्यय वपराएलो छे (जूओ पृ० २७५ १ टिप्पण) ए अनुसार पण आ आर्षरूपो साधी शकाय छे.

२ प्राकृतमां 'अस्' धातुनां घणां थोडां रूपो थाय छे, भूतकाळ सिवाय बीजा अर्थमां एक मात्र 'अत्थि' रूपथी पण काम चाली शके छे. पालिमां 'अस्' नां दरेक काळवार नोखां नोखां रूपो थाय छे अने पालिनां ए रूपो, संस्कृत रूपो साथे घणां मळतां आवे छे:

भूतकाळ

सर्व पुरुष, सर्व वचन— } आसि, अहेसि ।

विध्यर्थ, आज्ञार्थ, भविष्यत्काळ

सर्व पुरुष, सर्व वचन— } अत्थि ।

अ (पालिरूपो)

वर्तमाना—१	अस्मि, अम्हि	अस्म, अम्ह (अम्हसे).
२	असि, अहि	अत्थ.
३	अत्थि	संति.
सप्तमी—१	अस्सं	अस्साम.
(विध्यर्थ) २	अस्स	अस्सथ.
३	अस्स,	अस्सु,
	सिया	सियुं.
पंचमी—१	अस्मि, अम्हि	अस्म, अम्ह.
(आज्ञार्थ) २	अहि,	अत्थ.
३	अत्थु,	संतु.
अद्यतनी—१	आसिं	आसिम्ह
(भूतकाळ) २	आसि	आसित्थ
३	आसि	आसुं, आसिंसु (आसु)

—जूओ पालिप्र० पृ० १७८–१९८–१९२–२२३ 'अस्' नां रूपो

२ जूओ आचारांगसूत्रनो आरंभ—

"पुरित्थमाओ वा दिसाओ आगओ अहं अंसि" इत्यादि. आ आर्षरूप संस्कृतना 'अस्मि' रूपनुं रूपांतर जणाय छे.

कृ—करवुं[1]

मात्र भूतकाळ अने भविष्यत्काळमां 'कृ' धातुनो 'का' आदेश थाय छे:

भूतकाळ

कासी, काही, काहीअ, काअसी, काअही, काअहीअ.

भविष्यत्काळ

फक्त प्रथम पुरुषना एकवचनमां 'काहं' रूप वधारे थाय छे, बाकी बधां रूपो 'हो' धातुनी सरखां छे:

[2]काहिइ, काहिमि, काहिमि इत्यादि ।

दा—देवुं.

मात्र भविष्यत्काळमां प्रथम पुरुषना एकवचनमां 'दा' धातुनुं 'दाहं' रूप वधारे थाय छे. बाकी बधां रूपो 'हो' धातुनी सरखां छे:

दाहं, दाहिमि, दाहिमि, दाहिइ, इत्यादि ।

---

१ 'कृ' नुं भूतकाळसूचक 'अकासि' अने 'अकासिं' (बीजा पुरुषनुं एकवचन अने प्रथम पुरुषनुं एकवचन) रूप पालिमां थाय छे. ए प्राकृतना 'कासी' रूप साथे मळतुं गणाय खरुं:—जुओ पालिप्र० पृ० २२५ 'कृ' नां रूपो.

२ प्राकृतरूपो साथे मळता आवतां 'कृ' नां भविष्यत्काळनां पालिरूपो आ प्रमाणे छे:

१	काहामि	काहाम.
२	काहिसि	काहिथ.
३	काहिति	काहिंति.

—जुओ पालिप्र० पृ० २०९ 'कृ' नां रूपो.

मात्र भविष्यत्काळमां नीचेना धातुओना नीचे प्रमाणे आदेशो थाय छे:

[1]श्रु— सोच्छ।	दृश—दच्छ।	भिद—भेच्छ।
गम— गच्छ।	मुच—मोच्छ।	भुज्—भोच्छ।
रुद— रोच्छ।	वच—वोच्छ।	
विद— वेच्छ।	छिद्—छेच्छ।	

आ धातुओनां भविष्यत्काळ संबंधी रूपाख्यानो 'भण' धातुनी जेवां थाय छे. विशेषता ए छे के, आ धातुओने लागता भविष्यत्का-

१ प्राकृतमां 'श्रु' वगेरे धातुओनां 'सोच्छ' वगेरे अंगो बने छे तेम पालिमां पण बने छे:

पालिअंगो

श्रु—	सोस्स—	प्रथम पुरुषनुं एकवचन	सोस्सं.
गम—	गच्छ—		
रुद—	रुच्छ	,,	रुच्छिस्सामि.
		,,	रुच्छिस्साम.
दृश	दक्ख / दिच्छ	तृतीय पुरुषनुं एकवचन—	दिच्छति.
मुच	मोक्ख	,,	मोक्खति.
वच	वक्ख	,,	वक्खति.
छिद	छेच्छ	,,	छेच्छति.
भुज्	भोक्ख	,,	भोक्खति.

—जूओ पालिप्र० पृ० २०६-२०७.

[वर्णपरिवर्तनना नियमद्वारा 'श्रु' वगेरेनां संस्कृत रूपोमांथी पण उपर जणावेलां प्राकृत अने पालिअंगो नीपजावी शकाय छे. द्रक्ष्यति, मोक्ष्यति, भोक्ष्यते, वक्ष्यति, छेत्स्यति, रुत्स्यति (कल्पित) श्रोष्यति— जूओ क्ष=क्ख, क्ष=च्छ, नि० २२ पृ० ३० त्स=च्छ नि० २६, पृ० ३२ अने संयुक्त 'मादि' लोप पृ० १५]

ळना जेटला प्रत्ययो 'हि' आदिवाळा छे तेमांना 'हि' नो लोप विकल्पे थाय छे तथा प्रथम पुरुषना एकवचनमां ए बधा धातुओनुं एक अनुस्वारांत रूप पण वधारे थाय छे:

१ पुरुष—सोच्छं, सोच्छिमि, सोच्छेमि, सोच्छिहिमि, सोच्छेहिमि, सोच्छिस्सं, सोच्छेस्सं, सोच्छिस्सामि, सोच्छेस्सामि, सोच्छिहामि, सोच्छेहामि ।

२ पुरुष—सोच्छिसि, सोच्छेसि, सोच्छिहिसि, सोच्छेहिसि, सोच्छिसे, सोच्छेसे, सोच्छिहिसे, सोच्छेहिसे ।

३ पुरुष—सोच्छिइ, सोच्छेइ, सोच्छिहिइ, सोच्छेहिइ । सोच्छिए, सोच्छेए, सोच्छिहिए, सोच्छेहिए । इत्यादि ।

[सूचना—आख्यातने लगता बधी भाषाना (प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशना) प्रत्ययो आगळ जणावेला छे, आ चालु प्रकरणमां प्रेरकभेदी, सह्यभेदी वगेरे आख्यातने लगती हकीकत जणाववानी छे, तेमां मात्र प्राकृतना ज एक एक प्रत्ययद्वारा बधां उदाहरणो देखाडेलां छे तो अभ्यासीए पोतानी मेळे प्रेरकभेदी, सह्यभेदी वगेरे अंगोने शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंश भाषाना प्रत्ययो लगाडी ते ते भाषानां रूपो बनावी लेवां]

प्रेरकरूप

प्रेरकअंग बनाववानी रीत

१ धातुने अ, ए, आव अने आवे [1]प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं प्रेरक अंग तैयार थाय छे.

---

१ पालिमां पण साधारण रीते प्रेरणाना अर्थमां 'अ,' 'ए,' 'आप' अने 'आपे' लगाडवाथी धातुमात्रना चार अंगो बने छे:—

२ 'अ' अने 'ए' प्रत्यय पर रहेतां धातुना उपांत्य 'अ'नो 'आ' थाय छे.[१]

धातु	प्रेरक अंगो
कृ–कर्	कार, कारे, कराव, करावे।
हस्	हास, हासे, हसाव, हसावे।
शम्–सम्–	साम, सामे, समाव, समावे।
दृश–दरिस्–	दरिस, दरिसे, दरिसाव, दरिसावे।
भ्रम्–भम्–	भाम, भामे, भमाव, भमावे।
क्षम्–खम्–	खाम, खामे, खमाव, खमावे। इत्यादि।

(कृ)	कार, कारे, काराप, कारापे.
(पच्)	पाच, पाचे, पाचाप, पाचापे.
(हन्)	घात, घाते, घाताप, घातापे.
(गम्)	गाम, गामे, गच्छाप, गच्छापे.
(ग्रह्)	गाह, गाहे, गाहाप, गाहापे.
(चिन्त्)	चिताप, चितापे.
(चुर्)	चोराप, चोरापे.
(बुध्)	बोध, बोधे, बुज्झाप, बुज्झापे.

पालिमां वपराता 'आप' अने 'आपे' ज प्राकृतमां वपराता 'आव' अने 'आवे' छे (जूओ पृ० २८ ५–ब, अं० १६)

—जूओ पालिप्र० पृ० २२७–२२९.

१ 'आवि' अने 'आवे' प्रत्यय पर रहेतां पण आ नियम लागे छे एम कोइनो मत छेः

कोई–	हेमचंद्र–
कारावेइ।	करावेइ।
हासाविओ।	हसाविओ।

ए प्रकारे धातुमात्रनां प्रेरक अंगो तैयार करी लेवानां छे.

३ उपांत्यमां गुरु स्वरवाळा (स्वरादि वा व्यंजनादि) धातुने उपर जणावेल प्रत्ययो उपरांत विकल्पे 'अवि' प्रत्यय लगाडवाथी पण तेनुं प्रेरक अंग तैयार थाय छे:

धातु—	प्रेरक अंगो—
तुष्—तोषि—तोसि—	तोसवि, तोस, तोसे, तोसाव, तोसावे।
घुष्—घोषि—घोसि—	घोसवि, घोस, घोसे, घोसाव, घोसावे।
मुष्—मोषि—मोसि—	मोसवि, मोस, मोसे, मोसाव, मोसावे।
दुष्—दूषि—दूसि	दूसवि, दूस, दूसे, दूसाव, दूसावे।
दोसि	दोसवि, दोस, दोसे, दोसाव, दोसावे।
दुह्—दोहि—	दोहवि, दोह, दोहे, दोहाव, दोहावे।
मुह्—मोहि—	मोहवि, मोह, मोहे, मोहाव, मोहावे।
भक्ष्—भक्षि—भक्खि—	भक्खवि, भक्ख, भक्खे, भक्खाव, भक्खावे।
तक्ष्—तक्षि—तक्खि—	तक्खवि, तक्ख, तक्खे, तक्खाव, तक्खावे।
पार—पारि—	पारवि, पार, पारे, पाराव, पारावे।
चिह्न—चिह्नि—	चिह्नवि, चिह्न, चिह्ने, चिह्नाव, चिह्नावे।
जीव—जीवि—	जीववि, जीव, जीवे, जीवाव, जीवावे।
लुञ्च्—लुञ्चि—लुंचि—	लुंचवि, लुंच, लुंचे, लुंचाव, लुंचावे।
शुष्—शोषि—सोसि	सोसवि, सोस, सोसे, सोसाव, सोसावे.
तृष्—तृषि—तृसि—	तृसवि, तृस, तृसे, तृसाव, तृसावे।

इत्यादि

ए रीते उपांत्यगुरुवाळा धातुओनुं प्रेरक अंग बनावी लेवानुं छे.

४ भम (भ्रम) धातुनुं प्रेरक अंग 'भमाड' पण थाय छे:

भम—भमाड, भाम, भामे, भमाव, भमावे।

ए रीते तैयार थएल प्रेरक अंगोने ते ते पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडवाथी तेनां दरेक प्रकारनां रूपाख्यानो तैयार थाय छे-ए रूपाख्यानो बनाववानी प्रक्रिया आगळ आवेल कर्तरिरूपाधिकारमां आवी गई छे. तो पण अहीं उदाहरण तरीके केटलांक रूपाख्यानो दर्शाववामां आवे छे:

वर्तमानकाळ

१ पु०—खामेमि, खामामि. खामामो,-[1]मु,-म, खामिमो, मु,-म,
खाममि, खामेमि, खामेमो,-मु,-म, खाममो, मु,-म ।
खामेमो-मु,-म,
खमावेमि, खमावामि, खमावामो,-मु,-म. खमाविमो,-मु,-म,
खमाववि, खमावेमि खमावेमो,-मु,-म, खमाववमो,-मु,-म,
खमावेमो,-मु,-म. इत्यादि ।
खामेज्ज, खामेज्जा, खमावेज्ज, खमावेज्जा ।

भूतकाळ

सर्वपुरुष, सर्ववचन—तोसवि-सी,-ही,-हीअ. तोस-सी,-ही,-हीअ,
तोसे-सी,-ही,-हीअ, तोसाव-सी,-ही,-हीअ,
तोसावेसी,-ही,-हीअ । इत्यादि ।

भविष्यत्काळ

२ पु०—भक्खवि-हिइ, भक्ख-हिइ, भक्खे-हिइ, भक्खाव-हिइ,
भक्खावे-हिइ इत्यादि ।

---

१ –'मु' –'म' वगेरे प्रत्ययो मूकेला छे, तो मूळ अंगने ए प्रत्ययो लगाडी 'खामामो' नी पेठे 'खामामु' 'खामाम' वगेरे रूपो पोतानी मेळे बनावी लेवां अने हवे पछी ज्यां आवुं आवे त्यां पण आ **रीते ज** समजी लेवुं.

क्रियातिपत्ति—

सर्वपुरुष, सर्ववचन—भक्खविंतो—विमाणो,—विज्ज,—विज्जा ।

भक्खंतो,—क्खमाणो,—क्खज्ज,—क्खज्जा ।

भक्खेंतो,—क्खेमाणो,—क्खेज्ज,—क्खेज्जा ।

भक्खावंतो,—क्खावमाणो,—क्खावज्ज,—क्खावज्ज ।

भक्खावेंतो, -वेमाणो, -वेज्ज, -वेज्जा । इत्यादि ।

विध्यर्थ—आज्ञार्थ

२. पु०—हाससु, -सेसु, हासेज्जसु, हासेज्जहि, हासेज्जे, हास ।

हासेसु, हासेहि ।

हसा-वसु,-वेसु,-वेज्जसु,-वेज्जहि,-वेज्जे, हसाव ।

हसावेसु, हसावेहि ।

हासेज्जइ, हासेज्ज, हासेज्जा, हसावेज्जइ, हसावेज्ज, हसावेज्जा ।

इत्यादि ।

ए रीते प्रत्येक प्रेरक अंगने बधा काळना पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडी तेना रूपाख्यानो समजी लेवानां छे.

ज्यारे प्रेरकसह्यभेद, प्रेरकवर्तमानकृदंत, प्रेरकभूतकृदंत अने प्रेरकभविष्यत्कृदंत बनाववुं होय त्यारे पण प्रेरकअंगने ज ते सह्यभेद वगेरेना प्रत्ययो लगाडी तेनां रूपाख्यानो बनावी लेवानां छे. (आ संबंधेनी विशेष माहिती सह्यभेदाधिकार अने कृदंताधिकारमां जणाववानी छे).

नामधातु

प्रेरकप्रक्रिया सिवाय संस्कृतमां बीजी पण अनेक प्रक्रियाओ छे, जेमके-[1] सन्नंतप्रक्रिया, यङंतप्रक्रिया, यङ्लुवंतप्रक्रिया अने नामधातुप्रक्रिया. परंतु प्राकृतमां ए प्रक्रियाओ माटे कोई खास विशेष

१ पालिमां पण सन्नंत, यङन्त, यङ्लुवंत अने नामधातुनी प्रक्रिया संस्कृतनी पेठे थाय छे:—

सन्नंत-	बुभुक्खति	(बुभुक्षति)
	जिघच्छति	(जिघत्सति)
	पिवासति	(पिपासति)
	जिगिंसति	(जिगीषति)
		(जिहीर्षति)
	तिकिच्छति / चिकिच्छति	(चिकित्सति)
	वीमंसते	(मीमांसते)
सन्नंतप्रेरक-	बुभुक्खयति	(बुभुक्षयति)
यङंत-	लालप्पति	(लालप्यते)
	दद्दल्लति	(जाज्वल्यते)
यङ्लुवंत-	चंकमति	(चङ्क्रमीति)
	जंगमति	(जङ्गमीति)
	लालपति	(लालपीति)
नामधातु-	पब्बतायति	(पर्वतायते-पर्वत इव आचरति)
	छत्तीयति	(छात्रीयति पुत्रम्)
	अतिहत्थयति	(अतिहस्तयति-हस्तिना अतिक्रामति)
	उपवीणयति	(वीणया उपगायति)
	कुसलयति	(कुशलं पृच्छति)

—पालिप्र० पृ० २२९-२३३

विधान तो नथी अने प्राकृत साहित्यमां ए प्रक्रियानां रूपाख्यानो उपलब्ध थाय छे एथी कल्पी शकाय छे के, ते ते प्रक्रियानां(संस्कृत) सिद्ध रूपोमां, आगळ जणावेल वर्णविकारना नियमानुसार फेरफार करी ते रूपोनो प्रयोग करवामां आवे (ल) छे. जेमके—

संस्कृत	प्राकृत
शुश्रूषति—	सुस्सूसइ । (सन्नंत)
लालप्यते—	लालप्पइ । (यङंत)
चङ्क्रमीति—	चंकमइ । (यङ्लुबंत) चंकमणं । (चङ्क्रमणम्)
	इत्यादि ।

मात्र नामधातु माटे विशेषता आ छे :

नामधातुओने लागेल ' य ' प्रत्ययनो लोप विकल्पे थाय छे.

गुरुकायते—गरुआइ, गरुआअइ (गुरुरिव आचरति–गुरुनी जेवुं आचरण करे छे)

दमदमायते—दमदमाइ दमदमाअइ (दम दम थाय छे)

लोहितायते— लोहिआए–इ, लोहिआअए–इ । (लाल थाय छे)

हंसायते— हंसाए–इ, हंसाअए,–इ । (हंसनी जेम आचरे छे)

तमायते— तमाए–इ, तमाअए–इ । (अंधारा जेवुं छे)

अप्सरायते— अच्छराए,–इ, अच्छराअए–इ । (अप्सरानी जेम आचरे छे)

उन्मनायते— उम्मणाए–इ, उम्मणाअए,–इ ।(उन्मना थाय छे)

कष्टायते— कट्ठाए,–इ, कट्ठाअए,–इ । (कष्टने माटे क्रमण करे छे)

धूमायते धूमाए–इ, धूमाअए–इ। (धूमने उद्गमे छे)

सुखायते सुहाए–इ, सुहाअए,–इ। (सुखने अनुभवे छे)

शब्दायते सद्दाए, इ, सद्दाअए–इ। (शब्द करे छे–बोलावे छे)

इत्यादि.

सह्यभेद

वर्तमानकाळ, विध्यर्थ, आज्ञार्थ अने (ह्यस्तन) भूतकाळमां धातुने ' ईअ ' अने ' इज्ज ' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं सह्यभेदी अंग

---

१ पालिमां सह्यभेदी अंग बनाववा माटे ' य ' ' इय ' अने ' ईय ' तथा क्यांय ' इय्य ' (प्रा० ईअ, इज्ज) प्रत्ययनो व्यवहार थाय छेः—

य—	पच्चते, पच्चति	(पच्यते)
	बुज्झते, बुज्झति	(बुध्यते)
	वुच्चते, वुच्चति	(उच्यते)
य अने इय—	तुस्सते, तुसियति	(तुष्यते)
	पुच्छते, पुच्छियति	(पृच्छयते)
	भंजियति	(भज्यते)
इय्य—	करिय्यति, करिय्यते	(क्रियते)
ईय—	महीयति	(मह्यते)
	मथीयति	(मथ्यते)
	करीयति	(क्रियते)
	कय्यति	
	कयिरति	

—जूओ पालिप्र० पृ० २३४–२३७

बने छे अने ते अंगने प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंश भाषाना ते ते पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडवाथी तेनां रूपाख्यानो थाय छे.

पैशाचीनी विशेषता

पैशाचीमां धातुनुं सह्यभेदी अंग बनाववुं होय तो पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडता पहेलां धातुने 'ईअ' 'इज्ज' ने बदले 'इय्य' प्रत्यय लगाडवो जोईए. जेमके,

सं०	प्रा०	शौ० मा०	पै०
गीयते	गिज्जए	गिज्जदे	गिय्यते
दीयते	दिज्जए	दिज्जदे	दिय्यते
रम्यते	रमिज्जए	रमिज्जदे	रमिय्यते
पठ्यते	पढिज्जए	पढिज्जदे	पढिय्यते

कृ

'कृ' धातुनुं सह्यभेदी अंग बनाववुं होय तो पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडता पहेलां एने ('कृ' धातुने) ज 'इय्य' ने बदले 'ईर' प्रत्यय लगाडवो जोईए.

सं०		प्रा०		शौ० मा०		पै०	
	क्रियते		करिज्जए		[1]करिज्जदे		कीरते
			करीअए		करीअदे		

अपभ्रंशनी विशेषता

संस्कृतमां थता प्रथम पुरुषना 'क्रिये' रूपने बदले अपभ्रंशमां 'कीसु' रूप पण वपराय छे अने पक्षे यथाप्राप्त.

---

१ कलिज्जदे, कलीअदे—जूओ पृ० २६ र–ल.

साधारण सद्यभेदी अंगो

धातु	सद्यभेदी अंग	धातु	सद्यभेदी अंग
भण्—	भणीअ, भणिज्ज ।	पा—	पाईअ, पाइज्ज ।
हस्—	हसीअ, हसिज्ज ।	दा—	दाईअ, दाइज्ज ।
कथ्—कह्—	कहीअ, कहिज्ज ।	ला—	लाईअ, लाइज्ज ।
पत्—पड्—	पडीअ, पडिज्ज ।	ध्या—झा—	झाईअ, झाइज्ज ।
कथ्—बोल्ल—	बोल्लीअ, बोल्लिज्ज ।	हो—	होईअ, होइज्ज ।
		सू—	सूईअ, सूइज्ज ।
			इत्यादि ।

ए रीते धातुमात्रनां सद्यभेदी अंगो बनावी लेवानां छे. आ अंगोनां रूपाख्यानो बनाववानी प्रक्रिया, कर्तरिरूपाधिकारमां जणावेल प्रक्रिया जेवी छे. जेमके—

वर्तमानकाळ

(भण्यते ग्रन्थः)

३ पु०—(गंथो) भणीअइ,—एइ, अए, एए, एज्ज, एज्जा
भणिज्जइ, ज्जेइ, ज्जए, ज्जेए, ज्जेज्ज, ज्जेज्जा ।

(भण्यन्ते ग्रन्थाः)

(गंथा) भणीअंति, ते, एंति, एंते, भणीअइरे, एइरे
भणिज्जंति, ते, ज्जेंति, ज्जेंते, ज्जइरे, ज्जेइरे,
भणीएज्ज, एज्जा, भणिज्जेज्ज, ज्जेज्जा ।

इत्यादि ।

(कथ्यसे त्वम्)

२ पु०—(तुमं) बोल्लीअसि, एसि, असे, एसे,
बोल्लिज्जसि, ज्जेसि, ज्जसे, ज्जेसे

(कथ्यध्वे यूयम्)

(तुम्हे) बोलीअह, एह, बोलीएइत्था, अइत्था ।

(त्वया अहं सूये)	त्वया वयं सूमहे
१ पु०—(अहं) सूईआमि, एमि, अमि,	(अम्हे) सूईआमो, मु, म,
सूइज्जामि, ज्जेमि, ज्जमि	सूईइमो, मु, म,
सूईएज्ज, एज्जा	सूईएमो, मु, म,
सूइज्जेज्ज, ज्जेज्ज ।	सूईअमो, मु, म,
	सूइज्जामो, मु, म,
	सूइज्जिमो, मु, म,
	सूइज्जेमो, मु, म,
	सूइज्जमो, मु, म,
	सूईएज्ज, ज्जा,
	सूइज्जेज्ज, ज्जा ।

विध्यर्थ

भणीअउ, एउ	भणीअंतु, एंतु ।
भणिज्जउ, ज्जेउ	भणिज्जतु, ज्जेंतु ।
भणीएज्ज, ज्जा	भणीएज्ज, ज्जा, ज्जइ ।
भणीएज्जइ	
भणिज्जेज्ज, ज्जा	भणिज्जेज्ज, ज्जा, ज्जइ ।
भणिज्जेज्जइ	

आज्ञार्थ

भणीअउ, एउ	भणीअंतु, एंतु ।
भणिज्जउ, जेउ	भणिज्जंतु, ज्जेंतु ।
भणीएज्ज, ज्जा	भणीएज्ज, ज्जा ।
भणिज्जेज्ज, ज्जा	भणिज्जेज्ज, ज्जा ।

भूत-(ह्यस्तनभूत)

भणीअसी, ही, हीअँ ।

भणिज्जसी, ही, हीअ ।

१ जे काळमां सह्यभेदसूचक 'ईअ' अने 'इज्ज' प्रत्यय धातुने नथी लागता ते काळमां तेनां सह्यभेदी रूपो कर्तरिरूपो जेवां समजवानां छे, जेमके-

(अद्यतन) भूतकाळ-भण-भणीअ ।

भविष्यत्काळ-भण-भणिहिइ, भणिहिए, इत्यादि ।

क्रियातिपत्ति-भण-भणेज्ज, ज्जा, भणंतो, भणमाणो, इत्यादि ।

प्रेरक सह्यभेद

१ धातुनुं प्रेरक सह्यभेदी रूप करवुं होय त्यारे धातुने प्रेरणा-सूचक एक मात्र 'आवि' प्रत्यय लगाडी, ते तैयार थएल अंगने सह्यभेदसूचक 'ईअ' अने 'इज्ज' प्रत्यय पूर्वोक्त काळमां लगाडी प्रत्येक धातुनुं प्रेरक सह्यभेदी अंग बनाववानुं छे.

२ प्रेरणासूचक कोइ पण प्रत्यय लगाडया विना मात्र उपांत्य 'अ' नो दीर्घ करी अने सह्यभेदसूचक 'ईअ' अने 'इज्ज' प्रत्यय पूर्वोक्त काळमां लगाडीने पण प्रत्येक धातुनुं प्रेरक सह्यभेदी अंग तैयार थाय छे.

(आ सिवाय बीजी रीते प्रेरक सह्यभेदी अंग बनी शकतुं नथी)

ए रीते तैयार थएल प्रेरक सह्यभेदी अंगनां रूपाख्यानोनी प्रक्रिया कर्तरि रूपाख्यानोनी प्रक्रिया जेवी छे.

प्रे० सह्य० प्रे०स०अंग—

कर + आवि—करावि + ईअ— करावीअ— करावीअइ, ए, सि, से, इत्यादि.

कर— कार + ईअ— कारीअ— कारीअइ, ए, सि, से, इत्यादि.

कर + आवि—करावि + इज्ज—कराविज्ज—कराविज्जइ, ए, सि, से, इत्यादि.

कर— कार + इज्ज— कारिज्ज— कारिज्जइ, ए, सि, से, इत्यादि.

हस + आवि—हसावि + ईअ— हसावीअ— हसावीअइ, ए, सि, से, इत्यादि.

हस + हास + ईअ— हासीअ— हासीअमि, आमि, एमि इत्यादि.

हस + हसावि + इज्ज—हसाविज्ज—हसाविज्जित्था,-विज्जेह, ज्जह, इत्यादि.

हस + हास + इज्ज—हासिज्ज—हासिज्जंति, न्ते, ज्जइरे, इत्यादि.

ए रीते धातु मात्रनां प्रेरक सह्यभेदी अंगो तैयार करी सर्व काळनां रूपाख्यानो समजी लेवानां छे.

ज्यां प्रेरक अंगने 'ईअ' अने 'इज्ज' प्रत्यय नथी लागता त्यां प्रेरक अंगथी सीधा पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडी कर्तरिरूपाख्यानोनी पेठे प्रेरक सह्यभेदी रूपाख्यानो समजवानां छे.

जेमके—भविष्यत्काळ

प्रे०

कर + आवि—करावि—कराविहि-इ, ए, -सि, -से, -मि, विहामि, विस्सामि, विस्सं

कर— कार —कारेहि-इ, ए, -सि, -से, -मि,
रेहामि, रेस्सामि, रेस्सं

हस + आवि– हसावि—हसाविहि-न्ति, -न्ते, -इरे-त्था, ह,
विस्सामो, विहामो, विस्सामु, विहामु,
विस्साम, विहाम, विहिमो, विहिमु,
विहिम, विहिस्सा, विहित्था

हस— हास —हासेहि-इ, ए, सि, से, मि,
सेहामि, सेस्सामि, सेस्सं। इत्यादि.

क्रियातिपत्ति

कराविज्ज, ज्जा, करावंतो, करावमाणो।

कारिज्ज, कारिज्जा, कारंतो, कारमाणो। इत्यादि.

अनियमित सह्यभेदी अंगो

दृश— [1]दीस– दीसइ, दीसिज्जइ, दीसउ, दीससी, ही, हीअ।
वच— [1]वुच्च– वुच्चइ, वुच्चिज्जइ, वुच्चउ, वुच्चसी, ही, हीअ।
सह्य० प्रे० प्रे० भ०

चि— चिव्वे– चिव्वइ, चिव्विहिइ, चिव्वाविइ, चिव्वाविहिइ, इत्यादि.
चि— चिम्म—चिम्मइ, चिम्मिहिइ, चिम्माविइ, चिम्माविहिइ, इत्यादि.
हन्— हम्म– हम्मइ, हम्मिहिइ, हम्माविइ, हम्माविहिइ, इत्यादि.
खन्— खम्म– खम्मइ, खम्मिहिइ, खम्माविइ, खम्माविहिइ, इत्यादि.
दुह्— दुब्भ—दुब्भइ, दुब्भिहिइ, दुब्भाविइ, दुब्भाविहिइ, इत्यादि.

---

१ वर्तमानमां, विध्यर्थमां, आज्ञार्थमां अने ह्यस्तनभूतमां ज आ बे आदेशो वपराय छे.

२ आ बधा आदेशो वैकल्पिक छे अने मात्र सह्यभेदनी ज गमे ते जातनी रचनामां वपराय छे.

लिह्– लिब्भ–लिब्भइ, लिब्भिहिइ, लिब्भाविइ, लिब्भाविहिइ, इत्यादि.
वह्– वुब्भ–वुब्भइ, वुब्भिहिइ, वुब्भाविइ, वुब्भाविहिइ, इत्यादि.
रुध्– रुब्भ–रुब्भइ, रुब्भिहिइ, रुब्भाविइ, रुब्भाविहिइ, इत्यादि.
दह्– डज्झ–डज्झइ, डज्झिहिइ, डज्झाविइ, डज्झाविहिइ, इत्यादि.
बन्ध्–बज्झ–बज्झइ, बज्झिहिइ, बज्झाविइ, बज्झाविहिइ, इत्यादि.
सं+रुध् संरुज्झ-संरुज्झइ, संरुज्झिहिइ, संरुज्झाविइ, संरुज्झाविहिइ, इत्यादि.
अणु+रुध्-अणुरुज्झ-अणुरुज्झइ, अणुरुज्झिहिइ, अणुरुज्झाविइ,
अणुरुज्झाविहिइ, इत्यादि.
उप+रुध्-उवरुज्झ-उवरुज्झइ, उवरुज्झिहिइ, उवरुज्झाविइ,
उवरुज्झाविहिइ, इत्यादि.
गम्– गम्म–गम्मइ, गम्मिहिइ, गम्माविइ, गम्माविहिइ, इत्यादि,
हस्– हस्स–हस्सइ, हस्सिहिइ, हस्साविइ, हस्साविहिइ, इत्यादि.
भण्–भण्ण–भण्णइ, भण्णिहिइ, भण्णाविइ, भण्णाविहिइ, इत्यादि.
छुप्–छुप्प–छुप्पइ, छुप्पिहिइ, छुप्पाविइ, छुप्पाविहिइ, इत्यादि.
रुद्–रुव्व–रुव्वइ, रुव्विहिइ, रुव्वाविइ, रुव्वाविहिइ, इत्यादि,
लभ्–लब्भ–लब्भइ, लब्भिहिइ, लब्भाविइ, लब्भाविहिइ, इत्यादि.
कथ्–कत्थ–कत्थइ, कत्थिहिइ, कत्थाविइ, कत्थाविहिइ, इत्यादि.
भुज–भुज्ज–भुज्जइ, भुज्जिहिइ, भुज्जाविइ, भुज्जाविहिइ, इत्यादि.
हृ– हीर–हीरइ, हीरिहिइ, हीराविइ, हीराविहिइ, इत्यादि.
तृ– तीर–तीरइ, तीरिहिइ, तीराविइ, तीराविहिइ, इत्यादि.
कृ– कीर–कीरइ, कीरेहिइ, कीराविइ, कीराविहिइ, इत्यादि.

[प्राकृतमां ‘ कृ ’ नां सहभेदी अंगो बे थाय छे-कृ= ‘कीर’ अने ‘करीअ’ · करिज्ज. ’ त्यारे पैशाचीमां तो ‘कृ’नुं ‘ कीर ’ अंग ज वपराय छेः कीरते, कीरति]

जृ—जीर—जीरइ, जीरेहिइ, जीराविइ, जीराविहिइ, इत्यादि.

अर्ज-विढप्प-विढप्पइ,विढप्पेहिइ, विढप्पाविइ, विढप्पाविहिइ, इत्यादि.

ज्ञा—णव्व—णव्वइ, णव्वेहिइ, णव्वाविइ, णव्वाविहिइ, इत्यादि.

ज्ञा—णज्ज-णज्जइ, णज्जेहिइ, णज्जाविइ, णज्जाविहिइ, इत्यादि.

वि+आ—व्या+हृ—वाहिप्प—वाहिप्पइ, वाहिप्पेहिइ, वाहिप्पाविइ, वाहिप्पाविहिइ, इत्यादि.

ग्रह—घेप्प—घेप्पइ, घेप्पेहिइ, घेप्पाविइ, घेप्पाविहिइ, इत्यादि,

स्पृश—छिप्प—छिप्पइ, छिप्पेहिइ, छिप्पाविइ, छिप्पाविहिइ, इत्यादि,

सिच्, स्निह् } सिप्प-सिप्पए, सिप्पेहिए, सिप्पाविइ, सिप्पाविहिइ, इत्यादि,

आरभ्—आढप्प—आढप्पेइ, आढप्पेहिए, आढप्पाविइ, आढप्पाविहिइ, इत्यादि.

जि—जिव्व—जिव्वए, जिव्वेहिए, जिव्वाविइ जिव्वाविहिइ इत्यादि.

श्रु—सुव्व—सुव्वए, सुव्वेहिए, सुव्वाविइ, सुव्वाविहिइ, इत्यादि.

हु—हुव्व—हुव्वए, हुव्वेहिइ, हुव्वाविइ, हुव्वाविहिइ, इत्यादि.

स्तु—थुव्व—थुव्वइ, थुव्वेहिइ, थुव्वाविइ, थुव्वाविहिइ, इत्यादि.

लू—लुव्व—लुव्वइ, लुव्वेहिइ, लुव्वाविइ, लुव्वाविहिइ, इत्यादि.

पू—पुव्व—पुव्वइ, पुव्वेहिइ, पुव्वाविइ, पुव्वाविहिइ, इत्यादि.

धू—धुव्व—धुव्वए, धुव्वेहिइ, धुव्वाविइ, धुव्वाविहिइ, इत्यादि.

प्रकरण १३

कृदंत

[1]वर्तमानकृदंत

१ धातुना अंगने '[2]न्त' 'माण' अने '[3]ई' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं **कर्तरि-वर्तमान-कृदंत** बने छे.

२ धातुना प्रेरक अंगने 'न्त' 'माण' अने 'ई' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं **प्रेरक-कर्तरि-वर्तमान-कृदंत** बने छे.

३ धातुना सह्यभेदी अंगने 'न्त' 'माण' अने 'ई' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं **सह्यभेदी-वर्तमान-कृदंत** बने छे.

४ धातुना प्रेरक सह्यभेदी अंगने 'न्त' 'माण' अने 'ई' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं **प्रेरक-सह्यभेदी-वर्तमान-कृदंत** बने छे.

५ वर्तमान कृदंतना 'न्त' 'माण' अने 'ई' प्रत्यय पर रहेतां पूर्वना 'अ' नो विकल्पे 'ए' थाय छे.

कर्तरि वर्तमान कृदंत

	पुं०	न०	स्त्री०
भण-	भणंतो, भणमाणो ।	भणंतं, भणमाणं ।	भणंती, भणंता ।

(शौ० मा० भणंदो)

---

१ कृदंतना रूपाख्यानोनी प्रक्रिया नामनी जेवी छे.

२ पालिमां पण वर्तमान कृदंत बनाववा माटे सर्वत्र 'अंत' अने 'मान' प्रत्ययनो उपयोग थाय छे:—

गच्छंतो, गच्छमानो। स्त्री० गच्छंती, गच्छन्ती.

करोंतो, कुब्बंतो, कुरुमानो, करानो.

खादंतो, खादमानो

—पालिप्र० पृ० २४८–२४९.

३ आ प्रत्ययवाळुं रूप स्त्रीलिंगमां ज वपराय छे.

[1]भणंतो, भणेमाणो। भणंतं, भणेमाणं। भणंती, भणंता।
भणमाणी, भणमाणा।
भणेमाणी, भणेमाणा।
भणई, भणेई।

पा— पाअंतो, पाअमाणो। पाअंतं, पाअमाणं। पाअंती, पाअंता।
(शौ० मा० पाअंदो)
पाएंतो, पाएमाणो। पाएंतं, पाएमाणं। पाएंती, पाएंता।
पांतो, पामाणो। पांतं, पामाणं। पांती, पांता।
पाअमाणी, पाअमाणा।
पाएमाणी, पाएमाणा।
पामाणी, पामाणा।
पाअई, पाएई।
पाई।

रु—रवंतो, (शौ० मा० [2]रवंदो) रवमाणो। रवंतं, रवमाणं। रवंती, रवंता।
रवेंतो, रवेमाणो। रवेंतं, रवेमाणं। रवेंती, रवेंता।
रवमाणी, रवमाणा।
रवेमाणी, रवेमाणा।
रवई, रवेई।

हृ० हरंतो (शौ० मा० हरंदो) हरमाणो। हरंतं, हरमाणं। हरंती, हरंता।
हरेंतो हरेमाणो। हरेंतं हरेमाणं। हरेंती, हरेंता।
हरमाणी, हरमाणा।
हरेमाणी, हरेमाणा।
हरई, हरेई।

---

१ भणिंतो— जुओ दीर्घस्वर=ह्रस्वस्वर पृ० ४

२ रवंतो + रवंदो जूओ पृ० ३५ न्त=न्द.

वृष्–वरिसंतो, (शौ०मा०वरिसंदो) वरिसमाणो । वरिसंतं, वरिसमाणं।
वरिसंती, वरिसंता ।
वरिसेंतो, वरिसेमाणो । वरिसेंतं, वरिसेमाणं । वरिसेंती, वरिसेंता ।
वरिसमाणी,
वरिसमाणा ।
वरिसेमाणी,
वरिसेमाणा ।
वरिसई, वरिसेई ।

नी–नेंतो, [2](नेंदो शौ०मा०) नेमाणो । नेंतं, नेमाणं । नेंती, नेंता ।
नेमाणी, नेमाणा ।
नेई ।

तृस्–तृसंतो, (शौ०मा०तृसंदो) तृसमाणो । तृसंतं, तृसमाणं ।
तृसंती, तृसंता ।
तृसेंतो, तृसेमाणो । तृसेंतं, तृसेमाणं । तृसेंती, तृसेंता ।
तृसमाणी, तृसमाणा ।
तृसेमाणी, तृसेमाणा ।
तृसई, तृसेई ।

दा–[3]देंतो (शौ०मा०देंदो) देमाणो । देंतं, देमाणं । देंती, देंता ।
देमाणी, देमाणा ।
देई ।

---

१ वरिसंतो + वरिशंदो – जूओ पृ० २७ स–श.
ए प्रमाणे तृशंदो,
शुश्शूशंदो,
शोशविंदो वगेरे ।

२ जूओ पृ० २४६ नि० ६

३ दा+अ+अंतो=दा+ए–न्तो=देंतो ।

दा+अ+माणो=दा+ए+माणो=देमाणो ।

चल्-चलंतो, चलमाणो । चलंतं, चलमाणं । चलंती, चलंता ।
(शौ० मा० चलंदो)
चलेंतो, चलेमाणो । चलेंतं, चलेमाणं । चलेंती, चलेंता ।
चलमाणी, चलमाणा ।
चलेमाणी, चलेमाणा ।
चलई, चलेई ।

खिद्-खिज्जंतो, खिज्जमाणो । खिज्जंतं, खिज्जमाणं । खिज्जंती, खिज्जंता ।
(शौ० मा० खिज्जंदो)
खिज्जेंतो, खिज्जेमाणो । खिज्जेंतं, खिज्जेमाणं । खिज्जेंती, खिज्जेंता ।
खिज्जमाणी, खिज्जमाणा ।
खिज्जेमाणी, खिज्जेमाणा ।
खिज्जई, खिज्जेई ।

त्वर { तुर-[1]तुरंतो, तुरमाणो । तुरंतं, तुरमाणं । तुरंती, तुरंता ।
तूर (शौ० मा० तुरंदो)
तुरेंतो, तुरेमाणो । तुरेंतं, तुरेमाणं । तुरेंती, तुरेंता ।
तुरमाणी, तुरमाणा ।
तुरेमाणी, तुरेमाणा ।
तुरई, तुरेई ।

शुश्रूष्--सुस्सूसंतो, (शौ० मा० सुस्सूसंदो) [2]सुस्सूसमाणो ।
लालप्य्-लालप्पंतो, (शौ० मा० लालप्पंदो) लालप्पमाणो ।
(पै० [3]ळालप्पंतो)
गुरुकाय[4]-गरुअंतो, (शौ० मा० गरुअंदो) गरुअमाणो ।

---

१ 'तुरंतो' नी पेठे 'तूरंतो' वगेरे रूपो पण करी लेवां.

२ सुस्सूसंतं, सुस्सूसंती वगेरे रूपो पण करी लेवां.

३ जूओ पृ० २६ ल-ळ.

४ 'गुरुकायते' नामधातुनुं रूप छे, ए उपरथी 'गुरुकाय' ए वर्तमान कृदंतनुं अंग बन्युं छे.

प्रेरक कर्तरि वर्तमान कृदंत

कर—कारंतो[1], (शौ० मा० कारंदो) कारमाणो ।
कारेंतो, कारेमाणो ।
करावंतो, करावमाणो ।
करावेंतो, करावेमाणो ।

शुष—सोसविंतो, (शौ० मा० सोसविंदो) सोसंतो, सोसेंतो,
सोसावंतो, सोसावेंतो
सोसविमाणो, सोसमाणो, सोसेमाणो, सोसावमाणो,
सोसावेमाणो इत्यादि.

सत्त्वभेदी वर्तमान कृदंत

भण—भणिज्जंतो, भणिज्जमाणो, भणीअंतो, भणीअमाणो । पुं०—
(शौ० मा० भणिज्जंदो) ([2] प० भनिय्यंतो)

भणिज्जंतं,—ज्जमाणं, भणीअंतं,—अमाणं । न०—

भणिज्जंती,—ता, ज्जई; भणीअंती,—ता, —णीअई
भणिज्जमाणी—णा; भणीअमाणी, भणीअमाणा । } स्त्री०—

पुं०— न०— स्त्री०—

हन्—हम्मंतो, हम्ममाणो; हम्मंतं, हम्ममाणं; हम्मंती, ता,
हम्ममाणी, णा, हम्मई ।

---

१ 'कार' अंग उपरथी कारंती, कारेंइ, कारमाणी, कारंतं वगेर रूपो उपजावी लेवां.

२ जुओ पृ० २९४ पैशाचीनी विशेषता.

३ जुओ पृ० २३ ण—न.

प्रेरक सह्यभेदी कृदंत

(प्रेरक सह्यभेदी अंग बनाववानी प्रक्रिया 'प्रेरकसह्यभेद' ने जणावतां जणावी छे.[१])

कर—करावि +ईअ–करावीअंतो,–अमाणो, इत्यादि ।

(शौ० मा० करावीअंदो) (पै० कराविय्यंतो)

कर—करावि + इज्ज– कराविज्जंतो, कराविज्जमाणो, इत्यादि ।

कर—कार + ईअ– कारीअंतो, कारीअमाणो, इत्यादि ।

कर—कार + इज्ज– कारिज्जंतो, कारिज्जमाणो. इत्यादि ।

चि– चिव्व + आवि– चिव्वाविंतो, चिव्वाविज्जमाणो. इत्यादि ।

प्राकृत अने पैशाचीमां वर्तमान कृदंतनां रूपो सरखां थाय छे, शौरसेनी अने मागधीमां जे विशेपता छे ते उदाहरणो साथे जणावी छे, अपभ्रंशमां शौरसेनी अने प्राकृत प्रमाणे समजवानुं छे.

शौरसेनी, मागधी के पैशाचीनां उदाहरणो मात्र एक ज लिंगमां मूकेलां छे पण अभ्यासिए एनां त्रणे लिंगी रूपो पोतानी मेळे समजी लेवां.

पैशाचीना सह्यभेदी वर्तमान कृदंतनी विशेषता जणावेली छे.

(कोइ पण भाषानुं रूप करती वखते 'वर्ण–विकार' ना नियमो लक्ष्यमां राखवा)

भूतकृदंत

कर्तरि भूतकृदंत—सह्यभेदी भूतकृदंत

---

१ जूओ पृ० २९४ प्रेरकसह्यभेद.

१ धातुना अंगने 'अ' 'द' अने 'त' लागवाथी तेनुं (बन्ने जातनुं) भूतकृदंत बने छे.

२ 'अ' 'द' अने 'त' प्रत्यय पर रहेतां पूर्वना 'अ' नो 'इ' थाय छे. ('द' शौरसेनी, मागधी अने अपभ्रंशमां वपराय छे अने 'त' पैशाचीमां वपराय छे.)

कर्तरि भू० कृ०—गम+अ=गमिओ गमिदो, गमितो (गतः)

चल+अ=चलिओ चलिदो, चलितो (चलितः) इत्यादि.

सह्यभेदी भू० कृ०—कर+अ=करिओ करिदो, करितो कडो (कृतः कटः)

पढ+अ=पढिओ पढिदो, पढितो गंथो (पठितो ग्रन्थः) इत्यादि.

हस+अ=हसिअं हसिदं, हसितं (हसितम्)

लस+अ=लसिअं लसिदं, लसितं (लसितम्)

तुर+अ=तुरिअं तुरिदं, तुरितं (त्वरितम्) इत्यादि.

सुस्सूस+अ=सुस्सूसिअं सुस्सूसिदं, सस्सूसितं (शुश्रूषितम्)

चंकम+अ=चंकमिअं चंकमिदं, चंकमितं (चङ्क्रमितम्)

झा+अ=झायं झादं, झातं (ध्यातम्)

---

१ प्राकृतमां भूतकृदंतने माटे मात्र 'त (अ)' प्रत्यय वपराय छे, पालिमां ए 'त' उपरांत संस्कृतना 'क्तवतु' नी पेठे बीजो 'तवंतु' प्रत्यय पण वपराय छेः

त—हुतो (हुतः)

तवंतु-हुतवा (हुतवान्) स्त्री० हुतवती (हुतवती)

—भूतकृदंतने लगती पालिनी प्रक्रिया संस्कृतनी प्रक्रिया साथे मळती आवे छे—पालि प्र० पृ० २५१–२५३

लु +अ=लुअं लुदं, लुतं (लूनम्)
हू +अ=हूअं हूदं, हूतं (भृतम्)

प्रेरक भू० कृ०—

१ धातने प्रेरणासूचक 'आवि' प्रत्यय लगाड्या पछी अथवा धातुना उपान्त्य 'अ' नो दीर्घ कर्या पछी भूतकृदंतनो 'अ' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं **प्रेरक भूतकृदंत** बने छे.

कर— करावि+अ=कराविअं कराविदं, करावितं (कारितम्)
कारि+ अ=कारिअं कारिदं, कारितं

हस— हसावि+अ=हसाविअं हसाविदं, हसावितं (हासितम्)
हासि+ अ=हासिअं हासिदं, हासितं इत्यादि

आर्ष ग्रंथोमां के अर्वाचीन प्राकृतमां केटलेक स्थळे संस्कृतनां सिद्धरूपो उपरथी पण भूतकृदंतनां रूपो बनाववामां आव्यां छे:

गतम्— गयं ।
मतम्— मयं ।
कृतम्— [१]कडं ।
हृतम्— हडं ।
मृतम्— मडं ।
जितम्— जिअं ।
तप्तम्— तत्तं । वगेरे

भविष्यत्कृदंत—

धातुना अंगने '[२]स्संत' 'स्समाण' अने 'स्सई' प्रत्यय लगा-

---

१ जूओ पानुं ६९—त=ड.

२ स्स + अंत = स्संत । स्स + माण = स्समाण ।
स्स + ई = स्सई. जूओ पृ० २९९ वर्तमानकृदंत.

डवाथी तेनुं भविष्यत्कृदंत[1] बने छे:

करिष्यन्--करिस्संतो (शौ० मा० करिस्संदो) इत्यादि ।

करिष्यमाणः--करिस्समाणो इत्यादि ।

हेत्वर्थकृदंत

१ धातुना अंगने 'तुं' 'दुं' अने 'त्तए' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं हेत्वर्थकृदंत[2] बने छे.

२ उपर जणावेला त्रणे प्रत्ययो ('तुं' 'दुं' अने 'त्तए') पर रहेतां पूर्वना 'अ' नो 'इ' अने 'ए' थाय छे.

('दुं' शौरसेनी, मागधी अने अपभ्रंशमां वपराय छे अने प्राकृत तथा पैशाचीमां 'तुं' वपराय छे.)

---

१ भविष्यत्कृदंतनां पालिरूपो आ प्रमाणे छे:

—गमिस्सं (गमिष्यन्) स्त्री—गमिस्सती
गमिस्संती

करिस्सं (करिष्यन्)

चरिस्सं (चरिष्यन्)

'गमिष्यन्' वगेरे सिद्धरूपोने छेडे रहेला 'न्' नो अनुस्वार करवाथी पालिनां 'गमिस्सं' वगेरे रूपो तैयार थयेलां छे—पालिप्र० पृ० २४८—२४९

२ पालिभाषामां हेत्वर्थकृदंत करवाने माटे धातुने 'तुं' 'तवे' 'ताये' अने 'तुये' प्रत्ययो लगाडवामां आवे छे :

मंतुं । कातवे (कर्तुम्) नेतवे (नेतुम्)

दक्खिताये (द्रष्टुम्) गणेतुये (गणयितुम्) वगेरे.

—जूओ पालिप्र० पृ० २५७—२५८.

तुं—दुं—

भण्—भण+तुं—भणिउं भणेउं, भणिदुं, भनितुं (भणितुम्—भणवाने माटे)

हस्—हस+तुं—हसिउं, हसेउं हसिदुं, हसितुं (हसितुम्—हसवाने माटे)

हो—होअ—तुं—होइउं, होएउं होइदुं, होइतुं (भवितुम्—थवाने माटे)

भण्-भणावि+तुं-भणाविउं भणाविदुं, भनावितुं (भणाववा माटे)

कर-करावि+तुं-कराविउं कराविदुं, करावितुं (कराववा माटे)

कर-कार+तुं-कारिउं, कारेउं कारिदुं, कारितुं (कराववा माटे)

हस्-हास+तुं-हासिउं, हासेउं हासिदुं, हासितुं (हसाववा माटे)

शुश्रूष्-सुस्सूस+तुं—सुस्सूसिउं, सुस्सूसेउं सुस्सूसिदुं, सुस्सूसितुं
(शुश्रूषा करवा माटे)

चङ्क्रम्य-चंकम+तुं—चंकमिउं, चंकमेउं चंकमिदुं, चंकमितुं
(चंक्रमण करवा माटे) इत्यादि.

अनियमित हेत्वर्थकृदंत

कृ	+	तुं	—	का	+	उं	=	काउं	(कर्तुम्)
ग्रह	+	तुं	—	घेत्	+	तुं	=	घेत्तुं	(ग्रहीतुम्)
त्वर्	+	तुं	—	तुर्	+	इउं	=	तुरिउं	(त्वरितुम्)
				तुर्	+	एउं	=	तुरेउं	
दृश्	+	तुं	—	दट्ठ्	+	उं	=	दट्ठुं	(द्रष्टुम्)
भुज्	+	तुं	—	भोत्	+	तुं	=	भोत्तुं	(भोक्तुम्)
मुच्	+	तुं	—	मोत्	+	तुं	=	मोत्तुं	(मोक्तुम्)
रुद्	+	तुं	—	रोत्	+	तुं	=	रोत्तुं	(रोदितुम्)
वच्	+	तुं	=	वोत्	+	तुं	=	वोत्तुं	(वक्तुम्)

१ प्रेरकहेत्वर्थकृदंतनी रचना प्रेरक भूतकृदंतनी जेवी ज छे.

[1]त्तए

[2]कर्	–	कर	+	त्तए	= करेत्तए करित्तए	(कर्तुम्)
सिज्झ्	–	सिज्झ	+	त्तए	= सिज्झित्तए	(सेद्धुम्)
उववज्ज्	–	उववज्ज	+	त्तए	= उववज्जित्तए	(उपपत्तुम्)
विहर्	–	विहर	+	त्तए	= विहरित्तए	(विहर्तुम्)
[3]पास्	–	पास	+	त्तए	= पासित्तए	(द्रष्टुम्)
गम्	–	गम	+	त्तए	= गमित्तए	(गन्तुम्)
[4]पव्वज्	–	पव्वज	+	त्तए	= पव्वइत्तए	(प्रव्रजितुम्)
आहर्	–	[5]आहार	+	त्तए	= आहारित्तए	(आहर्तुम्)
दल्	–	दल	+	इत्तए	= [6]दलइत्तए	(दातुम्)
[7]अच्चासाद्	–	अच्चासाद	+	त्तए	= अच्चासादेत्तए	(अत्याशातयितुम्)

---

१ विशेषे करीने आ प्रत्ययनो उपयोग आर्षग्रंथोमां थएलो छे. वैदिक संस्कृतना अने पालिना तुमर्थक 'त्वे' प्रत्ययनी साथे आ 'त्तए' प्रत्ययनी विशेष समानता छे (जुओ पाणिनि–३–४–९ वैदिक प्र० तथा पृ० ३०७ नी १ टिप्पणी.

२ "अंतं करेत्तए" "सिज्झित्तए" "देवत्ताए उववज्जित्तए" "भुंजमाणे विहरित्तए" भगवतीसू० श० ७, उ० ७ पृ० ३११ स०

३ रूवाइं पासित्तए" देवलोगं गमित्तए"–भगवतीसू० श० ७, उ० ७ पृ० ३१२ स०.

४ "पवज्जाए पव्वइत्तए" "अप्पणा आहारित्तए" "–सुणयाणं दलइत्तए"–भगवतीसू० श० ३, उ० २ पृ० १७१ स०.

५ आर्षताने लीधे 'हर्' नो 'हार' थयो छे.

६ आर्षताने लीधे अहीं 'इ' आगमरूपे थयो छे.

७ "सयमेव अच्चासादेत्तए"–भगवतीसू० श० ३, उ० २ पृ० १७२ स०.

८समभिलोक्– समभिलोक + त्तए = समभिलोएत्तए (समभिलो-
कितुम्)

अपभ्रंश

धातुना अंगने 'एवं' 'अण' 'अणहं' 'अणहिं' 'एप्पि' 'एप्पिणु' 'एवि' अने 'एविणु' प्रत्यय लगाडवाथी अपभ्रंशनुं हेत्वर्थकृदंत बने छे.

एवं—

चय्	+	एवं	=	चएवं	(त्यक्तुम्)
दा	+	एवं	=	देवं	(दातुम्)

अण—

भुंज्	+	अण	=	भुंजण	(भोक्तुम्)
कर	+	अण	=	करण	(कर्तुम्)

अणहं—

सेव्	+	अणहं	=	सेवणहं	(सेवितुम्)
भुंज्	+	अणहं	=	भुंजणहं	(भोक्तुम्)

अणहिं—

मुंच्	+	अणहिं	=	मुंचणहिं	(मोक्तुम्)
भुंज्	+	अणहिं	=	भुंजणहिं	(भोक्तुम्)

एप्पि—

कर्	+	एप्पि	=	करेप्पि	(कर्तुम्)
जि	+	एप्पि	=	जेप्पि	(जेतुम्)

---

८ "सपडिदिसिं समभिलोएत्तए"—भगवतीसू० श० ३, उ० २ पृ० १६८ स०,

एप्पिणु—

कर्	+	एप्पिणु	=	करेप्पिणु	(कर्तुम्)
चय्	+	एप्पिणु	=	चएप्पिणु	(त्यक्तुम्)

एवि—

कर्	+	एवि	=	करेवि	(कर्तुम्)
पाल्	+	एवि	=	पालेवि	(पालयितुम्)

एविणु—

कर्	+	एविणु	=	करेविणु	(कर्तुम्)
ला	+	एविणु	=	लेविणु	(लातुम्)

केटलेक स्थळे संस्कृतनां सिद्ध रूपो उपरथी पण हेत्वर्थकृदंतनां रूपोने बनावेलां छे:

लब्धुम्	–	लद्धुं ।	
रोद्धुम्	–	रोद्धुं ।	
योद्धुम्	–	जोद्धुं ।	
कर्तुम्	–	[1]कट्टुं ।	वगेरे

संबंधकभूतकृदंत—

१ धातुना अंगने ' तुं ' ' अ ' ' तूण ' ' तुआण ' ' इत्ता '

---

१ जूओ पानुं ३५ टि–ह नि० २९

२ 'इत्ता', 'इत्ताण', 'आय' अने ' आए ' प्रत्ययनो उपयोग खास करीने आर्षप्राकृतमां थएलो छे. पालिमां आ अर्थमां ' त्वा ' (क्यांय ' इत्वा ' (आर्षप्रा०–' इत्ता ') ' त्वान ' (क्यांय ' इत्वान ') (आर्षप्रा०–' इत्ताण ') अने ' तून ' (प्रा० ' तून ' के ' ऊण ') प्रत्ययनो उपयोग थाय छे:—

त्वा–कत्वा, करित्वा (आर्षप्रा० करित्ता) (कृत्वा)

गंत्वा (गत्वा)

'इत्ताण' 'आय' अने 'आए' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं **संबंधक भूतकृदंत** बने छे.

शौरसेनी अने मागधीमां **संबंधकभूतकृदंत** करवा माटे धातुने 'इय' अने 'दूण' प्रत्यय लागे छे तथा प्राकृतना 'त'कारादि प्रत्ययो पण 'द'कारादि करीने लगाडाय छे अने 'इत्ता'

हंत्वा (हत्वा)
जहित्वा } (हित्वा)
जहत्वा } (हात्वा)
छिंदित्वा (आर्षप्रा० छिंदित्ता) (छित्त्वा)
सुणित्वा (,, सुणित्ता) (श्रुत्वा)
जिनित्वा (,, जिणित्ता) (जित्वा)
पापुणित्वा (आर्षप्रा० पापुणित्ता) (प्राप्य)
त्वान— कत्वान
गंत्वान
हंत्वान
जहित्वान (आर्षप्रा० जहित्ताण)
तून— कत्तून
गंतून
हंतून

संस्कृतमां जेम उपसर्गवाळा धातुने माटे 'क्त्वा' ने बदले 'य' वपराय छे तेम पालिमां (पालिमां उपसर्ग होवानो कांइ नियम नथी) पण बनेलुं छेः उपनीय (नी + त्वा)
अभिवंदिय (वन्द् + इत्वा)
अभिञ्ञाय (ज्ञा + त्वा)

आर्षप्राकृतमां पण 'आय' अने 'आए' छेडावाळां संबंधक भूतकृदंतो मळे छे ते आ पालिनां 'य' छेडावाळां रूपो साथे मळतां आवे छेः—पालि प्रा० पृ० २५५–२५६

'इत्ताण' प्रत्ययो पण वपराय छे.

पैशाचीमां ए अर्थमां 'तून' प्रत्यय वपराय छे.

अपभ्रंशमां ए अर्थमां 'इ' 'इउ' 'इवि' अने 'अवि' तथा 'एप्पि,' 'एप्पिणु,' 'एवि' अने 'एविणु' प्रत्ययनो व्यवहार थाय छे.

२ अपभ्रंश सिवायना उपर जणावेला बीजा प्रत्ययो पर रहेतां प्रयोगानुसारे पूर्वना 'अ' नो 'इ' अने 'ए' थाय छे.

३ केटलेक ठेकाणे प्राकृतना 'त'कारादि प्रत्ययोना 'त' नो लोप पण थइ जाय छे (जूओ असंयुक्त 'कादि' लोप पृ० १० नि० २)

४ उपर जणावेला प्रत्ययोमां जे प्रत्ययो 'ण' छेडावाळा छे तेने अंते विकल्पे अनुस्वार थाय छे.

अपवाद—शौरसेनी

शौरसेनीमां 'कृ' अने 'गम्' धातुनुं संबंधक भूतकृदंत 'कडुअ' अने 'गडुअ' बने छे: (कृ + अडुअ = कडुअ—कृत्वा (गम् + अडुअ = गडुअ—गत्वा)

अपवाद—पैशाची

'ष्ट्वा' छेडावाळां संस्कृत रूपोनुं संबंधक भूतकृदंत करवा माटे पैशाचीमां ए 'ष्ट्वा' ने बदले 'द्धून' अने 'त्थून' वापरवामां आवे छे:

नद्धून, नत्थून (सं० नष्ट्वा)

तद्धून, तत्थून (सं० तष्ट्वा) वगेरे

अपवाद—अपभ्रंश

मात्र एक 'गम्' धातुनु संबंधक भूतकृदंत करवा माटे अप-

भ्रंशना उपर्युक्त प्रत्ययो लगाडवा उपरांत 'प्पि' अने 'प्पिणु' प्रत्ययो पण लगाडवाना छे:

गम् + प्पि = गम्प्पि – गत्वा ।

गम् + प्पिणु = गम्प्पिणु– गत्वा ।

भाषावार उदाहरणो

प्राकृत

हस– हस + तुं = हसिउं, हसेउं, (हसित्वा)

हो– होअ + तुं = होइउं, होएउं, (भूत्वा)

हस्– हस + अ = हसिअ, हसेअ, (हसित्वा)

हो– होअ + अ = होइअ, होएअ, (भूत्वा)

हस्– हस + तूण = हसिऊण, हसिऊणं, हसेऊण, हसेऊणं (हसित्वा)

हो– होअ + तूण = होइऊण, होइऊणं, होएऊण, होएऊणं (भूत्वा)

हस्– हस + तुआण = हसिउआण, हसिउआणं, हसेउआण, हसेउआणं (हसित्वा)

हो– होअ + तुआण = होइउआण, होइउआणं, होएउआण, होएउआणं (भूत्वा)

भण्–भणावि + तुं = भणाविउं (भाणयित्वा)

,, + अ = भणाविअ

,, + तूण = भणाविऊण, भणाविऊणं

,, + तुआण = भणाविउआण, भणाविउआणं

---

१ आ प्रेरक संबंधक भूतकृदंत छे अने एनी रचना प्रेरक भूतकृदंतनी जेवी छे.

भण्–भाण + तुं = भाणिउं, भाणेउं

,, + अ = भाणिअ, भाणेअ

,, + तूण= भाणिऊण, भाणिऊणं; भाणेऊण, भाणेऊणं

,, + तुआण, = भाणिउआण, भाणिउआणं, भाणेउआण,

भाणेउआणं

कर–करावि + तुं = कराविउं (कारयित्वा)

,, + अ = कराविअ

,, + तूण= कराविऊण, कराविऊणं

,, + तुआण.=कराविउआण, कराविउआणं

,, कार + तुं = कारिउं, कारेउं

,, + अ = कारिअ, कारेअ

,, +तूण = कारिऊण,कारिऊणं. कारेऊण, कारेऊणं

,, तुआणं,कारिउआण,कारिउआणं,कारेउआण,कारेउआणं

शुश्रूष्–सुस्सूस + तुं = सुस्सूसिउं, सुस्सूसेउं

,, + अ = सुस्सूसिअ, सुस्सूसेअ

,, + तूण= सुस्सूसिऊण सुस्सूसिऊणं, सुस्सूसेऊण,

सुस्सूसेऊणं

,, +तुआण=सुस्सूसिउआण, सस्सूसिउआणं, सस्सूसेउआण

सुस्सूसेउआणं.

चङ्क्रम्य–चंकम+ तुं = चंकमिउं, चंकमेउं

,, + अ = चंकमिअ, चंकमेअ

,, + तूण = चंकमिऊण,चंकमिऊणं; चंकमेऊण, चंकमेऊणं

,, +तुआण=चंकमिउआण, चंकमिउआणं, चंकमेउआण,

चंकमेउआणं.

कर– इत्ता = करित्ता (कृत्वा)

कर– इत्ताण = करित्ताण, करित्ताणं

कह– इत्ता = कहित्ता, (कथयित्वा)

कह– इत्ताण = कहित्ताण, कहित्ताणं

गम– इत्ता = गमित्ता, (गत्वा)

गम– इत्ताण = गमित्ताण, गमित्ताणं

गह+ आय = [1]गहाय (गृहीत्वा)

संपेह+आए = संपेहाए (संप्रेक्ष्य)

आया+आए = आयाए (आदाय)

शौरसेनी, मागधी—

हो + इय = हविय, होत्ता (भूत्वा)

,, + दूण = होदूण ,,

पढ + इय = पढिय, पढित्ता (पठित्वा)

पढ + दूण = पढिदूण ,,

रम + इय = रमिय, रंता (रन्त्वा)

रम + दूण = रंदूण ,,

पैशाची—

गम् + तून = गंतून (गत्वा)

रम् + तून = हसितून (हसित्वा)

पढ + तून = पढितून (पढित्वा)

कध + तून = कधितून (कथयित्वा)

---

१ भगवतीसूत्र० रा० श० ३, उ० २–" रयणाणि गहाय " " पडिग्गाहियं गहाय "–पृ० १७०–१७१.

अपभ्रंश—

लह् + इ	= लहि	(लब्ध्वा)
कर + इउ	= करिउ	(कृत्वा)
कर + इवि	= करिवि	(,,)
कर + अवि	= करवि	(,,)
कर + एप्पि	= करेप्पि	(,,)
कर + एप्पिणु	= करेप्पिणु	(,,)
कर + एविणु	= करेविणु	(,,)
कर + एवि	= करेवि	(,,)

अनियमित संबंधक भूतकृदंत (प्राकृत)

कृ + तुं = काउं,

,, + तूण = काऊण, काऊणं,

,, + तुआण=काउआण, काउआणं.

ग्रह् + तुं = घेत्तुं,

,, + तूण = घेत्तूण. घेत्तूणं,

,, + तुआण = घेत्तुआण, घेत्तुआणं.

त्वर् + तुं = तुर + उं = तुरिउं, तुरेउं,

,, + अ = ,, + अ = तुरिअ, तुरेअ,

,, + ऊण = ,, + ऊण = तुरिऊण, तुरिऊणं; तुरेऊण, तुरेऊणं.

,, +उआण = ,, +उआण= तुरिउआण, तुरिउआणं; तुरेउआण, तुरेउआणं.

दृश् + तुं = दट्ठ + उं = दट्ठुं

,, + तूण = दट्ठ + ऊण = दट्ठूण, दट्ठूणं

,, + तुआण = दट्ठ + उआण=दट्ठुआण, दट्ठुआणं.
भुंज् + तुं = भोत् + तुं = भोत्तुं,
,, + तूण = ,, + तूण = भोत्तूण, भोत्तूणं,
,, + तुआण = ,, + तुआण= भोत्तुआण, भोत्तुआणं.
मुच् + तुं = मोत् + तुं = मोत्तुं
,, + तूण = ,, + तूण = मोत्तूण, मोत्तूणं
,, + तुआण= ,, + तुआण = मोत्तुआण, मोत्तुआणं.
रुद् + तुं = रोत् + तुं = रोत्तुं
,, + तूण = रोत् + तूण = रोत्तूण, रोत्तूणं
,, + तुआण = रोत् + तुआण = रोत्तुआण, रोत्तुआणं.
वच् + तुं = वोत् + तुं = वोत्तुं,
,, + तूण = वोत् + तूण = वोत्तूण, वोत्तूणं,
,, + तुआण= वोत् + तुआण = वोत्तुआण, वोत्तुआणं.
वन्द् + तुं = वंदित्तुं, वंदित्तु.

[संस्कृतनां सिद्ध संबंधक भूतकृदंतो पण थोडा फेरफार साथे प्राकृतमां वपरायां छे:

आदाय—आयाय
गत्वा—गत्ता, गच्चा.
ज्ञात्वा—नच्चा.
नत्वा—नच्चा.
बुद्ध्वा—बुज्झा.
भुक्त्वा—भोच्चा.
मत्वा—मत्ता, मच्चा.
वन्दित्वा--वंदित्ता.
विप्रजहाय—विप्पजहाय.
श्रुत्वा—सोच्चा.
सुप्त्वा—सुत्ता.
संहृत्य—साहट्टु.
हत्वा—हंता

इत्यादि]

[1]विध्यर्थ–कृदंत—

विध्यर्थ कृदंतनी साधना विध्यर्थ कृदंतना संस्कृत सिद्ध रूपो उपरथी करवानी छे, तो पण तेने लगता केटलाक प्राकृत प्रत्ययो आ रीते छे:

१ धातुने 'तव्व,' (शौ० 'दव्व') 'अणिज्ज' अने 'अणीअ' 'प्रत्यय' लगाडवाथी तेनुं विध्यर्थ–कृदंत बने छे.

२ 'तव्व' अने 'दव्व' प्रत्यय पर रहेतां प्रायः पूर्वना 'अ' नो 'इ' तथा 'ए' थाय छे.

---

१ विध्यर्थ कृदंतो सह्यभेदी होय छे.

२ विध्यर्थ कृदंत माटे पालिमां 'तव्य,' 'तय्य,' 'य,' अने 'अनीय' प्रत्यय वपराय छेः—

तव्य—	भवितव्वं	(भवितव्यम्)
	बुज्झितव्वं	(बोद्धव्यम्)
	सयितव्वं	(शयितव्यम्)
तय्य—	ञातय्यं	(ज्ञातव्यम्)
	पत्तय्यं	(प्राप्तव्यम्)
	दट्ठय्यं	(द्रष्टव्यम्)
य—	देय्यं	(देयम्)
	मेय्यं	(मेयम्)
	कच्चं	(कृत्यम्)
	भच्चो	(भृत्यः)
वृद्धिवाळो य	कारियं	(कार्यम्)
	हारियं	(हार्यम्)
अनीय—	भवनीयं	
	सयनीयं	
	पापणीयं	(प्रापणीयम्)

—पालिप्र० पृ० २५४

३ विध्यर्थ–कृदंतने लागेल संस्कृत 'य' प्रत्ययने स्थाने प्राकृतमां 'ज्ज' पण लागे छे.

सिद्ध रूपो उपरथी बनतां विध्यर्थ–कृदंतो--

कार्यम् – कज्जं ।	वाच्यम् – वच्चं ।
कृत्यम् – किच्चं ।	वाक्यम् – वक्कं ।
ग्राह्यम् – गेज्झं ।	जन्यम् – जन्नं ।
गुह्यम् – गुज्झं ।	भृत्यः – भिच्चो ।
वर्ज्यम् – वज्जं ।	भार्या – भज्जा ।
वद्यम् – वज्जं ।	अर्यः – अज्जो ।
भव्यम् – भव्वं ।	आर्यम् – अज्जं ।
अवद्यम्– अवज्जं ।	पाच्यम् – पच्चं । इत्यादि ।

तव्य–हस–हसिअव्वं, हसेअव्वं, हसितव्वं, हसेतव्वं । हसाविअव्वं, हसावितव्वं ।

शौ० हसिदव्वं, हसेदव्वं, हसाविदव्वं ।

सुस्सूसितव्वं, सुस्सूसेतव्वं, सुस्सूसिअव्वं, सुस्सूसेअव्वं ।

चंकमितव्वं, चंकमेतव्वं, चंकमिअव्वं, चंकमेअव्वं ।

हो–होतव्वं, होअव्वं । चि–चिव्विअव्वं, चिव्वेअव्वं,

ज्ञा–नातव्वं, नायव्वं । चिव्वितव्वं, चिव्वेतव्वं ।

अणिज्ज / अणीअ – हसणिज्जं, हसणीअं, हसावणिज्जं, हसावणीअं,
करणिज्जं, करणीअं,

सुस्सूसणिज्जं, सुस्सूसणीअं,

चंकमणिज्जं, चंकमणीअं,

वच–वयणिज्जं, वयणीअं । इत्यादि ।

य–पेयम्–पेज्जं, पेअं । पेया–पेज्जा, पेआ ।

गेयम्–गेज्जं, गेअं । इत्यादि ।

—अनियमित विध्यर्थ कृदंत—

ग्रह्–तव्व–घेत्तव्वं ।
भुज्–तव्व–भोत्तव्वं ।
वच्–तव्व–वोत्तव्वं ।
मुच्–तव्व–मोत्तव्वं ।
दृश्–तव्व–दट्ठव्वं ।

रुद्–तव्व–रोत्तव्वं ।
कृ–तव्व–कातव्वं
कायव्वं
त्वर–तव्व–तुरिअव्वं, तुरेअव्वं ।
तुरितव्वं, तुरेतव्वं ।

विध्यर्थ कृदंत (अपभ्रंश)—

प्राकृतमां वपराता 'तव्व' प्रत्ययने बदले अपभ्रंशमां 'इएव्वउं,' 'एव्वउं' अने 'एवा' प्रत्यय वपराय छे:

कर	+	इएव्वउं	=	करिएव्वउं	–	कर्तव्यम् ।
कर	+	एव्वउं	=	करेव्वउं		
कर	+	एवा	=	करेवा		
मर	+	इएव्वउं	=	मरिएव्वउं	–	मर्तव्यम् ।
मर	+	एव्वउं	=	मरेव्वउं		
मर	+	एवा	=	मरेवा		
सह	+	इएव्वउं	=	सहिएव्वउं	–	सोढव्यम् ।
सह	+	एव्वउं	=	सहेव्वउं		
सह	+	एवा	=	सहेवा		
सो	+	एवा	=	सोएवा	–	स्वप्तव्यम् ।
जग्ग	+	एवा	=	जग्गेवा	–	जागरितव्यम् ।

कर्तरिकृदंत[1]

धातुने 'इर' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं कर्तृसूचक कृदंत बने छे:

हस–इर–हसिरो (हसनार), हसिरा, री (हसनारी), हसिरं (हसनारुं)।

हसाव–इर–हसाविरो (हसावनार)–रा, री (हसावनारी), रं (हसावनारुं)।

त्वर–इर–तुरिरो (त्वरा करनार) इत्यादि.

कर्तृसूचक कृदंतनी साधना, कर्तृसूचक कृदंतनां संस्कृत सिद्ध रूपो उपरथी पण थाय छे:

पाचकः–पायगो, पायओ। नायकः–नायगो, नायओ। नेता–नेआ। कर्ता–कत्ता। वक्ता–वत्ता। भर्ता–भत्ता। कुम्भकारः–कुंभआरो। कर्मकरः–कम्मगरो। स्तनंधयः–थणंधयो। परंतपः–परंतवो। लेखकः–लेहओ इत्यादि।

कर्तारिकृदंत (अपभ्रंश)

प्राकृतमां वपराएला 'इर' ने बदले अपभ्रंशमां 'अणअ' प्रत्यय लगाडवाथी कर्तृसूचक कृदंत बने छे:

मार + अणअ = मारणअ = मारणउ – मारकः

बोल्ल + अणअ = बोल्लणअ = बोल्लणउ – वाचकः

---

१ कर्तरिकृदंतनुं रूप बनाववा माटे पालिमां प्राकृतना 'इर' ने बदले केटलाक ख्यास धातुथी 'ऊ' प्रत्यय वपराय छे अने ए ज अर्थनुं भूतकाळनुं रूप बनाववा माटे साधारण रीते 'तावी' प्रत्यय वपराय छे:–

ऊ– विदू (वेत्ता) स्त्री० विदुनी.

तावी— भुत्तावी (भुक्तवान्) स्त्री० भुत्ताविनी.

–पालिप्र० पृ० २५०–२५१.

वज्ज + अणअ = वज्जणअ = वज्जणउ – वादक :
भस + अणअ = भसणअ = भसणउ – भषक :
जा + अणअ = जाणअ = जाणउ – ज्ञायक :

प्रकरण १४

तद्धित

१ '[1]तेनुं आ' ए अर्थमां नामने 'केर' प्रत्यय लागे छे अने अपभ्रंशमां '[2]आर' प्रत्यय लागे छे.

अस्मद् + केर = अम्हकेरं (अस्माकमिदम् अस्मदीयम्)
अप० अम्हारु, महारु,
युष्मद् + केर = तुम्हकेरं (युष्माकमिदम् युष्मदीयम)
अप० तुम्हारु, तुहारु,
पर + केर = परकेरं (परस्य इदम् परकीयम्)
राज + केर = रायकेरं (राज्ञः इदम् राजकीयम्)

२ '[3]तेमां थएल' ए अर्थमां नामने 'इल्ल' अने 'उल्ल' प्रत्यय लागे छे:

इल्ल—गाम + इल्ल = गामिल्लं (ग्रामे भवम्) स्त्री० गामिल्ली।

---

१ संस्कृतनी पेठे पालिमां आ अर्थमां 'ईय' प्रत्यय वपराय छे:
मदनीयं (मदनस्य स्थानम्)—
पालिप्र० पृ० २८०

२ आ 'आर' प्रत्यय प्रायः 'युष्मद्' 'अस्मद्' 'त्वत्' अने 'मत्' शब्दोने लागे छे.

३ 'तन्निश्रित' अर्थमां पालिमां 'ल्ल' प्रत्यय वपराय छे:
दुष्टु निश्रितम् = दुट्ठुल्लं
वेदनिश्रितम् = वेदल्लं
पालिप्र० पृ० २८०

पुर + इल्ल = [1]पुरिल्लं (पुरे भवम्) स्त्री० पुरिल्ली ।
अधस् + इल्ल = हेट्ठिल्लं (अधो भवम्) स्त्री० हेट्ठिल्ली ।
उपरि + इल्ल = उवरिल्लं (उपरि भवम्)

उल्ल—आत्म + उल्ल = अप्पुल्लं (आत्मनि भवम्)
तरु + उल्ल = तरुल्लं (तरौ भवम्)
नगर + उल्ल = नयरुल्लं (नगरे भवम्)

इत्यादि ।

३ 'तेनी जेवुं' ए अर्थमां नामने 'व्व' प्रत्यय लागे छे:

महुरव्व पाडलिपुत्ते पासाया (मथुरावत् पाटलिपुत्रे प्रासादाः)

४ 'पणुं' अर्थमां नामने 'इमा' 'त्त' अने '[2]त्तण' प्रत्यय लागे छे अने अपभ्रंशमां 'प्पण' प्रत्यय पण लागे छे:

पीण + इमा = पीणिमा (पीनत्वम्)
पीण + त्तण = पीणत्तणं, पीण + त्त = पीणत्तं ।
पुप्फ + इमा = पुप्फिमा (पुष्पत्वम्)
पुप्फ + त्तण = पुप्फत्तणं, पुप्फ + त्त = पुप्फत्तं ।
अप० वड्ड + प्पण = वड्डप्पणु, वडत्तणु वगेरे (वृद्धत्वम्)
विहु + प्पण = विहुप्पणु, विहुत्तणु वगेरे (विभुत्वम्)

---

१ 'जात' अर्थमां पालिमां 'इम' प्रत्यय आवे छे:—
पश्चात् जातः = पच्छिमो । उपरि जातः = उपरिमो ।
पुरा जातः = पुरिमो । अधो जातः = हेट्ठिमो ।
ग्रन्थे जातः = गंथिमो—

पालिप्र० पृ० २५९–२६०.

२ आ अर्थमां पालिमां 'त्तन' (प्रा० त्तण) प्रत्यय आवे छे:
पुथुज्जनस्स भावो पुथुज्जनत्तनं (पृथग्जनत्वम्)

पालिप्र० पृ० २६१

५ 'वार' अर्थमां नामने 'हुत्त' (आर्ष-खुत्त[1]) प्रत्यय लागे छे:

एक + हुत्त = एगहुत्तं (एककृत्वः-एकवारम्)

द्वि + हुत्त = दुहुत्तं (द्विवारम्)

त्रि + हुत्त = तिहुत्तं (त्रिवारम्)

शत + हुत्त = सयहुत्तं (शतवारम्)

सहस्र + हुत्त = सहस्सहुत्तं (सहस्रवारम्)

६ 'वाळुं' अर्थमां आवता नामने लागता 'मतु' प्रत्ययने स्थाने 'आल' 'आलु' 'इत्त' 'इर' 'इल्ल' 'उल्ल' 'मण' 'मंत' अने 'वंत' प्रत्यय वपराय छे:

आल- रस + आल = रसालो (रसवान्)

जटा + आल = जडालो (जटावान्)

ज्योत्स्ना + आल = जोण्हालो (ज्योत्स्नावान्)

शब्द + आल = सद्दालो (शब्दवान्)

फटा + आल = फडालो (फटावान्)

---

१ सं० कृत्वस्—कुत्त—खुत्त—हुत्त- जुओ स्यादिनो 'ह' पृ० १९.

२ 'वार' अर्थमां पालिमां 'क्खत्तुं' (सं० कृत्वस्) प्रत्यय वपराय छे:

एकक्खत्तुं (एकवारम्)

द्विक्खत्तुं (द्विवारम्)

तिक्खत्तुं (त्रिवारम्)

पालिप्र० पृ० २६१

आर्षप्राकृतमां आ अर्थमां 'खुत्त' (पालि—क्खत्तुं) प्रत्यय पण आवे छे: तिक्खुत्तो—

"तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ"—

भग० ग० पृ० २३५ पं० २

"महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ"—

(सू० द्वि० श्रु० अ० ७ पृ० ४२५ पं० २ स०)

"पत्तो अणंतक्खुत्तो" जीवविचारनी छेल्ली गाथा.

आलु–	इर्ष्या	+	आलु	=	ईसालू	(ईर्ष्यावान्)
	दया	+	आलु	=	दयालू	(दयावान्)
	नेह	+	आलु	=	नेहालू	(स्नेहवान्)
	लज्जा	+	आलु	=	लज्जालू	(लज्जावान्)
					स्त्री० लज्जालुआ	(लज्जावती)
इत्त–	काव्य	+	इत्त	=	कव्वइत्तो	(काव्यवान्)
	मान	+	इत्त	=	माणइत्तो	(मानवान्)
इर–	गर्व	+	इर	=	गव्विरो	(गर्ववान्)
	रेखा	+	इर	=	रेहिरो	(रेखावान्)
इल्ल–	शोभा	+	इल्ल	=	सोहिल्लो	(शोभावान्)
	छाया	+	इल्ल	=	छाइल्लो	(छायावान्)
	याम	+	इल्ल	=	जामइल्लो	(यामवान्)
उल्ल–	विचार	+	उल्ल	=	वियारुल्लो	(विचारवान्)
	विकार	+	उल्ल	=	वियारुल्लो	(विकारवान्)
	श्मश्रु	+	उल्ल	=	मंसुल्लो	(श्मश्रुमान्)
	दर्प	+	उल्ल	=	दप्पुल्लो	(दर्पवान्)
मण–	धन	+	मण	=	धणमणो	(धनवान्)
	शोभा	+	मण	=	सोहामणो	(शोभावान्)
	भी	+	मण	=	बीहामणो	(भीमान्)
मंत–	हनु	+	मंत	=	हणुमंतो	(हनुमान्)
	श्री	+	मंत	=	सिरिमंतो	(श्रीमान्)
	पुण्य	+	मंत	=	पुण्यमंतो	(पुण्यवान्)
वंत–	धन	+	वंत	=	धणवंतो	(धनवान्)
	भक्ति	+	वंत	=	भत्तिवंतो	(भक्तिमान्)

७ संस्कृतमां आवता ‘ तस् ’ प्रत्ययने स्थाने ‘ त्तो ’ अने ‘ दो ’ विकल्पे वपराय छे:

सर्व + तस् = सव्वत्तो, सव्वदो, सव्वओ (सर्वतः)
एक + तस् = एकत्तो, एकदो, एकओ (एकतः)
अन्य + तस् = अन्नत्तो, अन्नदो, अन्नओ (अन्यतः)
किम् + तस् = कत्तो, कुदो, कुओ (कुतः)
यत् + तस् = जत्तो, जदो, जओ (यतः)
तत् + तस् = तत्तो, तदो, तओ (ततः)
इदम् + तस् = इत्तो, इदो, इओ (इतः)

८ संस्कृतमां वपराता 'त्रप्' प्रत्ययने स्थाने प्राकृतमां 'हि', 'ह' अने 'त्थ' प्रत्यय वपराय छेः

यत् + त्र = जहि, जह, जत्थ (यत्र)
तत् + त्र = तहि, तह, तत्थ (तत्र)
किम् + त्र = कहि, कह, कत्थ (कुत्र)
अन्य + त्र = अन्नहि, अन्नह, अन्नत्थ (अन्यत्र)

९ 'अङ्कोठ' शब्द सिवाय बीजा शब्दने लागता 'तैल' प्रत्ययने स्थाने 'एल्ल' प्रत्यय वपराय छेः

कटु + तैल = कडुएल्लं (कटुतैलम्)
[अङ्कोठ + तैल = अंकोल्लतेल्लं (अङ्कोठतैलम्)]

१० नामने स्वार्थमां 'अ' 'इल्ल' अने 'उल्ल' प्रत्यय विकल्पे लागे छे :

अ— चन्द्र + अ = चंदओ, चंदो (चन्द्रकः)
हृदय + अ = हिअयअं, हिअयं (हृदयकम्)
बहुक + अ = बहुअयं, बहुअं (बहुकम्)
पल्लव + इल्ल = पल्लविल्लो, पल्लवो (पल्लवः)
पुरा + इल्ल = पुरिल्लो, पुरा (पुरा)

पितृ + उल्ल = पिउल्लो, पिआ (पिता)
हस्त + उल्ल = हत्थुल्लो, हत्थो (हस्तः)

विशेषता

पैशाचीमां स्वार्थिक 'अ' ने बदले संस्कृतनी पेठे 'क' वपराय छेः

सं० वदनकम्– प्रा० वयणयं– पै० वतनकं।
" वतनके वतनकं समप्पेत्तून "
प्रा० व्या० पा० २ सू० १६४ पृ० ७०

अपभ्रंशमां स्वार्थमां 'अ,' 'अड,' 'उल्ल' 'अडअ', 'उल्लअ' अने 'उल्लडअ' प्रत्ययो[1] वपराय छेः

दिट्ठ + अ = दिट्ठउ (दृष्टकः)
दोस + अड = दोसडु (दोषकः)
कुटी + उल्ल = कुडुल्ली (कुटिका)
हिअय + अडअ = हिअडउं (हृदयकम्)
चूड + उल्लअ चूडुल्लओ (चूडकः)
बाहुबल + उल्लडअ=बाहुबलुल्लडउ (बाहुबलकः)

११ संस्कृतमां वपराता 'पणुं' अर्थवाळा (त्व, तल्) प्रत्ययो नामने लाग्या पछी तैयार थएल ए ज नामने स्वार्थमां एना ए ज प्रत्ययो फरीवार पण लागे छेः–

मृदुक + त्व = मउअत्त + ता = { मउअत्तता / मउअत्तया (मृदुकत्वता)

---

१ प्राकृतरूपावतारमां 'अडड' 'डडअ' 'अडुल्ल' 'डुल्लअ' 'डडुल्ल' 'डुल्लडड' 'अडडुल्ल' 'अडुल्लडड' 'डडअडुल्ल' 'डुल्लअडड' 'डडुल्लअ' 'डुल्लडडअ' आ रीते बार प्रत्ययो पण जणावेला छेः पृ० ९५–९६–सू० ५.

अनियमित तद्धितांत रूपो

एक + सि = एक्कसि
एक + सिअं = एक्कसिअं } (एकदा)
एक + इआ = एक्कइआ

भ्रू + मया = भुमया
भमया } (भ्रूः)

शनैः + इअ = सणिअं (शनैः)

उपरि + ल्ल = अवरिल्लो (उपरि)

ज + एत्तिअ = जेत्तिअं
ज + एत्तिल = जेत्तिलं } (यावत्)
ज + एद्दह = जेद्दहं

अप० जेवडु, जेत्तुलो

त + एत्तिअ = तेत्तिअं
त + एत्तिल = तेत्तिलं } (तावत्)
त + एद्दह = तेद्दहं

अप० तेवडु, तेत्तुलो

एत + एत्तिअ = एत्तिअं
एत + एत्तिल = एत्तिलं } (एतावत्) (इयत्)
एत + एद्दह = एद्दहं

अप० एवडु, एत्तुलो

क + एत्तिअ = केत्तिअं
क + एत्तिल = केत्तिलं } (कियत्)
क + एद्दह = केद्दहं

अप० केवडु, केत्तुलो

पर + क = परक्कं (परकीयम्)
राय + क = राइक्कं (राजकीयम्)
अम्ह + एच्चय = अम्हेच्चयं (अस्मदीयम्)
तुम्ह + एच्चय = तुम्हेच्चयं (युष्मदीयम्)
सव्वंग + इअ = सव्वंगिओ (सर्वाङ्गीणः)
पह + इअ = पहिओ (पान्थः)
अप्प + णय = अप्पणयं (आत्मीयम्)

वैकल्पिक रूपो

नव + ल्ल = नवल्लो, नवो (नवकः)
एक + ल्ल = एकल्लो, एक्को (एककः)
मनाक् + अय = मणयं
मनाक् + इय = मणियं, मणा } (मनाक्)
मिश्र + आलिअ = मीसालिअं, मीसं (मिश्रम्)
दीर्घ + र = दीहरं, दीह (दीर्घम्)
विद्युत + ल = विज्जुला, विज्जू (विद्युत)
पत्र + ल = पत्तलं, पत्तं (पत्रम्)
पीत + ल = पीअलं
पीवलं, पीअं } (पीतम्)
अन्ध + ल = अंधलो, अंधो (अन्धः)

संस्कृतनां सिद्ध तद्धितांत रूपो उपरथी पण प्राकृत रूपो बने छे:—

धनिन् = धनी=धणी । तपस्विन् = तपस्वी = तवस्सी ।
आर्थिकः = अत्थिओ । राजन्यः = रायण्णो ।

आस्तिकः = अत्थिओ । आर्षम् = आरिसं ।
कानीनः = काणीणो । भैक्षम् = भिक्खं ।
मदीयम् = मईयं । वाङ्मयम् = वम्मयं ।
पीनता = पीणया (शौ० पीणदा) कौशेयम् = कोसेयं ।
(पै० पीनता) पितामहः = पिआमहो ।

यदा = जया । तदा = तया ।
कदा = कया । अन्यदा = अण्णया ।
सर्वदा = सव्वया । सर्वथा = सव्वहा ।

इत्यादि.

धातुपाठ (परिशिष्ट)

आठमा अध्यायना चोथा पादमां आचार्य हेमचंद्र प्राकृत धातुओने आ रीते आपे छेः

सूत्रांक	अर्थनी दृष्टिए हेमचंद्रे मूकेलुं मूळ रूप	मूळ रूपना आदेशो
२	कथ् प्रा० कह	वज्जर पज्जर उप्पाल पिसुण संघ बोल्ल चव जंप णिव्वर (दुःखकथने)
३		

४	जुगुप्स् प्रा० जुउच्छ	झुण दुगुच्छ दुगुञ्छ
५	बुभुक्ष् प्रा० बुहुक्ख	णीरव
	वीज	वोज्ज
६	ध्या प्रा० झा	झा
	गै	गा
७	ज्ञा	जाण मुण
८	उत् + ध्मा	उद्धुमा
९	श्रत् + धा	सद्दह
१०	पा प्रा० पि	पिज्ज डल्ल पट्ट घोट्ट
११	उत् + वा प्रा० उव्वा	ओरुम्मा वसुआ
१२	नि + द्रा प्रा० निद्दा	ओहीर उंघ
१३	आ + घ्रा प्रा० अग्घा	आइग्घ
१४	स्ना प्रा० ण्हा	अब्भुत्त
१५	सम् + स्त्या	संखा
१६	स्था	ठा थक्क चिट्ठ तिष्ठ (मा० चिष्ठ) निरप्प

१७	उत् + स्था	उट्ठ उक्कुक्कुर
१८	म्लै प्रा० मिला	वा पव्वाय
१९	निर् + मा	निम्माण निम्मव
२०	क्षि प्रा० झि	णिज्झर
२१	छाद प्रा० छाय	णुम नूम, णूम सन्नुम ढक्क ओम्वाल पव्वाल
२२	नि + वृ—निवार प्रा० निवार	णिहोड
	पात प्रा० पाड	,,
२३	दृ	दूम
२४	धवल	दुम, दूम
२५	तुल	ओहाम
२६	विरेच प्रा० विरेअ	ओलुंड उल्लुंड पल्हत्थ
२७	ताड	आहोड विहोड
२८	मिश्र प्रा० मीस / मिम्स	वीसाल मेलव

२९	उत् + भृल प्रा० उद्भल	गुंठ
३०	भ्राम प्रा० भाम	तालिअंट तमाड
३१	नाश प्रा० नास	विउड्ड नासव हारव विप्पगाल पलाव
३२	दर्श प्रा० दरिस	दाव दंस दक्खव
३३	उत् + घाट प्रा० उग्घाड	उग्ग
३४	स्पृह	सिह
३५	सम् + भाव	आसंघ
३६	उत् + नम् प्रा० उन्नाम	उत्थंघ उल्लाल गुलुगुंछ उप्पेल
३७	प्र + स्थाप प्रा० पट्ठव	पट्ठव पेण्डव
३८	वि+ज्ञप प्रा० विण्णव	वोक्क अवुक्क

३९	अर्प प्रा० अप्प	अल्लिव चच्चुप्प पणाम
४०	याप प्रा० जाव	जव
४१	प्लाव प्रा० पाव	ओम्वाल पव्वाल
४२	विकोश प्रा० विकोस	पक्खोड
४३	रोमन्थ	ओग्गाल वग्गोल
४४	कम प्रा० काम	णिहुव
४५	प्र+काश प्रा० पयास	णुव्व
४६	कम्प	विच्छोल
४७	आ+रोप प्रा० आरोव	वल
४८	[illegible]	रंखोल
४९	[illegible]	गव
५०	वट प्रा० वड	परिवाड
५१	वेष्ट प्रा० वेढ	परिआल
५२	क्री	किण
	वि+क्री प्रा० विक्की	विक्के विक्किण
५३	भी	भा बीह
५४	आ+ली	अल्ली

५५	नि+ली	णिलीअ णिलुक्क णिरिग्ध लुक्क लिक्क ल्हिक्क
५६	वि+ली	विरा
५७	रु प्रा० रव	रुंज रुंट
५८	श्रु प्रा० सुण	हण
५९	धू प्रा० धुण	धुव
६०	भू	हो हुव (शौ० भू, भुव) हव भव)
६२	,,	णिव्वड (पृथग्भवने, स्पष्टभवने च)
६३	,,	हुप्प (प्रभवने)
६५	कृ प्रा० कर	कुण
६६	कृ	णिआर (काणेक्षित-करणे)
६७	कृ	णिठ्ठुह (निष्टम्भे) संदाण (अवष्टम्भे)
६८	कृ	वावम्फ (श्रमकरणे)
६९	कृ	णिव्वोल (क्रोधपूर्व ओष्ठमालिन्ये)
७०	कृ	पयल्ल (शैथिल्यकरणे,

		लम्बने च)
७१	कृ ,,	णीलुंछ (निष्पाते आच्छोटने च)
७२	कृ ,,	कम्म (क्षुरकरणे)
७३	कृ ,,	गुलल (चाटुकरणे)
७४	स्मर प्रा० सर	झर झूर भर भल लढ विम्हर सुमर पयर पम्हुह
७५	वि+स्मृ	पम्हुस विम्हर वीसर
७६	व्या+हृ प्रा० वाहर	कोक्क, कुक्क पोक्क
७७	प्र+सृ प्रा० पसर	पयल्ल उवेल्ल
७८	,,	महमह (गन्धप्रसरणे)
७९	नि + सृ प्रा० नीसर	णीहर नील धाड वरहाड

८०	जागृ प्रा० जागर	जग्ग
८१	व्या + पृ प्रा० वावर	आअड्ड
८२	सं + वृ प्रा० संवर	साहर साहट्ट
८३	आ + दृ प्रा० आदर	सन्नाम
८४	प्र + हृ प्रा० पहर	सार
८५	अव + तृ + ओअर	ओह ओरस
८६	शक	चय तर तीर पार
८७	फक्क	थक्क
८८	श्लाघ	सलह
८९	खच	वेअड
९०	पच	सोल्ल पउल
९१	मुच	छड्ड अवहेड मेल्ल उस्सिक्क रेअव णिल्लुंछ धंसाड

९२	,,	णिम्मल (दुःखमोचने)
९३	वञ्च	वेहव वेलव जूरव उमच्छ
९४	रच	उग्गह अवह विडविड्ड
९५	समा + रच	उवहत्थ सारव समार केलाय
९६	सिच	सिंच सिंप
९७	प्रच्छ	पुच्छ
९८	गर्ज	बुक्क
९९	,,	ढिक्क (वृषगर्जने)
१००	राज	अग्घ छज्ज सह रीर रेह
१०१	मस्ज	आउड्ड णिउड्ड बुड्ड खुप्प

१०२	पुञ्ज	आरोल, वमाल
१०३	ळस्ज	जीह
१०४	तिज	ओसुक्क
१०५	मृज प्रा० मज्ज	उग्घुस, लुंछ, पुंछ, पुंस, फुस, पुस, लुह, हुल, रोसाण
१०६	भञ्ज	वेमय, मुसुमूर, मूर, सूर, सूड, विर, पविरंज, करंज, नीरंज
१०७	अनु + व्रज प्रा० अणुवच्च	पडिअग्ग
१०८	अर्ज	विढव
१०९	युज	जुंज, जुज्ज, जुप्प

११०	भुज	भुंज
		जिम
		जेम
		कम्म
		अण्ह
		समाण
		चमढ
		चड्ड
१११	उप + भुंज	कम्मव
११२	घट	गढ
११३	सम् + घट	संगल
११४	स्फुट	मुर (हासस्फुटिते)
११५	मण्ड	चिंच
		चिंचअ
		चिंचिल्ल
		रीड
		टिविडिक्क
११६	तुड	तोड
		तुट्ट
		खुट्ट
		खुड
		उक्खुड
		उल्लुक्क
		णिलुक्क
		लुक्क
		उल्लूर

११७	घूर्णं	घुळ घोल घुम्म पहल्ल
११८	वि + वृत् प्रा० विवट्ट	ढंस
११९	क्वथ प्रा० कढ	अट्ट
१२०	ग्रन्थ	गण्ठ
१२१	मन्थ	घुसल विरोल
१२२	ह्लाद्	अवअच्छ
१२३	नि + सद्	णुमज्ज
१२४	छिद् प्रा० छिंद्	दुहाव णिच्छल्ल णिज्झोड णिव्वर णिल्लूर लूर
१२५	आ + छिद् "	ओअंद उद्दाल
१२६	मृद्	मल मढ परिहट्ट खड्ड चड्ड मड्ड पन्नाड

१२७	स्पन्द् प्रा० फंद्	चुलुचुल
१२८	निर् + पद् प्रा० निप्पज्ज	निव्वल
१२९	विसं + वद्	विअट्ट विलोट्ट फंस
१३०	शद्	झड पक्खोड
१३१	आ + क्रन्द्	णीहर
१३२	खिद्	जूर विसुर
१३३	रुध प्रा० रुंध	उत्थंघ
१३४	नि + षेध	हक्क
१३५	क्रुध प्रा० कुज्झ	जूर
१३६	जन	जा जम्म
१३७	तन	तड तड्ड तड्डव विरल्ल
१३८	तृप	थिप्प
१३९	उप + सृप	अल्लिअ
१४०	सं + तप	झंख
१४१	वि + आप	ओअग्ग
१४२	सम् + आप	समाण

१४३	क्षिप	गलत्थ
		अड्डक्ख
		सोल्ल
		पेल्ल
		णोल्ल
		छुह
		हुल
		परी
		घत्त
१४४	उत् + क्षिप	गुलुगुञ्छ
		उत्थंघ
		अल्लत्थ
		उब्भुत्त
		उस्सिक्क
		हक्खुव
१४५	आ + क्षिप	णीरव
१४६	स्वप	कमवस
		लिस
		लोट्ट
१४७	वेप	लोट्ट
		आयज्झ
१४८	वि + लप	झंख
		वडवड
१४९	लिप	लिंप
१५०	गुप	विर
		णड

१९१	कृष	अवहाव
१९२	प्र + दीप प्रा० पलीव	नेअव संदुम संधुक्क अब्भुत्त
१९३	लुभ	संभाव
१९४	क्षुभ	खउर पड्डुह
१९५	आ + रभ	आरभ आढव
१९६	उपा + लभ	झंख पच्चार वेलव
१९७	जृम्भ	जम्भा
	विजृम्भ (वअम्भ)	
१९८	नम	णिसुढ (भारपूर्वकनमने)
१९९	वि + श्रम प्रा० वीसाम	णिव्वा
१६०	आ + क्रम	ओहाव उत्थार छुंद

१६१ भ्रम

- टिरिटिल्ल
- ढुंढुल्ल
- ढंढल्ल
- चक्कम
- भम्मड
- भमड
- भमाड
- तलअंट
- झंट
- झंप
- भुम
- गुम
- फुम
- फुस
- ढुम
- ढुस
- परी
- पर

१६२ गम्

- अई
- अइच्छ
- अणुवज्ज
- अवज्जस
- उक्कुस
- अक्कुस
- पच्चड्डु
- पच्छंद
- णिम्मह
- णी

		णीण णीलुक्क पद्अ रंभ परिअल्ल वोल परिअल णिरिणास णिवह अवसेह अवहर
१६३	आ + गम्	अहिपच्चुअ
१६४	सम् + गम्	अब्भिड
१६५	अभ्या + गम्	उम्मत्थ
१६६	प्रत्या + गम्	पलोट्ट
१६७	शम	पडिसा परिसाम
१६८	रम	संखुड्ड खेड्ड उब्भाव किलिकिंच कोट्टुम मोट्टाय णीसर वेल्ल

१६९	पूर्	अग्घाड अग्घव उद्धुमा अंगुम अहिरेम
१७०	त्वर	तुवर जअड
१७२	क्षर	खिर झर पज्झर पच्चड णिच्चल णिट्टुअ
१७४	उत् + छल	उत्थल्ल
१७५	वि + गल	थिप्प णिट्टुह
१७६	दल	विसट्ट
	वल	वंफ
१७७	भ्रंश	फिड फिट्ट फुड फुट्ट चुक्क भुल्ल
१७८	नश	णिरणास णिवह अवसेह पडिसा अवहर

१७९	अव + काश	ओवास
१८०	सं + दिश	अप्पाह
१८१	दृश	निअच्छ
		पेच्छ
		अवयच्छ
		अवयज्झ
		वज्ज
		सव्वव
		देक्ख
		ओअक्ख
		अवक्ख
		अवअक्ख
		पुलोअ
		पुलअ
		निअ
		अवपास
		पास
१८२	स्पृश	फास
		फंस
		फरिस
		छिव
		छिह
		आलुंख
		आलिह
१८३	प्र + विश	रिअ
१८४	प्र + मृश प्र + मुष	म्हुस

१८५	पिष	णिवह
		णिरिणास
		णिरिणज्ज
		रोञ्च
		चड्ड
१८६	भष	भुक्क
१८७	कृष्	कड्ढ
		साअड्ढ
		अंच
		अणच्छ
		अयञ्छ
		आइञ्छ
१८८	,,	अक्खोड (असिकर्षणे)
१८९	गवेष	ढुंढुल्ल
		ढंढोल
		गमेस
		घत्त
१९०	श्लिष प्रा० सिलेस	सामग्ग
		अवयास
		परिअंत
१९१	म्रक्ष	चोप्पड
१९२	काङ्क्ष	आह
		अहिलंघ
		अहिलंख
		वच्च
		वंफ
		मह
		सिह
		विलुंप

१९३	प्रति + ईक्ष्	सामय विहीर विरमाल
१९४	तक्ष	तच्छ चच्छ रम्प रम्फ
१९५	वि + कस	कोआस वोसट्ट
१९६	हस	गुंज
१९७	स्रंस	ल्हिस डिंभ
१९८	त्रस	डर वोज्ज वज्ज
१९९	नि + अस	णिम णुम
२००	परि + अस्	पलोट्ट पल्लोट्ट पल्हत्थ
२०१	निः + श्वस	झंख
२०२	उत् + लस	ऊसल ऊसुंभ णिल्लस पुलआअ गुंजोल्ल आरोअ

२०३	भास	भिस
२०४	ग्रस	घिस
२०५	अव + गाह	ओवाह
२०६	आ + रुह	चड
		वलग्ग
२०७	मुह	गुम्म
		गुम्मड
२०८	दह	अहिऊल
		आलुंख
२०९	ग्रह	वल
		गेण्ह
		हर
		पंग
		निरुवार
		अहिपच्चुअ
२१६	छिद्	छिन्द्
	भिद्	भिन्द्
२१७	युध	जुज्झ
	बुध	बुज्झ
	गृध	गिज्झ
	क्रुध	कुज्झ
	सिध	सिज्झ
	मुह	मुज्झ
२१८	रुध	रुन्ध
		रुम्भ

२१९	सद्	सड
	पत	पड
२२०	क्वथ	कड्ढ
	वर्ध	वड्ढ
२२१	वेष्ट	वेढ
२२२	सं + वेष्ट	सं + वेल्ल

मागधीना धातु

२९७ प्र + ईक्ष = प्रेक्ष प्रा० पेक्ख मा० पेस्क

आ + चक्ष प्रा० आचक्ख मा० आचस्क

केटलाक अपभ्रंश धातुओ

३९०	भू	हुच्च (पर्याप्ति)
३९१	ब्रू	ब्रुव
३९२	व्रज	वुञ
३९३	दृश	प्रस
३९४	ग्रह	गृण्ह
३९५	तक्ष	छोल्ल

देश्य धातुओ

खुड्क	गू० खटकवुं
धुडुक	,, धडकवुं
झलक	,, झळकवुं
चंप	,, चांपवुं

ગૂજરાત વિદ્યાપીઠ તરફથી પ્રકાશિત

પુરાતત્ત્વ મંદિર ગ્રંથાવલી

પ્રાકૃત અને પાલી ભાષાના અભ્યાસ માટે

૧. પ્રાકૃતવ્યાકરણ. લે. પં. બેચરદાસ. જી. દોશી. ૪—૦—૦

૨. પ્રાકૃતકથાસંગ્રહ. સં. મુનિ જિનવિજય ૦—૧૨—૦

૩. પાલીપાઠાવલી. સં. ,, ૦—૧૪—૦

૪. અભિધાનપ્પદીપિકા સં. ,, ૫—૦—૦
(પાલીનો શબ્દકોષ)

૫. અભિધમ્મત્થસંગહો. સં. અ. ધર્માનંદ કોસંબી. ૨—૮—૦

૬. ધમ્મપદ (મૂળ, અનુવાદ, કોષ ઇ.) અ. ધર્માનંદ
કોસંબી અને અ. રા. વિ. પાઠક. ૧—૦—૦

૭ ઉપનિષત્ પાઠાવલી સં. અ. દ. બા. કાલેલકર. ૦—૧૨—૦

૮. સમ્મતિતર્કપ્રકરણ. તત્ત્વબોધિની સાથે ભા. ૧:
સં. પં. સુખલાલજી તથા
પં. બેચરદાસ. જી. દોશી. ૧૦—૦—૦

ગૂજરાતી પુસ્તકો.

૯. આર્યવિદ્યાવ્યાખ્યાનમાળા. ૨—૦—૦
ચામડાની પટી. ૨—૮—૦

૧૦. પ્રાચીન સાહિત્ય. અનુવાદકો શ્રીમહાદેવ દેશાઈ
તથા શ્રીનરહરિ દ્વા. પરીખ. ૦—૧૨—૦

૧૧. આર્યોના તહેવારોનો ઇતિહાસ. લે ઋગ્વેદી. ૩—૦—૦

૧૨. બુદ્ધલીલાસારસંગ્રહ. લે. અ. ધર્માનંદ કોસંબી. ૨—૮—૦

૧૩. બૌદ્ધસંઘનો પરિચય, ,, ૨—૦—૦

૧૪. સમાધિમાર્ગ ,, ૦—૮—૦

૧૫ કાવ્યપ્રકાશ. અનુવાદ. ઉ. ૧—૬. અનુવાદકો.
અ. રા. વિ. પાઠક.
અ. ર. છો. પરીખ. } ૧—૮—૦

છપાય છે.

વૈદિક પાઠાવલી. (અનુવાદ સાથે) સં. અ, ર. છો. પરીખ

પ્રાચીન ગૂજરાતી ગદ્ય સંદર્ભ.. સં. મુનિ જિનવિજય.

સમ્મતિતર્ક. ભા. ૨. સં. પં. સુખલાલજી તથા
પં. બેચરદાસ

તૈયાર છે.

પુરાતત્ત્વ. પુસ્તક. ૧ લું.	૫-૧૨-૦
પુરાતત્ત્વ. પુસ્તક. ૨ જું.	૫-૧૨-૦
પુરાતત્ત્વ. પુસ્તક. ૩ જું.	૫-૧૨-૦